श्रीश्रीगौरगदाधरौ विजयेताम्

श्रीचैतन्यमंगल

श्रील लोचनदासठाकुर विरचित

श्रीवृन्दावनधामवास्तव्य न्यायवैशेषिकशास्त्रि, नव्यन्यायाचार्य,
काव्यव्याकरणसांख्यमीमांसा वेदान्ततर्कतर्कतर्कवैष्णवदर्शनतीर्थ
श्रीहरिदासशास्त्री
कर्त्तृक सम्पादित ।

सद्ग्रन्थ प्रकाशक :—
श्रीहरिदासशास्त्री
श्रीगदाधरगौरहरि प्रेस,
श्रीहरिदास निवास, कालीदह, पो० वृन्दावन ।
जिला-मथुरा (उत्तर प्रदेश)

(सङ्गणकसंस्करणं दासाभासेन हरिपार्षददासेन कृतम्)

प्रकाशक :—

श्रीहरिदासशास्त्री

श्रीहरिदास निवास।

पुराणा कालीदह।

पो०—वृन्दावन।

जिला—मथुरा। (उत्तर प्रदेश)

प्रकाशनतिथि—

ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशत श्री-श्रील विनोदविहारी गोस्वामी प्रभु विरह तिथि

पौष कृष्णा द्वितीया २१।१२।८३

श्रीगौराङ्गाब्द ४९७

प्रथम संस्करण—१०००

प्रकाशनसहायता—७५.००

मुद्रकः—

श्रीहरिदास शास्त्री

श्रीगदाधरगौरहरि प्रेस,

श्रीहरिदास निवास, कालीदह,

पो० वृन्दावन, जिला—मथुरा,

(उत्तर प्रदेश) पिन—२८११२१

* श्रीश्रीगौरगदाधरौ विजयेताम् *

विज्ञप्ति

प्रस्तुत ग्रन्थ सुविश्रुत "श्रीचैतन्य-मङ्गल" है, अखण्ड कीर्त्ति गरिष्ठ श्रीखण्डवास्तव्य श्रीमन्नरहरि सरकार ठाकुर आदिष्ट तदीय प्रियतम शिष्य "श्रील लोचन दास" कर्त्तृक यह ग्रन्थ रचित हुआ है। यह ग्रन्थ—सूत्रखण्ड, आदिखण्ड, मध्यखण्ड एवं शेषखण्डरूप खण्ड चतुष्टय पूर्ण है। यह ग्रन्थ मङ्गल काव्य प्रणाली से रचित हुआ है, मनुष्यों में प्राणी मात्र के प्रति निजाङ्गवद् ममत्व शिक्षा सञ्चार हेतु विमल श्रीभगवत् चरित्र का कीर्त्तन चित्त श्रुति रसायन सङ्गीत रीति से जिसमें होता है, उसे मङ्गल काव्य कहते हैं। सरकार ठाकुर की आन्तरिक इच्छा थी, उनके प्राणप्रिय श्रीगौरहरि की लीलामाला का प्रचार वङ्ग भाषासे हो, तज्जन्य ही आपने लिखा है—

गौरलीला दरशने वाञ्छा कत हय मने
भाषाय लिखिया सब राखि।
किछु किछु पद लिखि यदि इहा केह देखि
प्रकाश करये केह लीला।
नरहरि पाबे सुख घुछिवे मनेर दुख
ग्रन्थ गाने दरविबे शिला॥

श्रीबासुदेव घोष कर्त्तृक रचित पदावलि से नरहरि सरकार ठाकुर की अभीप्सित पूर्त्ति किञ्चित परिमाण में होने से भी एवं उस समय श्रीवृन्दावन दास ठाकुर रचित श्रीचैतन्य भागवत प्रकाशित होनेपर भी उस से श्रीनरहरि सरकार ठाकुर की आन्तरिक पिपासा प्रशमित नही हुई, कारण उसमें रसराज श्रीगौरहरि की भजन कथा विशेष रूप से आलोचित नहीं हुई है, सुतरां लोचन के द्वारा उक्त अभाव पूर्त्ति कामना से उनमें शक्ति सञ्चार पूर्वक ग्रन्थ प्रणयन हेतु आदेश किये थे।

लोचन, निज गृहप्राङ्गणस्थित वदरी तरुतल में उपविष्ट होकर तालपत्र में 'श्रीचैतन्य-मङ्गल' ग्रन्थ लिखन प्रारम्भ किये थे। उस समय श्रीगौरसुन्दर की अपार करुणा से तदीय निगूढ़ घटनावली भी लोचन के मानस लोचन में समुद्भासित होकर ग्रन्थमध्य में सन्निविष्ट हुई।

सूत्रखण्ड में—मङ्गलाचरण, गुरुवन्दना, शची जगन्नाथ मिश्र का आविर्भाव, कलियुग में भगवद् विमुखता को देखकर श्रीनारद का आक्षेप, द्वारका गमन पूर्वक श्रीकृष्ण रुक्मिणी समीप में कलि कलुष हत जीवका दुरवस्था वर्णन, कलियुग में अवतीर्ण होने के निमित्त श्रीकृष्ण कर्त्तृक प्रस्ताव अङ्गीकार एवं ब्रह्माशिव प्रभृति के समीप में घोषणा प्रचार हेतु श्रीनारद को आदेश प्रदान, श्रीरुक्मिणी के सहित भावी गौरावतार विषयक श्रीकृष्ण की आलोचना, यावतीय भक्तवृन्द के आविर्भाव की वर्णना है।

आदिखण्ड में—श्रीअद्वैत प्रभु का शान्तिपुर से नवद्वीप आगमन एवं श्रीशचीगर्भ की स्तुति, १४०७ शकाब्द की फाल्गुनी पूर्णिमा में ग्रहण काल में ज्योतिर्मय शचीदेह से गौरहरि का आविर्भाव, नवद्वीप में महानन्दोत्सव, शचीगृह में जनता, नामकरण, बाल्यलीला औद्धत्य, गङ्गाजल में केलि, बालिकावृन्द का नैवेद्य भोजन, उपनयन, श्रीजगन्नाथ मिश्र का परलोक गमन, विद्यारम्भ, विवाह, वङ्गदेश यात्रा, लक्ष्मी का गङ्गाविजय, लक्ष्मी का पूर्वजन्म वृत्तान्त, विष्णुप्रिया परिणय, गया यात्रा, ब्राह्मण का पादोदक पान से ज्वर निवारण, ईश्वरपुरी सह मिलन एवं दीक्षा ग्रहण, गया कृत्य, वृन्दावन यात्राउद्योग, उससे प्रति निवृत्त होकर नवद्वीप में आगमन वर्णित है।

मध्यखण्ड में—भक्तवृन्द के सहित साक्षात्कार, कृष्णभक्ति एवं हरिनाम याजन, भक्तसङ्ग में हरिकथा मुरारि गुप्तकृत 'रामाष्टक' का आस्वादन, नित्यानन्द मिलन, श्रीनिवास मन्दिर में कीर्त्तन, नित्यानन्द का कोपीन वस्त्र खण्ड भक्तवृन्द को प्रदान, सङ्कीर्त्तन, जगाइ माधाइ उद्धार, वृन्दावन गमन हेतु व्यग्रता केशवभारती के सहित साक्षात्कार, सन्नयास का सूत्रपात, शची का विलाप, विष्णुप्रिया के सहित विविध रङ्ग प्रसङ्ग, निशान्तकाल में गङ्गा उत्तीर्ण होकर काटोआ गमन, भारती के निकट सन्न्यास ग्रहण हेतु प्रार्थना, भारती कर्त्तृक प्रत्याख्यान, श्रीप्रभुका विनय, छल से भारती के कर्ण में सन्न्यास मन्त्र कथन, क्षौरकरण समय में मधुपण्डित का खेद, वर प्रदान, सन्न्यास के पश्चात् राढ़देश यात्रा, चन्द्रशेखर आचार्य्य के गृह नवद्वीप में आगमन, खेद, शान्तिपुरस्थ अद्वैत भवन में मिलन, नीलाचल यात्रा, दण्डभङ्ग लीला, दानीवृन्द का दौरात्म्य एवं ऐश्वर्य्य दर्शाकर भक्तवृन्द का उद्धार, एकाम्रनगर में उपस्थिति, शिव दर्शन, प्रसाद ग्रहण, पुरी में आगमन, सार्वभौम मिलन, षड़्भुज दर्शन, सार्वभौम कृत श्रीचैतन्य सहस्रनाम स्तव है।

शेषखण्ड में—जीयड़ नृसिंहादि क्रम से दाक्षिणात्य भ्रमण, काञ्ची, कावेरी, सेतुबन्धनादि दर्शन, नीलाचल में पुनरागमन हेतु श्रीनृसिंहानन्दद्वारा पथनिर्माण, कानाइ नाटशाला से प्रभुका पुनर्बार नीलाचल में प्रत्यावर्त्तन एवं झारिखण्ड पथ से वृन्दावन गमनादि, नीलाचलाभिमुख में पुनर्यात्रा, पथ में घोल पानकर गोयाला को अर्थप्रदान, नवद्वीप में आगमन, भक्तसङ्ग, सबको प्रबोध प्रदानकर नीलाचल यात्रा, प्रतापरुद्र का उद्धार, द्राविड़ देशीय दरिद्र विप्रका दारिद्र्य मोचन प्रसङ्ग, श्रीजगन्नाथ के अङ्ग में विलीन होने का वृत्तान्त, श्रीमन्नरहरि का वृत्तान्त एवं ग्रन्थ प्रणेता का वृत्तान्त वर्णित है।

प्रस्तुत ग्रन्थ श्रीमुरारि गुप्त रचित संस्कृत श्रीचैतन्य चरितामृत ग्रन्थावलम्बन से रचित है। ग्रन्थ प्रारम्भ में तथा मध्य एवं शेष में उसका आनुगत्य ग्रन्थकार द्वारा पुन:पुनः स्वीकृत हुआ है।

चैतन्य-मङ्गल ग्रन्थ के जलसाधन के समय, श्रीगौराङ्गसुन्दर के अङ्ग मार्जन के समय, लक्ष्मी परिणय के समय, विष्णुप्रिया विवाह उद्वर्त्तन के समय, एवं विवाह प्रभृति प्रकरण में नदीया नागरीगण की उक्ति प्रत्युक्ति में रसराज गौराङ्ग की संसूचना दृष्ट होती है।

इस बिषय में विरुद्ध पक्ष यह है—श्रीमन्महाप्रभु केवल महाभावाढ्य हैं। श्रीमद्भागवत में आप "परिभवघ्न" अर्थात् इन्द्रिय कुटुम्बादि जनित तिरस्कार रहित रूप में कीर्त्तित हैं।

श्रीचैतन्य भागवत के मत में—'गौराङ्ग नागर हेन स्तव नाहि बोले' इत्यादि। प्रत्येक भगवदवतार का वैशिष्ट्य है—श्रीरामचन्द्र, जिसप्रकार 'एक पत्नी व्रतधर' श्रीनन्द नन्दन, जिसप्रकार 'गोपी जनेक विलासी' तद्रूप श्रीगौरहरि भी निजपत्नी व्यतीत स्वाभिलाष दृष्टिक्षेप रहित हैं। अतएव पदामृत समुद्र रचयिता श्रीराधामोहन ठाकुर की उक्ति से यह 'भाववितर्क' है। स्वपक्ष में उक्ति यह है—"श्रीराधा कृष्ण मिलित वपु" "रसराज महाभाव दुइ एक रूप" रीति से श्रीगौरहरि में महाभाव का प्राबल्य सर्व सम्मत होने पर भी रसराजत्व में अनाढ्यत्वांश का भी किञ्चत् प्रसारादि अयौक्तिक नहीं है।

श्रीचैतन्य चन्द्रामृत के १३२ में श्रीप्रबोधानन्द सरस्वती पाद ने 'गौरनागर वर' का ध्यान अङ्कन किया है।

श्रीभगवान् विरुद्ध रस एवं विरुद्धभाव सम्बलित हैं, सुतरां भक्त रुचि भेद से श्रीगौर में रसराजत्व का स्वीकार अनिवार्य्य है। नदीया नागरीगण की रागात्मिका भक्ति—रुचिभेद से एवं अधिकार भेद से ग्रहणीय है। किन्तु सर्बथा सार्वजनीन नहीं है। कारण—निवृत्तानुपयोगि हेतु दुरूह हेतु एवं अति रहस्य हेतु उक्त रसास्वादन अति सावधानतया आस्वादनीय है।

श्रीचैतन्य-मङ्गल ग्रन्थ में पयार, लघु त्रिपदी, दीर्घ त्रिपदी, मध्यतरजा, करुणा प्रभृति छन्दः विन्यस्त है, ग्रन्थ की भाषा सहज एवं लालित्य पूर्ण है। गान के उद्देश्य से पद समूह रचित होने से विभिन्न राग

रागिणी का उल्लेख यथास्थान में हुआ है। ग्रन्थोक्त ऐतिहासिक विवरण निर्णय में मतानैक्य गवेषक वृन्द के मध्य में विद्यमान होने से भी भौगोलिक वृत्तान्त की प्रामाणिकता के सम्बन्ध में सब व्यक्ति निसन्दिहान हैं। श्रीचैतन्य भागवत प्रधानतः वर्णनात्मक है, एवं श्रीचैतन्यमङ्गल रसात्मक है।

पल्लवित कविरवांश में लोचनानन्द ठाकुर—श्रीवृन्दावन दास को स्थल विशेष में अतिक्रम किये है, ठाकुर लोचन के द्वारा रचित श्रीचैतन्यमङ्गल व्यतीत दुर्लभसार, आनन्दलतिका की राग लहरी एवं रास पञ्चाध्याय के पद्यानुवाद एवं श्रीजगन्नाथ नाटक के गीतिका भाग के पद्यानुवाद ग्रन्थ भी है।

श्रीहरिदास शास्त्री

सूचीपत्र

सूत्रखण्ड १–३६

विषय

मङ्गलाचरण, श्रीगौराङ्ग एवं तदीय पार्षदवृन्द की वन्दना, मुरारि दामोदर संवाद, आदि, मध्यखण्ड का सूत्रवर्णन, श्रीगौरनित्यानन्दावतारमहिमा कथन, श्रीगौराङ्गावतार की सूचना, श्रीकृष्ण रुक्मिणी संवाद, श्रीनारद महाशय का श्रीद्वारका में आगमन एवं श्रीरुक्मिणीदेवी कर्त्तृक तदीय समाचार, श्रीकृष्ण नारद संवाद, श्रीकृष्ण कर्त्तृक श्रीनारद को गौररूप प्रदर्शन, श्रीगौररूप दर्शन से श्रीनारद की मूर्च्छा, श्रीनारदका मूर्च्छाभङ्ग होनेपर गौराङ्गावतार की घोषणा, अवतरण करने के उद्योग निमित्त श्रीकृष्णकर्त्तृक उनको देवलोक में प्रेरण, श्रीनारद का नैमिषारण्य में आगमन एवं गौरावतार विषय में उद्धव के सहित कथोपकथन, अनन्तर नारद का कैलास में आगमन, हरपार्वती के सहित मिलन एवं तत्कर्त्तृक नारद की सम्वर्द्धना, कात्यायनी नारद संवाद एवं महाप्रसाद की महिमा वर्णन, महाप्रसाद वितरण सम्बन्ध में कात्यायनी देवी की प्रतिज्ञा एवं तच्छ्रवण से श्रीविष्णु का कैलास में आगमन, ब्रह्मपुराण में श्रीविष्णु कात्यायनी संवाद में श्रीगौराङ्ग अवतार का अभिप्राय ज्ञापन, महेश पार्वती का सपार्षद पृथिवी में आगमन जन्य नारद कर्त्तृक श्रीविष्णु का आदेश ज्ञापन, अनन्तर नारद का प्रस्थानएवं ब्रह्मलोक में आगमन, ब्रह्मा नारद संवाद में ब्रह्मा के समीप में नारद कर्त्तृक श्रीगौराङ्गवतार की घोषणा प्रदान, तच्छ्रवण कर ब्रह्मा का आनन्द एवं नारद समीप में ब्रह्मा एवं तत्पुत्र सनकादिक के प्रश्न से श्रीकृष्णलीला विषय में उनसब का सन्देह भञ्जन, श्रीगौराङ्गावतार का शास्त्र प्रदान प्रदर्शन, नारद कर्त्तृक वैष्णव एवं गोपीमाहात्म्य वर्णन, ब्रह्मलोक में गौरावतार घोषणा के निमित्त ब्राह्मण को सूचित कर नारद का प्रस्थान, गौराङ्गावतार में नारद का आनन्द प्रकाश, धर्म की शोचनीय अवस्था को देखकर कलि आगमन का अनुमान, नारद का जगन्नाथ क्षेत्र में आगमन एवं तदीय समीप में सकातर निवेदन, श्रीजगन्नाथ के आदेश से नारद की गोलोक यात्रा, गोलोक में गौराङ्ग स्वरूप की वर्णना, नारद का वैकुण्ठ में आगमन, वैकुण्ठनाथ कर्त्तृक गोलोकपति का महिमा वर्णन एवं श्रीगौराङ्ग को गोलोकपति रूप में वर्णन, नारद का गोलोक में आगमन, गोलोक का स्वरूप वर्णन, नारद कर्त्तृक गौररूप गोलोकपति का दर्शन, नारद कर्त्तृक गोलोकपति का महिमा वर्णन,

गोलोक में प्रेयसीवृन्द समीप में गोलोकपति का अभिप्राय ज्ञापन एवं अवतार का कार्य्य वर्णन, अनन्तर नारद का प्रस्थान, श्वेतद्वीपस्थ श्रीबलराम के समीप में आगमन, श्रीबलराम के स्वरूप एवं महिमा वर्णन, श्रीबलराम के सहित नारद का साक्षात्कार एवं बलराम के प्रश्न से तत्समीप में गोलोकपति का श्रीगौरावतार का अभिलाष संवाद ज्ञापन, श्रीगौरावतार हेतु स्वजन के सहित देवगण का गौरपार्षदरूप में पृथिवी में आविर्भाव वर्णन ।

आदिखण्ड ७–अध्याय

आदिखण्ड ७–अध्याय ३७–९६

विषय — पृष्ठा

प्रथम अध्याय ३७–४०

शची गर्भ में श्रीगौराङ्ग की आविर्भाव वर्णना, जन्मोत्सव वर्णन ।

द्वितीय अध्याय ४१–५७

श्रीगौराङ्ग की शिशुलीला, देवगण कर्त्तृक शिशु गौराङ्ग की पूजा एवं श्रीकृष्ण कीर्त्तन, तत्दर्शन से शचीमाता का आतङ्क, निमाइ की बाल्यक्रीड़ा, शचीमाता का आदर, निमाइ का बाल्य चाञ्चल्य को देखकर क्षिप्तज्ञान से शचीमाता का भय एवं नारीगण के समीप में उसकी वर्णना एवं नारीवृन्द द्वारा उपदेश निमाइ का अशुचि स्थान में गमन एवं माता के प्रति तत्त्व कथन; निमाइ की दुष्टता से जननी द्वारा प्रहारोद्यम हेतु निमाइ का उच्छिष्ट पात्र में उपवेशन, माता के द्वारा अनुनय विनय हेतु माता के प्रति इष्टक निक्षेप, निमाइ कर्त्तृक नारिकेल आनयन, निमाइ के तेज को देखकर शचीमाता का विस्मय एवं विपदाशङ्का से रक्षाबन्धन, निमाइ के द्वारा चन्द्रप्राप्ति का आग्रह, कुकुर शावक को लेकर निमाइ की क्रीड़ा, शचीदेवी द्वारा अनुष्ठित षष्ठीव्रत पलक्षय में निमाइ का अद्भुत आचरण, मुरारि गुप्त के प्रति निमाइ का अद्भुत विद्रुप आचरण, बालकवृन्द के सहित हरिबोल कहकर निमाइ की क्रीड़ा, विश्वरूप द्वारा सन्न्यास ग्रहण ।

तृतीय अध्याय ५८–६९

निमाइ का विद्यारम्भ एवं चूड़ाकरण, निमाइ की बाल्यक्रीड़ा एवं स्वप्न में निज स्वरूप प्रकाश, निमाइ का उपनयन संस्कार, निमाइ का अवतार विषयक विचार, जननी को श्रीएकादशी व्रतोपवास करने में प्रवर्त्तन, निज देह से भक्तदेह का श्रेष्ठत्व प्रदर्शन, श्रीजगन्नाथ मिश्र का परलोक गमन, जननी कर्त्तृक निमाइ को अध्ययन निमित्त गुरु के समीप में नियोग, पाठशाला में निमाइ का अध्ययन आरम्भ ।

चतुर्थ अध्याय ६९–७७

लक्ष्मीप्रिया के सहित निमाइ का प्रथम प्रणय सूत्र बन्धन, निमाइ का नवद्वीप नागर वर्णन ।

पंचम अध्याय ७७–८३

निमाइ के प्रति गङ्गादेवी का अनुराग, निमाइ का पूर्वदेश गमन, लक्ष्मीप्रिया का निर्याण एवं शची माता का खेद, पूर्वदेश से निमाइ का गृह में प्रत्यावर्त्तन एवं लक्ष्मीप्रियादेवी का स्वधाम गमन हेतु जननी को सान्त्वना प्रदान ।

षष्ठ अध्याय ८३–९१

विष्णुप्रिया के सहित निमाइ का द्वितीय परिणय ।

विषय पृष्ठा

सप्तम अध्याय ६२–६६

निमाइ की अध्यापना, निमाइ का गया गमन, गया से निमाइ का बृन्दावन गमनोद्योग, आकाशवाणी श्रवणकर स्वदेश प्रत्यावर्त्तन, ग्रन्थकर्त्ता का परिहार।

मध्यखण्ड १६–अध्याय ६७–१८८

प्रथम अध्याय ६७–१०५

अध्यापना व्यपदेश से शिष्यगण के प्रति निमाइ की कृष्णशिक्षा, कृष्णप्रेम से प्रभु का क्रन्दन, पुत्र के निकट जननी द्वारा कृष्णप्रेम भिक्षा, शुक्लाम्बर ब्रह्मचारी के गृह में कृष्णप्रेम मत्त निमाइ की विह्वलता, पथ में अकस्मात् वंशीध्वनि श्रवण से निमाइ की उन्मत्तता, निमाइ द्वारा वराहावतार प्रकाश, शचीगृह में देवतागण कर्त्तृक निमाइ दर्शन एवं प्रेम लाभ, भक्तवृन्दको प्रेम प्रदान, मेघगणको कृष्णप्रेम दान।

द्वितीय अध्याय १०५–१०६

भक्तगण के सहित प्रेमावेश कीर्त्तन, श्रीगौराङ्ग का रूप वर्णन, श्रीगौराङ्ग कर्त्तृक आम्रवीज रोपण तत्क्षणात् वृक्षोत्पत्ति एवं सुपक्व आम्रफल प्राप्ति, ब्रह्मज्ञाननिष्ठ मुकुन्द को शिक्षाप्रदान, मुरारि गुप्त को भक्तिशिक्षा दान।

तृतीय अध्याय १०६–११४

भक्तगण के सहित श्रीनिमाइ द्वारा श्रीअद्वैत का साक्षात्कार, निमाइ के प्रति अद्वैत का भक्ति प्रकाश निमाइ कर्त्तृक संक्षेप में अध्यात्म तत्त्व की व्याख्या, श्रीगौराङ्ग दर्शनार्थ नवद्वीप में श्रीअद्वैत का आगमन श्रीअद्वैत की भक्ति सम्बन्ध में श्रीगौराङ्ग के समीप में श्रीवास का प्रश्न, श्रीगौराङ्ग रूप का वर्णन।

चतुर्थ अध्याय ११४–१२०

भक्तवृन्द के प्रति महाप्रभु का विविध कृपादेश, श्रीनित्यानन्द मिलन, नित्यानन्द को देखकर शची माता का विश्वरूप ज्ञान, नित्यानन्द को षड्भुज प्रदर्शन।

पंचम अध्याय १२०–१२५

जननी के निकट निमाइ का स्वप्न वर्णन, श्रीवास गृह में श्रीअद्वैत के सहित महाप्रभु का मिलन, श्रीहरिदास ठाकुर मिलन, अकस्मात् श्रीमहाप्रभु का अदर्शन से भक्तवृन्द का खेद एवं पुनर्मिलन, वस्त्रहरण लीलानुकरण, महाप्रभु के आदेश से भक्तगण कर्त्तृक श्रीनित्यानन्द चरणामृत पानोत्सव, श्रीहरिदास ठाकुर एवं श्रीअद्वैत मिलन।

षष्ठ अध्याय १२५–१३२

जगाइ माधाइ उद्धार, सपुत्र वनमाली भिक्षुक के प्रति कृपा।

सप्तम अध्याय १३२–१३७

श्रीगौराङ्ग का नृसिंहावेश, शिव कीर्त्तनकारीके प्रति कृपा, ब्राह्मणी कर्त्तृक श्रीमन्महाप्रभु की पदधूली ग्रहण, तज्जन्य महाप्रभु का गङ्गा में निमज्जन, भक्तगण के प्रति भगवत्तत्त्वोपदेश, श्रीमन्दिर मार्जन शिक्षादान, कुष्ठरोगी के प्रति कृपा।

विषय पृष्ठा

अष्टम अध्याय १३७-१३६

निमाइ के प्रति ब्राह्मण का अभिशाप।

नवम अध्याय १३६-१४२

श्रीगौर में बलरामावेश, कीर्त्तन यज्ञ वर्णन।

दशम अध्याय १४२-१४६

नारदावेश में श्रीवास कर्त्तृक गदाधर की महिमा कथन, भक्तवृन्द के सहित प्रभुका नृत्य कीर्त्तन, आद्याशक्ति का आवेश, चन्द्रशेखर के गृह में अपूर्व ज्योति।

एकादश अध्याय १४६-१५२

निमाइ का सन्न्यास प्रकरण।

द्वादश अध्याय १५२-१६०

श्रीशचीमाता का विलाप, विष्णुप्रिया का विलाप, भक्तवृन्द का विलाप भक्तगण के प्रति प्रबोध।

त्रयोदश अध्याय १६०-१६६

श्रीगौराङ्ग का गृहत्याग।

चतुर्दश अध्याय १६६-१७०

सन्न्यास ग्रहण।

पंचदश अध्याय १७०-१७५

सन्न्यास ग्रहण के पश्चात् शान्तिपुर में श्री प्रभु का आगमन, जननी एवं भक्तवृन्द के सहित मिलन

षोड़श अध्याय १७५-१८८

नीलाचल यात्रा, दानी के प्रति कृपा, नित्यानन्द कर्त्तृक दण्डभङ्ग, रेमुणा में श्रीगोपाल दर्शन, याजपुर में देवदर्शन, मुकुन्द के प्रति दानी का अत्याचार, एकाम्रनगर में देवदर्शन, शिव प्रसाद ग्रहण विचार, तीर्थ दर्शन, श्रीजगन्नाथ मन्दिर ध्वज दर्शन से प्रभु की मूर्च्छा, अनन्तर वासुदेव सार्वभौम के गृह में गमन, सार्वभौम तनय के सहित जगन्नाथ दर्शन अद्भुत प्रेमावेश, महाप्रसाद दर्शन से प्रेमावेश, समस्त प्राणी को महाप्रसाद वितरण, सन्ध्याकाल में पुनर्वार जगन्नाथ दर्शन, भावावेश प्रभु द्वारा सन्न्यास ग्रहण कार्य में सार्वभौम की दोष दृष्टि, सार्वभौम के प्रति कृपा।

शेषखण्ड ४-अध्याय १८६-२२२

प्रथम अध्याय १८६-१९६

श्रीमहाप्रभु की दक्षिणदेश भ्रमण हेतु यात्रा, जीयड़ नृसिंहदेव का प्रकट विवरण, रायरामानन्द मिलन त्रिमल्ल भट्ट की सहित मिलन, सप्तताल मोचन, सेतुबन्ध गमन एवं श्रीजगन्नाथ दर्शन हेतु प्रत्यावर्त्तन।

विषय पृष्ठा

द्वितीय अध्याय १६७--२१२

वृन्दावन गमन एवं लीलास्थली दर्शन।

तृतीय अध्याय २१२---२२०

वृन्दावन से नीलाचल यात्रा, पथ में गोप के प्रति कृपा, नवद्वीप गमन, शान्तिपुर गमन, नीलाचल में प्रत्यावर्त्तन, प्रतापरुद्र के प्रति कृपा, षड़्भुज मूर्ति प्रदर्शन, दरिद्र ब्राह्मण के प्रति कृपा।

चतुर्थ अध्याय २२०—२२२

आषाढ़ मास सप्तमी तिथि रविवार, तृतीय प्रहर के समय श्रीमन्महाप्रभुका श्रीजगन्नाथदेव में लीन प्रसङ्ग, ग्रन्थकार का आत्म परिचय।

परिशिष्ट २२३--२२८

सूचीपत्र सम्पूर्ण।

श्लोकसूची

भक्तिप्रेम	(ग्रन्थकारकृत)	१
त्वयोपभुक्त	(भा० ११।६।४६)	१४
कस्मिन्काले	(भा० ११।५।१९)	२०
आसन् वर्णास्त्रयोह्यस्य	(भा० १०।८।१३)	२०
कृतं त्रेता, कृते, मनुस्यस्तु	(भा० ११।५।२०।२२)	२०
त्रेतायां	(भा० ११।५।२४।२५)	२०
द्वापरे, तं तथा, इति द्वापरे उर्वीश	(भा० ११।५।२७।२८।३१)	२१
कृष्णवर्णं	(भा० ११।५।३२)	२१
एते चांशकला	(भा० १।३।२८)	२२
आसन् वर्णस्त्रयोह्यस्य	(भा० १०।८।१३)	२२
तमाराध्य, स्वागमैः	(वृहत् सहस्रनाम)	२३
परित्राणाय	(गीता ४।८)	२३
यदा यदाहि	(गीता ४।७)	२४
परित्राणाय	(गीता ४।८)	२४
सुवर्ण वर्णः	(महाभारत शान्तिपर्व)	२४

अजायध्वम्	(भविष्यपुराण)	२४
कृतादिषु	(भा० ११।५।३८)	२५
आसामहो	(भा० १०।४७।६१)	२५
यथा तरुर्मूल	(भा० ४।३१।१४)	५२
चण्डालोऽपि मुनेः श्रेष्ठो	(पद्मपुराण)	९३
व्याधस्याचरणं	(पद्यावली)	९७
स्वयमेवात्मना	(गीता १०।१५)	९७
अपाणिपादो	(श्वेताश्वतर)	१०१
हरेर्नाम हरेर्नाम	(वृहन्नारदीय)	१०२
मीनः स्नानपरः		१०३
आराधितोयदि हरिः	(नारदपञ्चरात्र)	१०३
रमन्ते योगिनोऽनन्ते	(चैतन्य चरितामृत महाकाव्यधृत पद्मपुराण वचन)	१०८
राजत् किरीट	(मुरारि गुप्तकृत चैतन्य चरितामृत)	११४
उद्यत् विभाकर	(,, ,, ,, ,,)	११४
न साधयति	(भा० ११।१४।२०)	११५
क्वाहं दारिद्रः	(भा० १०।८१।१६)	१३४
राम राघव	(महाप्रभु)	१७६
धैर्य्यं यस्य पिता	(शान्तिशतक)	१७९
नमोनमस्ते	(महाप्रभु)	१८१
कलेः प्रथम सन्ध्यायां	(वायुपुराण)	१९५

श्रीश्रीगदाधरगौराङ्गौ जयतः

श्रीचैतन्यमङ्गल

श्रीललोचनदासठाकुरविरचित

सूत्रखण्ड

भक्ति-प्रेम-महार्घ-रत्ननिकर-त्यागेन सन्तोषयन्
भक्तान् भक्तजनातिनिष्कृति-विधौ पूर्णावतीर्णः कलौ ।
पाषण्डान् परिचूर्णयन् त्रिजगतां हुङ्कार-वज्राङ्कुशैः
श्रीसन्न्यासि-शिरोमणि-विजयतां चैतन्य-रूपः प्रभुः ॥१

जिन्होंने भक्ति प्रेमरूप महार्घ प्रदान करके भक्तवृन्द को आनन्दित किया है, जो भक्तगण के सर्वप्रकार क्लेश को विदुरित करने के निमित्त ही कलियुग में अवतार ग्रहण किये हैं। जिन्होंने श्रीहरिनाम हुङ्काररूप वज्राघात से पाषण्डनिकर का दर्प विचूर्ण किया है, उन अमित प्रभावसम्पन्न सन्नयासिचूड़ामणि श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु की जय हो, जय हो ॥ १ ॥

पठ मञ्जरी राग

नमो नमो वन्दँो, देव गणेश्वर,
विघ्न-विनाशन महाशय ।
एकदन्त महाकाय, सर्वकार्य्ये सहाय
जय जय पार्वती-तनय ॥२
हरगौरी वन्दँो माथे, जुड़िया युगल हाते
चरणे पड़िया करँो सेवा ।
त्रिजगते एक कर्त्ता, विष्णुभक्ति वरदाता,
सबे एक एइ देवी देवा ॥३
सरस्वती-वन्दँो मुण्डे, केलि कर मोर तुण्डे
कहँो गौरहरि-गुणगाथा ।
अविदित त्रिजगते, गौरवर्ण वाणीनाथे,
अद्भुत अपरूप कथा ॥४

काकुकरँो देवगणे, आर यत गुरुजने,
विघ्न ना करिह कहो इथि ।
ना चाहँो सम्पद वर, मुइ अति पामर,
निर्विघ्ने सम्पुर्ण हँउ पुँथि ॥५
विष्णुभक्त वन्दँो आगे, यत यत महाभागे,
याँर गुणे पृथिवी पवित्र ।
सर्वजीवे करे दया, विशेषे आरति पाइया,
त्रिभुवन मङ्गल चरित्र ॥६
मुइ अति अभाजन ना बुझँो डाहिन वाम,
आकाश धरिते चाहँो बाहे ।
अन्धे दिव्यरत्न वाछे, पर्वत ना देखँो काछे,
ना जानि कि परिणामे हये ॥७

सबे एक भरसा आछे, प्रभु नाहि काहो बाछे,
गुण गाय उत्तम-अधमे ।
सर्व जीवे एक दया सबे पाय पद-छाया,
अधिकारी-नाहिक नियमे ॥८
ये पुनः वैष्णव जन, तार कथा कहि शुन,
अकारणे दया सर्वलोके ।
पर-लागि जीवन, पर लागि भूषण,
पर-उपकारे माने सुखे ॥९
ठाकुर श्रीनरहरि, दास प्राण अधिकारी,
याँर पद-प्रतिआशे आश ।
अधमेह साध करे, गौर-गुण गाहिबारे,
से भरसा ए लोचन दास ॥१०
ताँर पद परसादे, गाइब अनवसादे,
एइ मोर भरसा अन्तर ।
से दु'खानि चरण, इष्ट सिद्धि-कारण,
हृदये थुइब निरन्तर ॥११

......

केदार राग

जय जय श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्द ।
जयाद्वैतचन्द्र जय गैरभक्तवृन्द ॥१२
जय नरहरि-गदाधर-प्राणनाथ ।
कृपा करि कर प्रभु-शुभदृष्टिपात ॥१३
करुणाभरण सब हेम-गोरा-गा ।
वन्दिया गाइब से शीलल राङ्गा पा ॥१४
सकल भक्त लैया बसह आसरे ।
ओ-पद-शीतल-वा' लागुक कलेवरे ॥१५
शचीर दुलालप्रभु ! करँो परणाम ।
तिलेककरुणा–दिठे कर अवधान ॥१६
अद्वैत-आचार्य गोसाँइ देव-शिरोमणि ।
याँर पद–परसादे धन्य ए धरणी ॥१७
वन्दिया गाइब से सीतार प्राणनाथ ।
करुणा करह प्रभु करँो जोड़हात ॥१८
अभिन्न–चैतन्य से ठाकुर अवधूत ।
नित्यानन्द-राम वन्दँो रोहिणीर सुत ॥१९
गौरगुण-गरबे गर्गर मातोयार ।
वन्दिया गाइब आगे चरण ताँहार ॥२०
मिश्र पुरन्दर वन्दँो-विश्वम्भरेर पिता ।
शची-ठाकुराणीवन्दँो-ठाकुरेर माता ॥२१
पुण्डरीक विद्यानिधि वन्दिब सानन्दे ।
याँरलागि महाप्रभु फुकारिया कान्दे ॥२२
लक्ष्मी-ठाकुराणीवन्दँो विदित संसारे ।
प्रभुर विरह-सर्प दंशिल याँहारे ॥२३
नवद्वीपमयी वन्दँो विष्णुप्रिया मा ।
याँर अलंकार से प्रभुर राङ्गा पा ॥२४
पण्डित गोसाँइ से वन्दिब एकमने ।
ईश्वर-माधब-पुरीर वन्दिया चरणे ॥२५
गोसाँइ गोविन्द वन्दँो आर वक्रेश्वर ।
गौरपद-कमले ये मत्त मधुकर ॥२६
पुरी ये परमानन्द आर विष्णुपुरी ।
गदाधर दास से वन्दिब शिरोपरि ॥२७
गुप्त बेजा वन्दिब हरिष मनोरथे ।
गोरा–गुण गाङयदि दया कर चिते ॥२८
श्रीवास–ठाकुर वन्दँो आर हरिदास ।
वासुदत्त–मुकुन्द-चरणे करँो आश ॥२९
राय रामानन्द वन्दँो पिरीतेर घर ।
पण्डित जगदानन्द वन्दँो निरन्तर ॥३०
रूप–सनातन वन्दँो पण्डित दामोदर ।
राघव-पण्डित वन्दँो प्रणति विस्तर ॥३१

श्रीराम सुन्दर गौरीदास आदि यत ।
नित्यानन्द-सङ्गी वन्दँो यतेक भकत ।।३२
कुलेर ठाकुर वन्दँो श्रीइष्टदेवता ।
इहलोके परलोके सेइ से रक्षिता ।।३३
ताँहा विनु नाहि मोर तिनलोके बन्धु ।
नरहरि दास वन्दँो गौर-प्रेमसिन्धु ।।३४
गोविन्द-माधव-घोष वासु-घोष आर ।
भूमे पड़ि कर जोड़ि करँो नमस्कार ।।३५
श्रीवृन्दावन-दास वन्दिब एक चिते ।
जगत् मोहित यार 'भागवत'-गीते ।।३६
वन्दना गाइते भाइ हबे अनुक्षण ।
घरेर ठाकुर वन्दँो श्रीरघुनन्दन ।।३७
सकल-महान्त-प्रिय श्रीरघुनन्दन ।
प्रभु याँरे आगे दिला माल्य चन्दन ।।३८
श्रीमूर्तिरे लाड़ु से येबा खायाइल ।
ताँहारे मनुष्य-बुद्धि केहो ना करिल ।।३९
ताँर पिता वन्दिब से श्रीमुकुन्द दास ।
चैतन्य-सम्मत-पथे निर्म्मल विश्वास ।।४०
कारो नाम जानि कारो नाम नाहि जानि ।
सबारे वन्दिब सबे मोर शिरोमणि ।।४१
महान्त वन्दिब आर महान्तेर जन ।
एक ठाँइ वन्दि गाइ सबार चरण ।।४२
आगु पाछु विचार ना कर केहो मने ।
अक्षरानुरोधे वन्दना ना हय क्रमे ।।४३
याँर नाम नाहि करि भ्रमेते वन्दना ।
शत परणाम-कर अपराध मार्ज्जना ।।४४
पृथिवीर भकत वन्दँो अन्तरीक्षचारी ।
सबार चरणे एके एके नमस्करि ।।४५
गोरा-गुण गाओं मोर एइ प्रतिआश ।
ए लोचन दाह बले पूर' मोर आश ।।४६

बराड़ी राग । दिशा ।

प्राण भाइया निवेदँो निवेदँो निज कथा । (मूर्च्छा) । फिरे कि आरे कि ओरे प्राण हय । आगे आशीर्वाद मागँो, यत यत महाभाग, तबे से गाइब गुण-गाथा ।। आरे रे हय हय ।

मो छार अधमाधम नाहि जानँो तत्व ।
गोरा-गुण चरित्रेर कि कब महत्व ।।४७
ना जानिया प्रलाप करिया किबा काज ।
उत्तम जनेर ठाँइ ठेकिले हबे लाज ।।४८
अधिकारी नहँो तबु करँो परमाद ।
गोरा-गुण-माधुरीते बड़ लागे साध ।।४९
मुरारि गुपत बेजा बैसे नवद्वीपे ।
निरन्तर थाके गोराचाँदेर समीपे ।।५०
ताँहार महिमा केबा पारये कहिते ।
'हनुमान्' बलि याँर ख्याति पृथिवीते ।।५१
समुद्र लङ्घिया येबा लङ्कापुरी दहे ।
सीतार वार्ता उद्धारिया श्रीरामेरे कहे ।।५२
विशल्यकरणी आनि लक्ष्मणे जीयाय ।
सेइ से मुरारी गुप्त बइसे नदीयाय ।।५३
सर्व्व तत्व जाने से प्रभुर अन्तरीण ।
गौर-पद-अरविन्दे भकतप्रवीण ।।५४
जन्म हैते बालक-चरित्र ये ये कैल ।
आद्योपान्ते येइ रूपे प्रेम प्रचारिल ।।५५
दामोदर-पण्डित सब पुछिल ताँहारे ।
आद्योपान्त यत कथा कहिल प्रकारे ।।५६
श्लोकबन्धे हैल पुँथि 'गौराङ्ग चरित' ।
दामोदर-संबाद मुरारि-मुखोदित ।।५७
शुनिया आमार मने बाढ़िल पिरीत ।
पाँचालि प्रबन्धे कहँो गौराङ्ग चरित ।।५८

अधिकारी नहँो तबु कहँो एइ दोषे ।
अवज्ञा ना कर केहो ना करिह दोषे ॥५९
अमृत देखिया कार ना लागये साधे ।
अज्ञान-बालक इच्छे आकाशेर चाँदे ॥६०
गोरा–गुण गाइते ऐछन मोर साध ।
ऐछन समये मागँो वैष्णव प्रसाद ॥६१
वैष्णव-चरणे मुइ करँो परणाम ।
गोरा-गुण गाङ मोर एइ हिया-काम ॥६२
आमार ठाकुर प्रभु नरहरि दास ।
प्रणति मिनति करे ए लोचन दास ॥६३

———

मारहाटि राग । विशा ।

हरि राम राम गोराचाँद आरे प्राण मोर हय ॥ध्रु॥

प्रथमे कहिब कथा अपूर्व्व–कथन ।
आचार्य्य गोसाँइ कैल गर्भेर वन्दन ॥६४
पृथिवीते जनम लैल त्रिजगत नाथ ।
साङ्गोपाङ्गो यत यत परिषद साथ ॥६५
पिता–माता बालक लालिल येनमते ।
अन्नप्राशने नाम थुइल हरषिते ॥६६
बाल्य–चरित्र–कथा कहिब विधान ।
शून्य–चरणे शुनि नूपुर–निसान ॥६७
परशि अशुचि–देश चले आचम्बिते ।
आपन-मायेरे ज्ञान कहिला येमते ॥६८
पुरनारीगण कहे बुझिते चरित ।
तार बोले नारिकेल आनिला त्वरित ॥६९
कुक्कुर–शाबक लैया खेलाय ठाकुर ।
देखिया सकल लोक आनन्द प्रचुर ॥७०
बालकेर सङ्गे खेला करे राजपथे ।
गुप्त बेजा प्रकाश देखिल येनमते ॥७१

बालक–सहिते हरिसङ्कीर्त्तने नृत्य ।
देखिया सकल लोक आनन्दित-चित्त ॥७२
येनमते हाते खड़ि दिला तार बाप ।
या सुनिले दूरे याय अमङ्गल ताप ॥७३
तबे त कहिब कथा शुन सावधाने ।
खेले विश्वम्भर विश्वरूप-जेष्ठ-सने ॥७४
इन्द्र उपेन्द्र येन दुइ सहोदर ।
कहिब ताहार कथा शुनिबे उत्तर ॥७५
विश्वरूप सन्न्यास करिला येनमते ।
विश्वम्भर पिता माता प्रबोधे कथाते ॥७६
तबे त कहिब विश्वम्भरेर चरित ।
बालक-सहिते खेला खेले विपरीत ॥७७
सकल बालक मेलि जाह्नवीर कूले ।
बालुकाय पक्ष–पदचिह्न देखि बुले ॥७८
देखिया ताहार पिता दुःखी हइल मन ।
घरेरे अनिया कैला तर्ज्जन गर्ज्जन ॥७९
स्वपने ताँहारे कृपा कैला येनमते ।
कहिब सकल कथा शुन एकचिते ॥८०
कर्णबेध चूड़ाकर्ण आर उपवित ।
कहिब सकल कथा आनन्दित-चित ॥८१
बाल्य–समाधाने हैले यौवन–प्रवेश ।
दिने दिने करे प्रेमा-प्रकाश अशेष ॥८२
गुरू–स्थाने पड़िलेन सतीर्थेर सने ।
वङ्गजेर कथाय परिहासये येमने ॥८२
माये आज्ञा दिला एकादशी करिबारे ।
अनेक प्रकाश कथा कहिब से काले ॥८३
हेनइ समये जगन्नाथ परलोक ।
कान्दये येमते प्रभु पाइया पितृशोक ॥८४
तबे त कहिब कथा अपरूप आर ।
विवाह करिला प्रभु-आनन्द अपार ॥८५

गङ्गा-दरशने आर ये हैल रहस्य।
सावधाने शुन कथा कहिब अवश्य ॥८६
पूर्व्वदेश-गमन कहिब भालमते ।
लक्ष्मी-स्वर्ग आरोहण हैल येनमते ॥८७
देशेरे आसिया पुन विवाह करिला।
शिष्ये विद्यादान दिया गयारे चलिला ॥८८
प्रत्येके कहिब कथा शुन सर्व्वजन।
अनेक आनन्द पाबे ना छाड़ यतन ॥८९
देश-आगमन-कथा कहिब विशेष।
प्रेम प्रकाशये निरन्तर रसावेश ॥९०
मध्यखण्ड-कथा भाइ अनेक आनन्द।
शुनिते पुलक बान्धे अमिया अखण्ड ॥९१
भक्तसन्दर्शन-कथा प्रेमार प्रकाश ।
कहिबार आगे उठे हृदये उल्लास ॥९२
मध्यखण्ड कथा भाइ नदीया विहार।
अमियार धारा येन प्रेमार प्रचार ॥९३
अति अपरूप कथा प्रकाशिला प्रभु।
चारि युगे भक्त याहा नाहि शुने कभु ॥९४
हेन अदभुत कथा भक्ति-परचार।
कहिब से मध्यखण्डे नदीया विहार ॥९५
सकल भकत मेलि हइला येनमते।
प्रत्येक कहिब कथा ये जानि कहिते ॥९६
प्रथमे कहिब शची पाइला प्रेमदान।
पथेते येमते शुने वंशीर निस्वान ॥९७
प्रेमाय विह्वल हैला भावेर आवेश।
आचम्बिते दैववाणी उठिल आकाशे ॥९८
मुरारिरे कृपा कैला वराह आवेशे।
ब्रह्मा-आदि देव देखे आपन-आवाशे ॥९९
शुक्लाम्बर ब्रह्मचारी प्रेम पाइल तबे।
कहिब सकल कथा शुन सर्व्वभावे ॥१००
पण्डित श्रीगदाधर प्रभुर प्रसादे।
प्रेमाय विह्वल हैया दिवानिशि कान्दे ॥१०१
एके एके दिल सर्व्वजने प्रेमदान।
कहिब सकल कथा येमन विधान ॥१०२
भक्तके प्रसाद आम्रवीज आरोपणे।
या शुनिले सर्व्वजनेर द्विधा घुचे मने ॥१०३
अध्यात्म आच्छादि प्रभु प्रेम प्रकाशय।
ज्ञानगम्य नहे प्रभु-सबारे बुझाय ॥१०४
तबे त कहिब कथा अपूर्व्व कथन।
येमते हइल नित्यानन्द-सन्दर्शन ॥१०५
हरिदास प्रभु-सने मिलये येमने।
अद्वैत-आचार्य्य नित्यानन्देर मिलने ॥१०६
येनमते जगाइ-माधाइ निस्तारिला।
पिता-पुत्रे ब्राह्मणेरे येन कृपा कइला ॥१०७
शिवेर गायने कृपा कैल येनमते।
आचम्बिते खेद उठे ब्राह्मण-चरिते ॥१०८
येनमते जाह्नवीते दिला प्रभु झाँप।
या शुनिले तिनलोके उठे हिया-काँप ॥१०९
तबे आर अपरूप शुनिबे विधाने।
देवालय मार्ज्जना प्रभु करिला येमने ॥११०
शुनिबे अनेक कथा अति अपरूप।
कुष्ठव्याधि निस्तारिला ए बड़ कौतुक ॥१११
बलराम-आवेश-कथा कहिब विशेष।
या शुनिले सबे पाबे आनन्द अशेष ॥११२
श्रीचन्द्रशेखराचार्य्येर बाड़ीते प्रकाश।
प्रेम-परकाशे छाय ए भूमि आकाश ॥११३
अनेक रहस्य कथा कहिब ताहाते।
वैराग्य अद्भुत प्रभुर उठे येन मते ॥११४
केशव भारति देखि नदिया नगरे।
सन्न्यास करिब बलि उल्लास अन्तरे ॥११५

येनमते सर्व भक्तगणेर विलाप ।
शची विष्णुप्रिया शोकसागरे दिला झाँप॥ ११६
सन्न्यास-आशये नवद्वीपछाड़ि याय ।
सन्न्यास करिला प्रभु भारती सहाय ॥११७
कहिब सम्यक् सब यत विवरणे ।
आचार्य्य-प्रभुर घर गेला येनमने ॥११८
सबा सन्दर्शने आर येबा हैल कथा ।
सबा प्रबोधिया प्रभु यात्रा कैला यथा ॥११९
पुरुषोत्तम देखिबारे चलिला येमते ।
कहिंब रहस्य-कथा ग्राम रेमुणाते ॥१२०
क्रमे क्रमे कहिब से पथेर चरित ।
याहा शुनि सर्वलोक पाइबे पिरीत ॥१२१
याजपुर याइ प्रभु ये कैल रहस्य ।
एकाम्रनगर-कथा कहिब अवश्य ॥१२२
जगन्नाथ-सन्दर्शन हैल येनमते ।
सार्वभौमे प्रकाश शुनिबे एकचिते ॥१२३
मध्यखण्ड-कथा भाइ अमृतेर सार ।
शेषखण्ड-कथा आछे कहि शुन आर ॥१२४
मध्यखण्ड साय पुँथि प्रेमार प्रकाश ।
आनन्द-हियाय कहे ए लोचन दास ॥१२५

———

धानशी राग । तरजा छन्द ।

जय रे जय रे जय, श्रीकृष्णचैतन्य
आपनि अवनी अवतार ।
अहह लोकेर भाग्ये, पृथिवी सोहाग करे,
श्री पद याहार अलङ्कार ॥१२६
त्रिजगत-दीप-नव द्वीपेरे उदय कैल,
करुणा-किरण-परकाशे ।
अनेक दिनेर यत, भकत पियासी छिल,
धाओल प्रेम-प्रतिआशे ॥१२७
मधुमय कमले येन, षटपद भ्रमराबुले,
येन चाँद-चकोरिर मेलि ।
वरियार मेघ देखि, चातक फुकारे येन,
पिउ पिउ डाके मातोयालि ॥१२८
नाचये भावक भोरा, प्रेम वरिषये गोरा,
हुङ्कार गर्जन सिंहनादे ।
अधनेर धन येन, हाराइया पेयेछे हेन,
अनुगत आरतिया काँदे ॥१२९
वनेर हातिया येन, वन-दावानले पुड़ि,
अमिया सायरे दिल झाँप ।
ऐछन प्रेमार रङ्गे, अङ्ग डुवायल गो,
पासरल पूरवेर ताप ॥१३०
डालि रे ठाकुर बले, केह मालसाट मारे,
प्रेमानन्दे आपना पासरे ।
ये प्रेम लखिमी मागे, करजुड़ि अनुरागे,
अविचारे विलाय सबारे ॥१३१
कि कहिब आर कथा अनन्त भुलिल यथा,
किबा रस प्रेमार माधुरी ।
शेष बलिये यारे, शिरे धरे एसंसारे,
सेइ आजु निताइ नाम धरि ॥१३२
प्रेमरसे गरगर, ना चिने आपन पर,
सवारे बुझाय एइ कथा ।
पदतल ताल-भरे, धरणी टलमल करे,
जिनि मदमत्त हाती माता ॥१३३
आर अपरूप शुन, महेश अद्वैत नाम,
यार गुण-गाने आगोयान ।
चैतन्य-ठाकुर-सने, प्रेमरस-आलापने,
पासरिल ए योग गेयान ॥१३४
रसिक संगीर संगे, प्रेम बिलासइ रंगे,
सबारे बुझाय अविरोधे ।

एइ दुइ ठाकुर बहि, दयार ठाकुर नाहि,
या लागि उदय गोराचाँदे ॥१३५
जय जय मङ्गल पड़े, सर्व्वजने हरि बले,
सबे करे प्रेम प्रति आश ।
ब्रह्मार दुर्ल्लभ प्रेमे, सबे अभिलाषी गो,
हासि कहे ए लोचन दास ॥२३६

वराड़ी राग । दिशा ।

हरि राम राम हय रे हय ॥मूर्च्छा॥
आलो मुइ गोरार निछनि लेया मरि ।
गोरा-रूपेर गुणेर वालाइ लइया ।
विलाइल प्रेम गोरा जगत भरिया ॥
आरे रे आरे आरे आरे हय रे ॥ध्रु॥

जय जय श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्द ।
जय जय अद्वैत-आचार्य्य सुखानन्द ॥१३७
गदाधर पण्डित जय जय नरहरि ।
जय जय श्रीनिवास भक्ति अधिकारी ॥१३८
चैतन्य गोसाँइर यत प्रिय भक्तगण ।
सबार चरण हृदे करिये वन्दन ॥१३९
कहिब चैतन्य कथा शुन सावधाने ।
अवतार कलियुगे हइल येमने ॥१४०
मुरारी गुपत बेजा प्रभु-तत्व जाने ।
दामोदर पण्डित पुछिला ताँर स्थाने ॥१४१
कह शुनि कि लागि गौराङ्ग अवतार ।
शुनिते आनन्द चिते हइछे आमार ॥१४२
केने श्यामवर्ण त्यजि हैला गौरतनु ।
केने बा कीर्त्तने लुटे गाये माखे रेणु ॥१४३
केने बा नागर वेश-छाड़िया सन्न्यास ।
केने देशे देशे बुले करिया हुताश ॥१४४
केने कान्दे राधा राधा गोविन्द बलिया ।
केने घरे घरे बुले प्रेम याचाइय ॥१४५
कहिब सकल कथा परम निगूढ़ ।
या शुनिले त्राण पाय अखिलेर मूढ़ ॥१४६
शुनिया मुरारि कहे—शुनह पण्डित ।
ऐइ सब तत्व तोमाय करिब विदित ॥१४७
सत्ययुगे चारि अंश धर्मशास्त्रे कय ।
त्रेताय त्रिभाग धर्म गणना करय ॥१४८
द्वापरे अर्द्धेक धर्म कहिये तोमारे ।
कलियुगे एक अंश धर्मेर विचारे ॥१४९
अधर्म बाढ़िल-धर्म हइल ये क्षीण ।
स्वधर्म त्यजिल-वर्ण आश्रम विहीन ॥१५०
पापमय घोर आन्धियार हैल कलि ।
मजिल सकल लोक-अधर्म बिकलि ॥१५१
धर्महीन देखिया नारद महामुनि ।
कलि तरिबारे दया कहिला आपनि ॥१५२
भाविलेन कलिसर्प गिलिल सबारे ।
मने हैल धर्म संस्थापन करिबारे ॥१५३
कृष्ण बिनु धर्म केहो ना पारे स्थापिते ।
अवश्य आनिब कृष्ण कलिते त्वरिते ॥१५४
भक्त-इच्छा गोविन्देर हय सर्वकाल ।
वेदपुराण शास्त्रे से आछये विचार ॥१५५
यदि कृष्णदास मुइ हङ सर्वथाय ।
कलिते आनिब तवे प्रभु यदुराय ॥१५६
देखोँ आगे कलियुग करे कोन कर्म ।
तबे से आनिब कृष्ण सर्वमय धर्म ॥१५७
आनिब सकल देवगण ताँर संगे ।
अस्त्र-पारिषद आदि करि साङ्गोपाङ्गे॥१५८
ब्रह्मा आदि देवगण सनकादि मुनि ।
पृथिवीते जनमिब देवी कात्यायनी ॥१५९
द्वारकाय यत आछे आर यदुवंशे ।
पृथिवीते जनमिब निज निज अंशे ॥१६०

कहिब सकल कथा शुन सावधाने ।
पृथिवीते अवतार हइल येनमने ॥१६१
सब अवतार सार गोरा अवतार ।
एमन करुणा कभु नाहि हये आर ॥१६२
परदुःखे कातर नारद महामुनि ।
कृष्ण-कथारस-गान दिवस रजनी ॥१६३
कृष्णकथा-लोभे बुले संसार भ्रमिया ।
ना शुनिल कृष्ण नाम जगत चाहिया ॥१६४
कृष्ण रसे गद गद आध आध भाष ।
क्षणेक रोदन क्षणे अट्ट अट्ट हास ॥१६५
वीणा-सने गुण गाय झरे आँखि-नीर ।
कृष्णरसावेश मुनिर अन्तर बाहिर ॥१६६
ऐछन प्रेमार रङ्गे अंग गड़ाइया ।
ना शुनिल कृष्णनाम जगत घुरिया ॥१६७
अन्तरे दुःखित मुनि विस्मित हियाय ।
लोक-निस्तारण-हेतु ना देखि उपाय ॥१६८
दंशिल सकल लोके कलि कालसर्पे ।
निरन्तर दगध मुगध माया दर्पे ॥१६९
शिश्नोदर परायण जगत भरिया ।
मूर्च्छित सकल लोक कृष्ण पासरिया ॥१७०
लोभ मोह काम क्रोध मद अभिमाने ।
निरन्तर सिञ्चे हिय गरल सेचने ॥१७१
'ए आमि आमार' बलि मरे अकारणे ।
के आपनि के आपना किछुइ ना जाने ॥१७२
ऐछन लोकेर दुःख देखि महामुनि ।
अन्तरे चिन्तित हैया मने मने गुणि ॥१७३
घोर कलियुगे जीवेर ना देखि निस्तार ।
भ्रमिते भ्रमिते गेला द्वारकार द्वार ॥१७४
द्वारकार ठाकुर देव देव शिरोमणि ।
सत्यभामा गृहे सुखे वञ्चिया रजनी ॥१७५
प्रभाते उठिया कैल ये विधि उचित ।
रुक्मिणीर घरे याब करिला इङ्गित ॥१७६
बुझिया रुक्मिणीदेवी आपना मङ्गल ।
धरिते ना पारे अंग करे टलमल ॥१७७
गृह सम्मार्ज्जन करे अंगेर सुवेश ।
नानाविध वाद्य बाजे आनन्द अशेष ॥१७८
सुमङ्गल पूर्णघट घृत बाति ज्वले ।
प्रभु शुभ आगमन कैला हेन काले ॥१७९
मित्रवृन्दा नग्नजिता सुशीला सुबाला ।
प्रभु निर्मञ्छन करे आनन्दे विह्वला ॥१८०
सुवासित गन्धजल प्रभु काछे आनि ।
पाद प्रक्षालन करे देवी श्रीरुक्मिणी ॥१८१
आपन सम्पद पद धरि निज बुके ।
अनुरागे नेहारइ क्षणे देइ मुखे ॥१८२
हृदये श्रीपद धरि कान्दये रुक्मिणी ।
विस्मित हइया किछु पुछे चक्रपाणि ॥१८३
कान्दनार हेतु किछु ना बुझि तुमार ।
कि लागि कान्दह देवि ! कह समाचार ॥१८४
तुमि प्राणाधिका मोर जगजने जाने ।
तोमार अधिक केबा कह ना आपने ॥१८५
किबा अवज्ञाय तोर आज्ञा ना पालिल ।
स्वरूपे कहना देवी ! कि दोष करिल ॥१८६
एकमात्र पूरुबे ये परिहास कैल ।
आजिह तोमार चित्ते से कथा आछिल ॥१८७
कत परणति कैल विनय करिया ।
तभु ना घुछिल तोर ए कठिन हिया ॥१८८
ऐछन निष्ठुर वाणी प्रभु मुखे शुनि ।
सरस सम्भाबे किछु कहये रुक्मिणी ॥१८९
अन्तर कठिन मोर कभु नहे आन ।
एक महाभाग्य सबे तुमि मोर प्राण ॥१९०

तोमार पदारविन्द तो हइते अधिक ।
आजिह नाचये शिव पिबइ माध्वीक ॥१६१
जगते यतेक सब तोर सुगोचर ।
सबे ना जानह पद-प्रेमार उत्तर ॥१६२
यदि राधा भाव हृदे कर आरोपण ।
तबे से जानिबे निज प्रेमार लक्षण ॥१६३
ए बोल शुनिया प्रभुर हिया चमत्कार ।
कि बैले कि बैले देवि ! कह आरबार ॥१६४
भालमते ना शुनिल ये बलिला तुमि ।
ऐछन कि आछे याहा नाहि जानि आमि ॥१६५
एहेन अद्भुत कथा शुनि मोर हिया ।
बाढ़ये आरति किछु विस्मय पाइया ॥१६६
हेन कि दुर्ल्लभ पद आछे त्रिजगते ।
आश्चर्य्य मानिये याहा देखिते शुनिते ॥१६७
तोर मुखे शुनि मोर अगोचर आछे ।
आनन्दे आमार हिया कि जानि करिछे ॥१६८
कह कह कह देवि ! एहेन विश्वास ।
चरण-महिमा कहे ए लोचन दास ॥१६९

धानशी राग ।

बले देवी रुक्मिणी, शुन प्रभुगुणमणि,
चित्ते किछु ना भाविह आन ।
या लागि कान्दिये आमि, से कथा ता जान तुमि
आर यत सब तुमि जान ॥१
तोमार पद—कमले, कि आछे कतेक बले,
भालो ना जानह तुमि इहा ।
ए पद आमार घरे, छाड़ि याबे अन्यत्तरे,
ता लागि कान्दये मोर हिया ॥२
ए पद-पदम-गन्धे, याय येइ दिग-अन्ते,
से दिक छाड़ये जरा मृतुच ।
पद-मकरन्द-पाने, जीवे येइ येइ जने,
तारे किबा दिवा-निशि-ऋतु ॥३
पादपद्म-सुपरागे, ये धरये अनुरागे,
तार पद पाइ पुण्यभागे ।
कान्दिया कहिये कथा, यत आछे मनव्यथा,
सब निवेदिये तुया आगे ॥४
तुमि ठाकुर सबाकार, तोमार ठाकुर आर,
के आछये सकले संसारे ।
तोर पद-अनुरागे’ ए-रस-आस्वाद पावे,
एइ पँहु निवेदिये तोरे ॥५
राधामात्र जाने इहा, ओ रस पिरीति पाइया,
यत सुख यतेक सोहाग ।
भकत-विस्मय गुणे, येइ कथा रात्रिदिने,
कि ना रस प्रेम अनुराग ॥६
ब्रह्मा आदि देवा देवी, लखिमी चरण सेवी,
से पुन आपनि अनुरागे ।
कर-कमले कमला’ अति-आरति-बिभोला,
एइ पाद पद्म—सेवा मागे ॥७
से पुन हृदये रहि, शय्याय शुतये नाहि,
वदने वदन रहु रमा ।
ए-पद-माधुरी-आशे, सेहो ताहा नाहि वासे,
केबा कहु चरण महिमा ॥८
लखिमी आपन-सुख, से चाहे कातर मुख,
हेन पद परसाद प्रेमा ।
राधामात्र इहा जाने, ये भुञ्जिल वृन्दावने,
तार भाग्यपथे नाहि सीमा ॥९
ए पुन जगते धान्धा, तारि गुणे तुमि बान्धा,
आजिह ना छाड़ हिया जाप ।
राधानाम लैते आँखि, छल छल करे देखि,
हेन पद प्रेमार प्रताप ॥१०

ए पद आमार घरे,　　　उल्लसित अन्तरे,
कान्दि पुन विच्छेदेर डरे।
तोमार अधिक तोर,　　　श्री पदपङ्कज जोर'
अनुभवि करह विचारे ॥११
तुमि याहार धेयान,　　　तुमि समाधि गेयान,
तुमि मात्र सर्वत्र सहाय।
ए हेन तोमार दास,　　　तुया पदे करे आश,
एइ अपरूप बड़ मोय ॥१२
ये पदे लखिमी दासी,　　　से केने ता अभिलाषी,
ऐछन तोमार ठाकुराल।
ठाकुर हइया पुन,　　　तार भाल नाहि मान,
अविचारे तारे देह शाल ॥१३
पद-मकरन्द-रसे,　　　ये भुञ्जये अभिलाषे,
अक्षय अव्यय से भाण्डार।
किबा वाणी लख्मिनी,　　　आपनाके धन्य मानि,
बिनि सेवा परवश तार ॥१४
सालोक्यादि मुक्ति चारि,　　　तार पाछे अनुसारी,
नाहि चाय नयनेर कोणे।
ये पड़िल प्रेमरसे,　　　आर किबा तार वासे,
वैकुण्ठादि तुच्छ करि माने ॥१५
कर जुड़ि बलि पँहु,　　　ओ पद कमल महु,
मधुकर करि देह बर।
ओ-पद-विच्छेद-डरे,　　　एपाप पराण भुरे,
कभु ना छाड़िह मोर घर ॥१६
पद-अरविन्द-गुण,　　　रुक्मिणी कहिल शुन,
केवल करुणा परकाश।
ताहे से प्रभुर दया,　　　खलबल करे हिया,
गुण गाय ए लोचन दास ॥१७

———

धानशी राग।

ओ कि आरे हय हय ॥ मूर्च्छा ॥
हेन अपरूप कथा,　　शुन गोरा गुणगाथा,
श्रवण मङ्गल नाम हय।
आरे हय ॥ ध्रु ॥

शुनिया रुक्मिणी वाणी अन्तर उल्लासे।
अरुण कमल आँखि करुणा जले भासे ॥१
अङ्ग हेलाइया पहुँ लहु लहु बोले।
सिंहासने बसिया रुक्मिणी करि कोले ॥२
चिबुके दक्षिण कर बयान नेहाले।
उथलिल प्रेमसिन्धु आनन्द हिलोले ॥३
हेन अदभुत कथा कभु नाहि शुनि।
भुञ्जिब प्रेमार सुख कहिला आपनि ॥४
हेनकाले नारद आइला आचम्बित।
बयान विरस मुनिर अन्तरे चिन्तित ॥५
उठिया सम्भ्रमे देवी पाद्य अर्घ्य दिया।
बसाइला दिव्यासने कुशल पुछिया ॥६
ठाकुर उठिया कैल निविड़ आश्लेषे।
सरस सम्पद कथाय नारद सम्भाषे ॥७
अनुरागे राङा दुइ आँखि छल छल।
गदगद भाष मुनि करे टलमल ॥८
अङ्ग निरखिते आँखि भासे प्रेम नीरे।
कहिबारे चाहे किछु कहिते ना पारे ॥९
प्रभु सुधाइल मुनि! कह सुनिश्चित।
एहेन दुर्बल केन अन्तरे चिन्तित ॥१०
तुमि मोर प्राणाधिक मुइ तोर प्राण।
तोमारे दुःखित देखि हैनु आगोयान ॥११
नारद कहये प्रभु! कि कहिब आमि।
तुमि सर्वेश्वरेश्वर सर्व अन्तर्यामी ॥१२
तोर गुण गाने मोर अमिया आहार।

तोर गुण लोभे बुलँ ो सकल संसार ॥१३
कृष्णनाम ना शुनिल संसार भ्रमिया ।
निज मदे मत्त लोक तोमा पासरिया ॥१४
अहङ्कारे मुगध मूर्च्छित सर्व लोक ।
कृष्णहीन जीव देखि—एइ मोर शोक ॥१५
लोकेर निस्तार हेतु ना देखि उपाय ।
एइ मनःकथा मन सदाइ धेयाय ॥१६
निबेदिल अन्तरे ये छिल मोर दुख ।
तोर पद परसादे आर सब सुख ॥१७
हासिया कहेन प्रभु शुन महामुनि ।
पूरबेर यत कथा पासरिला तुमि ॥१८
कात्यायनी प्रतिज्ञा करिला येनमते ।
महेश संवाद महाप्रसाद—निमित्ते ॥१९
आर अपरूप कथा रुक्मिणी कहिल ।
शुनिया विह्वल आमि प्रतिज्ञा करिल ॥२०
भुञ्जिब प्रेमार सुख भुञ्जाइब लोके ।
दीन भाव प्रकाश करिब कलियुगे ॥२१
भकत जनेर संगे भकति करिया ।
निज प्रेम बिलाइब ईश्वर हइया ॥२२
गुण—नाम—सङ्कीर्तन प्रकट करिब ।
नवद्वीपे शची गृहे जनम लभिब ॥२३
गौर दीर्घ कलेबरे बाहु जानु सम ।
सुमेरु सुन्दर तनु अति मनोरम ॥२४
कहिते कहिते प्रभु गौरतनु हइला ।
देखिया नारद अति आनन्दित हइला ॥२५
सुमेरु सुन्दर तनु प्रेमार आवेशे ।
कहये लोचन गोरार प्रथम प्रकाशे ॥२६

———

श्रीराग । दिशा ।

औ कि गौराङ्ग जय जय ॥ मूर्च्छा ॥
किना मोर गौराङ्गप्रेम अमिया,
ओ कि गौराङ्ग आरे जय जय ॥ ध्रु ॥

देखिया नारद मुनि हरिष हियाय ।
वरिखये आँखि नीर सहस्र धाराय ॥१
कोटि इन्दु जिनि ज्योति कोटि रवितेजे ।
कोटि काम जिनि लीला गौरबर राजे ॥२
झलमल अङ्गतेज चाहिते ना पारि ।
आँखि मुदि रहे मुनि काँपे थरथरि ॥३
तेज सम्बरिया प्रभु नारदे नेहारे ।
अबश नारद देखि डाके उच्चस्वरे ॥४
सम्वित पाइया मुनि से रूप धेयाने ।
पुन दरशन लागि पियास नयाने ॥५
ठाकुर कहेन शुन मुनि महाभाग ।
अव्याहत गति तोमार सर्वत्र सोहाग ॥६
घोषणा करह शिव-ब्रह्मा-आदि लोके ।
गौर अवतार मुइ हब कलियुगे ॥७
गुण नाम सङ्कीर्तन प्रकाश करिब ।
निज भक्ति प्रेमरस सुख प्रचारिब ॥८
शत शत शाखा भक्तिपथे नाहि सीमा ।
एक मुख हउ लोक प्रचारिब प्रेमा ॥९
निज निज भक्तगण आर पारिषद ।
पृथिवीते जन्म लैया प्रेमभक्ति साध ॥१०
ऐछन श्रीमुख-वाणी शुनिया नारद ।
खण्डिल सकल दुःख पद परसाद ॥११
चलिला नारद मुनि वीणा बाजाइया ।
एइ मनःकथा—रसे परवश हइया ॥१२
कि देखिल अपरूप गोरा-रूप-ठाम ।
कि देखिल सकरुण अरुण नयान ॥१३

कि देखिल अमिया अधिक परकाश ।
कि देखिल श्रीमुखेर मधुरिम हास ॥१४
यत यत अवतार सबा हइते सार ।
कभु नाहि देखि हेन प्रेमार भाण्डार ॥१५
सफल जनम मोर सफल नयान ।
कि देखिनु गोरा रूप प्रसन्न वयान ॥१६
एहेन करुणा निधि कभु नाहि देखि ।
पासरिते नारि हिया जुड़ाइल आँखि ॥१७
चिन्तिते चिन्तिते मुनि चलि याय पथे ।
नैमिष अरण्येच देखा उद्धवेर साथे ॥१८
उद्धव संभ्रमे उठि पाद्य अर्घच दिया ।
दण्डवत करे भूमे चरणे पड़िया ॥१९
शुभदिन हेन माने आपनाके धन्य ।
शुभक्षणे देखा हइल नैमिष-अरण्य ॥२०
नारद तुलिया कैल दृढ़ आलिङ्गन ।
चुम्बन करिया लैला मस्तकेर घ्राण ॥२१
उद्धव आनिया दिला आसन बसिते ।
निज मनःकथा पुछे हासिते हासिते ॥२२
जनम सफल मोर दिन स्वतन्तर ।
एक निवेदँउ चिर वेदना अन्तर ॥२३
पूरबे त व्यास एइ नैमिष अरण्येच ।
वेद विचारिया जाड्य ना घुचिल मने ॥२४
तव परसादे कथा निगूढ़ शुनिल ।
लोक निस्तारण हेतु भागवत कैल ॥२५
तुमि सर्व तत्व वेत्ता प्रभु तत्व जान ।
बुझिया ठाकुर मने भविष्य वाखान' ॥२६
कलियुगे लोकेर निस्तार केनमते ।
पापावृत अन्ध लोक हृदय नयने ॥२७
सत्य त्रेता द्वापरेते लोकेर धर्म जानि ।
घोर कलियुगे जीवेर नाहि पाप विनि ॥२८
दया करि कह यदि घुचाओ सन्देह ।
तोमार अधिक आर दयावन्त केह ॥२९
हासिया कहये मुनि अन्तरे उल्लास ।
भाल सुधाइले हे उद्धव हरिदास ॥३०
परम निगूढ़ कथा कहि तोर सने ।
ऐ छन आछिल शोक बड़ मोर मने ॥३१
एखने जानिल मुँइ कलियुग धन्य ।
कलियुग बहि धन्य नाहि आर अन्य ॥३२
सत्य आदि युगधर्म आचार कठिन ।
कलियुग धर्म—हरिनाम परवीण ॥३३
नाम गुण सङ्कीर्तने बन्ध मुक्त हैया ।
नृत्यगीते बुले यम भय एड़ाइया ॥३४
आर अपरूप कथा शुन सावधाने ।
द्वारकाय ये देखिनु आपन नयाने ॥३५
एइ कथा कहे प्रभु रुक्मिणीर साथे ।
निज प्रेम बिलसिब हेन लय चिते ॥३६
सिंहासने बसिया रुक्मिणी करि कोले ।
अन्तरे चिन्तित मुँइ गेनु हेनकाले ॥३७
दुःखित देखिया प्रभु पुछिला आमारे ।
एहेन मुरति केने देखिये तोमारे ॥३८
एइ मनःकथा मुँइ कहिनु पद पाइया ।
प्रसन्न बदने प्रभु कहिला हासिया ॥३९
रुक्मिणी कहिल पद प्रेमार महिमा ।
शुनिया बिह्वल प्रभु आरति गरिमा ॥४०
भुञ्जिब प्रेमार सुख भुञ्जाइब लोके ।
दीनभाव प्रकाश करिब कलियुगे ॥४१
घोर कलियुग—पापमय धर्महीन ।
लोक बुझाबार तरे हैब महा दीन ॥४२

प्रेममय गौर दीर्घ सुवरण तनु ।
विशाल हृदय बाहु युग सम जानु ॥४३
कहिते कहिते प्रभु गौर तनु हैला ।
निज प्रेम बिलाइब प्रतिज्ञा करिला ॥४४
ये देखिल ये शुनिल कहिल तोमारे ।
घोषणा दिबारे याब सकल संसारे ॥४५
पृथिवीते जन्म' गिया प्रेमभक्ति लोभे ।
हेन अपरूप प्रभु हबे कलियुगे ॥४६
शुनिया नारद वाणी उद्धव विकल ।
चरणे पड़िया कान्दे आनन्दे विह्वल ॥४७
हेन अद्भुत कथा कहिले आमारे ।
जीव सञ्चारिले येन निर्जीव शरीरे ॥४८
जुड़ाइल देह मोर तोमार सम्भाषे ।
चलिला नारद वीणा बाजाइया उल्लासे ॥४९
जैमिनि भारते नारद उद्धव संवाद ।
शुनिया लोचन दासेर आनन्द उन्माद ॥५०
आमार वचने यदि प्रतीत ना हय ।
विचार करह पुँथि बत्रिश अध्याय ॥५१

———

भाटियारी राग । दिशा ।
मोर प्राण गोराचाँर आरे हय ॥

चलिला नारदमुनि वीणा गाय गुण ।
शुनिया विह्वल हिया पड़े पुन-पुन ॥१
क्षणेक रोदन क्षणे अट्ट अट्ट हास ।
क्षणेक काँपये क्षणे आध आध भाष ॥२
क्षणे हुहुङ्कार छाड़े मारे मालसाट ।
गोरा गोरा बलि कान्दे अन्तरे उचाट ॥३
पासरिते नारे गोरार सुमधुर प्रेम ।
अङ्ग झलमल तेज दिनकर येन ॥४
चलिते ना पारे प्रेमे अन्तर उल्लासे ।
आँखिर निमिषे गेला शिवेर कैलासे ॥५
महेश देखिब बलि बाढ़िल आनन्द ।
कहिब कृष्णेर कथा करिया प्रबन्ध ॥६
ऐछन आनन्द कथा गाहि तिन लोके ।
वृन्दावन धन प्रकाशिब कलियुगे ॥७
ये प्रेम याचये शिव विरिञ्चि अनन्त ।
ताहा बिलसिब कलि अधम दुरन्त ॥८
हेन अद्भुत कथा कहिब महेशे ।
शुनिया ठाकुर पाबे बड़इ सन्तोषे ॥९
कात्यायनी प्रसाद लइब पदधूलि ।
याँर पद परसादे हरिनाम बलि ॥१०
चिन्तिते चिन्तिते गेला महेशेर द्वार ।
सम्भ्रमे उठिला देखि नन्दी महाकाल ॥११
परणाम करि नन्दी गेला अभ्यन्तरे ।
पार्वती महेश यथा निज अन्तःपुरे ॥१२
जानाइला द्वारेते नारद आगमन ।
आनन्द हृदये दँहे चलिला तखन ॥१३
नारद देखिया हासि सम्भाषे ठाकुर ।
चरणे पड़िला मुनि भक्त सुचतुर ॥१४
महेश विशेष जाने वैष्णव महिमा ।
नारदे गौरव करे प्रकाशिया प्रेमा ॥१५
गाढ़ आलिङ्गन करे अन्तर सन्तोषे ।
चरणे पड़िया मुनि देवीके सम्भाषे ॥१६
करे धरि लैया गेला नारद तपोधने ।
गौरव करिया दिल बसिते आसने ॥१७
पुत्र स्नेहे नारदेरे पुछे कात्यायनी ।
कुशल मङ्गल कह प्रिय महामुनि ॥१८
चतुर्दश भुवनेर तुमि तत्व जान ।
आजि कोथा हइते तब शुभ आगमन ॥१९

नारद कहये शुन अद्भुत कथा ।
जगत निस्तार हेतु तुमि माता पिता ॥२०
पूरबेर यत कथा पासरिले तुमि ।
चरणे धरिया एबे स्मराइब आमि ॥२१
आद्योपान्त यत कथा कहि तोर स्थाने ।
शुनिया प्रसाद मोरे करिबे आपने ॥२२
पूरबे प्रभुरे किछु पुछिल उद्धव ।
तब अन्तर्द्धाने किबा पृथिवी रहिब ॥२३
भकत रहिब किवा एइ महि माझे ।
शुनिया ठाकुर योग कहे निज काजे ॥२४
आमि जल आमि स्थल आमि मही वृक्ष ।
आमि देव गन्धर्व आमि यक्ष रक्ष ॥२५
उत्पत्ति प्रलय आमि सर्वजीव प्राण ।
आमि सर्वमय आमार काँहा अन्तर्द्धान ॥२६
ऐछन ठाकुर वाणी शुनिया उद्धव ।
बुके कर हानि कहे निज अनुभव ॥२७
तुमि सर्वमय प्रभु आमि इहा जानि ।
तोमार अधिक तोर पद दुइखानि ॥२८
ये पड़िल पदनख चन्द्रिकार पाशे ।
आर कि कहिब सेइ काहा नाहि बासे ॥२९

तथाहि श्रीमद्भागवते (११।३।४६) उद्धववाक्यं

त्वयोपभुक्त-स्रग्-गन्ध-वासोऽलङ्कार-चर्चिताः ।
उच्छिष्ट भोजिनो दासास्तव मायां जयेमहि ॥३०

श्रीउद्धवने कहा हे भगवन् ! तुम्हारे उच्छिष्ट भोजी दास हमसब हैं। हमसब तुम्हारे प्रसादी माल्य चन्दन, वस्त्र अलंकार प्रभृति से अलङ्कृत होकर माया को पराभूत करेंगे।

मोर बल—उच्छिष्ट भुञ्जिया हरि-दास ।
तोर माया जिनि तोर उच्छिष्टेर आश ॥३१
ऐछन ठाकुर आर उद्धवेर कथा ।
शुनिया आमार मने लागि गेल व्यथा ॥३२
एतदिन धरि मोर पथ परिचय ।
आजिह ना जानँो मुइ उच्छिष्ट निश्चय ॥३३
उच्छिष्टेर बले हरिदास बल धरे ।
प्रभु विद्यमाने उच्छिष्टेरे पुरस्करे ॥३४
हेन महाप्रसाद मुइ ना भुञ्जिल कभु ।
अन्तरे जानिलुँ मोरे बञ्चियाछे प्रभु ॥३५
एइ महाप्रसाद मुइ भुञ्जिये कोन् बुद्धि ।
केमन उपाये परसन्न हबे विधि ॥३६
एइ मनःकथा रसे वैकुण्ठेते गेनु ।
लखिनी देवीर सेवा बहुविध कैनु ॥३७
परसन्न हैया देवी परितोषे बैल ।
'माग बर दिव' बलि प्रतिज्ञा करिल ॥३८
प्रतिज्ञा शुनिया मने प्रतिआश हइल ।
सेइ से कुशल वाणी पुन दढ़ाइल ॥३९
कातर बयाने बैलुँ करजोड़ करि ।
चिरदिन अन्तरे वेदना बड़ मोरि ॥४०
सर्वलोक जाने तोर सेवक नारद ।
ना भुञ्जिल महाप्रभुर उच्छिष्ट प्रसाद ॥४१
प्रभुर उच्छिष्ट मोरे देह एक मुष्टि ।
चरणे धरिया बलि—चाह शुभ दृष्टि ॥४२
शुनिया लखिमी देवी बयान विस्मय ।
कहिते लागिला किछु करिया विनय ॥४३
प्रभु आज्ञा नाहि कारे दिबार उच्छिष्ट ।
आज्ञा लङ्घि मुनि तोरे दिब अवशिष्ट ॥४४
विलम्ब करह यदि आमारे चाहिया ।
विलम्बे से दिते पारि सञ्जात करिया ॥४५
ऐछन मधुर वाणी बैल ठाकुराणी ।
भाल भाल बैलुँ काज बुझिया आपनि ॥४६

कतदिन बहि एकदिन पँहु रसे ।
कर परशिया देवी बसाइला पाशे ॥४७
हासिया कहये कथा सरस सम्भाषे ।
अनुमति लैया देवी अन्तर तरासे ॥४८
प्रणति करिया कहे निवेदन आछे ।
हृदय तरास मोर घुछाह सङ्कोचे ॥४९
सङ्कट घुचाओ प्रभु राख निज दासी ।
चरणे धरिया बलि शुन गुणराशी ॥५०
लखिमी कातरे कहे प्रभुके तरासे ।
सुदर्शन पाने प्रभु चाहे विस्मय हासे ॥५१
काँपे चक्र सुदर्शन बले कातर वाणी ।
लखिमी संकट प्रभु किछुइ ना जानि ॥५२
लखिमी कहये सुदर्शनेर नाहि दोष ।
नारदेर दाये मोर हैल हियाशोष ॥५३
द्वादश वत्सर मोर अज्ञात सेवा कैल ।
परितोष पाइया सेये प्रतिज्ञा करिल ॥५४
'माग बर दिब' बलि कैलूँ मुइ सत्य ।
पुन दढ़ाइल मुनि सेइ कथा नित्य ॥५५
मागिल ये बर तोर उच्छिष्टेर तरे ।
मोर शक्ति किबा तोर आज्ञा लङ्घिबारे ॥५६
एइ कथा कैलुँ मोर प्रमाद निकट ।
राख निज दासी प्रभु ! घुछाओ सङ्कट ॥५७
बुझिया कहिल प्रभु शुनह लखिमी ।
बड़इ प्रमाद कथा कहिले ये तुमि ॥५८
निभृते से दिह येन आमि नाहि जानि ।
शुनिया सन्तोष पाइल प्रभु आज्ञावाणी ॥५९
कतदिन बहि सेइ जगत जननी ।
महाप्रसाद मोरे दिला डाकिया आपनि ॥६०
लखिमी प्रसादे महाप्रसाद पाइनु ।
पूर्ण मनोरथे महाप्रसाद भुञ्जिनु ॥६१
कोटि इन्दु सम ज्योति कोटि काम रूप ।
कोटि दिवकर तेज हैल अपरूप ॥६२
शतगुण तेज महाप्रसाद परशे ।
वीना बाजाइया सुखे आइलुँ कैलासे ॥६३
आमाके देखिया पुन पुछिला महेश ।
हासिया कहिला आजि अपरूप वेश ॥६४
अति अपरूप तेज देखिते विस्मय ।
आजि केन हेन रूप कह ना निश्चय ॥६५
आद्योपान्त यत कथा सकलि कहिल ।
शुनिया महेश पुन आमारे गञ्जिल ॥६६
ऐछन दुर्ल्लभ महाप्रसाद पाइया ।
एकेलाभुञ्जिला प्रभु ! आमारे ना दिया ॥६७
आमा देखिवारे पुन आसियाछ प्रेमे ।
एहेन दुर्ल्लभ धन ना आनिले केने ॥६८
शुनिया महेश वाणी लज्जित हइया ।
नमित बयाने चाहि नखे नख दिया ॥६९
आछे महाप्रसाद बलिया दिलुँ सुखे ।
पाछु ना गणिल हर दिल निज मुखे ॥७०
आनन्दे नाचये महा महेश ठाकुर ।
पदतल भरे मही करे दुरदुर ॥७१
प्रेमभरे टलमल सुमेरु पर्वत ।
कम्पमाना वसुमती चमक सर्वत्र ॥७२
प्रेमे योगेश्वर काँपे आपना ना धरे ।
रसातल याय मही महेशेर भरे ॥७३
अनन्तेर फणा ठेके कच्छपेर पृष्ठे ।
ग्रीबा वक्र करि कूर्म चाहे एकदृष्टे ॥७४
वक्र ग्रीबा करे भरे यत दिगव्राह ।
हुहुङ्कार तादे फाटे ब्रह्माण्ड कटाह ॥७५

महेशेर भर मही सहिते ना पारि ।
आस्ते व्यस्ते गेला यथा महेशेर पुरी ॥७६
कात्यायनी स्थाने मही कहे करजुड़ि ।
महेशेर नृत्य भरे प्राण आमि छाड़ि ॥७७
प्रतिकार कर देवी ! सृष्टि राखिवारे ।
प्रमाद पड़िल नहे सकल संसारे ॥७८
पृथिवीर कातरवाणी शुनिया पार्वती ।
सत्वरे चलिया गेला यथा पशुपति ॥७९
पूर्णरसावेशे नाचे देवदेव राय ।
महेश आवेश भांगे कर्कश कथाय ॥८०
विषम वेदने अन्तर दुःखित हइया ।
कर्कश हृदये बले पार्वती देखिया ॥८१
कि कैले कि कैले देवी ! हेन अविधान ।
ए आवेश भङ्ग मोर मरण समान ॥८२
तो अधिक रिपु मोर नाहि त्रिभुवने ।
एहेने आनन्द मोर घुछाइले केने ॥८३
शुनिया कातरे देवी बले आरवार ।
पृथिवी देखह प्रभु ! सम्मुखे तोमार ॥८४
तव पद ताल भरे याय रसातल ।
सृष्टि नष्ट हय तेँइ कैलुँ कदुत्तर ॥८५
अपराध कैल– दोष क्षम महाशय ।
हासिया महेश दिला पृथिवी बिदाय ॥८६
पुनरपि पुछे देवी मिनति करिया ।
एक निवेदँउ प्रभु सन्देह लागिया ॥८७
कृष्णेर आवेशे तुमि नाच प्रतिदिने ।
आजि मही रसातल याय कि कारणे ॥८८
कोटि दिवाकर तेज किरण प्रचण्ड ।
अति अपरूप तेज ना धरे ब्रह्माण्ड ॥८९
आजि केने अपरूप आनन्द अनन्त ।
सविशेष कह मोरे प्रभु गुणवन्त ॥९०

महेश कहये शुन आनन्द काहिनि ।
प्रभुर उच्छिष्ट मोरे दिला महामुनि ॥९१
दुर्ल्लभ से त्रिजगते विष्णु निवेदित ।
विशेष अधरामृत वेदे अविदित ॥९२
हेन महाप्रसाद आमि करिनु भक्षण ।
सफल जनम मोर आजि सुभक्षण ॥९३
नारद प्रसादे महाप्रसाद परश ।
कहिल मङ्गल कथा सम्पद सरस ॥९४
शुनि ठाकुरेर वाणी कहे महामाया ।
एतदिने जानिल तोमार यत दया ॥९५
अर्द्ध अंगे धर मोरे सकलि कपट ।
कैतव पिरीति आजि हइल प्रकट ॥९६
एहेन दुर्ल्लभ महाप्रसाद पाइया ।
एकेला खाइला देव ! आमारे ना दिया ॥९७
लज्जाय अवश हैया बले शूलपाणि ।
ए धनेर अधिकारी ना हओ भवानि ॥९८
शुनिया रुषिला हिया-बले आद्याशक्ति ।
वैष्णवी से नाम मोर करोँ विष्णुभक्ति ॥९९
प्रतिज्ञा करिछो एइ सबार भितरे ।
जानिवे आमारे दया प्रभुर अन्तरे ॥१००
एइ महाप्रसाद मुइ दिमु जगतेरे ।
मोर प्रतिज्ञाय खाबे शृगाल कुक्कुरे ॥१०१
ऐछन प्रतिज्ञा यबे कात्यायनी कइल ।
जानिया वैकुण्ठनाथ आपने आइल ॥१०२
सम्भ्रमे उठिया देवी कैल परणाम ।
निवेदन कैल देवी सजल नयान ॥१०३
कातर अन्तरे कहे छाड़िया निश्वास ।
आनन्द हृदये कहे ए लोचन दास ॥१०४

विभाषराग ।

बले पँहु लहु बोले, नह देवी उतरोले,
ए कि हय तोर व्यवहार ।
तोर माया बन्धे अन्ध सकल संसारखण्ड,
तेँइ सृष्टि आछये आमार ॥१
तुमि मोर आद्याशक्ति, तुमि से जानह भक्ति,
तुमि मोर प्रकृति स्वरूपा ।
आमि तोमा बहि नहि, तुमि आमा बहि कहि,
ये करह तोमारि से कृपा ॥२
हर गौरी आराधने, सर्वलोक आमा जाने,
हर गौरी मोर आत्मतनु ।
तोर परसन्न हिया, घुचिल सकल माया,
घुचिल स्व पर भेद भिनु ॥३
ऐछन प्रतिज्ञा तोर एहेन उच्छिष्ट मोर,
अविरोधे दिबे सबाकारे ।
महाप्रसादेर गन्धे, सबे हबे मुक्त बन्धे,
घुछाइबे निर्बन्ध विचारे ॥४
शुनिया प्रभुर वाणी, पुन कहे कात्यायनी,
मोरे यदि दया थाके चिते ।
अवश्य उच्छिष्ट दिबे, भुञ्जिब सकल जीबे,
अविरोधे पाबे त्रिजगते ॥५
पुन कहे गुणमणि, शुन देवी कात्यायनी,
प्रतिज्ञा पालिब आछे कथा ।
पूरब रहस्य एइ, तोमारे निभृते कइ,
घुछिबे संसार ज्वर चिन्ता ॥६
पूरुब रहस्य यत, केहो नाहि जाने तत्व,
समुद्र मथिल देवगणे ।
मन्दार मथन दण्ड, रज्जु फणि अनन्त,
लोम उपजिल घरिषणे ॥७
से मोर कलपतरु, याचक याचिजा करु,
यार यत येइ मने बासे ।
ये जन ये धन चाय, से जन से धन पाय,
विमुख ना करे प्रतिआशे ॥८
तहिँ एक दिव्य तेजे, चारु तरुवर माझे,
श्रीचैतन्य अधिष्ठित देहे ।
से मोर सहज रूप, केवल करुणा भूप,
आर यत सेह सम नहे ॥९
यत यत अवतार, सेइ से आश्रयागार,
लीला कला विलासेर तरे ।
पृथिवीते रहिब आमि, त्रिजगत नाथ स्वामी,
करुणा करिब परचारे ॥१०
कलियुगे सविशेष, सङ्कीर्तन परकाशे,
ह'ब आमि मनुज मूरति ।
तनु ह'ब हेम गौर, प्रतिज्ञा पालिब तोर,
प्रचारिब परम पिरीति ॥११
ए मोर अन्तर हिया, तोमारे कहिल इहा,
सम्बरि राखह निजमने ।
सब अवतार सार, कलि गोरा अवतार,
निस्तारिब लोक निज गुणे ॥१२
विष्णु कात्यायनी सने, संवाद ब्रह्मपुराणे,
उत्कलखण्डेते परकाश ।
राजा से प्रताप रुद्र, सर्व गुणेर समुद्र,
व्यक्त कैल अनेक प्रकाश ॥१३
ए कथा तोमार सने, स्मरण नाहिक केने,
हासि हासि बले मुनिराजे ।
प्रभु आज्ञा दिल मोरे, घोषणा दिबार तरे,
कलियुग अवतार काजे ॥१४
सबे कलियुग पाइया, पृथ्वीते जनम' गिया
नाम विपर्यह निज अंशे ।
सेइ सर्व लोकनाथ, सर्व परिषद साथ,
जनम लभिब विप्रवंशे ॥१५

शुनिया नारद वाणी, उल्लसित शूलपाणि,
उल्लसिता देवी कात्यायनी।
आनन्दे भरल पुरी, सबे बले हरि हरि,
उठिल आनन्द रोल ध्वनि ॥१६

चलिला नारद मुनि, उठिल वीणार ध्वनि
से स्वर मधुर रस सिञ्चे।
अमिया मधुर धारा, श्रवणे पूरिल पारा,
त्रिभुवन जन मन रञ्जे ॥१७

आपना पासरे याइते, चलिते ना पारे पथे,
अनुरागे अरुण बदन।
ना जानिल पथश्रम, भाले बिन्दु बिन्दु घर्म,
उपनीत ब्रह्मार सदन ॥१८

देखि ब्रह्मा अति व्यस्ते, महा हरषित चिते,
नारदे करिला अभ्युत्थान।
मुनि परणाम करे, पड़िया चरण तले,
तुलि ब्रह्मा कैला आलिङ्गन ॥१९

पुछिल कुशल वाणी, आगमने धन्य मानि,
चिर दरशन अनुरागे।
हेन लय मोर मने, देखि तोर सुबदने,
रहस्य कहिबे महाभागे ॥२०

तोर मुखोदित वाणी, श्रवणे अमिया मानि,
हिया जुड़ाउक कह शुनि।
कैछन लोकेर कथा, किबा प्रभु गुणगाथा,
कि देखिले कि शुनिले तुमि, ॥२१

कथा कहे परिपाटी, नारदेर आरभटी,
स्फुरित अधर दोले अङ्ग।
वाष्प जल भरे आँखि, अरुण अधर देखि,
कथारम्भे द्विगुण आनन्द ॥२२

शुन अदभुत कथा, तुमि सब सृष्टिकर्ता,
तोर बले बुलिये ब्रह्माण्ड।
युग अनुरूप रूपे, धर्मकर्म करे लोके,
कलियुगे पाप परचण्ड ॥२३

द्वापर शेषेर लोके, सर्व दुःखमय शोके,
देखि मोर कलिके तरास।
कातर हृदय मोर गेलुँ पँहु बराबर,
सुधाइनु कलिर साहस ॥२४

कलि पापमय युगे, निस्तार पाइबे लोके,
कह प्रभु केमन उपाय।
ब्राह्मण से वेदहीन, सर्वलोक धर्मक्षीण,
मोर हियाय ए बड़ संशय ॥२५

शुनिया कातर वाणी, बले पँहु गुणमणि,
दूर कर अन्तरेर चिन्ता।
कलि लोक निस्तारिब, निजभक्ति प्रचारिब,
अवतार करिब मो तथा ॥२६

दान व्रत तप धर्म, आर यत यत कर्म,
सब अरोपिब हरिनामे।
कलि महादोष देख, एक महागुण लेख,
मुक्त-बन्ध ह'बे सङ्कीर्तने ॥२७

घोषणा बोलह तुमि, शिव ब्रह्मा आदि भूमि,
सबे जनमह कलि पाइया।
करुणा-विग्रह आमि, जनम लभिब भूमि,
युग अपरूप गौर हइया ॥२८

शुभ छन्द। पाहिड़ा राग। दिशा।
जय जय गौराङ्गचाँद-नदीया उदय कलिकाले। मूर्च्छा

आहा रे आमार प्रभुर गुण शुन।
ए तिन भुवन आलो कैल यार गुण॥
नाहारे गौराचाँदेर कथा शुन।
आरे कि आरे हय हय॥ ध्रु॥

ऐछन शुनिया वाणी विरिञ्चि ठाकुर ।
हृदये रोपिल प्रेम अमिया अङ्कुर ॥१
गण्ड पुलकित आँखि अश्रुधारा गले ।
आनन्दे विह्वल ब्रह्मा मुनि कैला कोले ॥२
बोलये विरिञ्चि शुन मुनि मुनिबर ।
तोर परसादे आजि प्रसन्न अन्तर ॥३
विषय विपाके सब मायाबन्धे अन्ध ।
तोर परसादे लोक हबे मुक्त-बन्ध ॥४
लोक निस्तारण हेतु तोर मात्र चिन्ता ।
पूरुब रहस्य किछु कहि शुन बार्ता ॥५
सनकादि मुनि यत आमार नन्दने ।
अन्तर प्रकाशि किछु कैल मोर स्थाने ॥६
आमारे कहिल तुमि प्रभुर प्रिय पुत्र ।
ये किछु पुछिये तार कह मोरे सूत्र ॥७
अचिन्त्य अव्यय प्रभु नित्यानन्द ब्रह्म ।
सूक्ष्म सर्वेश्वरेश्वर सर्वमय धर्म ॥८
अनन्त निर्गुण निरञ्जन निराकार ।
आद्य मध्य अन्त नाहि ए बुद्धि विचार ॥९
ऐछन ठाकुर हैया पृथिवीते जन्म ।
अज हैया जन्मि करे प्राकृतेर कर्म ॥१०
वृन्दावने रास कैल गोपबधू-सङ्गे ।
कामिजन येन काम–रस करे रंगे ॥११
कि नारी पुरुष सेइ आत्मा सब जने ।
ऐछन रमणे ताँर असन्तोष केने ॥१२
ऐछन सन्देह मोर हृदये विशाल ।
तत्त्व कह चतुर्मुख घुछाओ जञ्जाल ॥१३
ऐछन सन्देह कथा सनकादि बैल ।
शुनिया हृदये मोर विस्मय लागिल ॥१४
अन्तर चिन्ताय मोर मलिन बदन ।
मोर अगोचर ए प्रभुर आचरण ॥१५

वेदान्तेर पार प्रभु केबा जाने तत्त्व ।
आमा हेन कत ब्रह्मा आछे शत शत ॥१६
एइ मनःकथा आमि कहिबारे गेले ।
हंसरूपे आसि प्रभु बैल हेनकाले ॥१७
चारि श्लोक समाधान कहिल आमारे ।
सेइ समाधान आमि दिनु तो सबारे ॥१८
सन्तोष पाइल सेइ सब महाशय ।
परितोषे गेला यार यथा मने लय ॥१९
सेइ चतुःश्लोक तत्त्व सर्व रस भाण्ड ।
तार तत्त्व जाने हेन नाहिक ब्रह्माण्ड ॥२०
कतदिन बसि व्यास नैमिष अरण्ये ।
सब बिबरिल यत भारत पुराणे ॥२१
ना थुइल शेष किछु बलिबार तरे ।
जाड्य ना घुचिल तबु पड़िल फाँपरे ॥२२
मूर्च्छा गेला व्यासदेव अरण्य-भितरे ।
जानि उपजिल दया प्रभुर अन्तरे ॥२३
आमारे डाकिया दिल चारि श्लोक एइ ।
एइ पर धन लैया याह व्यास ठाँइ ॥२४
व्यास नाहि जाने मोर आचरण तत्त्व ।
एइ श्लोक अनुसारे करु भागवत ॥२५
सेइ भागवत तुमि कहिओ नारदे ।
तार जिह्वाय सरस्वती कहिब शबदे ॥२६
एतेके कहिये तुमि शुन मुनिवर ।
युगे युगे तुमि मात्र जीवे दया कर ॥२७
जीवेर निस्तार-हेतु तुमि महाजन ।
भागवत दिव्य शास्त्र-नाहि आर धन ॥२८
निर्विषय भागवत स्वतन्त्र पुरुख ।
ना बुझिया शास्त्र-ज्ञान करये मूरुख ॥२९
हेन भागवत कथा कृष्ण अवतारे ।
गर्गमुनि बैल नामकरणेर काले ॥३०

एवे से स्मरण हैल गर्गमुनि वाणी ।
चारियुग अनुरूप बरण काहिनी ॥३१

तथाहि श्रीमद्भागवते (१०।८।१३)—

आसन् वर्णास्त्रयो ह्यस्य गृह्णतोऽनुयुगं तनुः ।
शुक्लो रक्तस्तथा पीत इदानीं कृष्णतां गतः ॥३२

श्रीगर्गमुनि बोले,—महाराज नन्द ! यह बालक युग युग में विविध वर्ण धारण करता है, सत्य, त्रेता कलियुग में क्रमशः शुक्ल, रक्त, पीत वर्ण होते हैं। इस द्वापर युगमें बालक का वर्ण कृष्ण है ॥

सत्ययुगे श्वेतवर्ण लोके परचार ।
त्रेताय अरुण कान्ति यज्ञ नाम तार ॥३३
एबे कृष्णवर्ण एइ नन्देर कुमार ।
परिशेषे पीतवर्ण हइब अवतार ॥३४
क्रमभंग बलि श्लोके सन्देह याहार ।
चारियुगे तिनवर्ण ए बुद्धि ताहार ॥३५
श्वेत रक्त पीत कृष्ण-चारि वर्ण कहि ।
चारियुग बहि आर एक युग नाहि ॥३६
नहे वा बिचारि देख गौर कोन् युगे ।
आस्ते-व्यस्ते कहिले सन्देह नाहि भांगे ॥३७
इहार बिचार किछु कहि ताहा शुन ।
अज्ञ जनेरे इहा बुझाब एखने ॥३८
एकादशे एइ कथा कय भागवते ।
राजा प्रश्न कैल करभाजन मुनिते ॥३९

तथाहि श्रीमद्भागवते (११।५।१९) राजोवाच—

कस्मिन् काले स भगवान् किं वर्णः कीदृशोनृभिः ।
नाम्ना वा केन विधिना पूज्यते तदिहोच्यतां ॥ ४०॥

निमि महाराज ने कहा, मुनिबर ! भगवान् किसयुग में किस प्रकार वर्ण धारण करते हैं। मानवगण, किस नाम से एवं किस विधि से उनकी अर्चना करते हैं, उसका वर्णन आप करें।

कोन् काले भगवान् कोन् वर्ण धरे ।
कि नाम ताहार सेइ हैल कोन् काले ॥४१
कोन् काले कोन् धर्म केमन मानुष ।
कोन् विधि पूजा करे किसे वा सन्तोष ॥४२

तथाहि श्रीमद्भागवते (११।५।२०-२२)—

श्रीकरभाजन उवाच—

कृतं त्रेता द्वापरश्च कलिरित्येषु केशवः ।
नानावर्णाभिधाकारो तानैव विधिनेज्यते ॥४३
कृते शुक्लश्चतुर्बाहुर्जटिलो वल्कलाम्बरः ।
कृष्णाजिनोपवीताक्षो विभ्रद्दण्ड-कमण्डलु ॥४४
मनुष्यास्तु तदा शान्ता निर्वैराः सुहृदः समाः ।
यजन्ति तपसा देवं शमेन च दमेन च ॥४५

सत्य, त्रेता, द्वापर एवं कलियुग में श्रीकृष्ण विभिन्न आकृति विशिष्ट होते हैं। अतएव विभिन्न विधि से पूजित होते हैं। सत्ययुग में भगवान्, शुक्लवर्ण, चतुर्भुज, जटा बल्कल मृगचर्म, उपवीत, अक्षमाला, दण्ड एवं कमण्डलु धारण करते हैं।

उस समय मानवगण शान्त, शत्रुताशून्य, मित्रभावापन्न एवं समभाव बिशिष्ट होते हैं। अन्तरिन्द्रिय, वहिरिन्द्रिजयरूप शम, दम, एवं तपस्या के द्वारा श्रीभगवान् की अर्चना करते हैं।

राजाके कहिल मुनि शुन सावधाने ।
सत्य आदि युगे लोके पूजये येमने ॥४६
सत्ययुगे श्वेत वर्ण हंस-नाम धरे ।
चतुर्बाहु तपोधर्म जटाबाकल परे ॥४७
दण्ड कमण्डलु कृष्णसार उपवीत ।
शान्त निर्वैर सम लोकेर चरित ॥४८

त्रेतायां यथा श्रीमद्भागवते (११।५।२४-२५)—

त्रेतायां रक्तवर्णोऽसौ चतुर्बाहुस्त्रिमेखलः ।
हिरण्यकेशस्त्रय्यात्मा स्रुक्स्रुवाद्युपलक्षणः ॥ ४९॥

तं तदा मनुजा देवं सर्वदेवमयं हरिम् ।
यजन्ति विद्यया त्रय्या धर्मिष्ठा ब्रह्मवादिनः ॥५०

त्रेतायुग में भगवान्—रक्तवर्ण, चतुर्भुज, मेखला युक्त, स्वर्णवर्ण केशधारी वेदात्मा एवं स्रुक स्रुवयुक्त होते हैं। उस समय मनुष्यगण, वेदज्ञ ब्रह्मवादी होकर सर्व देवमय श्रीहरि की अर्चना वेद विधि से करते हैं।

सेइ प्रभु त्रेतायुगे रक्त वर्ण धरे ।
चारि बाहु त्रिमेखल स्रुक्-स्रुव करे ॥५१
तप्त—हाटक केश शिरेर उपरे ।
सर्व देवमय प्रभु आपे यज्ञ करे ॥५२
त्रयी विद्या आत्मा तार नाम धरे 'यज्ञ' ।
वेद विधिमते—पूजा करे धर्मविज्ञ ॥५३

द्वापरे यथा श्रीमद्भागवते (११।५।२७-२८, ३१)

द्वापरे भगवान् श्यामः पीतवासा निजायुधः ।
श्रीवत्सादिभिरङ्कैश्च लक्षणैरुपलक्षितः ॥५४
तं तदा पुरुषं मर्त्त्या महाराजोपलक्षणं ।
यजन्ति वेदतन्त्राभ्यां परं जिज्ञासवो नृपः ॥५५
इति द्वापर उर्वीश स्तुवन्ति जगदीश्वरं ।
नानातन्त्र-विधानेन कलावपि तथा शृणुः ॥५६

द्वापर युग में भगवान्, श्यामवर्ण, पीताम्बर, निजायुधधारी एवं श्रीवत्सादि चिह्न से अङ्कित होते हैं। उस समय तत्वजिज्ञासु मानवगण, महाराज लक्षणान्वित परमपुरुष उन श्रीभगवान् की अर्चना वेद एवं तन्त्र विधि के द्वारा करते हैं।

हे राजन्! द्वापर में उपासकगण, नानातन्त्र विधान से जगदीश्वर की स्तुति करते हैं। कलियुग में तन्त्र विधि से जिस प्रकार उपासना होती है उसका वर्णन करता हूँ।

द्वापरेते श्यामवर्ण धरे भागवान् ।
श्रीवत्स कौस्तुभ अंगे पीत परिधान ॥५७
महाराजराजाधिप लक्षण विराजे ।
भग्यवान् जन तारे वेद-तन्त्रे यजे ॥५८

एइमत प्रति युगे युगे अवतार ।
से युगे ये युग-धर्म—करये प्रचार ॥५९
सत्य त्रेता द्वापर तिन युग गेल ।
श्वेत रक्त आर कृष्ण बरण कहिल ॥६०
तिन युगे तिन वर्ण कैया दिल मुनि ।
सावधाने शुन कलियुगेर काहिनी ॥६१

तथाहि कलौ यथा श्रीमद्भागवते (११।५।३२)

कृष्णवर्णं त्विषाकृष्णं साङ्गोपाङ्गास्त्र-पार्षदम् ।
यज्ञैः सङ्कीर्तन प्रायैर्यजन्ति हि सुमेधसः ॥६२

कलियुग में कृष्णकीर्तन परायण, पीतवर्ण विशिष्ट भगवान् होते हैं, एवं अङ्ग, उपाङ्ग, अस्त्र, पार्षद परिवेष्टित होते हैं, सुपण्डितगण, सङ्कीर्तनमय यज्ञ के द्वारा उन श्रीभगवान् की अर्चना करते हैं।

'कृष्ण' एइ दुइ वर्ण आछये याहाते ।
'कृष्णवर्ण' नाम तार कहे भागवते ॥६३
कान्तिते 'अकृष्ण' तेँह शुन सर्वजन ।
गोरा गोरा बलि एबे गाइते कारण ॥६४
सांगोपांगो अस्त्र पारिषद यत आर ।
सबार सहित प्रभु कैला अवतार ॥६५
अंग बलराम बलि—तेँइ कहि 'सांग' ।
उप अंग आभरण तेँइ से 'उपांग' ॥६६
सुदर्शन आदि अस्त्र आर पारिषद ।
संहति आइला सबे प्रह्लाद नारद ॥६७
यत यत अवतारेर दास दासी यत ।
सांगोपांगे अवतार—नाम लैब कत ॥६८
एतेके वैष्णव सब कहे अनुभवे ।
ये नाम आछिल तथा येबा नाम एबे ॥६९
सामान्य मानुषे इहा जानिब केमने ।
विश्वास करिते नारे अधमेर मने ॥७०
एइ तो कारणे मुनि कहिल वचन ।
सेइ से जानिब इहा सुमेधा ये जन ॥७१

सङ्कीर्तन प्राय यज्ञ–धर्म परकाश ।
सुमेधा जनार ताते परम उल्लास ॥७२
एतेके बलिये–नहे सुमेधा ये जन ।
चारियुगे तिनवर्ण ताहार वाखान ॥७३
कान्ति कृष्ण वर्ण कृष्ण-दुइ हैल एक ।
आर दुइ युगेर वर्ण एक नाहि देख ॥७४
कलि वा द्वापर दुइ युगे एक वर्ण ।
दुइ युगे एक वर्ण–एइ तार मर्म ॥७५
सत्य त्रेता श्वेत रक्त दुइ वर्ण आछे ।
कलि द्वापरेते एक वर्ण हइल पाछे ॥७६
गर्गमुनिर वाक्य केन बल क्रमभंग ।
क्रमभंग नहे–शुन आछे बड़ रंग ॥७७
भूत भविष्य वर्तमान कहिबार तरे ।
तिन काल कहे चारि युगेर भितरे ॥७८
सत्य त्रेता बहि द्वापर वर्तमान ।
द्वापरेते कृष्ण अवतार कृष्ण नाम ॥७९
'इदानीं' बलिया तेँइ बैल गर्गमुनि ।
भूतकाल भितरे भविष्यकाल गणि ॥८०
भविष्यत्ता तार आछे इहातेइ जानि ।
भूतेर भितरे तेँइ भविष्य वाखानि ॥८१
भविष्यत्ता भूत मध्य-प्रमाणे पण्डित ।
निश्चयता आछेतार–एइत इङ्गित ॥८२
तथापि ताहाते 'तथा' शब्ददिल मुनि ।
शुक्ल रक्त बलि 'तथा' कि काज काहिणी ॥८३
'तथा' शब्द पूर्व उक्त शुक्ल रक्त यथा ।
कलियुगे पीतवर्ण ह'ब हरि तथा ॥८४
एबे द्वापरेते एइ कृष्ण ताके गेल ।
गर्गमुनि चारि युगे तिन काल कहिल ॥८५
आमार वचन ये ना लय अवज्ञाते ।
कि कारणे 'तथा' शब्द कहुक सभाते ॥८६
एतेक कहिये आमि शुन मोर बोल ।
कहये लोचन कथा ना ठेलिह मोर ॥८७
आर अपरूप कथा शुन श्लोकेर व्याख्यान ।
एइ मात्र व्याख्या-इहा परम प्रमाण ॥८८
एइ त व्याख्यार आछे अपूर्व पूर्वपक्ष ।
युग अवतार कृष्ण–ए बड़ अशक्य ॥८९
आर युगे अवतार-अंश कला लिखि ।
आपने से भगवान्–भागवत साक्षी ॥९०

तथाहि श्रीमद्भागवते (१।३।२८)

एते चांशकलाः पुंसः कृष्णस्तु भगवान् स्वयं ।
इन्द्रारि व्याकुलं लोकं मृड़यन्ति युगे युगे ॥९१

पूर्वोक्त अवतार समूह के मध्य में कोई कोई परमपुरुष श्रीभगवान् के अंश, अंश के अंश हैं। किन्तु श्रीकृष्ण ही स्वयं भगवान् हैं। युगयुग में असुरपीड़ित मनुष्यों की रक्षा हेतु आप सब अवतीर्ण होते हैं।

युग अवतार कृष्ण कहिव केमते ।
ए बचन तबे केने कहे भागवते ॥९२
वृन्दावनचन्द्र युग–अवतार नहे ।
पूर्ण पूर्ण ब्रह्म कृष्ण भागवत कहे ॥९३
एइ त कारणे किछु कहि ताहा शुन ।
अवज्ञा ना कर केहो-कर अवधान ॥९४

तथाहि श्रीमद्भागवते (१०।८।१३)

आसन् वर्णास्त्रयो ह्यस्य गृह्णतोऽनुयुगं तनूः ।
शुक्लो रक्तस्तथा पीत इदानीं कृष्णतां गतः ॥९५

श्रीगर्गमुनि बोले, महाराज नन्द ! यह बालक युग युग में विभिन्न वर्ण धारण करते हैं, सत्य, त्रेता कलियुग में क्रमशः शुक्ल, रक्त, पीतवर्ण होते हैं। इस द्वापर युग में बालक का वर्ण कृष्ण है।

गर्गमुनि कहिल गभीर बड़ बोधे ।
केमने बुझिब इहा आमरा अबोधे ॥९६
बुद्धिमान् हय यदि जाने भक्तजने ।
बुद्धिमान् लोक ताहा करये प्रमाणे ॥९७

चारियुगे चारि वर्ण कहिलेन मुनि ।
भूत भविष्य वर्तमान त्रिकाल काहिनी ॥९८
चारियुगे तिन काल कहिबारे चाहे ।
तेँइ सब कथा व्यास एक श्लोके कहे ॥९९
सत्य त्रेता द्वापर आर युग कलि ।
श्वेत रक्तपीत कृष्ण चौयुग-भितरि ॥१००
चारि युग आछे चारि काल हय यबे ।
एइमत अवतार क्रम हय तबे ॥१०१
तबे से कहिले हय यथाक्रम कथा ।
यथा अवतार कथा अनुसारे तथा ॥१०२
एतेके से क्रमभङ्ग हेन श्लोके देखे ।
'तथा' शब्दे भविष्यकाल गर्गमुनि लेखे ॥१०३
केबा अवतार आर चारि वर्ण कार ।
केबा अवतारी किबा विचार इहार ॥१०४
आपनेहि भगवान् जन्मि यदुवंशे ।
पृथिवीते अवतार करे तार अंशे ॥१०५
विशेष्य बिशेषण करि बाखानय केने ।
एइ से सन्देह इथे-द्विधा ते कारणे ॥१०६
यत चतुर्युग ताते अंश अवतार ।
युग अनुरूप वर्ण हय ता सबार ॥१०७
धर्मसंस्थापन-अधर्मविनाश-निमित्ते ।
प्रतियुगे अंश-अवतार हय ताते ॥१०८
आपनेइ द्वापरे भगवान हरि ।
अवतार शिरोमणि सबार उपरि ॥१०९
एबे कृष्णताके-गेल गर्गमुनि कहे ।
श्यामसुन्दर कृष्ण-वर्ण कृष्ण नहे ॥११०
प्रति द्वापरे कृष्णनाम कृष्णवर्ण ।
तद्रूपता गेल प्रभु एइ शुन मर्म ॥१११
येन द्वापरेते कृष्ण तेन गौरचन्द्र ।
कलि-द्वापरेते अन्य युगेर स्वतन्त्र ॥११२
एइ दुइ युगे एक पूर्ण अवतार ।
व्यास कहिलेन उदाहरण इहार ॥११३

तथाहि बृहत्सहस्रनामस्तोत्रे—

तमाराध्य तथा शम्भुं ग्रहिष्यामि बरं तदा ।
द्वापरादौ युगे भूत्वा कलया मानुषादिषु ॥११४
स्वागमैः कल्पितैस्त्वञ्च जनान् मद्विमुखान् कुरु ।
माञ्च गोपय येन स्यात् सृष्टिरेषोत्तरोत्तरा ॥११५

मैं आराधना करके बर प्राप्त करूँगा कि—द्वापरादि युग में अवतीर्ण होकर कल्पित शास्त्र के द्वारा जनगण को भगवद्विमुख करो, एवं ईश्वर की गोपन करो, इससे उत्तरोत्तर सृष्टि की वृद्धि होगी।

आर किछु कहि शुन भगवद् गीता ।
श्रीमुखोदित प्रभुर निज निज कथा ॥११६

तथाहि श्रीमद्भगवत्गीतायां (४।८)

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥११७

श्रीभगवान् बोले—मैं साधुगण की रक्षा एवं पापीगणों को विनष्ट करने के निमित्त एवं धर्म संस्थापन हेतु युगयुग में अवतीर्ण होता हूं।

साधुजन-परित्राण धर्म-संस्थापन ।
अधर्म विनाश हेतु कहिल ए मर्म ॥११८
युगे युगे जन्म आमि लभिये आपनि ।
एइ दुइ युगे मात्र आपनेइ आमि ॥११९
एक युग-शब्दे कहि आर नाम 'युगे ।
विशेषण-विशेष्य करि वाखानय लोके ॥१२०
युग विशेषण युगेर-तेँइ 'युग' बलि ।
एक त द्वापर युग आर युग कलि ॥१२१
युगे युगे चारियुग बलि केने बल ।
कृष्ण पूर्ण अवतार अंश केन कर ॥१२२
से चारियुगेर कथा आर ठाँइ कहे ।
ताहाओ कहिब आमि मन देह ताहे ॥१२३

तथाहि तत्रैव (४।७)—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥१२४

श्रीभगवान् बोले—मैं साधुगण की रक्षा एवं पापीगणों को विनष्ट करने के निमित्त एवं धर्म संस्थापन हेतु युग युग में अवतीर्ण होता हूँ।

ये ये काले ये ये युगे धर्मेर हय हानि ।
अधर्मेर अभ्युत्थान से से काले जानि ॥१२५
तदा काले आपनाके करिये सृजन ।
प्रतियुगे अवतार अंशेते जनम ॥१२६
एतेके कहिये आमि शुन मोर बोल ।
कहये लोचन—कथा ना ठेलिह मोर ॥१२७
कलियुगे गौर कृष्ण जानियाछि आमि ।
विशेष सन्देह मोर घुछाइले तुमि ॥१२८
आर अपरूप शुन कलियुग मर्म ।
आश्रये निस्तारे लोक सङ्कीर्तन-धर्म ॥१२९
दान व्रत तप होम स्वाध्याय संयम ।
वासना विषय यत ए विधि नियम ॥१३०
कर्मकाण्ड रूयाति शुने सब मायाबन्ध ।
नाम-गुण महिमा ना जाने छार अन्ध ॥१३१
कर्मसूत्रे बन्दी जीव भ्रमिते भ्रमिते ।
निवृत्ति ना हय कर्म—नारे सम्बरिते ॥१३२
प्रलयेर काले सब कर्मबन्ध घुछे ।
हेन बन्ध घुछे कृष्णकथा यबे पुछे ॥१३३
हेन गुण सङ्कीर्तन—कलियुग धर्म ।
घोरपापमय बले ना जानिया मर्म ॥१३४
युग-धर्म सङ्कीर्तन घुचाबे केमने ।
केबा धर्म संस्थापन करे प्रभु बिने ॥१३५
प्रभुर प्रतिज्ञा शुन गीतार वचने ।
प्रभु अवतार हय येइ येइ कारणे ॥१३६

तथाहि श्रीमद्भगवद्गीतायाम् (४।८)

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्म-संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥१३७

हे कुन्तीनन्दन ! जब जब धर्म की ग्लानि एवं अधर्म का अभुचदय होता है, उस समय मैं अवतीर्णहोता हूं।

साधुजन-परित्राण अधर्म बिनाश ।
धर्म संस्थापन प्रति युगेते प्रकाश ॥१३८
कलियुगे सङ्कीर्तन धर्म इहा मान ।
कलि गोरा अवतार कभु नहे आन ॥१३९
इहा बलि मुनि सने कोलाकोलि करे ।
आनन्दे विह्वल ब्रह्मा आपना पासरे ॥१४०
एक कहे आर उठे गोरा गुणेर प्रभाय ।
सकल इन्द्रिय सुख करिबारे चाय ॥१४१
आर कथा शुन प्रभुर सहस्रेक-नामे ।
एक काले दुइ नाम बैल एकु ठामे ॥१४२

तथाहि महाभारते शान्तिपर्वणि—

सुवर्णवर्णो हेमाङ्गो वराङ्गश्चन्दनाङ्गदी ।
सन्न्यासकृत् शमः शान्तो निष्ठाशान्तिपरायणः॥ १४३॥

सुवर्णवर्ण, हेमाङ्ग, वराङ्ग अर्थात् परमसुन्दर चन्दनमालाशोभित, सन्न्यासग्रहणकारी शम-श्रीकृष्ण भक्ति प्रकाशक, शान्त, निष्ठा, एवं शान्तिपरायण हैं।

हेमगौर कलेवर सुवरण द्युति ।
सन्न्यास कारणे से परम महायति ॥१४४
भविष्य पुराणे शुन कृष्णेर प्रतिज्ञा ।
कलौ जनमिब तिनबार एइ आज्ञा ॥१४५

तथाहि भविष्यपुराणे—

जायध्वं भुवि जायध्वं जायध्वं भक्तरूपिणः ।
कलौ सङ्कीर्तनारम्भे भविष्यामि शचीसुतः ॥ १४६॥

श्रीकृष्ण बोले, हे देवगण ! भक्तरूप धारण कर पृथिवी में अवतीर्ण हो जाओ, कलियुग मे सङ्कीर्तन आरम्भ में मैं शचीसुत होकर जन्मग्रहण करूँगा।

आर अपरूप कथा शुन सावधाने।
कलियुग धर्म मर्म विचारह मने ॥१४७
पापमय कलियुग–कहे सर्वजने।
अधर्म प्रकट धर्म क्षीण आचरणे ॥१४८
हरिनाम सङ्कीर्तन–एइ धर्म तार।
एइ हरिनाम पुन सर्व धर्म सार ॥१४९
दान–व्रत–तप–होम–यज्ञ–जप–फल।
सर्वशक्ति नामे दिल–नाम महाबल ॥१५०
विषयि विषय भोगे नाम करे चिन्ता।
आगे भोग देइ पाछे हरिभक्ति दाता ॥१५१
श्रद्धावन्त जन यदि हरिगुण गाय।
सब सुख छाड़ि प्रभु तार काछे धाय ॥१५२
एहेन कृष्णेर नाम गुण सङ्कीर्तन।
पापमय कलियुगे कहे सर्व धर्म ॥१५३
युगेर स्वभावे इहा युग धर्म कहि।
पापमय कलियुगे पर–धर्म एहि ॥१५४
यदि बा बलिबा पाप-दुरछेद्य कारणे।
प्रकाशिला महाखड़्ग नाम सङ्कीर्तने ॥१५५
सत्य आदि प्रजा केने कलि जन्म मागे।
हरिपरायण लोक हबे कलियुगे ॥१५६

तथाहि श्रीमद्भागवते (११।५।३८)—

कृतादिषु प्रजा राजन् कलाविच्छन्ति सम्भवम्।
कलौ खलु भविष्यन्ति नारायण-परायणाः ॥
१५७॥

महाराज! सत्य, त्रेता, द्वापर युग के मानवगण कलियुग में जन्मग्रहण करने का अभिलाषी हैं। कारण कलियुग में जन्म होने से विष्णुभक्त होने का सौभाग्य लाभ होगा।

कृष्ण अवतारे केने लैया सर्वशक्ति।
पापाशय जने नाहि देइ प्रेमभक्ति ॥१५८
ऐछन करुणा कह कोन् युगे आर।
ना भजिते प्रेम देय कोन् अवतार ॥१५९
पापनाश हेतु आछे धर्म कर्म तीर्थ।
कभु कि से धर्मशील पाय तार अर्थ ॥१६०
एतेके जानिल कलि सर्व युग सार।
सङ्कीर्तन धर्म वहि धर्म नाहि आर ॥१६१
एतेक विचार कथा कहिल विरिञ्चि।
शुनिया नारद वीणा बाजाय सुसञ्चि ॥१६२
एहेन अमृत ब्रह्मा नारद सम्भाष।
आनन्द हियाय कहे ए लोचन दास ॥१६३

———

सिन्धुड़ा राग।

नारद कहये ब्रह्मा कि कहिब आर।
ये किछु कहिला हृदये आमार ॥१
कर्म बन्धे भ्रमिते भ्रमिते कत कल्प।
दैवे से वैष्णव सेवा घटे यदि अल्प ॥२
ताँर महोत्तम कथा निगूढ़ शुनिया।
पालये परम यत्ने सावधान हैया ॥३
तबे मुक्तबन्ध हैया कृष्ण पर हय।
सालोक्यादि मुक्ति चारि अँगुले ना छुँय ॥४
तारपर प्रेमभक्ति गोपिकार भाव।
के आछये अधिकारी से सब आलाप ॥५
या सबार वश प्रभु त्रिजगत नाथ।
प्राकृत जने से येन कुलटार साथ ॥६
गोपिकार प्रेमकथा के कहिते जाने।
गुल्मलता जन्म उद्धव मागे यार गुणे ॥७

तथाहि श्रीभागवते (१०।४७।६१)—

आसामहो चरणरेणु जुषामहं स्याम्
वृन्दावने किमपि गुल्मलतौषधीनाम्।

या दुस्त्यजं स्वजनमार्य्यपथञ्च हित्वा
भेजुर्मुकुन्द पदवीं श्रुतिर्भिविमृग्याम् ॥८

श्रीउद्धव ने कहा—मैं कब श्रीवृन्दावन में गोपीचरणरेणु सेवी लता ओषधि होकर जन्मग्रहण करूँगा, जिन्होंने स्वजन आर्यपथ को छोड़कर श्रुति अन्वेषणीय श्रीकृष्णपदारविन्द का आश्रय ग्रहण किया है।

ये प्रभुर चरण ब्रह्मा महेश धेयाय।
योगीन्द्र मुनीन्द्र खुँजि उद्देश ना पाय ॥९
अशेषे लखिमी यार पद करे सेवा।
वाक् अगोचर यार पदमधु प्रभा ॥१०
चारि वेदे याहार महत्व नित्य गाय।
अनन्त महिमा गुण ओर नाहि पाय ॥११
शेष महाशय यार शयनेर शय्या।
हेन प्रभु करे गोपीकार परिचर्य्या ॥१२
आर कत भकत आछये शत शत।
हेनरूपे वश कैल गोपी अनुगत ॥१३
कोथा कृष्ण परमात्मा निगूढ़ ए प्रेमा।
कोथा गोपी वनचरी व्यभिचारी कामा ?१४
ऐछन भक्ति तत्व बुझिबारे चाइ।
परम निगूढ़ भक्ति इहा बहि नाइ ॥१५
हेन भक्ति प्रचारिब कलियुगे प्रभु।
लखिमी अनन्त याहा पाय नाहि कभु ॥१६
सबारे बोलह ब्रह्मा एइ ब्रह्मलोके।
निज निज अंशे जन्म लउक कलियुगे ॥१७
इहा बलि महामुनि परम उल्लासे।
चलिला नारद—कहे ए लोचन दासे ॥१८

मल्लार राग। त्रिपदी छन्द।

प्राण गोराचाँद नारे हय ॥ध्रु॥

चलिला नारदमुनि, वीणार गर्जन शुनि,
श्रवण मङ्गल गाय गीत—ना।
अमिया सिञ्चिल येन जगत जनेर मन,
त्रिभुवन आनन्दे चमकित—ना ॥१
जय जय हरिबोल, आनन्दमय कल्लोल,
घोषणा पड़िल तिनलोके—ना।
अस्त्र पारिषद सङ्गे, जनम लभिब रङ्गे,
गोरा अवतार कलियुगे—ना ॥२
ऐछन करुणाकर, देखिब नयाने मोर,
अमिया सिञ्चिब कलेवरे—ना।
जय जय जगन्नाथ, यतेक भकत साथ,
निज भक्ति करिब प्रचारे—ना ॥३
कलियुग धनि धनि, कलि लोक सब धनि,
अवनी नदीया यार माझे—ना।
धनि मिश्र पुरन्दर, भवनेते याँहार,
जनम लभिब गोराराजे—ना ॥४
ए सब सङ्गोर सङ्गे, हरिगुण गाब रङ्गे,
बाजिब मृदङ्ग करताल—ना।
भुबन चतुर्द्दशे, वरिखब प्रेमरसे,
कीर्तन करिब परचार—ना ॥५
वृन्दावन गुण रस, प्रणय से सरबस,
आपने आस्वादि दिब सबे—ना।
देव नाग नरगणे, आचण्डाल सब जने,
पियाइब याहा करि लोभे—ना ॥६
आनन्द आनन्द गुण, मङ्गल मङ्ल शुन,
वृन्दावन धन परकाश—ना।
सकल भुवन-पति, जनम लभिबे क्षिति,
आनन्दे भुलिल लोचन दास—ना ॥७

———

वराड़ी राग।

मोर प्राण रे आरे रे गोराचाँद नारे हय। ध्रु।
योगीन्द्र मुनिन्द्र इन्द्र चन्द्र आदि लोके।
शुनिया आनन्दमय नाचये कौतुके ॥१

अङ्कुरित मृत तरु येन देखे लोके ।
नारद आनन्दमय भ्रमये कौतुके ॥२
हेनमते भ्रमिते भ्रमिते आचम्बिते ।
धर्म विपर्य्यय देखे लोकेर चरिते ॥३
दान व्रत तपस्या छाड़िल सर्वजने ।
निज निज कर्म करे उदर पालने ॥४
कृष्ण उपासना धर्म छाड़िल ब्राह्मण ।
क्षत्र वैश्य शूद्र छाड़े ब्राह्मण सेवन ॥५
माता पिता गौरव छाड़िया सब जने ।
स्त्रीयेर गौरव करे काय वाक्य मने ॥६
तबे अनुमानि मुनि जागिल निश्चय ।
एइ कलियुग इथे नाहिक संशय ॥७
या लागिया तिन लोके घोषणा पड़िल ।
कारे निवेदिब सेइ कलियुग आइल ॥८
चिन्तित हइया मुनि बसिला धेयाने ।
आचम्बिते शुभवाणी उठिल गगने ॥९
जगन्नाथ दारुब्रह्म आमि नीलाचले ।
लोक निस्तारण हेतु समुद्रेर कूले ॥१०
पूरब वृत्तान्त नाहि स्मरण ये तोर ।
कात्यायनी प्रतिज्ञाय आज्ञा पाइले मोर ॥११
चल चल मुनिराज निलाचल पुरी ।
आचरिह जगन्नाथ आज्ञाअनुसारि ॥१२
चलिला नारद मुनि आनन्द हियाय ।
उठिल वीणार ध्वनि जगत जुड़ाय ॥१३
'हाहा जगन्नाथ' बलि अनुरागे धाय ।
देखिल श्रीमुखचन्द्र त्रिजगत राय ॥१४
यत अवतार तार आश्रय सदन ।
सब कला रसमय प्रसन्न वदन ॥१५
चरणे पड़िया मुनि बले करजुड़ि ।
कृपा कर जगन्नाथ ! आइला युग कलि ॥१६
महाघोर पापेते पड़िल सर्ब लोके ।
शिह्नोदर परायण मग्न महाशोके ॥१७
शुनिया ठाकुर किछु हासिया कहिल ।
कर परशिया तारे निभृते बलिल ॥१८
परम निगूढ़ कथा कहि तोर सने ।
गोलके चलह मुनि आमार वचने ॥१९

पाहिड़ा राग । त्रिपदी छन्द ।

वैकुण्ठ उपरि स्थान, गोलक याहार नाम,
श्रीगौरसुन्दर ताहे राजा ।
लखिमी अधिक नारी, कि पुरुष किबा स्त्री,
सुखमय सकल परजा ॥१
राधा आर रुक्मिणी, एइ दुइ ठाकुराणी,
तार अंशे यतेक नागरी ।
शत शत शाखा-भक्ति, ए दँहार लैया शक्ति,
सेबा करे हैया अनुचारी ॥२
आर देवी सत्यभामा, रूपे गुणे अनुपमा,
सब रस वैदग्धीर सीमा ।
लीला विलास लावण्य, सर्व-कला रस धन्य,
त्रिजगते रमणी परमा ॥३
सङ्गीत बलिये यारे, ताल सञ्चारण स्वरे,
शब्दब्रह्म जगते बाखाने ।
बलिये पञ्चम वेद, ये बुझये स्वरभेद,
बुद्धिरूपा सर्वत्र समाने ॥४
पुरुष ठाकुर अंश, सकल वैष्णव वंश,
रसमय रङ्ग नामापुरी ।
ऐछन महिमा तार, कहिते शकति कार,
एक मुखे कहिते ना पारि ॥५
यतेक गोपीकागणे, रास कैल वृन्दावने,
राधा आदि करि करे सेवा ।

द्वारकाय छिल यत, रुक्मिणीर अनुगत,
आर यत रस अनुभवा ॥६
भक्ति बिनु नाहि ताय, निरवधि यश गाय,
स्वतन्त्र हइया पराधीन ।
मुक्त पुन सर्वजन, प्रकृत जनेर हेन,
भकति करये येन दीन ॥७
सालोक्यादि चारि मुक्ति, वैकुण्ठनाथेर शक्ति,
भक्तिहीन आपने स्वतन्त्र ।
लखिमी सम्पदमय, दीनभाव नाहि रय,
भकति केबल परतन्त्र ॥८
शर्करा से आपने, निज स्वाद नाहि जाने,
परजना करे उपभोग ।
ऐछन मुकति पद, भक्ति पथे देइ बाध,
सब–पर प्रेमभक्तियोग ॥९
विधातार अगोचर, से पुरी आमार घर,
करुणा कारणे आइलुँ एथा ।
श्री चैतन्य सर्वेश्वर, गौर दीर्घ कलेवर,
देखिया घुछाह मनव्यथा ॥१०
ये रूपे देखिबे तथा, से रूपे आसिब हेथा,
कीर्तन करिब परचार ।
घुछाब सकल दुख, प्रचारिब प्रेमसुख,
कलिलोक करिब निस्तार ॥११
चलिला नारद मुनि, शुनि अपरूप वाणी,
वेद अगोचर एइ कथा ।
वैकुण्ठ उपर आर, वैकुण्ठ देखिब यार,
सकल भुवने गुण गाथा ॥१२
मुक्ति परमुक्ति आर, भागवतेर विचार,
शुनिल निगूढ़ यत कथा ।
लोक वेद अविदित, आर यत अबेकत,
बेकत देखिब आजि तथा ॥१३

अनुरागे धाय मुनि, वीणार शबद शुनि,
वैकुण्ठेर प्रजा हरषित ।
वैकुण्ठेर द्वारे गिया, प्रेमाय विह्वल हैया,
सुमङ्गल गाय गुण गीत ॥१४
देखिल वैकुण्ठ नाथ, सब परिषद साथ,
बसि आछे स्वर्ण सिंहासने ।
पड़िया चरण तले, मुनि परणाम करे,
तुलि पँहु कैल आलिङ्गने ॥१५
हासिया कहिल पँहु, कि तोर अन्तरे रहु,
कह मुनि हृदये सत्वरे ।
उत्कण्ठा हृदये मोर, पालिब वचन तोर,
अगोचर करिब गोचरे ॥१६
करजोड़े बले मुनि, तुमि सर्व अन्तर्य्यामी,
तोरे मुइ कि बलिब आर ।
दारुब्रह्म रूपे मोरे, ये कहिले अन्तरे,
सेइ रूप देखाह तुमार ॥१७
पँहु कहे शुन मुनि' निभृते कहिये आमि,
सेइ रूप सहज स्वरूप ।
तार छाया माया यत, अवतार शत शत,
से शुधु करुणामय भूप ॥१८
यार शक्ति छाया आमि, व्यापित सकल भूमि,
सर्वमय विष्णु सर्वसर्व ।
लक्ष्मी मोर अनुचरी, आर एइ मुक्ति चारि,
तोरे एइ कहिल सन्दर्भ ॥१९
यार छाया विष्णु आमि, सम्पद छाया लखिमी
वैकुण्ठेर छाया ए वैकुण्ठ ।
मुक्ति माया चारि मुक्ति, सबे अरोपिया शक्ति,
सेवे नाथ से पँहु वैकुण्ठ ॥२०

राधा मात्र प्रकृति, प्रेममय आकृति,
यार बश पुरुष प्रधान ।
प्रकृति दक्षिण बाम, ललिता विशाखा नाम,
तिन गुण शकति सन्धान ॥२१
निश्चय वचन मोरि, अमाया से गौरहरि,
प्रकट करुणा कल्पतरु ।
चल मुनि चलि याइ, सेइ महाप्रभु ठाँइ,
सकल भुवने शिक्षागुरु ॥२२
चलिला मुनीन्द्रराय, वीणा हरिगुण गाय,
आनन्दे अवश अङ्ग काँपे ।
पुलकित सब गा, आपाद मस्तक या,
प्रेमवारि दु'नयाने झाँपे ॥२३
प्रेम-मदे मातोयार, क्षणे हय चमत्कार,
क्षणे डाके गौराङ्ग बलिया ।
क्षणे आध पद याय, क्षणे क्षणे फिरि चाय,
क्षणे कान्दे क्षणे चले धाइया ॥२४
आचम्बिते वायु बहे, जुड़ाय सकल देहे,
कोटी चाँद जिनिया से ज्योति ।
श्रीपादपदम-गन्धे, आउलाय शरीर बन्धे,
हेन बुझि तँहि काम काँति ॥२५
अनेक मदनराय, अनुगत काजे धाय,
प्रेम बिनु ना देखिये लोक ।
ना दिवा रजनी जानि, ना देखिये भिनाभिनि,
सर्वजन हरिष अशोक ॥२६
गमन नटन लीला, वचन सङ्गीत कला,
नयान चाहनि आकर्षण ।
रङ्ग बिनु नाहि अङ्ग, भाब बिनु नाहि संग,
रसमय देहेर गठन ॥२७
तनु चिदानन्द मय, भूमि चिन्तामणि हय,
कल्पतरु सर्वतरु तथा ।
सुरभि यतेक सब, कामधेनु अभिनब,
उद्धवादिर आशा गुल्म-लता ॥२८
सब तरु कल्पद्रुम, तहिँ एक निरुपम,
रत्नवेदी तार चारि पाशे ।
स्वर्ण सिंहासन ताय, बसिया गौराङ्ग राय,
सरस मधुर लहु हासे ॥२९
सशाख मङ्गल घटे, सिंहासन सुनिकटे,
वाम पदाङ्गुष्ठ परशिया ।
रतन प्रदीप ज्वले, येन दिवाकर करे,
आलोकित जगत भरिया ॥३०
राधिका दक्षिण पाशे, अनुचरी करि काछे,
रतन कलस करि करे ।
वाम पासे रुक्मिणी, काछे करि संगिनीं,
रत्न घटे पूर्ण जल भरे ॥३१
नग्नजिता जले भरे, देइ मित्रवृन्दा-करे,
मित्रावृन्दा सुलक्षणा करे ।
से देय रुक्मिणी करे, देवी ढाले प्रभु शिरे,
अभिषेक सुरनदी जले ॥३२
तिलोत्तमा जल भरे, देय मधुप्रिया करे,
मधुप्रिया चन्द्रमुखि करे ।
से देय राधिका हाते, राइ ढाले प्रभु माथे,
अभिषेक करे गङ्गाजले ॥३३
सत्यभामा अन्तरे, दिव्य गन्ध करि करे,
दिव्य बस्त्र दिव्य अलङ्कार ।
लक्ष्मणा सुभद्रा भद्रा, सत्यभामा परतन्त्रा,
अनुक्रमे करे देइ तार ॥३४
आर दिव्य नारी यत, चारि पाशे कत शत,
दिव्य भूषा दिव्य उपहार ।
रतन स्तवक करे, रहे प्रभु बराबरे,
जय जय मङ्गल उच्चार ॥३५

गोलक नाथेर स्नान, इहा बहि नाहि आन,
आगमे कहिल एइ ध्यान ।
हेमगौर कलेवर, मन्त्र चारि अक्षर,
सहज वैकुण्ठनाथ श्याम ॥३६
श्याम देहे चारि हात, धरये वैकुण्ठनाथ,
चारि हस्ते चारि अस्त्र तार ।
हेम किरणीया पँहु, हेम अंगे हासे लहु,
द्विभुज शरीर शुन सार ॥३७
ऐछन समये मुनि, देखिया से गौरमणि,
विभोर पड़िला पदतले ।
आँखि मिलिबारे नारे, पुन चाहे देखिबारे,
सिनाइल नयनेर जले ॥३८
स्नान समाधिया पँहु, हासिया से लहु लहु,
नारदे तुलिया लैल कोले ।
घुचिल संशय चिन्ता, खण्डिल मनेर व्यथा,
पँहु प्रिय लहु लहु बोले ॥३९
मुनि बले महाप्रभु, हेन अपरूप कभु,
ना देखिनु ना शुनिनु आमि ।
जनम सफल आजि, देखिनु अमिया राजि,
धनि धनि आपनाके मानि ॥४०
ब्रह्मादि ना जाने तत्व, अवतार अविदित,
अचिन्त्य बलिया बलि तोमा ।
ज्योतिर्मय बले केह, मुखे ना निर्वचे सेह,
कहिबारे नाहिक उपमा ॥४१
केह बले परात्पर, प्रधान पुरुषवर,
विचारि ना करे निरूपणा ।
सर्वमय तोर शक्ति, देखिया ना पाय मुक्ति,
अगोचर तोर आचरणा ॥४२
सहस्रफणा अनन्त, ना पाइया गुणेर अन्त,
द्विजिह्वा धरिल सब मुखे ।
ना पाइल गुणेर ओर, ऐछन ठाकुर गौर,
कृपाबले देखिल तोमाके ॥४३
ये पुन आरति करे, तुया पद अनुसारे,
नानाबुद्धि नहे एकमत ।
केह बले सर्व व्यापी, सूक्ष्मवादी सांख्ययोगी,
स्थुल सेवा करये भकत ॥४४
केह वेद अनुसारे, नित्य धर्म कर्म करे,
वर्णाश्रमधर्म अनुगत ।
वेदान्त सिद्धान्त येइ, समाधान नाहि पाइ,
ना बुझिया कहे नाना मत ॥४५
अन्योन्ये विरोध केने, इहा नाहि अनुमाने'
कहे पुन एकइ अद्वैत ।
ना बुझि तोमार मर्म, पक्ष धरि करे कर्म,
तोर कथा सब अविदित ॥४६
ए पद परसादे, निरवधि प्राण काँदे,
छाड़ि इहा प्रकृत मूरति ।
पुन जनमिब आर, करि कृष्ण संसार,
आचरिब एइ प्रेमभक्ति ॥४७
ऐछन नारद वाणी, शुनि कहे गुणमणि,
चल चल चल मुनिराज ।
कलि लोक निस्तारिब, निज भक्ति प्रचारिब,
जनमिया नदीयार माझ ॥४८
चलह नारद तुमि, श्वेतद्वीपे आछि आमि,
बलराम नामे सहोदर ।
अनन्त याहार अंश, एकादश रुद्रवंश,
सेवा करे महेश ईश्वर ॥४९
रेवति रमणी संगे, आछये विलास रङ्गे,
क्षीरजलनिधि मही माझे ।
यत अवतार हय, सेइ मात्र सहाय,
आगे करि कर निज काजे ॥५०

चल चल मुनिराज, गोचर करह काज,
कहिबे करिया परबन्ध ।
निज निज अंश लइया, पृथिवीते जनम गिया,
स्वनाम धरह नित्यानन्द ॥५१
आनन्दे नारद मुनि, शुनिया ठाकुर वाणी,
हिया सुखे बले हरिबोल ।
कहये लोचन दास, ए दँोहार सम्भाष,
शुनि उठे आनन्द हिल्लोल ॥५२

———

धानशी राग । क्षुद्र छन्द ।

राङ्‌ चरण कमल बलि याङ ।
एस एस प्रेम विलाओ प्रेमे जगत् माताओ हे ॥ ध्रु ॥
नारदे विदाय दिया बसिला ठाकुर ।
आपन अन्तर कथा तुलिला अङ्कुर ॥१
पृथिवीते जनम लभिब ये कारणे ।
तत्त्व कहि सर्वजन शुन सावधाने ॥२
निजवृन्द लैया प्रभु कहे सब कथा ।
महामहेश्वर करे पृथिवीर चिन्ता ॥३
डाहिने राधिका रहे वामेते रुक्मिणी ।
ताहार अन्तरे यत प्रधान रंगिणी ॥४
ताहार अन्तरे यत प्रिय परिषद ।
ताहार अन्तरे यत आर अनुगत ॥५
प्राणनाथ प्रियकथा शुनिब श्रवणे ।
लाख लाख आँखि एक सुन्दर वदने ॥६
अनेक चकोरे येन एकचन्द्र आशे ।
पिबइ अमिया राशि मुख परकाशे ॥७
युगे युगे जन्म मोर पृथिवीर माझे ।
साधुपरित्राण धर्म राखिबार काजे ॥८
धर्म संस्थापन करि ना बुझइ केह ।
अधिक बाड़ये पाप परमाद सेहो ॥९
सत्ययुग अधिक त्रेताय बाड़े पाप ।
द्वापरे ताहार अधिक ए बड़ सन्ताप ॥१०
कलि घोर अन्धकार नाहि धर्मलेश ।
करुणा बाड़िल देखि सर्वजन क्लेश ॥११
अधर्म विनाश हेतु मोर अवतार ।
अधर्म बाड़ये पुन कि काज आमार ॥१२
ऐछन जानिया दया उपजिल चिते ।
जनम लभिब निज प्रेम प्रकाशिते ॥१३
ब्रह्मार दुर्लभ प्रेमभक्ति प्रकाशिया ।
बुझाइब लोके धर्माधर्म विचारिया ॥१४
नवद्वीपे जन्म हबे शचीर उदरे ।
गङ्गार समीपे जगन्नाथ-मिश्र घरे ॥१५
अन्य अवतार हेन अवतार नहे ।
असुर संहार हेतु पृथिवी विजये ॥१६
महाकाय महासुर महा अस्त्र मोर ।
महारणे प्रहार करिया करँो चूर ॥१७
एबे सेइ सर्बजन हृदय आसुरि ।
खड्‌ग अस्त्रे छेद्य नहे रणे किबा करि ॥१८
नाम गुण सङ्कीर्तन वैष्णवेर शक्ति ।
प्रकाश करिब आमि निज प्रेमभक्ति ॥१९
एइमते कलि—पाप करिब संहार ।
सबे चल आगे पाछे ना कर विचार ॥२०
एबे नाम सङ्कीर्तन तीक्ष्ण खड्‌ग लैया ।
अन्तर असुर जीवेर फेलिब काटिया ॥२१
यदि पापी छाड़ि धर्म दूर देशे याय ।
मोर सेनापति भक्त याइबे तथाय ॥२२
निज-प्रेमे भासाइब ए ब्रह्माण्ड सब ।
तभु ना राखिब दुःख शोक एक लब ॥२३
भासाइब स्थाबर जङ्गम देवगणे ।
शुनि आनन्दित कहे ए दास लोचने ॥२४

वराड़ी राग।

चलिला नारद मुनि, उठिल वीणार ध्वनि,
पाणि पद ना चलये आर।
याइते ना पथ देखें, प्रेमजले आँखि झाँपे,
टलमल येन मातोयार ॥१
पद दुइ चारि याइ, पुन पड़े सेइ ठाँइ,
'कृष्ण' नाम आध आध बले।
अनेक शकति उठि, धरिया धरणी कठि,
नदी बहे नयनेर जले ॥२
क्षणे महा उन्माद, हुहुङ्कार सिंहनाद,
गोरारूप हृदये धेयान।
बाह्य नाहि अन्तरे, ना जाने आपना परे,
सबे एक गौर गेयान ॥३
कोटि रवि तेज येन, अंगेर किरण हेन,
नारद चलिला अन्तरीक्षे।
उत्तरिला सेइ धाम, यथा प्रभु बलराम,
धमक लागिल श्वेतद्वीपे ॥४
पुरी प्रवेशिया रहि, चमकि चौदिके चाहि,
लाख लाख हिमकर द्युति।
वायु बहे मन्द मन्द, दिव्य से कुसुम गन्ध,
प्रति द्वारे लम्बे गजमोति ॥५
सत्त्वगुण सर्व लोक, नाहि ज्वरा मृत्यु शोक,
सर्वजन सबाकार बन्धु।
यखन येदिके दिठि, सेइ सब जन मिठि,
बलदेवमय क्षीरसिन्धु ॥६
देखिया नारद मुनि, धनि धनि मने गणि,
धनि धनि आपनाके माने।
त्रिजगत नाथ स्वामी, देखिब नयाने आमि,
कान्दिया पड़िब श्रीचरणे ॥७
सेइ बलराम राय, युगे युगे सहाय,
करि कृष्ण करे अवतार।
खेलाय विविध खेला, अनन्त विनोद लीला,
करि करे असुर संहार ॥८
सेइ प्रभु बलराम, निज अंशे तिन ठाम,
रहि करे कृष्णेर पिरीति।
आद्य मध्य आर अन्त, यार अंश अनन्त,
एक फणाय धरि रहे क्षिति ॥९
आपने ईश्वर हैया, श्वेतद्वीप-माझे रैया,
विलास करये नाना रंगे।
सर्वोपरि परिणाम, सेइ महाप्रभुर ठाम,
सेवा करे अपरूप रंगे ॥१०
गमनेर काले छत्र, बसिते आसन बस्त्र,
शयनेर काले हय शय्या।
प्रलये से वटपत्र, महारणे दिव्यअस्त्र,
नानामते करे परिचर्य्या ॥११
एक अंशे सेबा करे, आर अंशे मही धरे,
हेन प्रभु बलराम मोर।
त्रिजगत अधिराज, देखिब क्षिरोद माझ,
प्रभु आज्ञा करिब गोचर ॥१२
एइ दुइ प्रभु मात्र, येन राजा महापात्र,
पृथिवी पालये एक युक्ति।
आर यत रुद्रवंश, सेहो यार अंशांश,
अवतार करिबेन क्षिति ॥१३
हेन मन कथा रसे, मुनि भेल परवशे,
पुरी प्रवेशिला महानन्दे।
देखे त्रिजगत नाथ, सब-परिषद साथ,
अपरूप बलरामचान्दे ॥१४
अङ्कुर पर्बत येन, बसि श्वेत सिंहासन,
अमृत मधुर लहु हासे।

राता उतपल आँखि, ढुलु ढुलु येन देखि,
आध वाणी मुखेते निकशे ॥१५
तारक भ्रमरा आध, आच्छादिल तार साथ,
आध उदास आँखि देखि ।
मणि मुकुता प्रबाल, दिव्य रत्नमय हार,
अलङ्कारे अङ्ग नाहि लखि ॥१६
आलिस बालिश करे, वाम कर दिया शिरे,
डाहिने रेवती कर धरे ।
रेवती ताम्बूल करे, देय प्रभुर अधरे,
अनुरागे वयान नेहारे ॥१७
अनुचरी चारि पाशे, चामर ढुलाय हासे,
कङ्कण-किङ्किणी ध्वनि शुनि ।
केहो वीणा वेणु वाय, केहो बा संगीत गाय,
ताल सञ्चे परम-रमणी ॥१८
ताहार अन्तरे यत, अनुगत शत शत,
यार येइ काजे नियोजित ।
ऐछन समये मुनि, करिल वीणार ध्वनि,
ठाकुर देखिल आचम्वित ॥१९
बिह्वल नारद मुनि, टलमलि पड़े भूमि,
ठाकुर तुलिया निल कोले ।
चिरदिने अनुरागे, देखिला से महाभागे,
तुषिला शीतल महा बोले ॥२०
हासिया सम्भाषे पँहु, कह कोथा हैते तुहुँ,
रहस्य करिबे हेन बासि ।
कह ना केमने काज, शुनिते हृदय माझ,
आनन्द उठये राशि राशि ॥२१
सम्भ्रमे कहये मुनि, कि कहिते आमि जानि,
तुमि प्रभु सर्व अन्तर्यामी ।
ये किछु कहिते जानि, सेइ कथा अनुमानि,
ये जुयाय करगो आपनि ॥२२
पापमय कलियुगे, ना देखि निस्तार लोके,
दया उपजिल प्रभु चिते ।
पालिब भकतजन, आर धर्म संस्थापन,
जनम लभिब पृथिवीते ॥२३
अधर्म बिनाश काजे, आर कोन मर्म आछे,
हेन बुझि आकार इङ्गिते ।
आज्ञा दिला आमारे, घोषणा दिबार तरे,
शुनि लोक भेल आनन्दिते ॥२४
राधा भाव अन्तरे, राधा वर्ण बाहिरे,
अन्तर्वाह्य राधामय हब ।
संगे सखा सखी वृन्द, आर भक्त अनन्त,
व्रजभावे अखिल माताब ॥२५
सांगो पांगे पारिषदे, जन्म गिया पृथिवीते,
स्वनाम धरह नित्यानन्द ।
तोर अगोचर नहे, ताँर मर्म कर्म देहे,
कहिल ये आज्ञा गौरचन्द्र ॥२६
शुनि बलराम राय, आनन्दे चौदिके चाय,
अट्ट अट्ट हासे उच्चनादे ।
घन घन हुहुङ्कार, प्रकाशये चमत्कार'
आपना पासरे प्रेमानन्दे ॥२७
आज्ञा दिल निज जने, पृथिवी कर गमने,
प्रभु आज्ञा पालिबार तरे ।
चलह नारद तुमि, जनम लभिब आमि,
अगोचर करिब गोचरे ॥२८
ऐछन अमृत कथा, शुन गोरा गुणगाथा,
सब जन कर अवधाने ।
सब अवतार सार, कलि गोरा अवतार,
विचार करह सबे मने ॥२९
तृण धरि दशने, बलोँ मो कातर मने,
गोरा गुणे ना करिह हेला ।

संसारे ना देह मति, कर कृष्ण पिरीति,
संसार तरिते एइ भेला ।३०
कभु नाहि हय येइ, गोरा अवतार सेइ,
हइब परम परकाश ।
निर्जीवे जीवन पाबे, अन्धे पथ विचरिबे,
गुण गाय ए लोचन दास ॥३१

भाटियारी राग ।

भाइ रे गाओ गाओ निताइ चैतन्य गुणगाथा ।
हेन काले महाप्रभु आज्ञा यबे कैला ।
निज निज अंशे सब जन्मिते लागिला ॥१
महेश ठाकुर सर्व आगे आगुयान ।
ब्राह्मणेर कुले जन्म कमलाक्ष नाम ॥२
पड़िया शुनिया गुणे परवीण हैल ।
'अद्वैत आचार्य्य' बलि पदवी लभिल ॥३
सेइ महामहेश्वर सत्वगुण धरे ।
तमोगुण बलि यारे घोषये संसारे ॥४
अन्तर्वाह्ये विचार ना करे केह पुन ।
वाह्य आचरण देखि बले तमोगुण ॥५
कृष्णेर केबल आतमा—नामे हरिहर ।
पराकृत तमोगुण—गुणेर भितर ॥६
प्राकृत भकत बलि येइ तमोगुणी ।
अधम बलिये अल्प जने यबे जानि ॥७
ए केमने हरिहर बल तमोगुण ।
अवज्ञा ना कर यबे मोर बोल शुन ॥८
मने अनुमान करि करह विचार ।
एतेके बलिये गोरा अवतार सार ॥९
सब अवतारे तार खेलार संहति ।
बलराम जनम लभिला एइ क्षिति ॥१०
ब्राह्मणेर कुले—युगधर्म अनुरूप ।
निताइ आनन्द कन्द सहज स्वरूप ॥११
एक अंशे याहार सहस्र फणा धरे ।
एक फणे मही धरे सृष्टि राखिबारे ॥१२
पद्मावती उदरे जनमे बलराम ।
पिता हाड़ो ओझा से परमानन्द नाम ॥१३
पितामाता नाम थुइल कुबेर पण्डित ।
वैराग्य हृदये नित्यानन्द सुचरित ॥१४
शुक्ला त्रयोदशी शुभ माघमासे ।
पृथ्वीते जनम लैला परम हरिषे ॥१५
कात्यायनी जनम लभिला मही माझे ।
सीता नाम धरे विप्रकुलेर समाजे ॥१६
अद्वैत ठाकुर सने एकत्रे विलास ।
दुँहे मिलि प्रेमभक्ति करये प्रकाश ॥१७
आमि अल्प बुद्धि कार किबा तत्व जानि ।
अवतार निर्णय बा केमने बाखानि ॥१८
महान्तेर मुखे येइ शुनियाछि काने ।
ताहाओ कहिते नारि सङ्कोच पराणे ॥१९
आमार शकति नाहि करिते निर्णय ।
नाम लैब मात्र याँर येबा नाम हय ॥२०
आगे पाछे विचार ना कर केह मने ।
आखर अनुरोधे ग्रन्थ नाहय क्रमे ॥२१
शचीदेवी जगन्नाथ मिश्र पुरन्दर ।
आपने ठाकुर जन्म लैला याँर घर ॥२२
गोपीनाथ नाम काशीमिश्र ये ठाकुर ।
चैतन्य सम्मत पथे आनन्द प्रचुर ॥२३
पण्डित श्रीगदाधर गदाधर दास ।
मुरारी मुकुन्द दत्त आर श्रीनिवास ॥२४
राय रामानन्द आर वासुदेब दत्त ।
हरिदास ठाकुर आर गोविन्दानुगत ॥२५
ईश्वर माधव पुरी विष्णुपुरी आर ।
वक्रेश्वर परमानन्द पुरी शुद्धाचार ॥२६

पण्डित जगदानन्द आर विष्णुप्रिया ।
राघव पण्डित आसि पृथ्वीते आसिया ॥२७
रामदास गौरीदास ठाकुर सुन्दर ।
कृष्णदास पुरुषोत्तम श्रीकमलाकर ॥२८
काला कृष्णदास आर उद्धारण दत्त ।
द्वादश गोपाल व्रजे इहार महत्व ॥२९
परमेश्वर दास आर वृन्दावन दास ।
काशीश्वर श्रील रूप सनातन प्रकाश ॥३०
गोविन्द माधव घोष बासु घोष आर ।
सबे रिलि आसि कैल भकति प्रचार ॥३१
दामोदर पण्डित मिलिया पाँच भाइ ।
जनम लभिला पृथिवीते एक ठाइ ॥३२
पुरन्दर पण्डित आर परमानन्द वैद्य ।
पृथ्वीते आइला यत छिला अन्त आद्य ॥३३
श्रीनरहरि दास ठाकुर आमार ।
विशेष कहिब किछु चरित्र ताँहार ॥३४
ताहार महिमा आमि कि कहिते जानि ।
आपन बुद्धिर शक्ति येइ अनुमानि ॥३५
अभिमान केहो किछु ना करिह मने ।
प्रणति करिया निज गुरुर चरणे ॥३६
याँर पद परसादे आमि हेन छार ।
तोमरा ठाकुर—गुण कहि तो सबार ॥३७
श्रीनरहरि दास ठाकुर आमार ।
वैद्यकुले महाकुल प्रभाव याँहार ॥३८
अनर्गल कृष्णप्रेम कृष्णमय तनु ।
अनुगत जने ना बुझाय प्रेम बिनु ॥३९
असंख्य जीवेरे दया कातर हृदय ।
कृष्ण अनुरागे सदा अथिर आशय ॥४०
राधाकृष्ण रसे तनु गड़ियाछे येन ।
भावेर उदय हय यखन येमन ॥४१
क्षणे कृष्ण क्षणे राधा भावेर आवेशे ।
राधाकृष्ण रस मूर्तिमन्त परकाशे ॥४२
चैतन्य सम्मत पथे से शुद्ध विचार ।
अतुल सरस भाव सब अवतार ॥४३
सकल वैष्णवे योग्य सम्मान पिरीति ।
सकल संसारे याँर निर्मल कीरिति ॥४४
श्रीखण्ड भूखण्ड माझे याँर अवस्थिति ।
'नरहरि चैतन्य' बलिया यार ख्याति ॥४५
वृन्दावने मधुमती नाम छिल याँर ।
राधा-प्रिय सखी तिँहो मधुर भाण्डार ॥४६
एबे कलिकाले गौर सङ्गे नरहरि ।
राधाकृष्ण प्रेमार भाण्डारे अधिकारी ॥४७
ताँर भ्रातुष्पुत्र श्रीरघुनन्दन ठाकुर ।
सकल संसारे यश घोषये प्रचुर ॥४८
श्रीमूर्तिके लाड़ु खाओयाइल येइ जन ।
तारे अल्पबुद्धि करे कोन् मूढ़जन ॥४९
सहजे वैष्णव नहे वर्णेर भितर ।
कृष्ण संगे यार कथा से कृष्ण केवल ॥५०
श्रीमूर्तिर सने कथा यार अनुव्रत ।
ताहारे केमने जानँ केमन महत्व ॥५१
याहारे चैतन्य कैल—मोर प्राण तुमि ।
प्रकाश करिला यारे अभिराम गोस्वामी ॥५२
मदन बलिया अवतार जानाइल ।
चैतन्येर कोले सबे तेमनि देखिल ॥५३
कृष्णेर आवेशे नृत्य जग मन मोहे ।
नाहि भिनाभिन सबे समान सिनेहे ॥५४
सर्वदा मधुर वाणी बोलेये वदने ।
सर्वकाल ना शुनिल उत्कट कथने ॥५५
चातुरी माधुरी लीला विलास लावण्य ।
रसमय देह तार ए संसारे धन्य ॥५६

पिता यार महामति श्रीमुकुन्द दास ।
चैतन्य सम्मत पथे निर्मल विश्वास ॥५७
मयूरेर पाखा देखि राज सन्निधाने ।
पड़िलेन कृष्णरूप आकर्षिया मने ॥५८
के जाने केमन रूप चैतन्येर संगी ।
जानये अनन्त आदि याँरा अंग संगी ॥५९
जीवे कि देखिते पाय कृष्णेर वैभव ।
सेइ जन देखे याते कृष्ण अनुभव ॥६०
कि कहिब आर अस्त्र पारिषद यत ।
पृथिवी आइला सबे नाम निब कत ॥६१
समुद्रेर जल यदि कलसे परमाणि ।
पृथिवीर रेणु यदि एके एके गणि ॥६२
आकाशेर तारा यदि गणिबारे पारि ।
तबु गोरा अवतार कहिबारे नारि ॥६३
मुइ अति अल्पबुद्धि कि कहिब आर ।
मूरुख हइया करोँ वेदेर विचार ॥६४
अन्ध येन दृष्टिहीन दिव्य रत्न चाहे ।
खर्व येन चाँद धरिबारे मेले बाहे ॥६५
पङ्गु मही लङ्घिबारे करे अहङ्कार ।
क्षुद्र पिपीलिका गिरि चाहे बहिबार ॥६६
ऐछन हृदये आशा विलास आमार ।
गोरा अवतार कथा करिते प्रचार ॥६७
करजोड़ करि बलि शुन सर्वजन ।
वाचाल करये गोरा गुणे मूकजन ॥६८
निर्जिह्वे करये से प्रकट चाटुवाणी ।
ना पड़ि मूरुख कहे ब्रह्मेर काहिनी ॥६९
पृथ्वीते जनमि महा महा भागवत ।
कृष्णे गोपन कथा करिछे बेकत ॥७०
अकारणे करुणा करये सर्वजीवे ।
माता येन दुरन्त तनये परिषेबे ॥७१
ऐछन प्रभुर दया देखिया अगाध ।
अधम हइया अमृतेर करोँ साध ॥७२
श्रीनरहरि दास दयामय देहे ।
पातकी देखिया दया बान्धल सिनेहे ॥७३
दुरन्त पातकी अन्ध अति दुराचारे ।
अनाथ देखिया दया करिल आमारे ॥७४
ताँर दयाबले आर वैष्णव प्रसादे ।
एइ भरसाय पुँथि हइबे अबाधे ॥७५
करजोड़ करि बलि कातर वयाने ।
आत्म निबेदिये मुइ वैष्णव चरणे ॥७३
मोर अधिक अधम नाहिक मही माझे ।
वैष्णवेर कृपाबले सिद्ध हउ काजे ॥७७
दशने धरिया तृण ए लोचन दास ।
प्रणति मिनति करे पूर' मोर आश ॥७८
सूत्रखण्ड साय पुँथि शुन सर्वजन ।
अवतार आदिखण्डे कहिब एखन ॥७९

इति श्रीश्रीचैतन्य-मङ्गल–ग्रन्थे सूत्रखण्ड समाप्त ।

श्रीश्रीकृष्णचैतन्य-चन्द्राय नमः

श्रीचैतन्यमङ्गल

आदिखण्ड

प्रथम अध्याय

जन्मलीला

धानशी राग। दिशा।

जय जय नरहरि गदाधर प्राणनाथ।
मोर प्रति कर प्रभु शुभ दृष्टिपात॥
प्रभु गोराचाँद नारे जय जय॥
जय जय गदाधर गौराङ्ग नरहरि।
जय जय नित्यानन्द सर्वशक्तिधारी॥१
जय जय अद्वैत आचार्य्य महेश्वर।
जय जय गौरांगेर भक्त महाबर॥२
सबार चरण धूलि मस्तके धरिया।
आदिखण्ड कथा कहि शुन मन दिया॥३
सर्व निज जन यबे जनम लभिल।
साज साज बलि शब्द घोषणा पड़िल॥४
पृथ्वीते चलिते आर नाहिक विलम्ब।
आपनि ठाकुर शची गर्भे अवलम्ब॥५
जय जय शब्द हैल ब्रह्माण्ड भरिया।
देव नाग नरे देखे प्रेमाविष्ट हैया॥६
केहो यारे बले ज्योतिर्मय सनातन।
केहो यारे बले सूक्ष्म स्थूल नारायण॥७
केहो तारे बले स्थूल सूक्ष्म परब्रह्म।
से जन आपने शचीगर्भे अवलम्ब॥८
तेजोमय वायुरूप गर्भ बाड़े निति।
देखिया तो सर्व लोकेर बाड़ये पिरीति॥९
दिने दिने तेज बाड़े शचीर शरीरे।
देखिया सकल लोक हरिष अन्तरे॥१०
ना जानिये कोन् जन आइल शची-घरे।
घरे घरे इहा मने सकले बिचारे॥११
एक दुइ तिन चारि पाँच छय मासे।
शचीर उदरे महानन्द परकाशे॥१२
छय मास पूर्ण यबे शचीर उदर।
अङ्गेर छटाय झलमल करे घर॥१३
हेनइ समये एक अद्भुत कथा।
आचम्बिते अद्वैत आचार्य्य आइल तथा॥१४
घरे बसि आछे जगन्नाथ द्विजवर्यच।
सम्भ्रमे उठिला देखि अद्वैत आचार्य्य॥१५
अद्वैत आचार्य्य गोसाँइ सर्वगुणधाम।
त्रिजगते धन्य तार नाहिक उपाम॥१६

देखि मिश्र पुरन्दर बड़इ सम्भ्रमे ।
बसिते आसन आनि दिलेन आपने ॥१७
चरणेर धूलि लैल मस्तक उपरे ।
सम्भ्रमे आचार्य्य कैल विनय बिस्तर ॥१८
पाद प्रक्षालने जल दिला शचीदेवी ।
शची देखि सम्भ्रमे उठिला अनुरागी ॥१९
अनुरागे रांगा दुइ कमल लोचन ।
वाष्प झल मल आँखि अरुण वदन ॥२०
सकम्प अधर गदगद कण्ठस्वर ।
धरिते ना पारे अंग करे टलमल ॥२१
शची प्रदक्षिण करि करे परणाम ।
चमकित शचीदेवी देखि अविधान ॥२२
जगन्नाथ ससन्देह—शची सविस्मिता ।
कि कर कि कर बले हृदये दुःखिता ॥२३
जगन्नाथ बले-शुन आचार्य्य गँासाइ ।
तोमार चरित्र केहो बुझिबारे नाइ ॥२४
दया करि कह यदि घुछाह सन्देह ।
नहे बा ए चिन्ता-अग्नि पुड़ाइबे देह ॥२५
आचार्य्य कहये शुन मिश्र पुरन्दर ।
जानिबे सकल पाछे कहिल उत्तर ॥२६
पुलकित सब अंग जानिया सन्दर्भ ।
गन्ध चन्दने पूजे शचीर श्रीगर्भ ॥२७
सात प्रदक्षिण करि करे परणाम ।
किछु ना कहिला गेला आपनार स्थान ॥२८
एथा शची जगन्नाथ मने मने गणे ।
मोर गर्भ वन्दना करिला कि कारणे ॥२९
आचार्य्य गँासाइ कैल गर्भेर वन्दना ।
कोटिगुण तेज शची पासरे आपना ॥३०
सब सुखमय देखे ना देखये दुख ।
सर्व देवगण देखे आपन सन्मुख ॥३१
ब्रह्मा शिव शुक्र आदि यत देवगण ।
उदर-सन्मुखे सबे करये स्तबन ॥३२
जय जय अनन्त अद्वैत सनातन ।
जयाच्युतानन्द नित्यानन्द जनार्दन ॥३३
जय सत्व रज-स्तम—प्रकृतिर पर ।
जय महाविष्णु कारण समुद्र भितर ॥३४
जय परव्योम नाथ महिमा विस्तार ।
जय सत्व परसत्व विष्णुसत्वाकार ॥३५
जय गोलोकेर पति राधार नागर ।
जय जय अनन्त वैकुण्ठ अधीश्वर ॥३६
जय जय निश्चिन्त पहुँ धीर ललित ।
जय जय सर्व मनोहर नन्द सुत ॥३७
एबे कलियुगे शची गर्भेते प्रकाश ।
आपने भुञ्जिते आइला आपन बिलास ॥३८
जय जय परानन्द दाता अहे प्रभु ।
एहेन करुणा आर नाहि हय कभु ॥३९
आपनि आपन दाता हैला कलिकाले ।
पात्रापात्र विचार ना हबे गदाधरे ॥४०
ये प्रेम याचिञा करेँा आमरा सब देवे ।
ना पाइलुँ लब लेश गन्ध अनुभवे ॥४१
से प्रेम मधुर रस आपनि खाइया ।
भुञ्जाइब आचण्डाले दोष ना देखिया ॥४२
तुया प्रेम लव लेश मोरा येन पाइ ।
तोर सने राधा कृष्ण गुण येन गाइ ॥४३
जय जय सङ्कीर्तन दाता गौरहरि ।
इहाबलि देवगण प्रदक्षिण करि ॥४४
चारिमुखे ब्रह्मा करे नानाविध स्तुति ।
तरासिल शचीदेवी चमकित मति ॥४५
सर्वजीवे दया भेल शचीर अन्तरे ।
आतमज्ञान दया करे नाहि भिन्न परे ॥४६

दशमास पूर्ण गर्भ हइल दिशे दिशे ।
अपना पासरे देवी मनेर हरिबे ॥४७
शुभदिन शुभक्षण पौर्णमासी तिथि ।
फाल्गुनेर शुभ निशि हिमकर द्युति ॥४८
राहुचन्द्र गरासये अदभुत वेले ।
उठिल चौदिक भरि हरि हरि बोले ॥४९
चौदिक भरिल आर दिव्य चारुगन्धे ।
परसन्न दशदिक वायु मन्द मन्दे ॥५०
षड़् ऋतु उदय भै गेल सेइ काले ।
प्रभु-शुभजन्म पृथिवीते हेन बेले ॥५१
अन्तरीक्षे देवगण दिव्य याने चाय ।
गोरा अंग देखिबारे अनुरागे धाय ॥५२
एकमात्र शुनि ध्वनि–हरि हरि बोल ।
जन्ममात्र प्रकट करिल प्रभु मोर ॥५३
शचीर उदरे महा वैकुण्ठ सम्पद ।
आनन्दे विभोर देवी बले गदगद ॥५४
जगन्नाथ पण्डितेरे डाके हातसाने ।
जनम सफल देख पुत्रेर वयाने ॥५५
पुरनारीगण जय जय देय सुखे ।
आनन्दे विभोर सबे देखिया बालके ॥५६
वेद देव नागकन्या सबाइ आइला ।
देखिया गौराङ्ग जय जय-ध्वनि कैला ॥५७
गौर गरिमा गन्धे भरिल ब्रह्माण्ड ।
प्रति अंगे रसराशि अमिया अखण्ड ॥५८
देखिते देखिते सबार जुड़ाइल नयान ।
सबार मने हइल एइ नागरीर प्राण ॥५९
एहेन बालक कभु नाहि देखि शुनि ।
इहारे देखिया प्राण कि करे ना जानि ॥६०
मानुषेर हेन चिन ना देखिये कभु ।
दिव्य विलासिनी कहे जानिब इहा पाछु ॥६१
जगन्नाथ विभोर देखिया पुत्रमुख ।
ब्रह्माण्ड ना धरे तार अन्तर कौतुक ॥६२
कत चान्द उदय देखिया मुखखानि ।
प्रफुल्ल कमल दल वयान बाखानि ॥६३
उन्नत नासिका तिल कुसुम जिनिया ।
झलमल गोरा अंग किरण अमिया ॥६४
अधर अरुण आर चारु गण्ड द्युति ।
सुन्दर चिबुक देखि उठये पिरीति ॥६५
सिंहग्रीब गजस्कन्ध बिशाल हृदय ।
आजानु लम्बित भुज तनु रसमय ॥६६
बिशाल नितम्ब उरु कदली से येन ।
अरुण कमलदल दु'खानि चरण ॥६७
ध्वज बज्राङ्कुश से पङ्कज पदतले ।
रथ छत्र चामर स्वस्तिक जम्बुफले ॥६८
ऊर्द्धरेखा त्रिकोण कुञ्जर कुम्भवरे ।
सब अपरूप रूप अमिया उगरे ॥६९
हेन अद्भुत रूप पृथिवीर माझे ।
महाराज राजाधिक लक्षण बिराजे ॥७०
इन्द्र चन्द्र ब्रह्माआदि यत देवगण ।
पृथ्वीते आइला सबे कौतुक कारण ॥७१
नयाने लागिल सबार अमिया अञ्जन ।
चिर अनुरागे करे प्रिय दरशन ॥७२
जन्म मात्र बालक हइल येइ देखा ।
छिल येन कतकाल पूरुबेर सखा ॥७३
प्रति अंगे अमिया सिञ्चये राशि राशि ।
निरखिते नयने हृदये हेन बासि ॥७४
बालक देखिया बुक भरल आनन्दे ।
आलसल अंग श्लथ हैल निबिबन्धे ॥७५
जन्म मात्र बालक देखिल एइक्षणे ।
कत कोटि काम जिनि सुन्दर वदने ॥७६

हेन अनुमानि सबे देइ जय जय।
स्वरूपे मानुष नहे शचीर तनय ॥७७
अभिनब कामदेव शचीर नन्दन।
स्रवये अमिया यबे करये क्रन्दन ॥७८
आपने गोलक नाथ कैल अवतार।
निर्धारिल नारीगण अनुमान सार ॥७९
सब लोकनाथ एइ अवनी प्रकाश।
आनन्दे विभोर कहे ए लोचन दास ॥८०

———

मङ्गल गुज्जरी राग।
मङ्गल कर उच्छाह।
आनन्दे शचीर मन्दिरे गोरा गुण गाह।
नाहारे आरे आरे हय। मूर्च्छा ध्रु॥

शची मिश्रपुरन्दर, आनन्दे गरगर,
गदगद भेल कण्ठस्वरे।
इष्ट कुटुम्ब आनि, बोलये मधुर वाणी,
अबिलम्बे पुत्रोत्सब करे ॥१
जय जय जय, चौदिक सुखमय,
आनन्दे भरल नगरी।
कुलवधू यत, आइल शत शत,
बिलाय सिन्दुर पिठालि ॥२
पुत्र करि कोले, आनन्दे प्रेमभरे,
गदगद बले शचीदेवी।
आशीर्वाद कर, पदधुलि देह,
बालक हउक चिरजीवी ॥३
बालक नहे मोर, आपन बलि बर,
देह ना सब नारीगणे।
अमिया अधिक देह, परिणाम विपर्य्यह,
निमाइ बलिया थुइल नामे ॥४
ए अष्ट दिवसे, शिशुगणे सन्तोषे,
बिलायइ ए अष्ट कलाइ।
नवरात्रि महोत्सब, आनन्दमय सब,
बाजये आनन्द बाधाइ ॥५
बाड़ये दिने दिने, श्रीशचीर नन्दने,
अवनी पूर्णिमार चाँदे।
काजरे उजोर, नयान युगल,
गोरोचना तिलक सुछाँदे ॥६
ए कर चरण, सघने चालन,
ईषत हासये मुचकि।
शची जगन्नाथ, देखि अदभुत,
निरखे अनिमिख आँखि ॥७
श्रीअङ्ग मार्जन, करे निति निति,
सुगन्धि तैल हरिद्रा।
वदन चुम्बये, हिया भरि थोये,
धन्य शची सुचरित्रा ॥८
ऐछन दिने दिने, बाड़ये अनुक्षणे,
आनन्द नदीया नगरे।
किबा दिवा राति, ना जाने बार तिथि,
प्रेमाय आपना पासरे ॥९
नदीया नगरे, आनन्द घरे घरे,
ना जानि कि नारीपुरुषे।
बाय बृद्ध अन्ध, प्रेम परबन्ध,
मातल अतुल हरिषे ॥१०
शारद शशी जिनि, वदन अनुमानि,
मदन सदन विराजे।
युवती यत छिल, उमति सबे भेले,
छाड़ल गुरु गृह काजे ॥११
दिने तिन भेरि, नाय पुर नारी,
बालक देखिबार तरे।
देखि देखि बलि, सबेइ कोले करि,
पुलक भरे कलेबरे ॥१२

ऐछन दिने दिने, प्रत्येक क्षणे क्षणे,
आनन्द कहिते ना याय ।
नरहरि दास, पद करि आश,
लोचन दास गुण गाय ॥१३

———

बाल्यलीला

सिन्दुड़ा राग ।

एइ मत दिने दिने शचीर कुमार ।
बाढ़ये शरीर येन अमियार सार ॥१
कि दिब उपमा तार दिते नाहि पारि ।
खलबल करे प्राण कहिते ना पारि ॥२
निति षोलकला पूर्ण इन्दु मुखचन्द्र ।
साधे देखिबारे धाय जनमेर अन्ध ॥३
रांगा से अधर भरा मुचकि हासिते ।
अमिया सायर येन कल्लोल सहिते ॥४
रसे डुबुडुबु राता नयन युगल ।
काजर अमियापङ्के के बाँध बाँधल ॥५
शची पुण्यवती जगन्नाथ भाग्यवान् ।
सादरे निरखे दोँहे पुत्रेर बयान ॥६
क्षणे कान्दे क्षणे हासे क्षणे खटि करे ।
क्षणे कोले क्षणे दोले हियार उपरे ॥७
शची स्तनयुगे दुटि चरण राखिया ।
दोले येन सोणार लतिका वायु पाइया ॥८
अति दीर्घ नयान सुन्दर अट्टहासि ।
अधरे अमिया राशि येन पड़े खसि ॥९
नासिका शुकेर ओष्ठ जिनि मनोहर ।
गण्डयुग ज्योतिर्मय गठन सुन्दर ॥१०
एक दुइ तिन चारि पाँच छय मासे ।
नामकरण हैल अन्नप्राशन दिवसे ॥११
पुत्र महोत्सब करे मिश्र पुरन्दर ।
अलङ्कारे भूषित सोणार कलेवर ॥१२
अङ्गद कङ्कण करे गले मति हार ।
कटि स्वर्ण शिकलि मगरा पाये आर ॥१३
माड़िल हिङ्गुल येन करु पद तल ।
अधर बान्धुलि आँखि राता उतपल ॥१४
विजुरी माजिल गोरा अंगे ठाँइ ठाँइ ।
झलमल अंगतेज चाहिते ना पाइ ॥१५
विश्व पालने थुइल 'विश्वम्भर' नाम ।
सरस्वती संवादे ये पुरुष प्रधान ॥१६
क्षणे पितामाता कर अंगुली धरिया ।
अथिर शरीर पड़े पथ दुइ गिया ॥१७
अवेकत आध आध लहु लहु बले ।
चाँदेर सायरे येन अमिया उथले ॥१८
एइमत दिने दिने आङ्गिना बेड़ाय ।
घुछिल विविध ताप जगत जुड़ाय ॥१९
लखिमी लालित पद धरणीर कोले ।
प्रेमेते पृथिवी देवी आपना पासरे ॥२०
गगनेते एक चान्द भूमे दश चाँद ।
किरणेर तेजे से आँखि पाइल अन्ध ॥२१
आर दश चाँद कर अगुलिर आगे ।
पातकी देखिले हिया आन्धियार भागे ॥२२
श्रीमुख चाँद कत कोटि चाँदेर राजा ।
भुरु कामधनु दिया काम कैल पूजा ॥२३
कि कहिब आर तार करुणा चन्द्रिमा ।
अन्तर तिमिर नाटे नाहि करे क्षमा ॥२४
के कहिते पारे तार बालक चरित्र ।
लौकिक आचारे कैल संसार पवित्र ॥२५
अग्रज याहार विश्वरूप महाशय ।
अल्पकाले सर्वशास्त्र जानये आशय ॥२६

ताँहार महिमा तत्व के कहिते पारे ।
याँहार अनुज महाप्रभु विश्वम्भरे ।।२७
दिने दिने करे प्रभु करुणा प्रकाश ।
शुनि आनन्दित हिया ए लोचन दास ।।२८

वराड़ी राग ।

चाँद चाँद चाँद, गगन उपरे,
के पाड़ि आनिया दिब ।
कलङ्क मुछिया, आमार गोरार,
कपाले चित्र लिखिब ।।१
आय आय चाँद आय, आमार सोनार सुत,
चाँदेर लागिया काँदे ।
आखटि करिते, निमाइर बोल,
अमिया अधिक लागे ।।२
एखनि आसिबे, निमाइर बाप,
क्षीर कदलक लैया ।
हेर आसिछे बाछा, हाउ दुरन्त रे,
निँद याह आँखि मुदिया ।।३
सोणार पद्ममुख, राता पद्म आँखि,
आध मुदित तारा ।
हेन बुझि पाया, मोयेर पाथारे,
डुबिल आध भ्रमरा ।।४
पाटेर गिलाप, नेतेर तुलि,
रचिया शय्याखानि ।
पुत्र कोले करि, पाथालि हइया,
शुतिला शचीराणी ।।५
एक स्तन मुखे, रहि रहि चाखे,
अंगुलि नाड़ये आर ।
लोचन बले सब, देव शिरोमणि,
बालक रूपेते विहार ।।६

धानशी राग । दिशा ।

आरे आरे हय । मूर्च्छा ।

हेन अद्भुत कथा, शुन गोरा गुणगाथा,
श्रवण–मङ्गल गोरा नाम रे ।।
ओ कि आरे ओ कि आरे हय हय ।।ध्रु।।
आर एकदिन कथा शुण सावधाने ।
आपना प्रकाश प्रभु कैल येनमने ।।१
एक गृहे जगन्नाथ गृहान्तरे शची ।
पुत्र कोले करि देवी सुखे आछे शुति ।।२
शून्य घरे कत सैन्य-सामन्त भरिल ।
ऐछन देखिया शची तरासित हैल ।।३
यत देवगण आसि शचीकोल हैते ।
बसाइल रत्न सिंहासनेते त्वरिते ।।४
अभिषेक करि नानाविध पूजा करि ।
प्रदक्षिण करि पड़े चरणेते धरि ।।५
शङ्ख घण्टा ध्वनि सबे करे बारबार ।
जय जय ध्वनि सबे करिछे बिस्तार ।।६
जय जय जगन्नाथ सबार पालन ।
कलियुगे सबाकारे करिबे पोषण ।।७
वृन्दावन धनरस दिबे सबाकारे ।
निवेदन तोमार चरणे विश्वम्भरे ।।८
देखि शचीमाता बारम्बार चमकित ।
पुत्र पुत्र करि शची भेल महाभीत ।।९
आपनारे नाहि भय पुत्रगत प्राण ।
बालके पाठाया दिल जगन्नाथ स्थान ।।१०
तोर पिता शुति आछे ऐ देवघरे ।
तथा गिया सुखे निद्रा याह तार कोले ।।११
चलिला तो गोराचाँद मायेर वचने ।
नूपूरेर ध्वणि शुनि शून्य चरणे ।।१२

बाहिरे आइला यबे देव शिरोमणि ।
सकल देवता आइला पाछे जोड़पाणि ॥१३
प्रभु कहे देवगण ! नाचाह आमारे ।
गाओ राधाकृष्णलीला कहिल सबारे ॥१४
देवे राधाकृष्ण प्रेम गानेते मिशाइया ।
दिलेन आनन्दे गौरचन्द्र से धरिया ॥१५
आ ाने कान्देन कान्दायेन देवगणे ।
राधा राधा गोविन्द प्रभु बलिछे आपने ॥१६
कालिन्दी यमुना वृन्दावन बलि डाके ।
राधा राधा बलिया डाकये प्रेमसुखे ॥१७
देखिया पुत्रेर लीला मूर्च्छा शची पाइला ।
शब्द शुनि जगन्नाथ अधीर हइला ॥१८
जगन्नाथ डाके—शची किना ध्वनि शुनि ।
उच्चस्वरे डाके तरासित शचीराणी ॥१९
बाहिरे आसिया दँोहे पुत्र कैल कोले ।
शून्य चरण देखि आपना पासरे ॥२०
तहिँक्षणे कृष्णेर चरित्र मने पड़े ।
शचोदेवी कहिल ये देखिल निजघरे ॥२१
चारिमुख पाँचमुख आदि यत देवा ।
दिव्य याने आसि कैल बालकेर सेबा ॥२२
प्राङ्गणे नाचिल पुत्र राधाकृष्ण बलि ।
आम से शुनिल स्वप्न हेन मने करि ॥२३
देखिया तरासे तब ठाँइ पाठाइल ।
शून्य चरणे नूपुर शबद शुनिल ॥२४
एमत बालक दिव्य मूरति सुठाम ।
ना जानि कथन केबा करये कुज्ञान ॥२५
सातकन्या मरि मोर एकटि छाओयाल ।
इहार से किछु हैले ना जीव' मोर आर ॥२६
सात पाँच नाहि मोर एइ आँखिर तारा ।
आन्धलेर लड़ि येन एइ धन मोरा ॥२७
घर सरबस धन देह आत्मा तनु ।
ना रहे जीवन मोर गोराचाँद विनु ॥२८
विघ्न विनाशन हेतु प्रकार से चिन्त ।
बालक मङ्गल करु देव आदि अन्त ॥२९
हेनमने अनुमाने रात्रि सुप्रभाते ।
खेलाय शचीर सुत बालक सहिते ॥३०
क्षणे आङ्गिनाय लुठि धूलाय धूसर ।
देखिया जननी किछु बोलये कातर ॥३१
सोणार पुतुली तनु वदन सुछाँद ।
उपमा दिबारे नाहि आकाशेर चाँद ॥३२
एहेन सुन्दर गाय धूलाय पड़िया ।
लुटाओ बलह केने मायेर माथा खाइया ॥३३
इहा बलि धूला झाड़ि चुम्बये बदन ।
पुलके पूरल अङ्ग सजल लोचन ॥३४
तबे आर कत दिने शचीर नन्दन ।
बयस्य सहिते करे बाहिरे पर्य्यटन ॥३५
गङ्गा कूले तरुमूले खेलाइया बेड़ाय ।
खेलाय मर्कट खेला एक चरणे याय ॥३६
शुनिलेन शची गङ्गातीरे गौरहरि ।
धरिते चलिला देवी हाते छड़ि करि ॥३७
जानुर उपरे जानु रहे एकपदे ।
देखिया जननी डाके उतकट शबदे ॥३८
मायेरे देखिया प्रभु पलाइया याय ।
मातिल कुञ्जर येन उलटिया चाय ॥३९
धर धर बलि डाक छाड़े शचीराणी ।
आगे आगे धाय मोर प्रभु द्विजमणि ॥४०
धरिबारे शची याय धरिते ना पारे ।
धाइया सम्भाइल गिया घरेर भितरे ॥४१
घर मध्ये यत भाण्ड भाजन आछिल ।
धर् धर् करिते सर्व आछाड़ि भांगिल ॥४२

नासाय अङ्गुली शची दाँड़ाइया चाहे।
हेँट वदन करि प्रभु विश्वम्भर रहे॥४३
अति बड़ कम्पित हइल लज्जाभरे।
रोदन करय प्रभु अश्रु नेत्रे झरे॥४४
चन्द्रेर उपरे येन खञ्जन बसिया।
उगारये मतिहार येमन गिलिया॥४५
देखि शची गौरमुख प्रेम पूर्ण हइया।
आइस कोले करि बले मोर दुलालिया॥४६
करे धरि कोले करि बले शचीराणी।
घर सरबस याउ तोमार निछनि॥४७
एइमते नाना लीला करे गौरहरि।
बुझिते ना पारे शची पुत्रेर चातुरी॥४८
लोक वेद अगोचर चरित्र अपार।
उद्धत जानिल शची ना बुझि बेभार॥४९
सुदृढ़ चञ्चल पुत्र जानिल निमाइ।
दुःख भावे शचीदेवी सोङरे गोसाँइ॥५०
आर दिने परिणत आनि यत नारी।
पुछिलेन सबाकारे अनुनय करि॥५१
कत साधे पुत्र मोरे दिलेन गोसाँइ।
क्षिप्रमत आचरण बुद्धि किछु नाइ॥५२
एक करे आर बले बुझिते ना पारि।
आचार विचार किछु ना करे विचारी॥५३
शुनि सबे कान्दिते लागिला दुःख-भरे।
कोले करि गोराचाँदे सबे मेलि बले॥५४
केने केने बाप! कर एत अमंगल।
शुनि विश्वम्भर हैला अत्यन्त चञ्चल॥५५
देखि नारीगण व्यथा पाइल अन्तरे।
शची ये कहिल ताहा देखिब सत्वरे॥५६
कबे हैते एइमत हइल पुत्र तोर।
शचो बले ना पारि कहिते किछु ओर॥५७

एकदिन रात्रे पुत्र छिनु कोले करि।
आसि सब देवता रहल घर भरि॥५८
दिव्य सिंहासने मोर निमाइ राखिया।
दण्डवत् करे तारा भूमिते पड़िया॥५९
जागिया देखिनु मुइ एत चमत्कार।
सेइ हैते किबा तन्त्र हइल इहार॥६०
शुनि सबे एइ सत्य बलिलेन वाणी।
कोन देव इहाते रहये अनुमानि॥६१
सब देव नामे एक यज्ञ आरम्भिया।
विप्र सब लैया आइस मिश्ररे बलिया॥६२
स्वस्त्ययन करि कर बालक कल्याण।
पूजा पाइया देव येन याय निज स्थान॥६३
चिन्ता ना करिह शची कहिल निश्चय।
पूजा पाइले देव तोरे करिबे अभय॥६४
सबारे बिदाय दिल पदधूलि लैया।
कहिलेन शची सब मिश्रेरे याइया॥६५
शुनि मिश्र सुचिन्तित द्रव्य सब करि।
यज्ञ करे ब्राह्मणेर गणके आहरि॥६६
तबे शची गौर लैया गेला गङ्गास्नाने।
चञ्चल घुछिल पुत्र—एइ करिमने॥६७
शची' आगे आगे याय विश्वम्भर राय।
खेलिते खेलिते से अशुचि देशे याय॥६८
त्यक्त भाण्ड परश करिया चलि याय।
देखिया जननी देवी करे हाय हाय॥६९
अधिक अचल पुत्र हइल आमार।
स्वस्त्ययनेर धर्मे आर हइल विस्तार॥७०
छि छि बलिया डाके बले कटुतर।
शुनिया सदय वाणी कहे विश्वम्भर॥७१
"कि शुचि अशुचि किबा धर्माधर्म तत्त्व।
ना बुझि विचार किछु मरये जगत॥७२

क्षिति-जल-बायु-अग्नि-आकाश आकार।
जगते यतेक इहा बहि नाहि आर ॥७३
श्रीकृष्ण चरण बहि नाहि अन्य धर्म।
ता बिनु सकल मिछा–कहिल ए मर्म ॥७४
इहा शुनि शचीदेबी विस्मय हइया।
सुरनदी स्नान कैला विश्वम्भर लैया ॥७५
घरे आसि शचीदेवी जगन्नाथे कय।
बालक चरित्र किछु शुन महाशय ॥७६
सर्वयज्ञमय एइ तोमार तनय।
निश्चय जानिल एइ बिघ्न किछु नय ॥७७
अशुचि देशेते गिया कहे हेन बार्ता।
ना देखिल ना शुनिल बालकेर कथा ॥७८
इहा शुनि जगन्नाथ पुत्र कोले कैल।
छुँइल अशुचि देश सब भाल हैल ॥७९
कुलेर प्रदीप मोर नयनेर तारा।
ए देहेर आत्मा तोमा बहि नाहि मोरा ॥८०
इहा बलि दँोहे पुत्र वदन नेहारे।
प्रेमे गर गर तनु आपना पासरे ॥८१
अरुण नयने अश्रु शतधारा गले।
पुलकित सब अंग आध आध बले ॥८२
तबे सेइ विश्वम्भर विश्वरूप सने।
खेलाय विविध खेला ए गीत नाचने ॥८३
इन्द्र उपेन्द्र येन दुइ सहोदर।
देखि शची जगन्नाथ हरिष अन्तर ॥८४
दँोहे दँोहार मुख देखि उपजिल हास।
गोरागुण गाय सुखे ए लोचन दास ॥८५

श्रीराग दिशा।

ओ कि होरे गौराङ्ग जय जय ॥ मूर्च्छा ॥
ओ कि आरे मोर गौराङ्ग प्रेम अमिया आनन्द।
कि ना मोर गौराङ्ग कि आरे जय जय ॥ध्रु॥

एइ मते दिने दिने क्षणे क्षणे आन।
बाढ़ये शरीर येन सुमेरु ब्रन्धान ॥१
अमृतेर धारा येन वचन माधुरी।
शुनि शचीदेवी अति मने कुतुहली ॥२
कथाच्छले कथा शुनिबारे चाहे राणी।
प्रभु कहे शुनिते ना पाइ तोर वाणी ॥३
उच्चकरि शची डाके महाकुतुहली।
शुनिते ना पाइ कहे गोरा वनमाली ॥४
वात्सल्य भावेते मुग्धा हैल शचीमाता।
क्रोध करि छाट लैया याय उनमता ॥५
आजि वाक्य नाहि शुन उद्धतेर मत।
वृद्धकाले तुमि मोरे नाहि दिबे भात ॥६
एत वाक्य शुनि प्रभु शचीर नन्दन।
खटि करि ना शुनिला मायेर वचन ॥७
रुषिला ये शचीदेवी चाहे एकदिठे।
धाइया मारिबारे याय हाते लैया छाटे ॥८
धाइया गोराचाँद गेला अशुचि स्थाने।
त्यक्त मृत्तिकार भाण्ड वर्जये येखाने ॥९
देखिया जननी निज शिरे कर हानि।
हाहाकार करे देवी बले कटुवाणी ॥१०
अधिक से विश्वम्भर रुषिल हियाय।
उपरि उपरि भाण्डे उठिया दाँड़ाय ॥११
कुपित वचन शुनि करे विपरीत।
बुझिया जननी किछु करये पिरीत ॥१२
एस एस बाप! छाड़ जुगुप्सित कर्म।
ए नहे उचित् तोर ब्राह्मणेर धर्म ॥१३
ब्राह्मण कुमार ताहे कुलीनेर पुत्र।
शुनि कि बलिब लोके कुत्सित चरित्र ॥१४
एस एस बाप! स्नान कर गंगाजले।
मायेर पराण फाटे चड़ सिया कोले ॥१५

नहे बा मरिब एइ गङ्गाय झाँप दिया ।
ए घरे ओ घरे येन बेड़ास् कान्दिया ॥१६
कषित ए दशवाण सुबरण तनु ।
एहेन सुन्दर गाय कालि माख केनु ॥१७
अशुचि कुत्सित स्थान छाड़ बाप !मोर ।
चान्देर कलङ्क येन गाये कालि तोर ॥१८
शुनिया रुषिल विश्वम्भर गुणराशि ।
बारे बारे कहोँ तोरे तबु ना बुझसि ॥१९
अशुचि अशुचि करि बोलसि कुबोल ।
कि शुचि अशुचि विचारह आगे मोर ॥२०
इहा बलि सन्मुखे इष्टका लइ हाते ।
इष्टके प्रहार कैल जननीर माथे ॥२१
इष्टक प्रहारे मूर्च्छा पाइला शचीराणी ।
"मा मा" बलिया पुन कान्दये आपनि ॥२२
कान्दनार रोल शुनि पूरनारीगण ।
निकटे ये छिल धाइया आइल तखन ॥२३
गङ्गाजल मुखे दिया सचेतन कैल ।
संज्ञामात्र विश्वम्भर बलिया डाकिल ॥२४
बाहु पासरिया शची पुत्र कोले कैल ।
मूर्च्छित हइया पूर्व ज्ञान पासरिल ॥२५
कान्दये से विश्वम्भर मायेरे देखिया ।
तहिँ एक दिव्यनारी कहिल हासिया ॥२६
चिबुके धरिया विश्वम्भरे बले वाणी ।
नारिकेल फल दुइ माये देह आनि ॥२७
तबे से जीयवे शची एइ तोर माता ।
नहे बा मरिल एइ शुन मोर कथा ॥२८
इहा शुनि विश्वम्भर हरिष हइल ।
तखनि युगल नारिकेल आनि दिल ॥२९
तत्काल गलित वृन्त स्निग्ध सोणावाण ।
नारिकेल दुइ आनि दिला मायेर स्थान ॥३०
देखिया से नारीगण विस्मय हइल ।
एइखाने शिशु नारिकेल कोथा पाइल ॥३१
तहिँ एक दिव्य नारी विलासिनी आछे ।
लहु लहु बोले गोराचाँदे किछु पुछे ॥३२
शिशु हैया नारिकेल कोथा पाइले तुमि ।
तोमार चरित्र किछु बुझियाछि आमि ॥३३
ऐछन शुनिया वाणी विश्वम्भर राय ।
हुहुङ्कार करि धरे मायेर गलाय ॥३४
सचेतन हैया शची पुत्र कैल कोले ।
लाख लाख चुम्ब दिल वदन कमले ॥३५
वयान मुछिल अंग बसन अञ्चले ।
श्रीअंग मार्जन कैल सुरनदी जले ॥३६
स्नान कराइल गंगाजल अभिषेके ।
अन्तर विस्मये पुत्र वदन निरखे ॥३७
समुद्र गम्भीर कर दिनकर छटा ।
कोटि निशाकर तेज नख कुड़ि गोटा ॥३८
कोटि काम जिनि किबा सुललित तनु ।
रङ्गिम भंगिम आँखि भुरु कामधनु ॥३९
सर्व लोक-नाथ से अवनी परकाश ।
देखिया जननी पाइल अन्तरे तरास ॥४०
पूरुव रहस्य गर्भ धारणेर काले ।
देखिल देवता चारिपाशे स्तुति करे ॥४१
आर यत बालक चरित्रे ये ये कैल ।
तखने सकल सेइ स्मरण हइल ॥४२
निश्चय जानिल ज्योतिर्मय सनातन ।
निर्लेप निर्विकार निरञ्जन नारायण ॥४३
सर्वमय सर्वशक्तिधर आत्माराम ।
योगीन्द्रगणेर इहोँ ध्यान अनुपाम ॥४४
मोर भाग्य गणिबारे नारे कोन जन ।
ब्रह्मा महेश्वर आदि यत देवगण ॥४५

सबार आराध्य एइ आभार तनय ।
बलिते बलिते कोले कैल गौरराय ॥४६
येइ मात्र कोले कैलविश्वम्भर हरि ।
पुत्रभावे शचीदेवी एश्वर्य्य पासरि ॥४७
घरेते आइला शची विस्मय भाबिया ।
कोन् देव आविर्भाव हैल पुत्रे सिया ॥४८
एत चिन्ति रक्षा बान्धे अङ्गे हात दिया ।
जनार्दन हृषीकेश गोविन्द बलिया ॥४९
शिर तोर रक्षा करु चक्र सुदर्शन ।
चक्षु मुख नासिका राखुक नारायण ॥५०
वक्ष तोर रक्षा करु देव गदाधर ।
भुज तोर रक्षा करु प्रभु रघुबर ॥५१
उदर तोर रक्षा करुन रामोदर ।
नाभि तोर रक्षा करुन नृसिंह ईश्वर ॥५२
जानु दुटि रक्षा करु देव त्रिविक्रम ।
रक्षा करु धराधर तोर दु'चरण ॥५३
सब अंगे थुत्कृति दिया शचीमाता ।
पुत्रभावे अतिशय हइला उनमता ॥५४
हेनमते आनन्दे सानन्दे दिन गेल ।
परम मङ्गल काल आसि सन्ध्या हैल ॥५५
सुखे शची गौरहरि प्राङ्गणे राखिल ।
दास दासीगणे सन्ध्याकार्य्ये नियोजिल ॥५६
दिन अवसाने सन्ध्याकाल यदि हैल ।
पूर्णिमार पूर्णचन्द्र गगने उदिल ॥५७
हेनकाले गौर चन्द्र चतुर सुजान ।
मा मा बलि कान्दे येन बालक अज्ञान ॥५८
शची बले सन्ध्याकाले ना कर क्रन्दन ।
याहा चाह ताहा दिब शुन मोर धन ॥५९
प्रभु कहे चाँदे देह आमारे पाड़िया ।
हासि हासि शची कहे आरे अबोधिया ॥६०
धिक् धिक् ए पुत्र हइल मोर घरे ।
चाँद कि आकाशेर केहो धरिबारे पारे ॥६१
प्रभु बले बलिले ये याहा चाह तुमि ।
ताहा दिब एमन कहिले केन वाणी ॥६२
एइ लागि चाँद निते हैल मोर मन ।
इहा बलि उच्च करि करये रोदन ॥६३
आँचले धरिया कान्दे नाना खटि करे ।
चरण आछाड़े करे नयान कचाले ॥६४
मायेर गलाय धरि कान्दे गोरा राय ।
खेला करिबारे आकाशेर चाँद चाय ॥६५
क्षणे खटि क्षणे लुटि मायेर चुल छिण्डे ।
धूलाय धूसर कर हाने निज मुण्डे ॥६६
देखिया जननी बले अबोधिया पुत ।
तोमार चरित्र मोरे करे अदभुत ॥६७
आकाशेर चान्द कथि पाब धरिबारे ।
ओहेन कतेक चाँद तोमार शरीरे ॥६८
हेर देख लाजे चान्द मलिन हइल ।
ना बुझिया तोर आगे उदय करिल ॥६९
ना जानिया नवद्वीपे चान्देर उदय ।
लज्जा पाइया मेघेर भितर गिया रय ॥७०
नवद्वीपे हाउ आइल शुनह वचन ।
ना कान्दिह आरे बाप आमार जीवन ॥७१
इहा बलि कोले करि चुम्व देइ मुखे ।
आपना पासरे देवी प्रेमानन्द सुखे ॥७२
आनन्दे सानन्दे देवी सम्पद विह्वला ।
दिक बिदिक नाहि देखि पुत्र लीला ॥७३
अन्तर उल्लासे देवीर गदगद भाष ।
गोरा गुण गाय सखे ए लोचन दास ॥७४

———

धानशी राग ।

जय जय जय, शचीर नन्दन,
आनन्द कन्द किशोरा ।
बालकेर सङ्गे, खेले नानारङ्गे,
करिया अर्भक लीला ॥ध्रु॥१
खेलिते खेलिते, अति आचम्बिते,
श्वान शावक दुइ चारि ।
बाढ़ल कौतुक, तहिँ वाचि एक,
धरि निल गौरहरि ॥२
सङ्गेर छाओयाले, कहिल ताहारे,
शुनशुन विश्वम्भर ।
कुत् सेत छाड़िले, भाल तुमि निले,
ना खेलिब याब घर ॥३
तबे विश्वम्भर, कहिल उत्तर,
एइ छाना सबाकार ।
सबेइ मिलिया, खेल इहा लैया,
थाकिबे घरे आमार ॥४
इहा बलि सेइ, श्वान सुत लइ,
चलिला आपन घरे ।
निज घरे गिया, गले दड़ि दिया,
बान्धिल पिण्डार उपरे ॥५
हेनकाले तथा, विश्वम्भर माता,
समाधिया गृह काज ।
स्नान करिबारे, गेला गङ्गातीरे,
पुरनारी करि साथ ॥६
तबे विश्वम्भर, पाइया शून्य घर,
श्वानेर शावक लैया ।
बालकेर संगे, खेले नानारंगे,
धूलाय धूसर हैया ।।७

खेलिते खेलिते, बालक सहितेँ,
दँोहे उपजिल द्वन्द्व ।
तबे गौरहरि, एके पुरस्करि,
आररे बलिला मन्द ॥८
निति निति आसि, कलह करिवि,
केमन स्वभाब तोर ।
हेन बुझि तोर, चरित आचार,
श्वानेर शावक चोर ॥९
सेहो सेइ काले, रुषिया अन्तरे
बाहिरे चलिला धाइया ।
शचीर सन्मुखे, बले बड़ डाके,
कोपे गरगर हैया ॥१०
शुन शुन आरे, तोर विश्वम्भरे,
श्वानेर शावक लैया ।
क्षणे कोले करे, क्षणे गले करे,
आपने देखना सिया ॥११
शुनि शचीराणी, बालकेर वाणी,
सत्वरे आइला घरे ।
देखे परतेके, श्वानेर शावके,
विश्वम्भर कोले करे ॥१२
शिरे कर हानि, बोलये जननी,
ना जानि कि तोर लीला ।
सकल थाकिते, अति विपरीते,
कुक्कुर छा लैया खेला ॥१३
जनक तोहारि, अति धर्मचारी,
ताहार तनय तुमि ।
कि बलिबे लोके, श्वानेर शावके,
खेलाह कि सुख मानि ॥१४
ब्राह्मणकुमार, हेनइ आचार,
किछुइ नहिल तोर ।

इहा ये शुनिब, के भाल बलिब
ए शेल हृदये मोर ॥१५
एहेन सुन्दर, मूरति तोमार
धूला माख किवा सुखे ।
बलिते वचन, नामाह वदन,
आगि लागु मोर मुखे ॥१६
कत चाँद जिनि, तोर मुखखानि,
ए थिर विजुरी अङ्ग ।
वेश नाहि चाओ, धूला माख गाय,
अधम बालक सङ्ग ॥१७
क्रोधे शचीदेवी, दन्ते ओष्ठ चापि,
बालकेरे देइ गालि ।
निज घरे याह, कुक्कुर–छा लह,
मा बापेरे देह डालि ॥१८
इहा बलि सेइ, पुत्र मुखे चाइ,
डाकये आनन्दे भोर ।
आइस आइस बाप, कोले आसि चाप,
वदन चुम्बउँ तोर ॥१९
श्वानेर शावक, छाड़ि देह बाप,
स्नान कर गङ्गा जले ।
बेला दु'पहर, क्षुधा नाहि तोर,
कत दुख देह मोरे ॥२०
नहे श्वान सुत, बान्धि राख पुत,
स्नान करिबारे याह ।
बिकाले खेलिह, कुक्कुर छा लैह,
एखनेते किछु खाह ॥२१
ओ मुख मलिन, सोणार नलिन,
आतपे येन मैलान ।
नासिकार आगे, घर्मबिन्दु जागे,
देखिया विदरे प्राण ॥२२

मायेर उत्तर, शुनि विश्वम्भर,
हासि उठि बले वाणी ।
मोर श्वान-सुता, जानि याय कोथा,
तबे से जानिवे आपनि ॥२३
इहा बलि हरि, मायेर गला धरि,
स्नान करिवारे चाय ।
ए धूलि झाड़िया, वदन मुछिया,
गन्ध तैल दिल गाय ॥२४
स्नान करिबारे, याय गङ्गातीरे,
वयस्य करिया सङ्गे ।
सुरनदी–जले, अति कुतूहले,
जलक्रीड़ा करे रङ्गे ॥२५
सबे सेबा अङ्गे जल देइ रङ्गे,
मातिल कुञ्जर येन ।
गोरा–बर तनु, सुमेरु से जनु,
अटल अद्भुत हेन ॥२६
एथा शचीदेवी, मने अनुभवि,
श्वानेर छा एड़ि दिल ।
निज माता पाइया, सङ्गे गेल धाइया,
ना जानि कोथारे गेल ॥२७
सेइखाने एक, आछिल बालक,
धाइया गेल गङ्गाकूले ।
शुनि विश्वम्भर, जननी तोमार,
कुक्कुर छा एड़ि दिले ॥२८
बालक वचन, शुनिया तखन,
सत्वरे आइल धाइया ।
येखाने थाकित, सेइ श्वान सुत,
सेखाने देखिल गिया ॥२९
चारिदिके चाय, श्वानसुत नाइ,
अन्तर ज्वलिल कोपे ॥

कान्दे उभराय,　　गालि देइ माय,
　　श्वानेर शावक शुके ॥३०
शुन अबोधिनि,　　कि कैलि जननी,
　　ए दुख देयलि मोरे ।
परम सुन्दर,　　श्वान शिशुबर,
　　केमते दिलि काहारे ॥३१
बले शचीराणी,　　आमि त ना जानि,
　　श्वानेर शावक तोर ।
एइखाने छिल,　　केबा कति निल,
　　सङ्गेर बालक चोर ॥३२
कोन् प्रयोजने,　　करह क्रन्दने,
　　श्वानेर शावक लागि ।
लइल ये जन,　　करिया यतन,
　　कालि आनि दिब मागि ॥३३
करह अवधि,　　आपन शपथि,
　　करिया बलों मो तोरे ।
श्वानेर शावके,　　आनि दिब तोके,
　　ना कान्द ना कान्द आरे ॥३४
एतेक बलिया,　　वयान मुछिया,
　　पुत्र कोले करि निल ।
श्रीमुख चाहिया,　　हरषित हैया,
　　लाख लाख चुम्ब दिल ॥३५
अङ्गेर मार्ज्जना,　　करि शुचिपणा,
　　नाहाइल गङ्गाजले ।
सन्देश मोदक,　　क्षीर कदलक,
　　भक्षण करा'लो भाले ॥३६
तिन झुटि माथे,　　पाँच थुपी ताथे,
　　एकत्र करिया बान्धे ।
नयाने काजर,　　सुरेखा उजोर,
　　दिठिये जगत रञ्जे ॥३७
रक्त प्रान्त दड़ा,　　कटी दिये बेड़ा,
　　प्रपद अञ्चल दोले ।
मुकुतार हार,　　हृदय उपर,
　　चन्दन तिलक भाले ॥३८
अङ्गद कङ्कण,　　अमूल्य रतन,
　　चरणे मगरा खाड़ु ।
बालकेर ठाँइ,　　खेलिबारे याइ,
　　हाते करि क्षीर लाड़ु ॥३९
वदन सुन्दर,　　जिनि शशधर,
　　वचन गभीर मधु ।
बालकेर माझे,　　शोभे द्विजराजे,
　　ताराये बेढ़ल विधु ॥४०
ऐछन लीलाय,　　ठाकुर खेलाय,
　　देवता देखिया हासे ।
मार्ज्जार कुक्कुर,　　परशे ठाकुर,
　　कौतुक लोचन दासे ॥४१

गौराङ्ग परशे से कुक्कुर भाग्यवान् ।
स्व-भाव छाड़िया तार हैल दिव्यज्ञान ॥१
राधाकृष्ण गौराङ्ग बलिया डाके नाचे ।
देखि नदीयार लोक धाय सब पाछे ॥२
कुक्कुरेर आवेश एमत सबे देखि ।
पुलकित सब अङ्ग अश्रुमय आँखि ॥३
आचम्बिते श्वान-देह छाड़ि भाग्यवान् ।
विष्णुलोक हइया करे गोलोके पयान ॥४
सबे देखे दिव्य एक रथ से आसिया ।
आकाशेर पथे याय ताहारे लइया ॥५
सुवर्णेर रथ—चारु सहस्र शेखर ।
मणि मुकुतार झारा करे झलमल ॥६

लक्ष लक्ष घण्टाध्वनि हइछे ताहाते।
कांस्य करताल कत बाजे यूथे यूथे ॥७
शङ्खध्वनि जयध्वनि हरिध्वनि शुनि।
गन्धर्व किन्नर गाय राधाकृष्ण वाणी ॥८
ध्वज पताका सब उड़े रथोपरे।
सूर्य्येर मण्डल ढाके किरण उजोरे ॥९
रथ-मध्यस्थाने एक रत्नसिंहासने।
कमनीय कान्ति तेहो अति मनोरमे ॥१०
दिव्य आभरण तार अङ्ग माझे साजे।
कोटि कोटि मदन मूर्च्छित हय लाजे ॥११
परम शीतल सेह कोटिचन्द्र जिनि।
राधाकृष्ण गौराङ्ग बलिया करे ध्वनि ॥१२
सिद्धगण सबे आसि चामर करिया।
चलिला गोलक पथे ताहारे लइया ॥१३
ब्रह्मा शिव सनकादि सबे कर जुड़ि।
गौराङ्ग महिमा गाय सबे रथ बेड़ि ॥१४
जय जय कृपासिन्धु शचीर नन्दन।
एमन करुणा प्रभु ना कैल कखन ॥१५
कुक्कुर उद्धार करि गोलके पाठाय।
दिव्य-देह हेन कभु केहो नाहि पाय ॥१६
जय जय अगतिर गति गौरहरि।
जय जय अवतार सबार उपरि ॥१७
तोमार करुणाय कलि जीव निस्तारिब।
आर किबा लीला तोर अलौकिक हब ॥१८
मोरा सब देव कबे हब भाग्यवान्।
पाइब तोमार पद प्रसाद प्रदान ॥१९
कुक्कुर तरिया याय तोमार परशे।
एमन करुणा प्रभु नाहि हृषिकेशे ॥२०
कबे मोरा हब एमन भाग्यभागी।
कुक्कुर कृतार्थ कैले—ताइ मोरा मागि ॥२१
नमो नमः अदोष दरशी गौरराय।
नमो नमः तोमार सुन्दर दुइ पाय ॥२२
अनुव्रजे हेनरूपे यत देवगण।
कबे मोरा पाब गोराचाँदेर चरण ॥२३
एथा गोलोकेते आइला महाभाग्यवान्।
गौराङ्गेर लीला अनुव्रत करे गान ॥२४
हेन अद्भुत गोराचाँदेर प्रकाश।
आनन्दे करये गुण ए लोचन दास ॥२५

तबे शचीदेवी, मने अनुभवि,
षष्ठीव्रत करिबारे।
पुरनारी यत, सबे करे व्रत,
गिया वटवृक्ष तले ॥१
नैवेद्येर सज्ज, करिया सुसज्ज,
आँचले ढाकिया लैया।
व्रत करिबारे, याय वटतले,
अति हरषित हैया ॥२
हेनइ समय, विश्वम्भर राय,
खेलिते खेलिते पथे।
जननी देखिया, आइल धाइया,
कि ल'ये याओ मा हाते ॥३
बाहु पसारिया, पथ आगुलिया,
जननी राखिते चाय।
कि कि बलि याय, धरिबारे चाय,
आखटि करिया माय ॥४
देव आराधने, करिया यतने,
लइया नैवेद्य खानि।
षष्ठी पूजिबारे, याइ वटतले,
एखाने खेलह तुमि ॥५

आसिबार बेले, प्रसाद तोमारे,
आनि दिब शुन बाप ।
देवता पूजिब, बर से मागिब,
घुचिब अमङ्गल ताप ॥५
एतेक उत्तरे, जननी अन्तरे,
जानिया श्रीविश्वम्भर ।
कहे लहु वाणी, अमिया लावणि,
मुखे मिलाइछे तार ॥६
एइ मते तोरे, बलोँ बारेबारे,
ना बुजिस अबोधिनि ।
क्षुधाय आमार, पोड़ये अन्तर,
नैवेद्य खाइब आमि ॥७
इहा बलि धरि, सेइ गौरहरि,
नैवेद्य भरिल मुखे ।
देखिया जननी, हाहाकार वाणी,
अन्तर ज्वलिल दुःखे ॥८
देवतार द्रव्य, घृत मधु गव्य,
विश्वम्भर खाइल देखि ।
शचीर अन्तरे, धक धक करे,
कोपे छलछल आँखि ॥९
अबोधिया पुत, बुजाइब कत,
देवता ना मान तुमि ।
ब्राह्मण कुमार, हइया दुराचार,
ए दुःखे मरिब आमि ॥१०
शुनि गौरमणि, जननीर वाणी,
अन्तर ज्वलिल कोपे ।
कहिल ए सब, ना बुजिस तब्,
कुबोल बोलसि मोके ॥११
शुन अबोधिनि, आमि सब जानि,
आमि तिनलोक सार ।
यत यत देख, आमि मात्र एक,
त्रिभुवने नाहि आर ॥१२
तरुमूले येन, जल निषेचन,
उपरे सिञ्चित शाखा ।
प्राण निषेवण, इन्द्रिय येमन,
ऐछन आमार लेखा ॥१३

तथाहि श्रीमद्भागवते (४।३१।१४)

यथा तरोर्मूल-निषेचनेन
तृप्यन्ति तत्स्कन्ध-भुजोपशाखाः ।
प्राणोपहाराच्च यथेन्द्रियाणां
तथैव सर्वार्हणमच्युतेज्या ॥१४

तरुमूल में जल सेचन करने से जिसप्रकार शाखा पल्लव प्रभृति परितृप्त होते हैं, भोजन सामग्री प्रभृति प्रदान करने पर जिस प्रकार इन्द्रियवृन्द सन्तुष्ट होते हैं, उस प्रकार एकमात्र अच्युत श्रीकृष्ण की परिचर्य्या से ही समस्त देवगण परितृप्त होते हैं ॥

इहा बलि हरि, करिया चातुरी,
मायेर गलाय धरे ।
शचीर अन्तरे, धक धक करे,
गेला षष्ठी पूजिबारे ॥१५
तवे षष्ठीदेवी, बहुविध सेवि,
बोलये कातर बाणी ।
ए मोर छाओयाल, बड़इ धामाल,
दोष क्षमिबे आपनि ॥१६
तुमि दिले मोरे, ए क्षेपा कोङरे,
केमने लइबे दोष ।
करिबे कल्याणे, ए मोर नन्दने,
ना करिह किछु रोष ॥१७
सात पाँच नाइ, ए धन निमाइ,
दिले गो करुणा करि ।

विघ्न नाहि हये, ए मोर तनये,
ए बालक देवी ! तोरि ॥१८
एतेक बलिया, चरणे धरिया,
यत वृद्ध नारीगणे ।
करिया प्रणति, करये काकुति,
आशीर्वाद कर मने ॥१६
चरणेर धूलि, देह निज बलि,
मोर गोराचाँद शिरे ।
ए मोर छाओयाल, बड़इ चञ्चल,
बुद्धि हय येन स्थिरे ॥२०
दन्ते तृण धरि, बले शचीदेवी,
सबार चरण सेवि ।
सबे देह बर, मोर विश्वम्भर,
पुत्र हउ चिरजीवी ॥२१
षष्ठीपूजा करि, पुत्र करे धरि,
घरेते आइला देवी ।
जगन्नाथ सने, करे अनुमाने,
मने अनुभव भावि ॥२२
कि कहिब आर, सर्व देव सार,
पृथिवीते परकाश ।
बालकेर सङ्गे, खेले नान रङ्गे,
कहये लोचन दास ॥२३

वराड़ी राग

तबे आर कतदिने, सेइ शची नन्दने,
धूलाय खेलाय राजपथे ।
ए धूलि धूसर, हेम-गिरि कलेबर,
अनुगत वयस्य सहिते ॥१
शिशु शिशु धूला खेलि, क्षणे हय गालागालि,
धूला रणे अङ्ग दिगबास ।
समान से वयःक्रम, सबे मिलि एकमर्म,
घर्मबिन्दु खेलार आयास ॥२
सबे मिलि खेला खेले, गुप्तवेजा हेनकाले,
सेइ पथे आइला आचम्बित ।
तार ये ये निज जन, सङ्गे करे आगमन,
ज्ञान पथ विचारे पण्डित ॥३
यार सङ्गे अनुमाने, योगशास्त्र बाखाने,
कर शिर करिया चालन ।
देखि विश्वम्भर राय, तार पाछे पाछे धाय,
अनुसरि गमन वचन ॥४
देखि वैद्य मुरारी, कटाक्षे तिलेक हेरि,
पुन करे योगेर वाखान ।
सेइमत विश्वम्भरे, योगेर बाखान करे,
तेन नाड़े हात मुखखान ॥५
एइमत बेरि बेरि, परिहासे गौरहरि,
शिशुगण संहति करिया ।
देखिया मुरारी वैद्य, निज आचरणे गद्य,
कुवचन कहिल रुषिया ॥६
एच्छारे के बले भाल, देखिल त छाओयाल,
मिश्रपुरन्दर सुत एइ ।
सर्वत्र शुनिये कथा, इहार से गुणगाथा,
भालो नाम इहार निमाइ ॥७
ऐछन शुनिया वाणी, रुषिला से गौरमणि,
अनुगते कृपार कारणे ।
भ्रूकुटि वदन करि, बले बाक् चातुरी,
जानाइव भोजनेर क्षणे ॥८
शुनि विश्वम्भर वाणी, मुरारि से मने गणि,
घर गेला विस्मित हियाय ।
गृहकार्य्ये व्यापृते, पासरिल आन चिते,
हैल तबे भोजन समय ॥६

एथा विश्वम्भर हरि, अङ्गेर सुबेश करि,
कटिते आँटिया पिन्धे धड़ा ।
शिरे शोभे तिन झुटि, गलाय से रसकाठि,
कण्ठे लग्न मुकुता दोबेड़ा ॥१०
नयाने काजल रेखा, पाँचथुपी बान्धे शिखा,
झलमल हेम अलङ्कार ।
चरणे मगरा खाड़ु, हाते करि क्षीर लाड़ु,
चलिला ठाकुर विश्वम्भर ॥११
मुरारि गुप्तेर घरे, गेला निज अभ्यन्तरे,
भोजन करये वैद्यराज ।
मेघगम्भीर नादे, निज मन परसादे,
मुरारि बलिया दिला डाक ॥१२
स्वर शुनि सङरिल, गोराचाँद ये कहिल,
गुप्तवेजा चमकित चित ।
तबे सेइ गौरहरि, कि कर कि कर बलि,
सेइखाने हइल उपनीत ॥१३
तरस्त ना हैओ तुमि, एइखाने आछि आमि,
भोजन करह वाणी बैल ।
मध्य भोजन बेला, धीरे धीरे नियड़े गेला,
थाल भरिया मूत मूतिल ॥१४
कि कि बलि छि छि करि, उठिला ये मुरारि,
करतालि दिया बले गोरा ।
भक्तिपथ छाड़िया, कर शिर नाड़िया,
योग बल एइ अभिपारा ॥१५
ज्ञान कर्म उपेखिया, कृष्ण भज मनदिया,
रसिक विदग्ध चिदानन्द ।
भौतिके याहार दृष्टि, ओ नहे भजन पुष्टि,
नाहि बुझ बुद्धि अति मन्द ॥१६
परम दयालु हरि, तिँहो सर्वशक्तिधारी,
जीवेते सम्भवे एकि कथा ।
तिँहो ब्रह्म सनातन, गोपीर जीवनधन,
ना भजिया केने देह व्यथा ॥१७
इहा बलि गौरमणि, कति गेला नाहि जानि,
मुरारि देखिते नाहि पाय ।
मने मने अनुमाने, ए त कभु नहे आने,
सत्य कृष्ण-शचीर तनय ॥१८
एत अनुमान करि, तबे सेइ मुरारि,
आस्तेव्यस्ते चलिला सत्वर ।
चलिते ना पारे पथे, अति आनन्दित चिते,
गेला यथा मिश्र पुरन्दर ॥१९
शची जगन्नाथ मेलि, पुत्रेर दुलाल करि,
तुमि मोर सरबस धन ।
येखाने सेखाने याइ, यथा येबा दुख पाइ,
पासरिये देखि चान्द-वदन ॥२०
इहा बलि दोँहे मेलि, दुइ गाले चुम्ब करि,
कोले करिबारे टानाटानि ।
हेनकाले मुरारि, सेइखाने बराबरि,
आनन्दे ना निःसरये वाणी ॥२१
देखिया तरस्त हैया, शची जगन्नाथ गिया,
वैद्येरे करिल अभ्युत्थान ।
कारे किछु ना बलिल, आर सब पासरिल,
देखि गोराचाँदेर वयान ॥२२
पुलकित सब गा, आपाद मस्तक या,
धार बहे नयानेर जले ।
अरुण कमल आँखि, ऐ से प्रेमार साखी,
गदगद आध-आध बले ॥२३
स्थिर दाँड़ाइते नारे, पड़िया चरण तले,
पुनःपुनः करे परणाम ।
देखिया से विश्वम्भर, मायेर कोल भितर,
प्रवेशिल येहेन अजान ॥२४

शची जगन्नाथ बले, आहाहा कि कैले कैले,
तोरे देखि देवता समान ।
आशीर्वाद योग्य तोर, एइ से बालक मोर,
कि करिले बड़ अविधान ॥२५
तोरे बलि शूद्रमुनि, सर्व लोके वाखानि,
बालके कि कैल अपराध ।
मोदेर ये हय हउ, बाढ़ु शिशु परमाउ,
चिरजीवी देह आशीर्वाद ॥२६
इहा बलि हाते धरे, काकुति मिनति करे,
शची आर मिश्रपुरन्दर ।
हासि बले मुरारि, एहि पुत्र तोहारि,
देव देव देव विश्वम्भर ॥२७
बालक लालिछ काछे, इहा त जानिबे पाछे,
तोर सम नाहि भाग्यवान ।
सम्बरि राखिह मने, एइ मोर वचने,
एइ गौर सेइ भगवान् ॥२८
इहा बलि गुप्तवेजा, ना करिल आन चर्चा,
चलि गेला हरिष अन्तर ।
पुलकित सब गा, गोरापद देखिया,
गेला यथा अचार्य्येर घर ॥२९
अद्वैत आचार्य्य नाम, सेइ सर्वगुणधाम,
सेइ सर्वजन शिक्षागुरु ।
पड़ि से चरणतले, मुरारि मिनति करे,
तुमि सर्ववेत्ता कल्पतरु ॥३०
देखिलुँ मो अद्भुत, मिश्रपुरन्दर सुत,
निमाइ पण्डित विश्वम्भर ।
बाल्यक्रीड़ा करे रङ्गे, सकल शिशुर सङ्गे,
चरित्र देखिलुँ लोकोत्तर ॥३१
इहा शुनि द्विजमणि, हुहुङ्कार करे ध्वनि,
पुलके पूरिल सब अङ्ग ।
रहस्य रहस्य एइ, तोमारे निभृते कइ,
सेइ ब्रह्म रसिक श्रीअङ्ग ॥३२
इहा बलि कोलाकोलि, दुजने आनन्दे भुलि,
वेकत करये विशोयास ।
अखिल भुवनपति, कृपाय आइला क्षिति,
गुण गाय ए लोचन दास ॥३३

भाटियारी राग । दिशा ॥
हरि बोल हरि बोल चौदिक भरि शुनि ।
हाते तालि जय जय नाचे द्विजमणि ॥ध्रु ॥
बयस्य बालक सब करि एकमेला ।
हरिगुण कीर्त्तन भालो पातियाछे खेला ॥१
चौदिके बालक बेढ़ि हरि हरि बले ।
आनन्दे विभोर प्रभु भूमे गड़ि बुले ॥२
बोल बोल बलि डाके मेघगम्भीर स्वरे ।
आइस आइस बलिया बालक कोले करे ॥३
श्रीअङ्ग परशे बालक पासरे आपना ।
फाँपरे पड़िया सेइ बालक कान्दना ॥४
आपाद मस्तके पुलक अश्रुधारा गले ।
करतालि दिया बालक हरि हरि बले ॥५
चौदिके बालक बेढ़ि माझे गोरा सिंह ।
मधुमय कमले येन बेढ़ियाछे भृङ्ग ॥६
हेन काले सेइ पथे दुइ चारि पण्डित ।
विश्वम्भरेर खेला से देखिल आचम्बित ॥७
अपरूप देखे गोरा बालकेर खेला ।
वनफुल गाँथिया सबार गले माला ॥८
हरि हरि बले मुखे करे करतालि ।
आनन्दे नाचिया बुले माझे गौरहरि ॥९
आपना पासरि पण्डित सबे आइल मेले ।
करतालिदिया तबे ताराओ हरि बले ॥१०

येबा आसे याय पथे देखि हय भोला।
काँकेते कलस करि चाहे नारीगुला ॥११
हरि हरि बोल शुनि जय जय नादे।
आनन्दे धाइल सबे देखिबारे साधे ॥१२
हरिबोल शुनिया शची आइला आचम्बिते।
देखिल आपन पुत्र निमाइ पण्डिते ॥१३
पुत पुत बलि शची निमाइ कैल कोले।
सबारे देखिया से निष्ठुर वाणी बोले ॥१४
एमत वेभार सब पण्डित सभाय।
पर पुत्र पागल करि उन्मत्त नाचाय ॥१५
कर्कश कथाय सभार हइल चेतन।
कि कैल कि कैल बलि गणे मने मन ॥१६
विश्वम्भरे लैया गेला विश्वम्भरेर माता।
आनन्दे लोचन गाय गोरा गुणगाथा ॥१७

सिन्धुड़ा राग।

अकलङ्क कलानिधि उदय नदीया रे।
आमार गौराङ्ग चाँदे सबे देख सिया रे॥

एइखाने एक कथा कहिब एखन।
मुरारिते दामोदरे ये हइल कथन ॥१
मुरारिके पुछिला पण्डित दामोदर।
एक निबेदेउँ चिर वेदना अन्तर ॥२
कह कह गुप्तवेजा पुछोँ तोर ठाँइ।
कति गेला विश्वरूप ठाकुरेर भाइ ॥३
ताहार चरित्र यबे पुछे दामोदर।
कहये मुरारि बड़ हरिष अन्तर ॥४
शुन शुन दामोदर! पण्डित प्रधान।
ये जानिये कहोँ किछु तोर विद्यमान ॥५
विश्वम्भर जेष्ठ विश्वरूप गुणधाम।
कि कहिब तार गुण चरित्र वाखान ॥६
अल्पकाले सर्वशास्त्र जानिला सकल।
तेमत तत्पर बुद्धि संसारे बिरल ॥७
स्वच्छन्द हृदय द्विज देव गुरु भक्त।
पितामातार सेबा करे अति अनुरक्त ॥८
वेदान्त सिद्धान्त जाने सर्व धर्माधर्म।
विष्णुभक्ति विनु से ना करे कोन कर्म ॥९
सर्वलोक प्रिय से परम महासिद्धि।
अन्तरे वैराग्य तत्त्वज्ञाने निष्ठा बुद्धि ॥१०
समाध्यायि सने कथा पुँथि वामहाते।
जगन्नाथ पिता ता देखिला आचम्बिते ॥११
षोड़श वरिष पुत्रेर हैल वयःक्रम।
विवाहेर योग्य—रूप यौवन सम्पन्न ॥१२
एइ मनःकथा पिता हृदये चिन्तिल।
विश्वरूप योग्य कन्या मने विचारिल ॥१३
चिन्तिते चिन्तिते द्विज आइला निजघरे।
शची मने बसि तबे युकति ये करे ॥१४
हेनकाले विश्वरूप आइलेन घर।
सुविस्मित दोँहे देखि बुझिला अन्तर ॥१५
हृदये जानिल मोर विवाहेर तरे।
चिन्तित हइला दोँहे कार्य्य करिबारे ॥१६
विवाह करिब आमि—ए नहे उचित।
नहे बा जननी दुख पाबे विपरीत ॥१७
एइ मने अनुमानि रात्रि सुप्रभाते।
बाहिर हइया गेला पुँथि करि हाते ॥१८
गङ्गाजल सन्तरण करि पार हैला।
गत मात्र महाशय सन्न्यास करिला ॥१९

पठभञ्जरी राग।

तृतीय प्रहर वेला, पुत्र केने ना आइला,
पिता माता चिन्तित हृदय।

जगन्नाथ खोँज करे, चाहे प्रति घरे घरे,
ना पाइला आपन तनय ॥१
तबे लोक काणाकाणि, कार्य्य हैल जानाजानि
विश्वरूप सन्नयास करण ।
तो काणि मो काणि कथा, शुनि जगन्नाथ पिता,
आचम्बिते हरिल चेतन ॥२
शचीदेवी इहा शुनि, मूर्च्छित पड़िला भूमि,
अन्धकार हइल त्रिजगत ।
विश्वरूप बलि डाके' आइस पुत्र देखि तोके,
कि लागिया हैला बिरकत ॥३
सेहेन सुन्दर गा, सेहेन सुन्दर पा,
केमने हाँटिया याबे पथे ।
प्रहरेक भोक् तुमि, तिलेक सहिते नार,
आखटि करिबे आर काते ॥४
पड़िबारे याओ पुत, सोयास्थ ना पाङ चित,
वेलि चाह तखने तखन ।
स्नान करिबारे याओ, ताहे स्थिर नाहि पाङ,
विश्वरूप आसिबे कखन ॥५
तुमि मा बलिया डाक, सेइ धन लाखेलाख,
मुख चाइया पासरोँ आपना ।
ना जानि कि दुख पाइया, मोर मुखे आगि दिया,
सन्नयास करिले दीनपणा ॥६
कति गेला तोर पिता, याह विश्वरूप यथा,
धरिया आनह पुत्र घरे ।
ये बलु से बलु लोके, पुत्र आनि देह मोके,
पुन उपवीत दिमु तारे ॥७
जगन्नाथ बले वाणी, शुन देवी शचीराणी,
स्थिर कर आपन अन्तर ।
शोक ना करह आर, मिथ्या सब ए संसार,
विश्वरूप सुपुरुषबर ॥८
आमार वंशेर भाग्य, विश्वरूप पुत्र योग्य,
आकुमार करिल सन्नयासे ।
एइ अशीर्वाद कर, सेइ पथे रहु स्थिर,
सन्नयास राखुक अनायासे ॥९
सम्पदे विपद हेन, ना मानह इहा शुन,
शोक ना करह अकारण ।
एकटि सन्नयास करे, कोटि कुल निस्तारे,
विश्वरूप पुरुष रतन ॥१०
शुनि जगन्नाथ वाणी, पुन कहे शचीराणी,
कि कहिले कह महाशय ।
एकटि सन्नयास करे, कोटि कुल निस्तारे,
भाल कैल आमार तनय ॥११
एइमत दुइजने, हरिष बिषाद मने,
गोङाइला कतक समय ।
कि कहिब से महिमा, भाग्यपथे नाहि सीमा,
गोराचाँद याहार तनय ॥१२
कहिल मुरारि गुप्त, दामोदर पण्डित,
शुनि विश्वरूपेर सन्न्यास ।
पुनरपि पुछे कथा, विश्वम्भर गुणगाथा,
कहे दीन ए लोचन दास ॥१३
विश्वम्भर हेनकाले, बसिया मायेर कोले,
नेहारेये बापेर बयान ।
कति गेला मोर भ्राता, शुन शुन पिता माता,
आमि तोर करिब पालन ॥१४
एहेन शुनिया वाणी, जगन्नाथ शचीराणी,
दोँहे मेलि पुत्र कैल कोले ।
देखि विश्वम्भर मुख, पासरिल यत दुख,
ए कथा लोचन दास बोले ॥१५

———

पौगण्ड लीला

धानशी राग ।

एइमते दिने दिने मिश्र पुरन्दर ।
चिन्तिते लागिला मने देखि विश्वम्भर ॥१
शुभदिन शुभक्षण तिथि सुनक्षत्र ।
हातेखड़ि दिल तार समय विचित्र ॥२
दिने दिने पड़े सेइ जगतेर गुरु ।
देखि शची जगन्नाथ आपना पासरु ॥३
कि माधुरी करि प्रभु क ख ग घ बोले ।
देखि शची जगन्नाथ सब दुख भोले ॥४
दिन दुइ तिने से लिखिल सर्वफला ।
निरन्तर लिखेन कृष्णेर नाममाला ॥५
रामकृष्ण गोविन्द गोपाल वनमाली ।
अहर्निश लिखेन पड़ेन कुतूहली ॥६
एइमते खेला लीलाय कतदिन गेल ।
शची जगन्नाथ दोँहे युकति करिल ॥७
विश्वम्भर चूड़ाकर्ण करि मने मने ।
इष्ट कुटुम्ब यत आनिल तखने ॥८
शचो बले शुभक्षण तिथि शुभदिने ।
करिब त चूड़ाकर्ण दढ़ाइल मने ॥९
नदीया नगरे घरे घरे आनन्दित ।
ब्राह्मण सज्जन आनि लोके ये पूजित ॥१०
ब्राह्मणेते वेद पड़े गायने गाय गीत ।
करिल से यज्ञ आदि ये विधि उचित ॥११
जय जय देइ यत कुलबधूगण ।
सबाकारे दिल गन्ध गुवाक चन्दन ॥१२
नानाविध बाद्य बाजे आनन्द अपार ।
शङ्ख दुन्दुभि बाजे भेउर काहाल ॥१३
मृदङ्ग पटह बाजे कांस्य करताल ।
सानाइ शब्द शुनि बड़इ रसाल ॥१४
चतुर्दिके हरिध्वनि झाँपिये गगन ।
चूड़ाकर्ण कर्णबेध करिल तखन ॥१५
आनन्दित हैल सब नदीया नगरी ।
गौरचन्द्र मुख देखि आपना पासरि ॥१६
हाटे माठे घाटे येइ यथा यथा याय ।
दोँहे दोँहे मिलि गोराचाँद गुण गाय ॥१७
पर पुत्र देखि हेन करये हृदय ।
शची जगन्नाथ भाग्य कहने ना याय ॥१८
नवद्वीपेर भाग्य आर संसारेर भाग्य ।
ओ रूप देखिले हय नयानेर श्लाघ्य ॥१९
ए बोल शुनिया सर्वजनेर उल्लास ।
आनन्द हृदये कहे ए लोचन दास ॥२०

आर एक दिन गङ्गा बालुकार तटे ।
बालक सहिते पहुँ खेले गङ्गाघाटे ॥१
बालुकाय पक्ष पदचिह्न अनुसारि ।
गमन करये पक्ष पदचिह्न धरि ॥२
एइमते महाप्रभु श्रीगौराङ्गचन्द्र ।
बालक सहिते क्रीड़ा करये निर्बन्ध ॥३
एइ पदचिह्न येइ बालके डिङ्गाय ।
सेइ ततक्षण खेला पराजित पाय ॥४
ये जन त आगे याइया पारे धरिबार ।
सेइ जन खेला जिने कान्धे चड़े तार ॥५
तार कान्धे चड़ि तार पिठे मारे छाट ।
कान्धे करि लैया याय गङ्गेतेर घाट ॥६
इहा खेलि शिशु लइ बालुकाय धाय ।
महा परिश्रमे घर्म निकलइ गाय ॥७
हेनकाले जगन्नाथ मिश्र-पुरन्दर ।
स्नान करिबारे गेला जाह्नवीर तीर ॥८

देखिञा पुत्रेर खेला क्रोध उपजिल ।
परिश्रम देखि हिया पुड़िते लागिल ॥९
सुवर्णेर पद्म येन आतपे मैलान ।
मधु निकलइ येन वदनेर घाम ॥१०
डाकिते डाकिते मिश्र याय पाछे पाछे ।
पिता देखि गोराचाँद पाइलेन लाजे ॥११
लाजे मुख नाहि तोले अन्तरे तरास ।
आपने पण्डित गेला गोराचाँदेर पास ॥१२
करे धरि लैया आइला आपन कुमार ।
सकल बालक गेला घरे आपनार ॥१३
जगन्नाथ गङ्गास्नान करि आइला घर ।
घरे आसि विश्वम्भरे भर्तसिला विस्तर ॥१४
पाठ साठ गेल तोर अधमेर हेन ।
कुबुद्धि करिया तुइ बेड़ास् अनुक्षण ॥१५
ब्राह्मण कुमार हैया हेन से आचार ।
इहार उचित फल दिये त तोमार ॥१६
इहा बलि जगन्नाथ हाते छाट धरे ।
तर्जन करिते शची धरे ताँर करे ॥१७
ना मारिह पुत्र मोर ना खेलाबे आर ।
सर्वदा पड़िबे काछे थाकिया तोमार ॥१८
विश्वम्भर सान्धइला जननीर कोले ।
ना खेलिब ना खेलिब धीरे धीरे बोले ॥१९
जगन्नाथे पाछे करि पुत्र आगुलिया ।
ना मारिह पुत्र मोर मैल डराइया ॥२०
इहाबलि शचीदेवी पुत्र करि कोले ।
वयान मुछाये अङ्ग वसन अञ्चले ॥२१
ना पड़ुक पुत्र मोर हउक मूरुख ।
मूरख हञा शत बरिष जीउक ॥२२
शुनिया शचीर वाणी मिश्र पुरन्दर ।
कहिते लागिला किछु सक्रोध उत्तर ॥२३
मूरख हइले पुत्र जीवेक केमने ।
केमने ब्राह्मण इहाय कन्या दिबे दाने ॥२४
तबे जगन्नाथ देखे पुत्रेर बयान ।
पिता-पाने चाहे पुत्र तरास नयान ॥२५
अन्तरे पोड़ये मिश्र बाहिरे कठिन ।
फेलिल हातेर छाठ प्रेम परवीण ॥२६
सजल नयाने पुत्र लैया करि कोले ।
पुत्रेरे बुझाय मिश्र सुमधुर बोले ॥२७
पड़िले शुनिले बाप ! लोके बले भाल ।
आमि पाट धड़ा दिब कदलक आर ॥२८
एइमते आनन्दे सानन्दे दिन गेल ।
सन्ध्या समाधिया मिश्र शयन करिल ॥२९
निद्रागत हैल रात्रि तृतीय प्रहर ।
स्वपन देखिया मिश्र हइला फाँपर ॥ ३०
रात्रि सुप्रभाते उठि डाकिल सबारे ।
स्वप्न एक देखियाछि कहि सबाकारे ॥३१
देखिल त एकद्विज पुरुष विशाल ।
दिनमणि किरण वरण उजियार ॥३२
रत्न अलङ्कारे से भूषित दिव्य देह ।
निरखि ना पारि झलमल करे गेह ॥३३
बलिल आमारे मेघ गम्भीर वचने ।
तुमि मोरे निज पुत्र करि मान केने ॥३४
आमि देव नारायण इहा नाहि जान ।
केबल आपन सुत करि केने मान ॥३५
अज्ञ ना जानये स्पर्शमणिर परश ।
पुत्र ज्ञाने जान मोरे ए बड़ साहस ॥३६
सर्वशास्त्र जानि आमि सर्व देव गुरु ।
आमा पड़ाइते केन हाते छाट धरु ॥३७
ऐछन स्वपन आजि देखियाछि आमि ।
से अबधि मोर हिया कि करे ना जानि ।३८

शची श्रति हृष्ट मन श्रार सर्वजन।
सबे निरखये गोरा चाँदेर वदन ॥३९
शची जगन्नाथ कोले करे हिया भरि।
"श्रामार तनय विश्वम्भर गौरहरि ॥४०
श्रनन्त महिमा यार वेदे नाहि जाने।
शिव सनकादि यारे ना पाय धेयाने ॥४१
हेन महा महत्त्व महिमा जाने केबा।
मोर पुत्र हइया जनमे गौर देवा॥"४२
बलिते बलिते स्नेह वात्सल्य हइल।
ऐश्वर्य्य यतेक भाव सब दूरे गेल ॥४३
स्वपन शुनिया सर्वजनेर उल्लास।
गोरा-गुण गाय सुखे ए लोचन दास ॥४४

———

वराड़ी राग। दिशा॥

मोर प्राण आरे गोराचाँद नारे हय॥ध्रु॥

एइमने श्रानन्दे सानन्दे दिन याय।
नदीया नगर सुख सागरे भासय ॥१
तिलेकेर यत सुख के कहिते पारे।
शची जगन्नाथेर भाग्य ब्रह्माण्डे ना धरे ॥२
एकदिन वयस्येर सङ्गे श्राचम्बित।
जगन्नाथ देखिल तनय सुचरित ॥३
नवम बरिष पुत्र योग्य सुसम।
उपवीत दिब बलि चिन्तिल हृदय ॥४
घरे श्रासि शची सङ्गे युकति करिल।
दैवज्ञ श्रानिया शुभदिन से रचिल ॥५
इष्ट कुटुम्ब श्रानि निबेदिल कथा।
श्राज्ञा कर दिब विश्वम्भरेर पइता ॥६
श्राचार्य्य श्रानये मिश्र ख्यात ये पण्डित।
यज्ञ कर्म जाने येइ बेदेर विहित ॥७
गुवाक चन्दन माला ब्राह्मणेरे दिल।
शतशत कुलबधू सिन्दूर परिल ॥८
खदिका कदलक श्रार तैल हरिद्रा।
प्रत्येके सबारे दिल शची सुचरित्रा ॥९
शङ्ख दुन्दुभि बाजे हुलाहुलि जय।
शुभ श्रधिवास करे गोधूलि समय ॥१०
ब्राह्मणेते वेद पड़े भाटे रायबार।
श्राशीर्वाद कैल सबे ये विधि श्राचार ॥११
रात्रि-सुप्रभाते उठि मिश्र पुरन्दर।
नान्दीमुख श्राद्ध विधि करिल सुन्दर ॥१२
ब्राह्मणे पूजिल पाद्य श्राचमन दिया।
यज्ञकर्म श्रारम्भिल समय बुझिया ॥१३
एथा शचीदेवी यत श्राइश्रो-सुइश्रो लैया।
पुत्र महोत्सबे बुले कौतुक करिया ॥१४
नागरीर गण यत गौराङ्गे बेढ़िल।
श्रीश्रङ्ग मार्जना करिबार मन कैल ॥१५
तैल हरिद्रा विश्वम्भर श्रङ्गे दिल।
गन्ध श्रामलकी दिया मस्तक माजिल ॥१६
श्रभिषेक कराइल सुरनदी जले।
श्रापना पासरे सबे श्रानन्द हिल्लोले ॥१७
शङ्ख दुन्दुभि बाजे भेउर कहाल।
मृदङ्ग पटाह बाजे कांस्य करताल ॥१८
ढाकेर दुड़दुड़ि शुनि योजनेक पथे।
शुनिया जुड़ाय हिया सानाहि शवदे ॥१९
वीणा वेणु कपिलास वंशीर निशान।
रबाव उपाङ्ग पाखोयाज एकतान ॥२०
नर्त्तके नाचये—गीत गाये त गायन।
शुभक्षण कहि कैल मस्तक मुण्डन ॥२१
प्रति श्रङ्ग श्रलङ्कारे भूषित करिल।
गन्ध माल्य चन्दनेते सुवेश रचिल ॥२२

यज्ञस्थाने लैया आइला शचीर नन्दने।
यथा वेदध्वनि करे ब्राह्मणेर गणे ॥२३
रक्तवस्त्र उपवीत पराइल अङ्गे।
रूप देखि भुलि गेला आपने अनङ्गे ॥२४
गौरचन्द्र कर्णे मन्त्र कहे तार बाप।
दण्ड करे देखि डरे डराइल पाप ॥२५
भिक्षा मागये प्रभु आश्रम आचार।
सन्न्यास आश्रम सर्व आश्रमेर सार ॥२६
युगधर्मे सन्न्यास करिते मने छिल।
उपवीत काले ताहा मनेते पड़िल ॥२७
एइमत हइब बलि हइल आवेश।
कलि सर्व्वजने आमि घुचाइब क्लेश ॥२८
पुलकित सब अङ्ग आपाद मस्तक।
कदम्ब केशर जिनि एकटि पुलक ॥२९
करुण अरुण दुइ दीघल लोचन।
बाल दिनकर येन अङ्गेर किरण ॥३०
प्रेमारम्भे महादम्भ हुङ्कार गर्जन।
चमक लागिल देखि सकल ब्राह्मण ॥३१
सुदर्शन आदि यत पण्डित प्रधान।
एकत्र हइया सबे करे अनुमान ॥३२
सकल पण्डित मेलि करये विचार।
मानुष ना हय एइ शचीर कुमार ॥३३
कोन देवतार तेज जानिल निश्चय।
ए तेज गोविन्द बिनु आर कारु नय ॥३४
आमरा कि जानि प्रभुर चरित्र आचारे।
अनुमान करि सबे बुद्धिर विचारे ॥३५
एकजन बले शुन आमार वचन।
ना बुझिये एइ दढ़ प्रभुर आचरण ॥३६
ये किछु कहिये शुन आपनार मर्म।
लोक निस्तारिते प्रभु युगे युगे जन्म ॥३७
कत कत अवतार कार्य्य अनुसारे।
युगेर स्वभावे सबे चारि अवतारे ॥३८
धर्म संस्थापन आर अधर्म विनाशे।
साधुजन परित्राणे युगे परकाशे ॥३९
असुर संहार हेतु यत अवतार।
कार्य्य अवतार बलि नाम से ताहार ॥४०
श्रीरामचन्द्रादि यत अवतार देखि।
कार्य्य अवतार तार कार्य्ये पाइ साक्षी ॥४१
त्रेता युगे रक्तवर्ण यज्ञ तार धर्म।
दूर्वादल श्याम प्रभु राक्षस क्षय कर्म ॥४२
सकल त्रेताय नाहि हय रघुनाथ।
रावण बधिते खेले वानरेर साथ ॥४३
चौद्द चौयुग से राबणेर परमाइ।
कत कत त्रेता गेल देख देखि ताइ ॥४४
एतेके बलिये सब त्रेता एक नहे।
कार्य्य अनुसारे बलि यखन ये हये ॥४५
सत्ये श्वेत तपो धर्म हंस नाम जानि।
नृसिंहादि अवतार कार्य्य अनुमानि ॥४६
युग अनुरूप वर्ण धर्म संस्थापन।
युग अवतार बलि जानिये से जन ॥४७
द्वापरे कृष्णेर कथा शुन एकमने।
एकला ठाकुर सेइ नाहि अन्यजने ॥४८
कार्य्य अवतार किबा युग अवतार।
सर्वकला पूर्ण सेइ नन्देर कुमार ॥४९
पूर्ण पूर्णब्रह्म यारे बले सर्वजने।
गोपिका लम्पट सेइ जानिह वृन्दावने ॥५०
अवतार शिरोमणि कृष्ण अवतार।
द्वापर भितरे एइ द्वापर ये सार ॥५१
आर द्वापरेते आछे अवतार दुइ।
कार्य्य अवतार किबा युगावतार एइ ॥५२

येइ द्वापरेते हय कृष्ण अवतार।
सेइ कलियुगे गौरचन्द्र अवतार ॥५३
येन कृष्ण अवतार तेन गौरचन्द्र।
एइ दुइ युग सब युगेर स्वतन्त्र ॥५४
सर्व द्वापरेते नहे कृष्णेर विहार।
सब कलिकाले नहे गोरा अवतार ॥५५
कतेक द्वापर कलि सत्य त्रेता याय।
अंश अवतार प्रभु हय ता सबाय ॥५६
एइ त द्वापरेते आर एइ कलियुगे।
कृष्ण कृष्णचैतन्य मिलये बड़ भागे ॥५७
ब्रह्मार दिवसे अवतार एकबार।
द्वापरे आर कलियुगे करेन विहार ॥५८
वैवस्वत मन्वन्तरे श्याम गौर हइया।
द्वापरेर पूजा, कलि कीर्त्तन करिया ॥५९
धन्य धन्य कलियुग युगेर उपरि।
सङ्कीर्त्तन यज्ञे सबे हैला अधिकारी ॥६०
आरे आरे दयार ठाकुर गौरचन्द्र।
सङ्कीर्त्तने पार कैल पङ्गु जड़ अन्ध ॥६१
आमार वचने यदि ना याओ प्रतीत।
ये किछु कहिब तार कहु समुचित ॥६२
ये युगे याहार येह आछे वर्ण धर्म।
युग अवतारे प्रभु करे सेइ कर्म ॥६३
द्वापरे ठाकुर कृष्ण युग अवतार।
युगधर्म आचरणे कैल से आचार ॥६४
द्वापरे परिचर्य्या धर्म शास्त्रे एइ कहे।
युगधर्म संस्थापन कैल प्रभु ताहे ॥६५
अवज्ञा ना कर नवे बलों एक बोल।
युक्तिपर कहों कथा ना ठेलिह मोर ॥६६
आपने ठाकुर सेइ स्वतन्त्र ईश्वर।
कार्य्य किबा युगधर्म सब ताँर भार ॥६७
युगधर्म संस्थापने कैल येबा कार्य्य।
सकल करिल प्रभु देखिते आश्चर्य्य ॥६८
राधाकृष्ण अवतार करिते विहार।
आपने स्वतन्त्र राधा प्रकृति आकार ॥६९
प्रकृति पुरुष येन दोँह आत्मा तनु।
दोँहे एक तनु कार्य्य बुझि हैला भिनु ॥७०
राधा नाम धरे कृष्ण आराधना काज।
परिचर्य्या करे लैया गोपिका समाज ॥७१
प्रेमभक्ति करे गोपी शत शत शाखा।
प्रकृति स्वरूप सेइ एकला राधिका ॥७२
कृष्णे समर्पये सब देहेर स्वभाव।
नित्य नूतन ताय बाढ़े अनुराग ॥७३
एइ परिचर्य्या धर्म ना बुझिल केहो।
एइ कथा कहे यत भागवत सेहो ॥७४
आर आर द्वापरेते अंशे करे कर्म।
धर्म संस्थापन करे ना बुझये मर्म ॥७५
धर्म बलि दान व्रत तपोधर्म कहि।
धर्म करि समर्पण करे सबे ताहि ॥७६
एइ त कारणे प्रभु प्रकाशिल निज।
तबु ना बुझिल केहो धर्माधर्म बीज ॥७७
कलियुगे गौरदेह प्रकाशे आपना।
युग अवतार कार्य्य प्रकाशये प्रेमा ॥७८
राधार बरणे अङ्ग गौर अङ्ग हैया।
राधिकार भाव रस अन्तरे करिया ॥७९
सेइभावे कान्दे एइ रसिक शेखर।
विकशित कदम्ब पुलक कलेबर ॥८०
सेइ प्रेमे गरगर मातोयाल हैया।
हुङ्कारगर्ज्जन करे कान्दिया कान्दिया ॥८१
से गर्ज्जन शुनि अचेतन कलिकाल।
चेतन पाइया सबे आनन्द विशाल ॥८२

तेँइ राधाकृष्ण बलि नाचे कान्दे हासे ।
अन्धकार दूरे गेल पाइल प्रकाशे ॥८३
द्वापरे उपजे कृष्ण प्रेममय तन ।
कलि अचेतन लोक करये चेतन ॥८४
प्रेम प्रकाशये गोरा करि दीनभाव ।
आपना विलाय आपे माने कत लाभ ॥८५
एहेन ठाकुर कोन् कैल ठाकुराल ।
ना भजिते प्रेम देइ नाहिक विचार ॥८६
एतेक बलिये युग अवतार एइ ।
एइ पूर्ण अवतार प्रकाशिल सेइ ॥८७
आर कलियुगे नारायण अवतार ।
श्रीकृष्ण द्वापर युगे नाम से ताहार ॥८८
शुकपक्ष पाखा जिनि बरण याहार ।
इन्द्रनीलमणि द्युति कहे टीकाकार ॥८९
एइ कलियुगे गौरचन्द्र पूर्णब्रह्म ।
अंश प्रवेशिल इथे कहिल ए मर्म ॥९०
पूर्ण पूर्ण अवतार चैतन्य गोसाँइ ।
एहेन करुणानिधि आर केहो नाइ ॥९१
कार्य्य अवतार युग अवतारे एक ।
युग अनुरूप तेँइ गौर परतेक ॥९२
कलि पीत सङ्कीर्त्तन धर्म शास्त्रे कहे ।
एइ विश्वम्भर प्रभु कभु आन नहे ॥९३
विचारिया पण्डित सब दढ़ाइल हिया ।
आपना सम्बरे प्रभु काल से बुझिया ॥९४
सब सम्बरिल प्रभु तिलेके तखन ।
विश्वम्भर गौरहरि उठिल वचन ॥९५
सब लोक काणाकाणि अपरूप कथा ।
साते पाँचे अनुमानि याय यथा तथा ॥९६
आश्चर्य्य थाकिल कारो सन्देह हृदय ।
कि देखिल विश्वम्भर चरित्र आशय ॥९७
लोक मुखे ये शुनिल विश्वम्भर कथा ।
साक्षात देखिल एइ जगत करता ॥९८
आनन्दे भरल देह देइ जय जय ।
धन्य गोरा गुणगाथा ए लोचन गाय ॥९९

श्रीराग । दिशा ।

ओकि होरे गौराङ्ग जय जय ।। मूर्च्छा ।।
किना मोर गौराङ्ग प्रेम अमिया आनन्द
किना मोर गौराङ्ग ओकि आरे जय जय ।।ध्रु ।।

आर एकदिन प्रभु बसि निजघरे ।
आपन अन्तर कथा परकाश करे ॥१
निज तेज अमिया पूरित सब देह ।
निरखि ना पारि झलमल करे गेह ॥२
मायेरे देखिया बैल शुन मोर बोल ।
एक महादोष मुइ देखियाछि तोर ॥३
एकादशी तिथि अन्न ना खाइबे आर ।
यतने पालिवे तुमि ए बोल आमार ॥४
मेघगम्भीर नादे कहिल मायेरे ।
शुनि माता सबिस्मिता संभ्रम अन्तरे ॥५
सङ्कोच संभ्रम प्रेम भरिल शरीरे ।
पालिब तोमार आज्ञा बले धीरे धीरे ॥६
शुनिया मायेर बोल सन्तोष हृदय ।
धर्म बुझाइला प्रभु अन्तर सदय ॥७
सेइ काले एक द्विज आसि आचम्बिते ।
आनि दिल गुया पान अति शुद्धचिते ॥८
हासिया तखने प्रभु गुबाक खाइल ।
क्षणेक अन्तरे पुन मायेरे डाकिल ॥९
मायेरे कहिल प्रभु आमि याइ देह ।
यतने पालिह तुमि निज सुत एह ॥१०
इहा बलि क्षणार्द्ध निश्चेष्ट हैया रहि ।
दण्ड परणाम करे लोटाइया मही ॥११

निःशब्दे रहिला पुनः शची तरासित ।
गङ्गाजल मुखे देइ हृदय त्वरित ॥१२
क्षणेक तखन प्रभु हइला सम्बित ।
सहज रूपेर तेजे घर आलोकित ॥१३
मायेरे कहिला प्रभु आमि याइ देह ।
ए कथार तत्त्व कहिबारे आछे केहो ॥१४
मुरारि गुप्त वेजा प्रभुर अन्तरीण ।
सर्व तत्त्व वेत्ता सेइ भकत प्रवीण ॥१५
दामोदर पण्डित पुछिल तार स्थाने ।
ए कथार तत्त्व मोरे कह महाजने ॥१६
किबा माया कैल प्रभु किबा कोन शक्ति ।
इहार विचार मोरे करि देह युक्ति ॥१७
मुरारि कहये शुन शुन महाशय ।
आमि कि सकल जानि कृष्णेर आशय ॥१८
ये किछु कहिये निज बुद्धि अनुमाने ।
युक्ति सिद्ध हय यदि राखिह पराणे ॥१९
श्रवण दर्शन ध्यान आर सङ्कीर्त्तने ।
हृदये प्रवेशे प्रभु निज भक्तजने ॥२०
निज देह देह नहे निर्गुण आकार ।
गुणे से गुणेर भोग आचार विचार ॥२१
एतेके भक्त देह देह करि माने ।
स्वच्छन्द विहार तँहि सब आचरणे ॥२२
निजपूजा अधिक भकत पूजा माने ।
पूजार संग्रह ताते जाने मने मने ॥२३
आपने ठाकुर सेइ तदधीन जन ।
लोक आचरणे माया बलि दुइ जन ॥२४
आपना अधिक केने मानये भकत ।
ए कथा बुझिते नारे सकल जगत ॥२५
रसमय विग्रह लावण्यमय देह ।
सकल सम्पदमय निरमिल सेह ॥२६
विलास विनोदलीला विने नाहि आर ।
निर्गुण बलिया गालिदेइ कोन छार ॥२७
मायार कारणे आपे ना हय बेकत ।
भक्त देहे विलास करये अबिरत ॥२८
भकेर भोजन निद्रा शयन विलास ।
ताहातेइ कृष्णसुख हये त प्रकाश ॥२९
भक्तजन आर जन आचरण एक ।
देहेर स्वभावे एक देखि परतेक ॥३०
परेतेक देखि हय मानुष गेयाने ।
कोथा कृष्ण, मानुष ये देखिये नयाने ॥३१
कृष्ण सर्वेश्वरेश्वर निरगुण ब्रह्म ।
मानुष शरीरे कार प्राकृतिर कर्म ॥३२
इहा बलि नाहि मानि अधम से जन ।
भक्तदेहे प्रभुदेह जानये उत्तम ॥३३
एइ अनुमान कथा मोर मने लय ।
आपने बुझिया चित्ते कर ये जुयाय ॥३४
सदा कृष्णमय तनु वैष्णव जानिये ।
श्रीवेद पुराण भागवतेते शुनिये ॥३५
यार पद पांशुते पवित्र सर्वजन ।
गङ्गादि करिया तीर्थ सबार पावन ॥३६
हेन जनार देहे ये अधम करे बाद ।
ना बुझिा सेइजन करे अपराध ॥३७
एइमत दामोदर मुरारि गुपते ।
निवदिल कथा दोँहे हरषित चिते ॥३८
आपनार देह प्रभु देह नाहि गणे ।
भकतेर देह से आपना करि माने ॥३९
एतेक विचार कैल सेइ दुइ जने ।
शुनि आनन्दित कहे ए दास लोचने ॥४०

———

विभाष राग । दिशा ॥
ओकि होरे हय हय ॥ मूर्च्छा ॥
ना हारे हय हय ना हारे
मोर प्राण द्विजचाँद नारे हय ॥ध्रु॥

सर्बजन शुन आर अपरूप कथा ।
याहा शुनि सबार हृदये लागे व्यथा ॥१
गुरुर आश्रमे सर्व वेदतत्त्व जानि ।
घरेते आइला जगन्नाथ द्विजमणि ॥२
दैव निबन्धे ताँर ज्वर आइल देहे ।
विपरीत ज्वर देखि तरास उठये ॥३
शचीर कान्दना अति व्याकुल देखिया ।
प्रबोध करेन प्रभु तत्त्व बुझाइया ॥४
मरण सबार माता आछये निश्चय ।
ब्रह्मा रुद्र समुद्र पर्वत हिमालय ॥५
इन्द्र वरुण अग्नि काले सर्व नाशे ।
मरण लागिया केने पाइछ तरासे ॥६
तोर बन्धुगण यत आनह एखन ।
सबे मिलि कृष्णनाम कराह स्मरण ॥७
बान्धबेर कार्य्य मृत्युकाले सत्य जानि ।
स्मरण कराय प्रभु देव यदुमणि ॥८
शुनिया कुटुम्ब-बन्धुजन सब आइला ।
प्रभुर बाड़ीते आसि मिश्रेरे बेढ़िला ॥९
परिणत बुद्धि यत बन्धुगण छिल ।
काल प्रत्यासन्न देखि युकति करिल ॥१०
विश्वम्भर बले मागो ! कि कर बिलम्ब ।
एइक्षणे चाहि यत इष्ट-कुटुम्ब ॥११
इहा बलि माये पोये धरि निला ताँरे ।
बान्धबेर सङ्गे गेला जाह्नवीर तीरे ॥१२
बापेर चरण धरि कान्दे विश्वम्भर ।
सम्बरिते नारे अश्रु गद गद स्वर ॥१३
आमारे एड़िया बाप ! कोथा याह तुमि ।
बाप बलि आर डाक नाहि दिब आमि ॥१४
आजि हैते शून्य हैल ए घर आमार ।
आर ना देखिब बाप चरण तोमार ॥१५
आजि दशदिक शून्य आन्धियार मोरे ।
ना पड़ाबे यत्न करि धरि निज कोरे ॥१६
ऐछन शुनिया वाणी कहे जगन्नाथ ।
सकरुण कण्ठ अति नाहि सरे बात ॥१७
गदगद स्वरे बले शुन विश्वम्भर ।
कहिल ना याय मोर ये छिल अन्तर ॥१८
रघुनाथ चरणे सहिलुँ मुइ तोमा ।
तुमि पाछ कोनकाले पासरिबा आमा ॥१९
इहा बलि हरि हरि करये स्मरण ।
गङ्गाजले नाम्बाइल सकल ब्राह्मण ॥२०
गलाय तुलिया दिल तुलसीर दाम ।
चतुर्दिके बन्धुगणे लय हरिनाम ॥२१
चतुर्दिके हय हरिनाम सङ्कीर्त्तन ।
हेनकाले द्विजोत्तमेर वैकुण्ठे गमन ॥२२
वैकुण्ठे चलिला द्विज रथ आरोहणे ।
धरणी विदाय देइ शचीर क्रन्दने ॥२३
पतिर चरण धरि कान्दे लोटाइया ।
मो याब आमारे लह सङ्गति करिया ॥२४
एतकाल धरि तोर सेबा कैलुँ आमि ।
वैकुण्ठे चलिला तुमि आमा थुइ भूमि ॥२५
शयने भोजने मुइ सेबा कैलुँ तोर ।
आजि दशदिक शून्य अन्धकार मोर ॥२६
अनाथिनी हैलुँ तोर छोट पुत लैया ।
निमाइ रहिबे कोथा कार मुख चाइया ॥२७
जगत दुर्लभ तोरे तनय निमाइ ।
सकल पासरि याह आमार गोसाँइ ॥२८

मायेर कान्दना देखि बापेर मरणे।
कान्दये शचीर सुत अझोर नयने ॥२९
गजमतिहार येन गाँथिल सुताय।
नयाने गलये जल विशाल हियाय ॥३०
भक्तगणे इष्टगणे हाहाकार करे।
प्रभुर कान्दनाय कान्दे सकल संसारे ॥३१
शान्त कराइल सबे मधुर वचने।
सृष्टि नष्ट हय प्रभु तोमार क्रन्दने ॥३२
नारीगणे प्रबोध करिल शचीदेवी।
गोराचान्देर मुख देखि सब पासरिबि ॥३३
आपने सुधीर प्रभु सब सम्बरिया।
काल यथोचित कर्म करिल सत्क्रिया ॥३४
तबे वेदविधि मते ये छिल उचित।
करिल बापेर कर्म कुटुम्ब वेष्टित ॥३५
पितृभक्त प्रभु तबे पितृयज्ञ कैल।
क्रमे क्रमे यथाविधि ब्राह्मणेरे दिल ॥३६
तोयाधार अन्न भोजनादि द्रव्य यत।
ब्राह्मणेरे दिला प्रभु पितृ भकत ॥३७
जगन्नाथ वैकुण्ठगमन एइ कथा।
आपने से द्विजोत्तम गौरचन्द्रेर पिता ॥३८
श्रद्धावन्त जने यदि एइ कथा शुने।
वैकुण्ठे चलये सेइ गङ्गाय मरणे ॥३९
गोराचाँद देखि शची छाड़ये निश्वास।
पितृशून्य पुत्र पाछे पायेन तरास ॥४०
विद्यारसे चित्त यदि डुबये इहार।
तबे मनःसुखे पुत्र गोङाय आमार ॥४१
हेन अद्भुत कथा शुन सर्वजन।
गौराङ्ग चरित्र किछु कहये लोचन ॥४२

धानशी राग। दिशा।
आरे आरे हय हय।
गौराङ्ग आमार हय हय ॥ध्रु॥

एकदिन शची गौरहरि करे धरि।
पड़िते गौराङ्गे दिल नियोजित करि ॥१
सकल पण्डित स्थाने पुत्र समर्पिया।
बोलये कातरे देवी विनय करिया ॥२
पड़ाइह मोर पुत्रे तोमरा ठाकुर।
राखिबे आपन काछे ना राखिबे दूर ॥३
पितृशून्य पुत्र मोर पिरीति करिबे।
आपन तनय हेन इहारे जानिबे ॥४
शुनिया पण्डित सब सङ्कोच अन्तरे।
कहिते लागिला किछु विनय उत्तरे ॥५
मो सबार भाग्य एतदिने से जानिल।
कोटि सरस्वती कान्त आमरा पाइल ॥६
अखिले पड़ाबे इहो निज प्रेम नाम।
सर्वलोक गुरु इँहो सबार प्रधान ॥७
आमराह पड़िब इँहार सन्निधाने।
निश्चय जानिह माता ए सत्य वचने ॥८
शुनि शचीदेवी बैल विनय वचन।
पुत्र समर्पिया आइला आपन भवन ॥९
हेनमते नवद्वीपे प्रभु विश्वम्भर।
पड़िबारे गेला विष्णुपण्डितेर घर ॥१०
सुदर्शन आर गङ्गादास ये पण्डिते।
पड़िला जगत गुरु ता सबार हिते ॥११
लोक आचरणे माया मानुष विग्रह।
पड़ये पड़ाय विद्या लोक अनुग्रह ॥१२
पण्डित श्रीसुदर्शन घरे एकदिने।
परिहास करे प्रभु सतीर्थेर सने ॥१३
वङ्गजेर कथा कहे बड़इ रसाल।
अति मनोहर हासि अमिया मिशाल ॥१४

एइमते रङ्गे-ढङ्गे कत दिन गेल ।
वनमाली आचार्य्य देखिब मने हैल ॥१५
तारे देखिबारे तार आश्रमेते गेला ।
देखि से प्रणति करि सम्भ्रमे उठिला ॥१६
करे धरि तार सने चलि याय पथे ।
कौतुक रहस्य कथा कहिते कहिते ॥१७
हेनकाले वल्लभ से आचार्य्येर कन्या ।
रूपे गुणे कुले शीले त्रिजगते धन्या ॥१८
गङ्गा स्नाने याय देवी सखीर सहिते ।
विश्वम्भर हरि तारे देखे आचम्बिते ॥१९
एकदृष्टे चाहे प्रभु विस्मित नयने ।
देखिया जानिल तार जन्मेर कारणे ॥२०
लक्ष्मी ठाकुराणी ताहा इङ्गिते बुझिल ।
प्रभुपादपद्म धूलि शिरे करि निल ॥२१
आचार्य्य से वनमाली बड़इ चतुर ।
बुझिल अन्तर कथा प्रेमेर अङ्कुर ॥२२
आर दिन वनमाली आचार्य्य आपने ।
आनन्द हृदये गेला शचीर भवने ॥२३
हासिया प्रणाम कैल शचीर चरणे ।
प्रणति करिया कहे मधुर वचने ॥२४
तोमार पुत्रेर योग्य आछे एक कन्या ।
रूपे गुणे शीले सेइ त्रिजगते धन्या ॥२५
वल्लभ आचार्य्य कन्या अति सुचरिता ।
यदि इच्छा थाके कह हृदयेर कथा ॥२६
तबे शचीदेवी शुनि आचार्य्येर वचन ।
ए अति बालक मोर पड़ुक एखन ॥२७
पितृशून्य पुत्र मोर पड़ुक कतदिन ।
ताहाते करह यत्न हउक प्रवीण ॥२८
शुनिया आचार्य्य तबे सन्तोष ना पाइल ।
बिरस वदन करि घरेते चलिल ॥२९

काँदिते काँदिते चले व्याकुल अन्तरे ।
हा हा गोराचाँद बलि डाके उच्चैःस्वरे ॥३०
मोर भाग्ये ना करिले पतित पावन ।
वाञ्छाकल्पतरु नाम धर कि कारण ॥३१
मोर वाञ्छा यदि ना पूर्ण कैले आपने ।
वाञ्छाकल्पतरु नाम धरिबे केमने ॥३२
जय जय जय द्रौपदीर लज्जाभय हारी ।
जय गजराजके कुम्भीर मुखे तारि ॥३३
जय अजामिल गणिकार त्राणदाता ।
आमारे से त्राण कर अखिलेर पिता ॥३४
एथा गुरुगृहे प्रभु जानिल अन्तरे ।
आचार्य्य शोकेते यत हैयाछे कातरे ॥३५
आस्ते व्यस्ते पुस्तक सम्बरि भगवान ।
गुरु सम्भाषिया प्रभु करिला पयान ॥३६
माताल कुञ्जरे येन गमन सुन्दर ।
गौरतनु अलङ्कारे करे झलमल ॥३७
चाँचर केशेर बेश अखिल मोहन ।
अधर बान्धुलि फुल मुकुता दशन ॥३८
चन्दने चर्च्चित मनोहर अङ्ग शोभा ।
तनु सूक्ष्म बसन पिन्धन मनोलोभा ॥३९
कत कोटि कामेर नृपति गौरहरि ।
कुलवती कलङ्क विथार देहधारी ॥४०
आचार्य्य लागिया प्रभुर त्वरिते गमन ।
वाञ्छा कल्पतरु नाम बलि ए कारण ॥४१
आचार्य्य काँदिया से डाके पथे पथे ।
हा हा गोराचाँद बलि आइसे ऊर्द्ध वहाते ।४२
हेनकाले महाप्रभु गुरु गृह हैते ।
आसिते हइल देखा आचार्य्य सहिते ॥४३
आचार्य्य पड़िला पाये दण्डवत हैया ।
तुलिलेन महाप्रभु हासिया हासिया ॥४४

नमस्कार करि कैल गाढ़ आलिङ्गन ।
कोथा गियाछिला बैल मधुर बचन ॥४५
आचार्य्य कहये शुन शुन विश्वम्भर ।
आमि गियाछिलुँ एइ तोमादेर घर ॥४६
तोमार जननीदेवी अति सुचरिता ।
गोचर करिलुँ चित्ते छिल येइ कथा ॥४७
तोमार विभार योग्य आछे एक कन्या ।
वल्लभ आचर्य्य कन्या सर्वगुणे धन्या ॥४८
ए कथा तोमार माता शुनि श्रद्धाहीन ।
घरेरे चलिला आमि अन्तर मलिन ॥४९
किछु ना बलिला प्रभु शुनिया बचन ।
मुचकि हासिया घरे करिला गमन ॥५०
से चातुरी लावण्य मधुर मन्द हासि ।
हेरिया आचार्य्य मने हैल अभिलाषी ॥५१
जानिलेन मोर काड़्च अवश्य हइब ।
अन्तरे जानिल प्रभु विवाह करिब ॥५२
घरेरे आइला आचार्य्य आनन्दित हैया ।
प्रभुर चरित्र सब हृदये भरिया ॥५३
घरे आसि जननीरे बैल विश्वम्भर ।
वनमाली आचार्य्येरे कि दिला उत्तर ॥५४
विमना देखिल आमि तारे पथे याइते ।
सम्भाषे ना पाइलुँ सुख आचार्य्य-सहिते ॥५५
तार असन्तोष केने करियाछ तुमि ।
विमना देखिया चित्ते दुःख पाइ आमि ॥५६
शुनिया पुत्रेर बाणी शची सुचतुरा ।
इङ्गिते बुझिया हैल हृदय सत्वरा ॥५७
त्वराय मानुष गेल आचार्य्य आनिबारे ।
संवाद शुनिया तेँहो आइला सत्वरे ॥५८
आनन्दे पूरित तनु गदगद हैया ।
शची काछे उपनीत प्रणत हइया ॥५९
दण्डवत करि लैल चरणेर धूलि ।
कि कारणे आज्ञा मोरे करिला ईश्वरी ॥६०
शुनि शचीदेवी तबे आचार्य्य बचन ।
आदर करिया तारे कहेन तखन ॥६१
पूरुवे ये वैले ताहार करह उद्योग ।
विश्वम्भरे विभा दिब सबार सन्तोष ॥६२
आमार अधिक स्नेह तोर विश्वम्भरे ।
आपने करिबे सब कि बलिब तोरे ॥६३
विश्वम्भर विवाह निमित्ते ये कहिले ।
आपने उद्योग कर कहिल तोमारे ॥६४
इहा बलि वनमालि आचार्य्य उत्तम ।
पालिब तोमार आज्ञा कहिल बचन ॥६५
इहा बलि वल्लभ आचार्य्य बाड़ी गेला ।
वल्लभ आचार्य्य अति सम्भ्रमे उठिला ॥६६
बसिते आसन दिल विनय करिया ।
निज भाग्य मानि किछु कहये हासिया ॥६७
बलिल आमार भाग्ये तोर आगमन ।
किबा कार्य्य आछे एबे कह ना कथन ॥६८
वल्लभ मिश्रेर कथा शुनिया आचार्य्य ।
प्रबन्ध करिया कहे हृदयेर कार्य्य ॥६९
सर्वकाले आमारे करह तुमि स्नेह ।
स्नेहबन्दी हैया आमि आइलुँ तोर गेह ॥७०
मिश्रपुरन्दर सुत श्रीविश्वम्भर ।
कुले शीले गुणे तेह सर्बांशे सुन्दर ॥७१
आमि कि कहिते पारि ताँर गुणेर कथा ।
एकत्र सकल गुणे पड़िल विधाता ॥७२
कि कहिब ताँर गुण गाय सर्वलोके ।
शुनियाछ ताँर गुण सर्वलोक मुखे ॥७३
तोमार कन्यार योग्य बर विश्वम्भर ।
कहिल सकल यदि मने लय तोर ॥७४

एइ कथा शुनिया मिश्र मने अनुमानि ।
ए कथा आमार भाग्ये कहिले ये तुमि ॥७५
आमि धनहीन किछु दिबारे ना पारि ।
कन्या मात्र आछे मोर परमा सुन्दरी ॥७६
इह जानि आज्ञा यदि करेन आपने ।
कन्या दिब विश्वम्भर जामाता रतने ॥७७
देव पितृगण मोर हइबे आनन्दे ।
यबे मोर कन्या विभा दिब गौरचन्द्रे ॥७८
अनेक तपेर फले सब हेन कर्म ।
ततोधिक बन्धु नाहि कहिल ए मर्म ॥७९
एइ मोर मनः कथा रजनी दिवस ।
बदने प्रकट करि नाहिक साहस ॥८०
एइमते दुइ जने कथा निवेदिल ।
आचार्य्य शचीर स्थाने पुनः निबेदिल ॥८१
शुनिया से शचीदेवी बड़ तुष्ट हइल ।
वनमाली आचार्य्येर आशीर्वाद कैल ॥८२
इष्ट कुटुम्ब आनि निबेदिल कथा ।
आनन्दे भरल तनु अति हरषिता ॥८३
कुटुम्ब बान्धब यत सबे आज्ञा दिल ।
विचार करिया सबे भाल भाल बैल ॥८४

——-—

चतुर्थ अध्याय
कैशोर लीला

बराड़ी राग । दिशा ।

मोर प्राण आरे द्विजचाँद नारे हय ॥ध्रु॥

तबे शची निजसुत वदन चाहिया ।
मधुर बचने किछु कहे त हासिया ॥१
शुन शुन विश्वम्भर मोर सोणार सुत ।
वल्लभ मिश्रेर कन्या अति अद्भुत ॥२
तोर विवाहेर योग्य मोर मने लय ।
हेन पुत्रबधू मोर कत भाग्ये हय ॥३
विचार करिया कर विचित्र समय ।
द्रव्य आहरण कर ये उचित हय ॥४
शुनिया मायेर कथा विश्वम्भर राय ।
आनिल सकल द्रव्य यतेक जुयाय ॥५
दैवज्ञ आनिल आर उत्तम पण्डित ।
करिल त शुभदिन समय अङ्कित ॥६
सेइ शुभदिन शुभ समय आइल ।
ब्राह्मण सज्जन सब आनन्दे धाइल ॥७
आनन्दे भरल सब नदीया नगरी ।
उथलिल सुखसिन्धु आपना पासरि ॥८
नाइओ सुइओ लैया शची करे शुभकार्य्य ।
प्रभु अधिवास करे सकल आचार्य्य ॥९
चतुर्दिके वेदध्वनि करये ब्राह्मण ।
शङ्ख दुन्दुभि बाजे मङ्गल लक्षण ॥१०
दीपमाला पताका शोभित दिगन्तरे ।
सुगन्धि चन्दन माला अति मनोहरे ॥११
सकल ब्राह्मणे प्रभुर कैल अधिवास ।
कोटि काम जिनि रूप हैल परकाश ॥१२
झलमल करे अङ्ग छटा आलोकित ।
देखिया ब्राह्मण सब भेल चमकित ॥१३
सुगन्धि चन्दन माला ब्राह्मणेरे दिल ।
घन घन ताम्बुल दाने बड़ तुष्ट कैल ॥१४
कन्या अधिवास करे वल्लभ आचार्य्य ।
सुमङ्गल कर्म करे लैया द्विजबर्य्य ॥१५
अनन्य सौरभ गन्ध माल्य सुचन्दन ।
अधिवासे भूषा कैल जामाता रतन ॥१६
अधिवास समाधान रजनीर शेषे ।
पानी साहि बलि सबे हइल उल्लासे ॥१७

नाना वाद्य एककाले हइल तरङ्ग ।
कुलबधू सबाकार व्रत हैल भङ्ग ॥१८
युवती उमती हैला नदीया नगरे ।
गौराङ्ग विवाह रस समुद्र हिल्लोले ॥ १९
यूथे यूथे नागरी चलिला बिप्रबधू ।
अवनी मण्डल से मण्डली येन बिधु ॥२०
कुरङ्ग नयनी चारु कुञ्जर गामिनी ।
झलमल अङ्गतेज मदन दापुनि ॥२१
केश बेश बसन भूषण अनुपाम ।
हेरिले हरिते पारे मुनिर पराण ॥२२
हासिते दामिनी काँपे बचन अमिया ।
हास परिहास चले ढुलिया ढुलिया ॥२३
गाइछे गौराङ्ग गुण मधुर आलापे ।
स्वर पञ्च ध्वनिते अनङ्ग अङ्ग काँपे ॥२४
नासाय वेशर शोभे मुकुता हिल्लोले ।
नक्षत्र पड़िछे येन आकाशमण्डले ॥२५
शचीर मन्दिरे आइला कुलबधू गण ।
सबाकारे दिला गन्ध गुबाक चन्दन ॥२६
चलिला नागरी सबे पानी साहि बारे ।
मङ्गल आनन्दरस प्रति घरे घरे ॥२७

———

तुड़ी राग ।

सचन्द्रिम रजनी चन्द्रमुखी बाला ।
सुस्वर सङ्गीत गो गाइबे गोरालीला ॥
के कै आगे याइबे गो, गोरागुण गाइबे गो,
चल याइ पानी साहिबारे ।
हिया उथले चित केबा पारे धरिबारे ॥ध्रु॥

केहो पट्टबिलासिनी केहो पीतबासे ।
ढुलिते ढुलिते याय अङ्गेर वातासे ॥१
सुगन्धि चन्दन माला ढाकि लेह करे ।
गोरा अङ्ग परश करिब सेइ छले ॥२
कर्पूर ताम्बूल लेह यत्न करि हार ।
करे करि धार गोरार दिब हाते हाते ॥३
शची आगे आगे करि याइब पाछे पाछे ।
आसिते याइते गो दाँड़ाब गोरार काछे ॥४
आइओ सुइओ मिलिया कौतुक रसरङ्गे ।
पानी साहिल गुण गाय ए लोचन दासे ॥५

———

भाटियारी राग ।

आनन्दे सानन्दे सेइ रात्रि सुप्रभाते ।
यथाविधि कर्म करे अति हरषिते ॥१
स्नान दान कर्म कैल ये विधि उचित ।
देवपूजा पितृपूजा करिल विहित ॥२
नान्दीमुख श्राद्ध कैल ये विधि विधान ।
सकल सम्पूर्ण भोज्य ब्राह्मणेरे दान ॥३
नर्त्तकेर दिल द्रव्य आर भाटगणे ।
सबार सन्तोष कैल नाना द्रव्य दाने ॥४
द्रव्येर अधिक माने मधुर बचन ।
देखिया जुड़ाय हिया चन्द्रिम वदन ॥५
प्रबोध करिल यार येइ अनुमान ।
विवाह उचित प्रभु पुनः करे स्नान ॥६
नापिते नापित क्रिया कैल सेइ काले ।
अङ्ग उद्वर्त्तन करे कुलबधू मिले ॥७
सुधाकरमय गोरा रूपेर पाथार ।
डुबिल तरुणीर मन ना जाने साँतार ॥८
परशे अवश अङ्ग हइल सबाकार ।
गदगद वचन नयाने जलधार ॥९
हेरइते पहुँ मुख कि भाब उठिल ।
मरमे मदन ज्वरे ढलिया पड़िल ॥१०
केहो बाहु धरि रहे अथिर हइया ।
केहो रहे उद्वर्त्तन श्रीअङ्गे लेपिया ॥११

केहो बुके पदयुग धरिया आनन्दे ।
भुजलता दिया से बान्धिल परबन्धे ॥१२
केहो चित्तर्पित हैया नेहारे गौराङ्गे ।
केहो जल देह शिरे मदन तरङ्गे ॥१३
उन्मत्त हइया केहो हासे घने घने ।
सतीत्व नाशिल हेरि गौराङ्ग वदने ॥१४
अभिषेक कैल प्रभुर सुरनदी जले ।
देखि सर्वजन भासे आनन्द हिल्लोले ॥१५
स्नान समाधिया प्रभु बसिला आसने ।
बेढ़िल नागरीगण शचीर नन्दने ॥१६
नानाविध बाद्य बाजे सुमधुर ध्वनि ।
चतुर्दिके हुलाहुलि जय जय शुनि ॥१७
तबे शचीदेवी लइ आइओ सुइओ यत ।
आदरे पूजिल यार येइ समुचित ॥१८
सबारे पूजिला गृहागत बन्धु यत ।
कहिल सबारे देवी हृदय वेकत ॥१९
पतिहीन मुइ छार पुत्र पितृहीन ।
तो सबार पूज्य कि करिब आमि दीन ॥२०
ए बोल बलिते शची गदगद भाष ।
भिजिल आँखिर नीरे हृदयेर बास ॥२१
एछन कातर वाणी शची यबे बैल ।
शुनि विश्वम्भर पहुँ हेँटमाथा कैल ॥२२
चिन्तिते लागिला मोर पिता गेला कोथा ।
पुड़िते लागिल हिया पाइल बड़ व्यथा ॥२३
मुकुता गाँथिल येन चक्षे पड़े पानी ।
देखिया तरस्त हैला देवी शचीराणी ॥२४
आर यत नारीगण तार पाशे छिल ।
प्रभुर कान्दना देखि कान्दिते लागिला ॥२५
शची बले केने बाछा निरस वदन ।
एहेन मङ्गल कार्य्ये कान्द कि कारण ॥२६
सकल संसारे मात्र तुमि मोर धन ।
विमरिष हैल प्राण छाड़िब एखन ॥२७
शुनिया मायेर वाणी प्रभु विश्वम्भर ।
बापेर हुताशे कण्ठ गदगद स्वर ॥२८
प्रातःकाले शशी येन मलिन बदन ।
नवीन मेघेर येन गभीर गर्जन ॥२९
मायेरे कहिल प्रभु शुन मोर कथा ।
कि लागिया एतदूर तोर मनोव्यथा ॥३०
किबा धन नाहि तोर किबा पाइले दुख ।
दीन एकाकिनी हेन कह आतिरूख ॥३१
पिता अदर्शन मोर स्मराइले तुमि ।
केमन करिछे हिया कि बलिब आमि ॥३२
एकजने दु'बार देह गुवाक चन्दन ।
प्रचुर करिया देह यत लय मन ॥३३
सर्वाङ्गे लेपह सबार सुगन्धि चन्दने ।
यथेष्ट करिया देह चिन्ता नाहि मने ॥३४
पृथिवीते केहो य ह नाहि करे लोके ।
इङ्गिते करिल ताहा कहिल तोमाके ॥३५
ए बोल शुनिया शची कहे धीरे धीरे ।
मधुर बचने शान्त कैला विश्वम्भरे ॥३६
येनरूप आदेश करिल विश्वम्भर ।
तेनरूप तुषिल से ब्राह्मण सकल ॥३७
हेनकाले वल्लभ आचार्य्य निज घरे ।
ब्राह्मण सहिते देव पितृपूजा करे ॥३८
आपन कन्यारे नाना अलङ्कार दिल ।
गन्ध चन्दन माल्ये सुवेश करिल ॥३९
शुभक्षण निकट बुझिया द्विजबर ।
ब्राह्मण पाठाइया दिल आनिबारे बर ॥४०
एथा विश्वम्भर पहुँ वयस्येर सङ्गे ।
अति अदभुत वेश करये श्रीअङ्गे ॥४१

गन्ध चन्दने अङ्ग करिल लेपन।
ललाटे तिलक येन चाँदेर किरण ॥४२
मकर कुण्डल गण्डे करे झलमल।
मुकुतार हार शोभे हृदय उपर ॥४३
काजरे उजर राता कमल नयान।
भुरूयुग येन दुइ कामेर कामान ॥४४
अङ्गद कङ्कण दिव्य रतन अङ्गुरी।
झलमल अङ्ग तेज चाहिते ना पारि ॥४५
दिव्य माल्य परिधान रक्तप्रान्त बास।
गन्धे मह मह करे अङ्गेर वातास ॥४६
सुवर्ण दर्पण करे येन पूर्णचन्द्र।
हेरि लोक निज हिया ना हय स्वतन्त्र ॥४७
बधूगण बिकल हइल रूप देखि।
रूप देखिया नारी ना नियड करे आँखि ॥४८
अथिर नारीगण शिथिल बसन।
मथिल भुजङ्गकुल खगेन्द्र येमन ॥४९
चित्त हरिया निल सबार एक काले।
मन मीन धरिया राखिल रूप जाले ॥५०
हरिणीनयनीगण गौराङ्ग देखिया।
बलिते ना पारे से धरिते नारे हिया ॥५१
भुरूभङ्गि आकर्षणे रङ्गिणीर गण।
दोलमान हृदय करये अनुक्षण ॥५२
से हास्य माधुरी यार पशिल हियाय।
मरमे मरिल सेइ मदन व्यथाय ॥५३
से भुज विलाप रस परश लागिया।
मानिनीर मानगण चले लुकाइया ॥५४
माये नमस्करि प्रभु चले शुभक्षणे।
उठिल मङ्गल ध्वनि जय हरिनामे ॥५५
दिव्य याने चड़े प्रभु वयस्य बेष्टित।
देखि सर्वलोक अति हरषित चित ॥५६
यात्रा करि याय प्रभु बयस्येर सने।
सम्मुखे नाडुया नाचे गाये से गायने ॥५७
ब्राह्मणेते बेद पठे भाटे रायबार।
शिङ्गा बरगों बाजे भेउर काहाल ॥५८
नानाविध बाद्य बाजे पटाह मृदङ्ग।
दोसरि मुहरि बाजे शुनिते आनन्द ॥५९
हरि हरि बोल शुनि जय जय नाद।
आनन्दे नदीयार लोक भेल उनमाद ॥६०
ठेलाठेलि धाय लोक पथ नाहि पाय।
चमक लागिल तथा नागरी सभाय ॥६१
केहो केश नहि बान्धे ना सम्बरे बास।
देखिबारे धाओयाधाइ घन बहे श्वास ॥६२
काणाकाणि सानामानि नाहि आर लाज।
डाकाडाकि धाय सब नागरी समाज ॥६३
गरबी गरब सब दूरे तेयागिया।
गौराङ्ग देखिते धाय उलसित हैया ॥६४
पथ विपथ केहो ना माने रङ्गिणी।
अनङ्ग तरङ्गे सब धाइल रमणी ॥६५
अन्तरीक्षे देवगण दिव्ययाने चाय।
गोरा अङ्ग देखिबारे अनुरागे धाय ॥६६
सुरबधूगण विश्वम्भर मुख चाहे।
चतुर्दिके दिव्य नारी सुमङ्गल गाये ॥६७

बिहागड़ा राग।

जय जय जय, चौदिक सुखचय,
गौराङ्गचाँदेर विवाह रे।
कुलबधू मेलि, देइ हुला हुलि,
आनन्दे मङ्गल गाह रे ॥ध्रु॥ १
न्यास वेश करि, पाटशाड़ी परि,
काजर देइ नयाने।

विश्वम्भर विहा, सबजने मेलि,
साजिया करल पयाने ॥२
हार केयूर, कङ्कण कङ्कणी,
नूपूर परल भाट ।
अलका निकटे, सिन्दूर ललाटे,
चन्दन बिन्दु तार हेठ ॥३
ताम्बूल अधरे, ताम्बूल वामकरे,
लीलाय ढुलि ढुलि याय ।
देखि विश्वम्भर, येन पाँचशर,
धैरय ना धरे हियाय ॥४
ताम्बूल चर्वणे, हासिया बयाने,
कुन्द दशन विकसि ।
बान्धुलि अधरे, दशन मधुकरे,
पापे मधुलोभे बसि ॥५
नागरी सारि सारि, चलिला कुतूहलि,
मराल गमन सुठाम ।
मदनरस सब, विथार अन्तरे,
थिर बिशाल नयान ॥६
नाना बाद्य बाजे, शत शङ्ख गाजे,
मृदङ्ग पड़ाह काहाल ।
आनन्दे दुन्दुभि, बाजये डिण्डिमि,
मुहरि बाजये रसाल ॥७
वीणा कपिलास, वेणु मन्दभाव,
रबाब उपाङ्ग पाखोयाजे ।
नदीया नगरे, प्रति घरे घरे,
मङ्गल बाधाइ बाजे ॥८
गौरचन्द्र मुख, देखि सर्वलोक,
आनन्द नदीया समाज ।
कोटि काम जिनि, से रूप बाखानि,
निरखि ना रहे लाज ॥९
फुयल कबरी, चीर ना सम्बरि,
धाये उनमत बेशा ।
पासरि पति सुत, वदन सुबेकत,
हिया परि फेले केशा ॥१०
धनि धनि धनि, कहये रमणी,
आन ना शुनये बाणी ।
चौदिके हाटे वाटे, नागरीर ठाटे,
देखिते करल उठानि ॥११
केहो वीणा बाय, केहो गीत गाय,
केहो बा धाय उल्लासे ।
चौदिके जय जय, मङ्गल बिजय,
कहये लोचन दासे ॥१२

भाटियारी राग । दिशा ।
आलो देखो अपरूप गोरा पराण पुतुली नवद्वीपे ।
भय नाहि हियाय ये बले से बलु लोके ।
हेन मन करिछे गोरा तुलिया राखि बुके ॥ध्रु॥
हेनमते वल्लभ आचार्य्य बाटी गिया ।
जय जय शब्द हैल आकाश भरिया ॥१
शत शत दीप ज्वले उज्ज्वल पृथिवी ।
झलमल करे ताहे गोरा अङ्गेर छबि ॥२
तबे त वल्लभ मिश्र पाद्य अर्घ्य दिया ।
घरेते आनिला बर मङ्गल करिया ॥३
तबे सेइ महाप्रभु छोड़लाते गिया ।
दाण्डाइला पीठोपरि उलसित हैया ॥४
पूर्णिमार पूर्णचन्द्र जिनिया वदन ।
ताहाते ईषत हासि अमिया मिलन ॥५
तपत काञ्चन जिनि अङ्गेर किरण ।
सुमेरु पर्वत जिनि देहेर गठन ॥६
अङ्गद कङ्कण भुजे रतन अङ्गुरी ।
अरुण किरण करतल झलमलि ॥७

दिव्य से मालती माला दोले गोरा अङ्गे ।
सुमेरु उपरे येन गङ्गार तरङ्गे ॥८
मुकुटेर निकटे ललाट भाल साजे ।
काम कोटि कातर हेरिया रहे लाजे ॥९
श्रबणे कुण्डल दोले कि दिब तुलना ।
दूर कैल मानिनीर मानेर बासना ॥१०
हेनमते महाप्रभु छोड़लाते आछे ।
बर उरथिते तथा आइओगण काछे ॥११
करिया बिचित्र बेश परि दिव्यबास ।
हातेते उज्वल दीप अन्तर उल्लास ॥१२
आइओगण आगे, पाछे कन्यार जननी ।
बर उरथिते धनी चलिला आपनि ॥१३
सात प्रदक्षिण कैल सात दीप हाते ।
चरणे ढालिल दधि हरषित चिते ॥१४
बर उरथिया धनी चलिला आलय ।
शुभक्षण हैल सेइ गोधूलि समय ॥१५
तबे सेइ वल्लभ आचार्य्य द्विजबर ।
कन्या आनिबारे आज्ञा दिलेन सत्वर ॥१६
सुसज्जित सिंहासने बसि रूपवती ।
अङ्गेर छटाय झलमल करे क्षिति ॥१७
रतन प्रदीप ज्वले तार चारि पाशे ।
वदन जितिल पूर्णचन्द्र परकाशे ॥१८
सर्व अङ्गे अलङ्कार रतन काञ्चने ।
अन्धकार दूरे याय याहार किरणे ॥१९
प्रभु प्रदक्षिण करि फिरे सातबार ।
करजोड़ करि शिरे करे नमस्कार ॥२०
अन्तःपट घुचाइल दोँहे दोँहा देखि ।
दोँहे दोँहा देखि दोँहार नाचे दुइ आँखि २१
चन्द्र रोहिणी येन एकत्र मिलन ।
अन्योन्ये करये दोँहे कुसुमेर रण ॥२२
येन हर पार्वती दोँहे हैल मेला ।
छामुनि छाड़िल दोँहे आनन्दे विभोला ॥२३
चौदिके हरिध्वनि जय जय नाद ।
नाचये सकल लोक हरिषे उन्माद ॥२४
तबे से कमलापति विश्वम्भर पहुँ ।
एकत्रे बसिला वामपाशे करि बहू ॥२५
लज्जा नम्रमुखी से बसिला पहुँ पाशे ।
जामाता पूजये मिश्र ये विधान आछे ।२६
यार पादपद्मे ब्रह्मा पाद्य निवेदिया ।
सृष्टिर करता हैल प्रसाद पाइया ॥२७
हेन से पदारविन्दे पाद्य देइ मिश्र ।
याहार धेयाने घुचे संसार तमिस्र ॥२८
महेन्द्र याहारे दिल नृप सिंहासन ।
हेन जाने देइमिश्र पीठेर आसन ॥२९
ये प्रभु बसन धरे दिव्य पीतबास ।
ताहारे बसन देइ शुनिते तरास ॥३०
एइमते क्रमे क्रमे ये विधि आछिल ।
यज्ञ आदि यत कर्म सब निबेदिल ॥३१
वल्लभ आचार्य्य सम नाहि भाग्यवान् ।
आपने बैकुण्ठनाथ लैल कन्या दान ॥३२
कि कहिब वल्लभ मिश्रेर भाग्यराशि ।
यार घरे कैला प्रभु ए पञ्च गरासि ॥३३
कन्या बरे एक गृहे भोजन करिल ।
शतशत कुलबधू बासरे मिलिल ॥३४
युथे युथे तरुणी आइल प्रभु काछे ।
बेढ़िया रहिल विश्वम्भर आगे पाछे ॥३५
से वदन हास्य चन्द्र उदय देखिया ।
लज्जा तिमिर सबार गेल पलाइया ॥३६
बसिला सुन्दरी सब प्रभुर समीपे ।
से अङ्ग वातासे रङ्गिणीर अङ्ग काँपे ॥३७

बसन बचन सब स्खलित हइल।
नयान आलस युत काहारो हइल ॥३८
केह अङ्ग परशे अनङ्गरङ्ग करे।
ढुलिया पड़िला विश्वम्भरेर उपरे ॥३९
केहो अनिमिषे थिर नयने निरीखे।
चकोर चाँदेर लागि येन रहे सुखे ॥४०
नयन पङ्कजे सबे गोरा मुख पूजे।
निजदेह परश लागिया केहो याचे ॥४१
पराधीन रङ्क येन महाधन पाइया।
सम्बरिते नाहि ठाँइ छाड़िते नारेमाया ॥४२
नाम विपर्यय केहो करे सबार घरे।
विश्वम्भर गुणे भोरा परिहास करे ॥४३
केहो बले गोराचाँद शुन मोर बोल।
गुयाखानि देह लक्ष्मी निँदे हैल भोर ॥४४
आपने तुलिया देह लक्ष्मीर वदने।
देखुक सकल सखी हरषित मने ॥४५
विश्वम्भर केश केह आउलाइया बाँधे।
बन्धन आकुति तार परशेर साधे ॥४६
केहो गुयाखानि देय गोराचाँदेर मुखे।
हिया दरदर तार पाय बड़ सुखे ॥४७
अङ्गे ढलि पड़े केहो हिया उतरोल।
लक्ष्मीरे तुलिया देय गौराचाँदेर कोल ॥४८
केहो बले हेन भाग्यवती केबा आछे।
गौरचन्द्र हेन पति मिलियाछे काछे ॥४९
कोन् तप कैल कोन् कैल व्रत दान।
देव आराधने कोन् साधिल गेयान ॥५०
कोन् सती पतिव्रता आछे पृथिवीते।
विश्वम्भर रूप देखि स्थिर थाके चिते ॥५१
मदन सदन जिनि वदन सुन्दर।
मानिनीर मान रतनबर चोर ॥५२
भुजदण्ड अखण्ड से हेमदण्ड जिनि।
निज बुके धरिते साध करे रमणी ॥५३
लक्ष्मी से सकल अङ्ग विलास करिब।
आमरा इहार कबे परश पाइब ॥५४
एइ आमादेर आशा ह'ब इहार दासी।
तबे से देखिब निति गौर रूपराशि ॥५५

———

भाटियारि राग। दिशा।

मोर प्राण आरे गोराचाँद नारे हय ॥ध्रु॥

एइमत रङ्गे ढङ्गे प्रभात हइल।
प्रातःक्रिया कैल प्रभु ये विधि आछिल ॥१
विवाहेर परदिन कुशण्डिका कर्म।
ब्राह्मण भोजन करे ब्राह्मणेर धर्म ॥२
सकल करिल प्रभु से दिन तथाय।
आर दिने घर याब कहिल कथाय ॥३
घरेते चलिल यबे आनन्दित मने।
परिजने पूजा करे रतन काञ्चने ॥४
एकासने वैसे प्रभु लक्ष्मी वामपाशे।
चौदिके बेढ़िल नारीगण तार काछे ॥५
वल्लभ मिश्रेर हिया हरिष बिषाद।
यात्राकाले करे कन्या बरे आशीर्वाद ॥६
दूर्वा धान्य गन्ध माल्य गुबाक चन्दन।
जामातारे दिया किछु करे निवेदन ॥७
धनहीन आमि छार नाहि करि भाग्य।
कि दिब तोमारे दान किबा तोर योग्य ॥८
केबल आनन्द गुणे कैले अनुग्रह।
धन्य कराइले करि कन्या परिग्रह ॥९
आमि कि बलिब मोर कि आछे योग्यता।
तोमार निज गुणे तुमि आमार जामाता ॥

देव पितृगण मोरे प्रसन्न हइल ।
यखन तोमारे निज कन्या समर्पिल ॥११
तोमार अभय पादपद्मे ते शरण ।
लभिल ना दिबे दुःख आमारे शमन ॥१२
ये पद धेयाने पूजे ब्रह्मा शिव आदि ।
से पद पूजिल विद्यमाने यथाविधि ॥१३
आर किछु निवेदिये शुन विश्वम्भर ।
ए बोल बलिते कण्ठे गद गद स्वर ॥१४
छल छल करे आँखि करुणार जले ।
लक्ष्मी कर धरि दिल गोराचाँद करे ॥१५
आजि हैते लक्ष्मी तोरे कैलुँ समर्पण ।
जानिया करिबे इहार भरण पोषण ॥१६
मोर घरे छिला लक्ष्मी घरेर ईश्वरी ।
आजि हैते तोर दासी कुलेर बहूरी ॥१७
मोर घरे छिल एइ स्वच्छन्द आचारे ।
आखटि करिया माये करित आहारे ॥१८
मोर घरे आछिला ए मा बापेर कोले ।
यथा तथा हैते आइले घरे सिया गले ॥१९
सबार दुलाली लक्ष्मी आमि अपुत्रक ।
घरे इहा बहि नाहि बालिका बालक ॥२०
आमि कि बलिब एइ तोर निज जन ।
मोहे मुग्ध हैया बलि एतेक बचन ॥२१
एइ ये बलिल सेह आमि मूढ़मति ।
कि करिबे मोर माया तुमि यार पति ॥२२
त्रिभुवने लक्ष्मी सम नाही भाग्यवती ।
आमि यत बलि सब ए माया पिरीति ॥२३
ए बोल बलिया मिश्र कैल सम्बरण ।
ढलढल सकरुण अरुण नयन ॥२४
चलिला से महाप्रभु निज प्रिय वामे ।
लक्ष्मीर सहित चढ़े मनुष्येर जाने ॥२५
शङ्ख दुन्दुभि बाजे जय हरि बोल ।
नानाविध बाद्य बाजे आनन्द हिल्लोल ॥२६
ब्राह्मणेते वेद पड़े भाटे राय बार ।
सम्मुखे नाटुया नाछे आनन्द अपार ॥२७
वयस्य वेष्टित प्रभु चलि याय पथे ।
अन्तरीक्षे देवगण चले दिव्य रथे ॥२८
एथा शची आनन्दित आइओ सुइओ लैया ।
पुत्र महोत्सवे बुले कौतुक करिया ॥२९
सशाख मङ्गल घट पातिल दुयारे ।
नारिकेल फल दिल ताहार उपरे ॥३०
निर्मञ्छन सज्ज करे घृत वाति ज्वाले ।
घरेते आइया प्रभु सेइ शुभकाले ॥३१
गौरचन्द्र निर्मञ्छन करे नारीगण ।
जय जय हुलाहुलि सुगीत नाचन ॥३२
नानाविध बाद्य बाजे आनन्द अपार ।
सर्वसुखमय हैल शचीर आगार ॥३३
उठिल मङ्गल ध्वनि आनन्द अशेष ।
लक्ष्मी कर धरि प्रभु गृहे परवेश ॥३४
पुत्र आर बधू कोले करे शचीदेवी ।
दूर्वा धान्य दिया बले हओ चिरजीवी ॥३५
पुत्र मुखे चुम्ब देइ बधू मुख चाइया ।
बधू मुखे चुम्ब देइ पुत्र निरखिया ॥३६
सर्वसुखमय हैल शचीर आवास ।
गोरागुण गाय सुखे ए लोचन दास ॥३७

सिन्धुड़ा राग ।

एइमते निज, बान्धब सहित,
सुखे निवसये पँहु ।
शचीर अन्तरे, आनन्द पाथार,
देखि गोराचान्द बहू ॥१

नदीया विनोद गोरा,
केलि कुतुहले भोरा।
कामेर कामान, भुरू निरमाण,
बाण काटियाछे तारा ॥ध्रु॥२
बयस्येर सङ्गे, रहस्य विलास,
लीला रसमय तनु।
विनि मेघे मही, ए थिर विजुरी
साजाल कुसुम धनु ॥३
वयस्येर कान्धे, कर अबलम्बि,
पुँथि करि वामहाते।
दिवसेर अन्ते, रम्य राजपथे,
सुरधनि तट ताते ॥४
सुगन्धि चन्दन, अङ्गे विलेपन,
विनोद विनोद फोटा।
ताहार सौरभे, मनमथ भोले,
धाग्रोल युवती घटा ॥५
चाँचर केशर, बेशेर माधुरी,
हेरिया के धरे चित।
कँाचार शोभाय, लोभाय युवती,
ना माने गुरुर भीत ॥६
नदीया नगरे, नागरी आगोर,
रसेर सागर सबे।
गौरचन्द्र लीला, देखिया भुलिला,
दम्भ चूर गेल तबे ॥७
नागरीर गुण, आछये बाखान,
वङ्किम आँखि कटाक्षे।
राजेर मन्दिरे, आगुनि भेजा'या,
लोभे पड़े लाखे लाखे ॥८
नदीया सुन्दरी, आपना पासरी,
रहल हिया धेयाने।
लोचन दास बले, से सुख हिल्लोले,
अइ करि अनुमाने ॥९

पञ्चम अध्याय

प्रभुर बङ्गविजय

षठमञ्जरी राग।

भाल देख अपरूप प्राण पुतली नवद्वीपे आरे हय।
आार दिने आार कथा शुन सर्व्वजन।
गौरचन्द्रेर गुण गाथा नितुइ नूतन ॥१
गङ्गा देखिबारे गेला बयस्येर मेला।
दिन अबसाने सन्ध्या हैल रम्य बेला ॥२
गङ्गार दु'कूले यत ब्राह्मण सज्जन।
गङ्गा नमस्करि निति करये स्तवन ॥३
काँखे कुम्भ करि याय पुरनारीगण।
निरिखये गङ्गादेवी बेकत वदन ॥४
मिश्र आचार्य्य भट्ट पण्डित अपार।
धर्मशील कत कत उत्तम आचार ॥५
सर्वजन दाण्डाइया चाहे गङ्गाकूले।
गङ्गार निर्मल जल शोभे नाना फुले ॥६
गन्ध चन्दन माला दिव्य कदलक।
युबक युबती बृद्ध पूजये बालक ॥७
त्रैलोक्य पावनी गङ्गा बहे महाबेगे।
आपना ना धरे देवी प्रभु अनुरागे ॥८
उथलिल गङ्गादेवी बाढ़िल सलिल।
कुल कुल शब्दे पँहु अङ्ग परशिल ॥९
पुनः परशेर आशे बाढ़े गङ्गादेवी।
सन्देह लागिल लोके मने मने भाबि ॥१०
प्रतिदिन देखि गङ्गा येमन तेमन।
आजि अपरूप तेज शुनिये गर्जन ॥११

मेघ बरिषण नाहि बाढ़ये सलिल ।
खरतर स्रोत बहे नीर उथलिल ॥१२
एइ मते अनुमाने करे सर्वजन ।
गङ्गार भकत एक आछये ब्राह्मण ॥१३
गङ्गार प्रसादे तार अन्तर निर्मल ।
भूत भविष्यत् बिप्र जानये सकल ॥१४
गङ्गा आराधना करे जपे हरिनाम ।
गङ्गा गौराङ्ग येन देखे एक ठाम ॥१५
एइ वाञ्छा सेइ बिप्र करिल हृदये ।
गङ्गातीरे कुटीर बान्धिया सुखे रहे ॥१६
गङ्गा महोत्सब देखि बाढ़िल उल्लास ।
चिन्तिते चिन्तिते ताहे भेल परकाश ॥१७
गङ्गार समीपे रहे देखे आचम्बित ।
विश्वम्भर महाप्रभु बयस्य बेष्टित ॥१८
गङ्गा निरीखये प्रभु बड़ अनुरागे ।
द्विगुण हइल देह अङ्गेर पुलके ॥१९
करुणाय अरुण चल छल करे आँखि ।
देखिया पाइल बिप्र अन्तरेर साक्षी ॥२०
एइ सेइ भगवान् कभु नहे आन ।
चिन्तिते चिन्तिते गेला प्रभु विद्यमान ॥२१
प्रभुरे निकटे गिया दाण्डाइया देखे ।
अवश हैयाछे प्रभु गङ्गा अनुरागे ॥२२
तार हृदय प्रभु जाने मने मने ।
आगुसरि करे गङ्गा कर परशने ॥२३
कर परशने गङ्गार ना पुरिल आश ।
ढेउ छले करे गङ्गा चरण सम्भाष ॥२४
मूर्त्तिमती हैया गङ्गा प्रभु काछे रहे ।
करजोड़ करिया चरण पद्म चाहे ॥२५
देखिया ब्राह्मण पुलकित सब अङ्ग ।
देखह सकल लोक गङ्गा गौराङ्ग ॥२६
प्रभु परशिल गङ्गा चरण कमले ।
कृतार्थ हइया गङ्गा गेला निज जले ॥२७
गौराङ्ग निकटे गङ्गा केहो ना जानिल ।
ब्राह्मण अभीष्ट भरि नयाने देखिल ॥२८
सुरधुनी अनुराग पाइया गौरहरि ।
पुलकित सव अङ्ग काँपे थरथरि ॥२९
विभोर हइया प्रभु बले हरि बोल ।
आवेशेर भरे निजजने देइ कोल ॥३०
अरुण वरण भेल प्रेमार आरम्भे ।
कदम्ब केशर जिने पुलक कदम्बे ॥३१
प्रभु अनुरागे गङ्गा हिया माझे रहे ।
शन जलधारा आँखि सागरेते बहे ॥३२
लोमे लोमे बहे नीर लोके बले घर्म ।
उथलिल प्रेमसिन्धु द्रवमय ब्रह्म ॥३३
चौदिके सकल लोक हरि हरि बोले ।
उथलिल प्रेमसिन्धु आनन्द हिल्लोले ॥३४
चमकित भेल सब नदीया समाज ।
गङ्गार भक्त बिप्र बुझिलेक काज ।३५
सेइ भगवान् प्रभु विश्वम्भर देबे ।
देखिया से बाढ़े गङ्गा करे अनुभबे ॥३६
चरणे पड़िला बिप्र करि आर्त्तनाद ।
एतदिने गङ्गा मोरे कैल परसाद ॥३७
योगीन्द्र मुनीन्द्र याहा ना पाय धेयाने ।
हेन महाप्रभु आजि देखिल नयाने ॥३८
भूमे गड़ागड़ि याय कान्दे आर्त्तनादे ।
आपना पासरे बिप्र प्रेमार आनन्दे ॥३९
चर्तुदिके सब लोक दण्डाइया रहे ।
बेकत बदने बिप्र पूर्वकथा कहे ॥४०
अवश ब्राह्मण देखि चलिला ठाकुर ।
निज घरे गेल हिया आनन्द प्रचुर ॥४१

आदि कथा कहे विप्र शुन सर्वजन।
येमते हइल गङ्गादेवीर जनम ॥४२
एखाने बा गङ्गादेवी बाढ़े ये कारणे।
सकल कहिये सबे शुन सावधाने ॥४३
पूर्वे एककाले महामहेश ठाकुर।
कृष्ण गुण गाय महा आनन्द प्रचुर ॥४४
नारद ठाकुर गाय गणेश बादक।
पुलकित पूरित अङ्ग आपाद मस्तक ॥४५
सङ्गीत सुतान तिने गाय एकमेले।
ब्रह्माण्ड भेदिल शब्द ब्रह्मेर हिल्लोले ॥४६
एके से महेश ताहे कृष्णेर आबेश।
नारदेर वीणा ताहे बादक गणेश ॥४७
अथिर हइया प्रभु आइला सेइ ठाँइ।
महेश नारद मिलि यथा गुण गाइ ॥४८
कहिल ना गाओ गुण शुनह महेश।
तो सबार गान तत्व ना बुझो बिशेष ॥४९
तोमार सङ्गीत गाने नाहि रहे देह।
आउलाय शरीर बन्ध द्रवमय लेह ॥५०
शुनिया ठाकुर वाणी हासये महेश।
गाइया देखिब तत्व इहार बिशेष ॥५१
इहा बलि गाय गुण अधिक उल्लास।
ब्रह्माण्ड भरिल शब्दे ए भूमि आकाश ॥५२
द्रविल शरीर प्रभुर क्षीण हैल तन।
तरासे महेश कैल गान सम्बरण ॥५३
सम्बरण कैल गान थिर हैल मति।
सेइ से कारुण्यजल लोके आछे ख्याति ॥५४
सेइ द्रबब्रह्म नाम करुणार जल।
तीर्थरूपी जनार्दन घोषये सकल ॥५५
दुर्लभ दुर्लभ एइ संसार भितर।
कमण्डलु भरि ब्रह्मा राखिल से जल ॥५६
आछिल ये बलिराज प्रचुर भकत।
तारे अनुग्रह लागि भै गेल वेकत ॥५७
त्रिपाद थुइते प्रभु मागिल पृथिवी।
त्रिभुवन जोड़े ताँर द्विपाद पदवी ॥५८
आर पाद दिल बलिर माथार उपर।
ऐछन करुणा कभु नाहि देखि आर ॥५९
तबे अपरूप शुन त्रिपाद महिमा।
त्रिजगते धन्य हैल याहार करुणा ॥६०
ब्रह्माण्ड भेदिल सेइ पद नख आगे।
सेइ पदे पाद्य ब्रह्मा दिल अनुरागे ॥६१
प्रभु पादाम्बुज जल पूजये मस्तके।
त्रिपाद सम्भबा गङ्गा तेँइ बले लोके ॥६२
हेनइ ठाकुर महाप्रभु विश्वम्भर।
देखह सकल दोक नयान गोचर ॥६३
देखि गङ्गादेवी पूर्व मोङरण हइल।
प्रेम अनुरागे गङ्गा बाढ़िते लागिल ॥६४
गङ्गापाने चाहे प्रभु अनुराग दिठे।
अमृत अधिक गोरा अङ्ग लागे मिठे ॥६५
चरण परशे पुनः तरङ्गेर छले।
अनुभबे जानिल मो कहिल सबारे ॥६६
शुनिया सकल लोके बाढ़ल उल्लास।
गोरागुण गाय सुखे ए लोचन दास ॥६७

धानशी राग। दिशा।
आरे आरे हय हय॥ मूर्च्छा॥
हेन अदभुत कथा श्रवण मङ्गल नाम रे
शुन गोरा गुणगाथा।

आरे आमार गोरा पद कमल माधुरी।
भकत भ्रमरा उड़ि पड़े घुरि घुरि ॥१

एइ मते कतदिन गोङाइला सुखे ।
बान्धब सहिते प्रभु आनन्द कौतुके ॥२
एकदिन मने मने कैल आचम्बिते ।
पूर्वदेशे याब आमि सर्वलोक हिते ॥३
पाण्डव बर्जित देश सर्वलोके गाय ।
गङ्गा हैया गङ्गा नहे एइ साक्षी ताय ॥४
आमार परशे पद्मावती हैब धन्य ।
सर्वलोक आमा बहि ना जानिब अन्य ॥५
ऐछन युकति प्रभु मने अनुमाने ।
मायेरे कहिल याब धन उपार्जने ॥६
यात्रा करि याय प्रभु सङ्गे निज जन ।
छटफट करे शची मायेर जीवन ॥७
कातर हृदये शची कहये पुत्रेरे ।
शुन बाप ! मोर बाणी ये कहि तोमारे ॥८
धन उपार्जने दूर देशे याबे तुमि ।
तोमा ना देखिले से केमने जीव आमि ॥९
जल बिनु येन मीन ना धरे पराण ।
तोमा बिनु आमार तेमने समाधान ॥१०
तोमार मुख चन्द्ररूप मनेते भाबिया ।
मरि याब ओहे बाप ! तोमा ना देखिया ॥११
मायेर बचन शुनि प्रभु विश्वम्भर ।
विनय करिया बैल प्रबोध उत्तर ॥१२
आमार बिच्छेदे डर ना भाबिह तुमि ।
निकटे तोमार ठाँइ आसिब से आमि ॥१३
लक्ष्मीरे कहिल प्रभु हासिया उत्तर ।
मातार सेवाय तुमि रहिबे तत्पर ॥१४
मा ये यत बैल किछु ना शुनिल पँहु ।
शुभयात्रा करि याय हासि लहुलहु ॥१५
चलिल से महाप्रभु सङ्गे निज जन ।
कौतुके भ्रमये महा आनन्दित मन ॥१६
येखाने येखाने याय प्रभु विश्वम्भर ।
देखिया सेखानेर लोक हय त फाँपर ॥१७
से रूप देखिया केहो ना लेउटे आँखि ।
केहो बले एइ रूप अहर्निशि देखि ॥१८
पुरनारीगण बले देखिया वदन ।
सफल जनम आजि सफल नयन ॥१९
कोन् भाग्यवती माये धरिल उदरे ।
कभु नाहि देखि हेन सुन्दर शरीरे ॥२०
हर गौरी आराधिया कोन् भाग्यवती ।
हेन रूपे हेन गुणे पाइयाछे पति ॥२१
नवीन काञ्चन जिनि अङ्गेर किरण ।
सुमेरु पर्वत जिनि देहेर गठन ॥२२
सहज रूपेर नाहि भुवने तुलना ।
यज्ञसूत्र अतिशय त हाते शोभना ॥२३
मरि याइ हेरिया सुन्दर मुखेर हासि ।
कुलवती हृदये रहिल इहा पशि ॥२४
दीघल सुन्दर आँखि पुण्डरीक जिनि ।
अपरूप ताहे चारु चञ्चल चाहनि ॥२५
कोनो भाग्यवती कृष्णेर रसतत्व ज्ञाता ।
अनुमानि कहे सेइ निर्यास बारता ॥२६
देखि येन राधार वल्लभ हेन ठाम ।
राधार वरण अङ्ग देखि विद्यमान ॥२७
सकल युवती मेलि कहिते लागिला ।
शुनि विश्वम्भर प्रभु उलटि चलिला ॥२८
सरस नयाने प्रभु चाहिला सबारे ।
प्रेमे गरेगर तारा आपना पासरे ॥२९
पद्मावती स्नान कैल ये आछिल विधि ।
चरण परशे गङ्गा सम भेल नदी ॥३०
पद्मावती महावेगा पुलिन संयुता ।
कुम्भीर कच्छप मीने अति सुशोभिता ॥३१

ब्राह्मण सज्जन सब वैसे तार तटे ।
दिव्य पुरुष नारी स्नान करे घाटे ॥३२
विश्वम्भर स्नान पूता भेल पद्मावती ।
सर्वजन पाप हरे स्नान करे तथि ॥३३
प्रेमभक्ति हय कृष्ण चरणार विन्दे ।
स्नान करे कभु यदि वैष्णव ना निन्दे ॥३४
सेइ पद्मावती तटबासी यत जन ।
गौरचन्द्र देखि श्लाघ्य करिल नयन ॥३५
तबे पद्मावती तीरे भ्रमे गौरहरि ।
से देश पवित्र कैल श्रीचरण धरि ॥३६
शीतल चरण पाइया धरणी शीतल ।
पुलकित हैला देवि गेल अमङ्गल ॥३७
से देश तारिले आपे बहु यत्न करि ।
पाण्डव बर्जित देश दूर कैल हरि ॥३८
चण्डाल पतित किबा सज्जन दुर्ज्जन ।
सबारे याचिया प्रभु दिल हरिनाम ॥३९
शुचि बा अशुचि किबा आचार बिचार ।
ना मानिया सबारे करिल भव पार ॥४०
नाम सङ्कीर्त्तने प्रभु नौका साजाइया ।
भवनदी पार कैल दुःखित देखिया ॥४१
ये जनारे पाय तारे धरि कोले करि ।
काण्डारीर रूपे पार कैल गौरहरि ॥४२
एहेन करुणा नाहि शुनि कोनो युगे ।
कोन् अवतारे कोथा केबा पाप मागे ॥४३
सबारे पबित्र कैल शम भाव करि ।
राधा कृष्ण प्रेमेर करिल अधिकारी ॥४४
विद्यादान कैल प्रभु अशेष बिशेषे ।
पण्डित हइल सबे दिन पक्ष मासे ॥४५
दयार सागर प्रभु सर्वलोक पति ।
करुणा प्रकाशि लोके शुद्ध कैल मति ॥४६

एइमते आछे प्रभु सज्जन समाजे ।
एथा लक्ष्मी शचीदेवी आछे नवद्वीपे ॥४७
पतिव्रता लक्ष्मीदेवी पतिगत प्राण ।
आनन्दे शचीर सेबा करये बिधान ॥४८
देवतार सज्जा करे गृह सम्मार्ज्जन ।
धूप दीप नैवेद्य गन्ध माल्य चन्दन ॥४९
सब सज्ज करि देइ देवतार घरे ।
ताहार चरिते शची आपना पासरे ॥५०
वश भेल शचीदेवी बधूर चरिते ।
पुलकित देह शचीर बधूर पिरीते ॥५१

विभाष राग । दिशा ॥
हय रे हय ना हारे जय जय प्रभु प्राण हय । ध्रु ॥

एइमते आछे शची बधूर सहिते ।
दैवेर निर्बन्ध याहा ना याय खण्डिते ॥१
प्रभु ना देखिया लक्ष्मी कातर अन्तर ।
प्रभुर विरह तार स्फुरे निरन्तर ॥२
विरह हइल मूर्त्ति सर्पेर आकारे ।
लक्ष्मी ठाकुराणी ताहा जानिल अन्तरे ॥३
दंशिलेक महासर्प लक्ष्मीर चरणे ।
अस्तव्यस्त हइया शची गणे मने मने ॥४
दंशन ज्वालाय देवी अथिर हइल ।
देखि शचीदेवी महा संकटे पड़िल ॥५
डाकिया आनिल ओझा झाड़े नाना मन्त्रे ।
जिज्ञासा करिल नाना औषधेर तन्त्रे ॥३
अनेक यतन कैल ना लेउटे बिष ।
बड़ भर पाइल शची हैल बिमरिष ॥७
प्राप्तिकाल देखि सबे छाड़िल यतने ।
गङ्गाजले नामाइया हरि सङरणे ॥८

गलाय तुलिया दिल तुलसीर दाम ।
चौदिके वैष्णव सब लय हरिनाम ॥९
लक्ष्मी गेला प्रभु स्थाने ना जानिल लोके ।
परम अद्भुत सबे देखे परतेके ॥१०
आकाशेर पथे रथ आनिल गन्धर्व ।
हरि बलि देह छाड़ि लक्ष्मी गेला स्वर्ग ॥११
लक्ष्मीअंश कोनो शक्ति स्वर्गपुरी गेल ।
देखिया सकल लोक विह्वल हइल ॥१२
वैकुण्ठे चलिला लक्ष्मी आपन आलय ।
परम लखिमी यथा सर्व लक्ष्मीमय ॥१३
तबे शचीदेवी एथा कान्दये दुःखिता ।
गुण बिनाइया कान्दे स्त्रीगण बेष्टिता ॥१४
नयने गलये नीर भिजे हिया बास ।
शिरे कर हानि छाड़े तपत निःश्वास ॥१५
सर्वगुणे शीले लक्ष्मी बधू लक्ष्मी समा ।
नदीया नगरे नाहि दिबारे उपमा ॥१६
केमने घरेते याब एकेश्वरी आमि ।
कि लागिया मोरे दया पासरिला तुमि ॥१७
देव आराधन सज्ज थाकिल पड़िया ।
आमार शुश्रूषा केने गेला त छाड़िया ॥१८
आजि हैते शून्य हैल मोर गृह बास ।
विभा करि विश्वम्भर गेला त प्रवास ॥१९
आरेरे पापिष्ठ सर्प ! कोथा छिले तुमि ।
आमारे ना खाइला केने जीत बधूखानि ॥२०
मोर सेबा करिबारे बधू नियोजिया ।
बिदेशे चलिला पुत्र निश्चिन्त हइया ॥२१
केमने बा पुत्र मुख चाहिब अभागी ।
कि करिब प्राण पुड़े बधूके ना देखि ॥२२
एतेक बिलाप देखि यत बन्धुगण ।
सबे बले शचीदेवी कर सम्बरण ॥२३

यार ये निर्बन्ध आछे घुछाइबे केह ।
सकल संसार मिथ्या सब देह गेह ॥२४
तोमारे कि बुझाइब तुमि सब जान ।
जानिया शुनिया केने प्रबोध ना मान ॥२५
शरीर धरिले केह मृत्यु ना एड़ाय ।
ब्रह्मादि देवता यत तारा मृत्यु पाय ॥२६
केहो आगे केहो पाछे मरण सबार ।
जनम मरण मात्र सबार व्यभार ॥२७
सत्य एक वस्तु कृष्ण वेदे मात्र जानि ।
हेन कृष्ण ये ना भजे सेइ मूढ़खानि ॥२८
इहा बलि प्रबोधिया सब बन्धुगण ।
हरि हरि बलि सबे सम्बरे क्रन्दन ॥२९
तबे सब जन मिलि ये विधि आछिल ।
करिया सत्क्रिया सबे घरेते चलिल ॥३०
कान्दिते कान्दिते शची निज घरे गेला ।
प्रबोध करिला सबे बन्धुगण मेला ॥३१
तबे ओथा कतदिन रहि विश्वम्भर ।
घरेते चलिला प्रभु हरिष अन्तर ॥३२
रजत काञ्चन बस्त्र मुकुता प्रवाल ।
सकल वैष्णव पूजा करिल अपार ॥३३
घरेरे आइला प्रभु नाना धन लैया ।
मातृ स्थाने दिला धन हरषित हैया ॥३४
नमस्कार करि प्रभु नेहारे वदन ।
विरस वदन शची ना कहे बचन ॥३५
पुनरपि पदधूलि लय विश्वम्भर ।
मलिन वदन ना कहे उत्तर ॥३६
ये किछु आनिल धन माये निवेदिया ।
धीरे धीरे कहे प्रभु बिस्मित हइया ॥३७
केने हेन माता ! तोमार मलिन बदन ।
तोमारे दुःखित देखि पोड़े मोर मन ॥३८

ए बोल शुनिया शची गदगद भाष ।
झरये आँखिर नीर भिजे हिया बास ॥३९
कहिते ना पारे किछु सकरुण कण्ठ ।
कहिल आमार बधू गेला त बैकुण्ठ ॥४०
ए बोल शुनिया प्रभु बिरस अन्तर ।
छलछल करे आँखि करुणार जल ॥४१
मायेरे बलिला प्रभु शुनह बचन ।
पूर्व्वकथा कहि तार जन्मेर कारण ॥४२
इन्द्रेर अप्सरा नृत्य करे एककाले ।
दैवेर निर्बन्धे पद स्खलन हैल ताले ॥४३
तालभङ्ग हैल शाप दिल सुरेश्वरे ।
पृथिवीते जन्म' गिया मनुष्येर घरे ॥४४
शाप दिया पुनः दया भेल देवराजे ।
दुःख ना पाइबा बैल हैब बड़ काजे ॥४५
पृथिवीते अवतार हइब ईश्वर ।
तार बधू हैबा तुमि दिल एइ बर ॥४६
तबे त आसिबा तुमि एइ इन्द्रपुरी ।
कहिल सकल सेइ इन्द्रेर सुन्दरी ॥४७
शोक ना करिह तुमि शुन मोर माता ।
निर्बन्ध ना घुचे येइ लेखये विधाता ॥४८
पुत्रेर बचन शची शुने सावधाने ।
ना करिल शोक किछु ना करिल मने ॥४९
ए बोल बलिया विश्वम्भर पाइल चिन्ता ।
आत्म सङ्गोपन करे कहे नाना कथा ॥५०
कहये लोचन दास शुनह बिचित्र ।
लक्ष्मी स्वर्ग आरोहण गौराङ्ग चरित्र ॥५१

षष्ठ अध्याय

प्रभुर द्वितीय विवाह ।

गान्धार राग ॥ दिशा ॥

ओकि हांरे गौराङ्ग जय जय ॥ ध्रु ॥

हेनमते नवद्वीपे प्रभु विश्वम्भर ।
आनन्दे गोङाय दिन शचीर कोङर ॥१
सुखे निबसये बन्धु बान्धब सहिते ।
शचीर हृदये दुःख भेल आचम्बिते ॥२
बधू-शून्य गृह देखि पाये बड़ चिन्ता ।
विश्वम्भरे बिभा दिब करे मनःकथा ॥३
मने अनुमान करि करिल निश्चय ।
आछे एकखानि कन्या यदि भाग्ये हय ॥४
काशीनाथ नामे द्विज देखिल सम्मुखे ।
अन्तर कहिल शची निभृते ताहाके ॥५
सनातन-पण्डितेर घरे याह तुमि ।
प्रबन्ध करिया कह ये कहये आमि ॥६
सर्व्वगुणे शीले एइ आमार तनय ।
ताहार कन्यार योग्य यदि मने लय ॥७
एतेक बचन शची द्विजेरे कहिला ।
शुनि काशीनाथ द्विज सत्वरे चलिला ॥८
पण्डित सनातन बसि आछे घरे ।
काशीनाथ द्विज-बर गेला तथाकारे ॥९
आइस आइस बलि दिल आसन बसिते ।
कि काजे आइला-कहे हासिते हासिते ॥१०
काशीनाथ कहे-शुन शुन हे पण्डित ।
कहिब सकल कथा ये हय उचित ॥११
तुमि सर्बशास्त्र जान-धन्य पृथिवीते ।
कि आछये यत गुण तोर अबिदिते ॥१२

परम धार्मिक तुमि-बिष्णु परायण।
निज धर्मपर येइ बलिये ब्राह्मण ॥१३
ऐछन जानिया शची विश्वम्भर माता
डाकिया कहिला मोरे अन्तरेर कथा ॥१४
पाठाइया दिला मोरे तोमा बराबर।
अबधान करि शुन ये कहि उत्तर ॥१५
आपना बलिये तोरे कहि निज मर्म।
आपने बुझिया कर ये जुयाय कर्म ॥१६
तोमार कन्या योग्य वर-विश्वम्भर।
कहिल सकल कथा-ये देह उत्तर ॥१७
शुनि सनातन मिश्र मने अनुमानि।
बन्धुर सहित कथा दढ़ाइल वाणी ॥१८
काशीनाथ पण्डितेरे कहे सनातन।
आपन अन्तर कहि-शुन महाजन ॥१९
एइ मनःकथा मोर रजनी दिवस।
प्रकट बदने कहि नाहिक साहस ॥२०
आजि शुभदिन परसन्न भैल विधि।
जामाता हइब विश्वम्भर गुणनिधि ॥२१
आपनार भाग्यतत्त्व जानिलाम तबे।
आपने से शचीदेवी गोचरिल यबे ॥२२
मोर भाग्य सम भाग्य काहार हइब।
परब्रह्म श्रीगोविन्दे कन्या सर्मपिब ॥२३
सदा यार पादपद्म पूजे ब्रह्मा शिब।
से चरणे कन्या दिया आमिह अर्चिब ॥२४
आगुसरि काशीनाथ चले द्विजोत्तमे।
कहिल कहिओ शचीदेवीर चरणे ॥२५
समय निर्णय करि पाठाब ब्राह्मण।
शुभकार्य्य अनुबन्धे करिह यतन ॥२६
पण्डित श्रीसनातन कहिला उत्तर।
काशीनाथ द्विजोत्तम चलिला सत्त्वर ॥२७
शचीर चरणे आसि करि परणाम।
कहिल सकल कथा ताँर विद्यमान ॥२८
अति हरषिता शची उत्तर पाइया।
पुत्र विवाह कार्य्य करेन हासिया ॥२९
नाना द्रव्य आहोरण करे शची धन्या।
कोन छले देखिबारे याय सेइ कन्या ॥३०
तबे सेइ सनातन पण्डित उत्तम।
कतदिन बहि तथा पाठाइल ब्राह्मण ॥३१
शचीर चरणे मोर कहिओ बचन।
गोचरिह पूरबे ये कहिल ब्राह्मण ॥३२
मोर भाग्ये आज्ञा यदि करे सेइ कथा।
सत्वरे आसिह कार्य्य करि येन हेथा ॥३३
परब्रह्म श्रीगोविन्द श्रीशचीनन्दन।
तारे कन्या दिले हबे संसार मोचन ॥३४
शुनिया चलिला विप्र शचीर भवने।
हासिया प्रणाम कैल शचीर चरणे ॥३५
पण्डित श्री सनातन पाठाइला मोरे।
निज मर्म निबेदन करिते तोमारे ॥३६
तार भाग्ये आज्ञा यदि कर तुमि धन्या।
तब पुत्र विश्वम्भरे देइ निज कन्या ॥३७
भाल भाल बलि शची अति हरषित।
आमार सम्मत कार्य्य करह त्वरित ॥३८
ए बोल शुनिया द्विज अति हृष्ट मने।
कहिते लागिला किछु मधुर वचने ॥३९
विष्णुप्रिया विश्वम्भर हेन पति पाब।
विष्णुप्रिया नाम तार यथार्थ हइब ॥४०
श्रीकृष्णेरे पति येन पाइल रुक्मिणी।
ऐछन हइब इहा हिया अनुमानि ॥४१
ए बोल शुनिया शची अति हरषिता।
ब्राह्मण कहिल गिया पण्डितेरे कथा ॥४२

पण्डित श्रीसनातन बड़ तुष्ट हैला।
विवाह उचित कर्म करिते लागिला ॥४३
नानाद्रव्य अलङ्कार करे महामति।
अधिवास करिबारे करिल युकति ॥४४
गणक आनिया बैल बचन बिनय।
विष्णप्रिया विभा दिब करह समय ॥४५
गणक कहिल शुन, शुनहे पण्डित।
आसिते देखिल गौरचन्द्र आचम्बित ॥४६
तारे देखि आनन्दित भेल मोर मन।
कौतुके ताहारे आमि ये बैल बचन ॥४७
कालि शुभ अधिवास हइब तोमार।
विवाह हइब शुन बचन आमार ॥४८
ए बोल शुनिया तेँहो कहिल उत्तर।
कह कोथा कार विभा केबा कन्या बर ४९
आमार साक्षाते कथा कहिल कथन।
बुझिया कार्य्येर गति कर आचरण ॥५०
गणकेर मुखे शुनि ए सब बचन।
धैर्य्य अबलम्बि किछु ना बैल तखन ॥५१
सनातन पण्डित से चरित्र उदार।
बन्धुगण लैया करे अनुमान सार ॥५२
नानाद्रव्य कैलुँ नाना कैलुँ अलङ्कार।
काहारे कि दोष दिब करम आमार ॥५३
आमि कोन किछु अपराध नाहि करि।
अकारणे आदर छाड़िला गौरहरि ॥५४
गौराङ्ग सम्बन्ध सुख धन हाराइया।
हाहा गौरचन्द्र बलि भूमिते पड़िया ॥५५
फुकारि फुकारि कान्दे बले हरि हरि।
तोंमा ना देचिया विश्वम्भर आमि मरि ५६
जय पण्डितेर परित्राण विश्वम्भरे।
राखिले भीष्मक बाञ्छा विदर्भ नगरे ॥५७
जय रुक्मिणीर बाञ्छा रक्षक मुरारि।
आनिले से अकुमारी यतेक सुन्दरी ॥५८
ता सबा करिला विभा जानि तार मर्म।
मोर कन्या विभा कर तुमि सत्य धर्म ॥५९
मोरे घृणा ना करिबे पतित बलिया।
कत कत पतितेरे लैयाछ तारिया ॥६०
जय विश्वम्भर जगजन त्राणदाता।
जय सर्वेश्वरेश्वर विधिर विधाता ॥६१
मुइ से अधमाधम मति अति मन्द।
कभु ना पाइल तोर भजनेर गन्ध ॥६२
अन्तरे जन्मिल दुःख करिल उद्गार।
सन्तप्त हृदये कहे ब्राह्मणी ताहार ॥६३
कुलजा सुलज्जा कुलवती पतिव्रता।
सर्वगुणे शीले सेइ विष्णुर भगता ॥६४
स्वामी दुःख देखिया पाइल बड़ दुःख।
लज्जा परिहरि कहे स्वामीर सम्मुख ॥६५
आपने से विश्वम्भर ता करिल काज।
तोमारे कि दोष दिबे नदीया समाज ॥६६
आपने से ना करिला विश्वम्भर हरि।
तोमार शकति किबा कहिबारे पारि ॥६७
स्वतन्त्र पुरुष प्रभु सबार ईश्वर।
ब्रह्मा रुद्र इन्द्र आदि याहार किङ्कर ॥६८
से जन केमते तोमार हइबे जामाता।
शान्त कर मन स्मर कृष्णेर बारता ॥६९
शकति सम्भबे नाहि शोक अकारण।
बलिते डराङ दुःख बुझाह एखन ॥७०
एतेक बचन यबे तार प्रिया बैल।
पण्डित श्रीसनातन दुःख सम्बरिल ॥७१
बान्धब सहित एइ युक्ति नियड़िल।
आमार कि दोष विश्वम्भर ना करिल ॥७२

इहा बहि आर किछु ना बलिल वाणी ।
अन्तरे दुःखित हैला ब्राह्मण ब्राह्मणी ॥७३
अन्तर चिन्तित पुनः खेद उपजिल ।
हा हा विश्वम्भरदेब मोरे लज्जा दिल ॥७४
जय जय द्रौपदीर लज्जाभय हारी ।
जय जय गजके कुम्भीर मुखे तारि ॥७५
पाण्डबेर परित्राण रुक्मिणी जीवन ।
जय जय अहल्यार दुष्कृति मोचन ॥७६
एइमत बहु स्तब कैल विप्रवर ।
जानिल गौराङ्ग प्रभु जगत ईश्वर ॥७७
तबे त सकल कथा शुनि विश्वम्भर ।
केने हेन बैल दुःख भाबिल अन्तर ॥७८
आमार भकत दोँहे दुःख पाइल चिते ।
कौतुके कहिल कथा हासिते हासिते ॥७९
प्रिय एकजन छिल बयस्येर माझे ।
निभृते कहिल तारे यत मन आछे॥८०
कोनो कथाच्छले याह पण्डितेर घर।
आमि नाहि जानि कहिओ आपन उत्तर ८१
कौतुक रहस्ये आमि गणके कहिल ।
ना बुझिया कार्य्ये केने अबहेला कैल ॥८२
कार्य्ये अबहेला ताहे नाहिक अधिक ।
से दोँहार चित्ते दुःख ए नहे उचित ॥८३
माये ये बलिल ताते कि आछये कथा ।
ताहार उपरे आर के करे अन्यथा ॥८४
मिछा कार्य्य क्षति मिछा दुःख भाव चिते ।
करह विभार कार्य्य ये हय उचिते ॥८५
एतेक शिखाइया प्रभु ब्राह्मणे पाठाइल ।
सनातन पण्डिते से सकल कहिल ॥८६

रामकेलि राग । दिशा ॥

हरि राम नारायण शचीर दुलाल हेम गोरा ।
मोर प्राण आरे गोराचाँद नारे हय ॥ ध्रु ॥

तबे त पण्डित अति हरषित मने ।
आनन्दे करये शुभदिन शुभक्षणे ॥१
एथा प्रभु गौरचन्द्र ऐछन जानिया ।
शुभदिन करे घरे गणक आनिया ॥२
चर्च्चिया करिल दिन समय बिचित्र ।
शुभकाल शुभलग्न तिथि सुनक्षत्र ॥३
अधिवास काले यत ब्राह्मण सज्जन ।
मिलिया करये प्रभुर शुभ आयोजन ॥४
आनन्दित शचीदेवी आइओ सुइओ लैया ।
पुत्र महोत्सब करे नाना द्रव्य दिया ॥५
तैल हरिद्रा आर ललाटे सिन्दूर ।
खइ कदलक आर सन्देश ताम्बूल ॥६
आनन्दे मङ्गल गाय यत आइओगण ।
प्रभु अधिवास करे यतेक ब्राह्मण ॥७
धूप दीप पताका शोभित दिगन्तरे ।
स्वस्तिवाचन पूर्व देवपूजा करे ॥८
ब्राह्मणेते वेद पड़े बाजे शुभ शङ्ख ।
नानाविध वाद्य बाजे पटाह मृदङ्ग ॥९
चौदिकेते कुलबधू देइ जय जय ।
प्रभु अधिवास कैल उत्तम समय ॥१०
गन्ध चन्दन माल्ये पूजिल ब्राह्मण ।
कर्पूर ताम्बूल आर भूरि बिभूषण ॥११
हेनकाले श्रीयुत पण्डित सनातन ।
अतिश्रद्धा युत सेइ उलसित मन ॥१२
ब्राह्मण पाठाइल आर बिप्र साध्वीगण ।
जामातार अधिवास करिबारे मन ॥१३

आपने आपन कन्यार अधिवास करे।
झलमल करे अङ्ग रत्न अलङ्कारे ॥१४
देव पूजा पितृ पूजा करे यथाविधि।
अधिवास काले जय जय निरवधि ॥१५
ब्राह्मणेते वेद पड़े बाजे शुभशङ्ख।
आकन्दे दुन्दुभि बाजे बाजये मृदङ्ग ॥१६
हेनमते दुइजनेर अधिवास हैल।
बधूगण रात्रि शेषे जलके साहिल ॥१७
नानाविध बाद्य बाजे जय हुलाहुलि।
रस भरे रमणी चलिल ढुलि ढुलि ॥१८
रसेर आबेशे मने कत उठे भाव।
गौराङ्ग माधुर्य्य रस हृदयेर लाभ ॥१९
सुचन्द्रिम रजनीते सुमङ्गल गीत।
विष्णुप्रिया विवाहे से करिल विहित ॥२०
एइमते जलसाहि कुलबधूगण।
प्रभात समये आइल शचीर भवन ॥२१
प्रातःक्रिया करि प्रभु कैल गङ्गा स्नान।
नान्दीमुख श्राद्ध कैल ये छिल विधान ॥२२
देवपूजा पितृ पूजा करि समाधान।
विवाह उचित प्रभु कैल पुन स्नान ॥२३
नापिते नापित क्रिया करिल तखन।
अङ्ग उद्वर्त्तन करे कुलबधूगण ॥२४
गन्ध आमलकी देइ तैल हरिद्रा।
श्रीअङ्ग परशे केहो सुखे गेल निद्रा ॥२५
केहो पाद सम्बाहन करे हरषिता।
बेकत वदन केहो लज्जा रहे कोथा ॥२६
नयने गलये कारो हरिषेर नीर।
अङ्गेर वातासे कारो काँपये शरीर ॥२७
उनमत नारीगण करे अभिषेक।
पूरुबेर मनःकथा करे परतेक ॥२८
अङ्ग हेलि पड़े केहो गङ्गाजल ढाले।
जय हुलाहुलि शुनि सुमङ्गल रोले ॥२९
नदीया नगरे भेल आनन्द उत्साह।
सर्ब सुमङ्गल विश्वम्भरेर विबाह ॥३०
तबे सेइ महाप्रभु विश्वम्भर राय।
अङ्गेर सुबेश करे यतेक जुयाय ॥३१
दिव्य रत्न अलङ्कार रक्तप्रान्त बास।
मह मह करे गोरा अङ्गेर वातास ॥३२
सहजे श्रीअङ्ग गन्ध आर दिव्य गन्ध।
चन्दन तिलक भाले आर मुखचन्द्र ॥३३
नखचन्द्र शोभा करे अङ्गुले अंगुरी।
झलमल अङ्गतेज चाहिते ना पारि ॥३४
अति सुकोमल राङ्गा अधर बिम्बक।
श्रवणे शोभये गण्ड कुसुम कन्दक ॥३५
अङ्गद कङ्कण करे चरणे नूपुर।
देखिया नागरी हिया करे दुरदुर ॥३६
बेढ़िला गौराङ्गे यत नागरीर गण।
शशधर बेढ़ि येन तारार शोभन ॥३७
मदन मदेते मत्त हैला सब नारी।
लज्जा भय तेजिया रहिला मुख हेरि ॥३८
पण्डित श्रीसनातन एथा निज घरे।
निज कन्या भूषा करे नाना अलङ्कारे ॥३९
गन्ध चन्दन माल्ये कराइल बेश।
यिनि बेशे अङ्गछटा आलो करे देश ॥४०
विष्णुप्रियार अङ्ग यिनि लाखबाण सोणा
झलमल करे येन तड़ित प्रतिमा ॥४१
फणी जिनि बेणी शोभे मुनि मन मोहे।
कपाले सिन्दूर से तुलना दिब काहे ॥४२
भुरूर भङ्गिमा किबा सारङ्ग मनोहर।
शुक ओष्ठ जिनि नाशा परम सुन्दर ॥४३

कुरङ्ग नयन जिनि नयन युगल।
गृधिनीर कर्ण जिनि कर्ण मनोहर ॥४४
अधर बान्धुली जिनि अनुपम शोभा।
दशन मोतिम जिनि झलमल आभा ॥४५
कम्बु जिनिया कण्ठ जग मनोहारी।
सिंह ग्रीबा जिनिया सुन्दर ग्रीबाधारी ॥४६
बाहुयुग कनक मृणाल शोभा जिनि।
करतल राता पद्म जिनि अनुमानि ॥४७
अ'गुली चम्पक कलि जिनि मनोहर।
चन्द्र जिनि नख शोभा अति झलमल ॥४८
बक्ष-स्थल परिसर सुमेरु जिनिया।
केशरी जिनिया माझा अति से क्षीणिया॥४९
कामदेव रथचक्र जिनिया नितम्ब।
उरुयुग जिनि राम कदलक स्तम्भ ॥५०
त्रैलोक्य जिनिया रूप गड़िल विधाता।
डगमग करे पदतल पद्म राता ॥५१
नखचन्द्र पाँति जिनि अकलङ्क चाँदे।
ताहार किरणे आँखि पाइल जन्म आँधे ॥५२
गन्ध चन्दन माल्ये कराइल वेश।
विनि बेशे अङ्गछटा आलो करे देश ॥५३
त्रैलोक्य मोहिनी कन्या रूपेते पार्वती।
अङ्गेर छटाय झलमल करे क्षिति ॥५४
हेनकाले शुभलग्न समय बुझिया।
वर आनिबारे विप्र दिला पाठाइया ॥५५
ब्राह्मण प्रभुर आगे दाण्डाइया रहे।
पाठाइल द्विज मोरे सविनये कहे ॥५६
अङ्ग झलमल तेज देखिया ब्राह्मण।
आपनाके धन्य माने धन्य सनातन ॥५७
कहिल प्रभुरे आगे शुन विश्वम्भर।
निकट हइल लग्न चलह सत्वर ॥५८
आमि कि कहिते जानि तोमार सम्मुखे।
तुमि देव नारायण देखि परतेके ॥५९
तबे शुभक्षणे सेइ विश्वम्भर पहुँ।
चढ़िला मनुष्य याने हासे लहु लहु ॥६०
मातृ पदधूलि प्रभु लैल निज शिरे।
आइओसुइओ लइया शची आशीर्वाद करे६१
शङ्ख दुन्दुभि बाजे भेउर काहाल।
दण्डिम मुहरि बाजे डिण्डिम रसाल ॥६२
वीणा वेणु कपिलास रबाब उपाङ्ग।
मिलिया बाजये पाखोयाज एकसङ्ग ॥६३
पटाह मृदङ्ग बाजे कांस्य करताल।
शिङ्गा बरगोँ बाजे सानाहि मिशाल ॥६४
नानाविध बाद्य बाजे नाम नाहि जानि।
सम्मुखे नाटुया नाचे शुनि वेणु धनि ॥६५
गायनेते गान गाय भाटेराय बार।
बयस्ये बेष्टित प्रभु कैल आगुसार ॥६६
नदीया नगरे घरे घरे पड़े साड़ा।
देखिबारे धाय लोक दिया बाहु नाड़ा ॥६७

विहागड़ा राग।

पाटशाड़ी परे नेतेर काँचुली
कानड़ छान्दे बान्धे खोपा।
मुकुता गाँथिया सोणाये बाधिया
पिठे फेले राङ्गा थोपा ॥१
धनि धनि धनि नदीया नगरी
आनन्द पाथारे नीत।
विश्वम्भर विया चल देखि गिया
गाब सुमङ्गल गीत ॥२

केहो त कापड़ पाटशाड़ी परे
काणे गन्धराज चाँपा ।
गजेन्द्र गमने चलिते ना जाने
मृगी दिठे चाहे वाँका ॥३
अञ्जने रञ्जित खञ्जन नयान
चञ्चल तारक जोर ।
गोरा रूप पङ्के पङ्किल आलसे
अवला चलिल भोर ॥४
नगरे नगरे यतेक नागरी
धाइल ध्वनि शुनिया ।
चिकुरे चिरुणी चलिल तरुणी
चीर ना सम्बरे भुलिया ॥५
नवीन युवती छाड़ि पति मति
छाड़ि कुल बन्धु जन ।
बसन भूषण ना सम्बरे येन
सतत उनमत हेन ॥६
थिर बिजुरी येमत तेमन
गमन मराल बधू ।
सारि सारि सारि हात धराधरि
येहेन शारद बिधु ॥७
कि नारी पुरुष धाय एकमुख
केहो काहो नाहि माने ।
ठेलाठेलि पथे धाय उनमते
देखिते गौराङ्ग वदन ॥८
नदीया नगर आनन्द सागर
गौराङ्ग नागर धन ।
चौदिके धाओया धाइ बाजये बाधाइ
कुरङ्ग रङ्गिम येन ॥९
बाल वृद्ध अन्ध पंगुर भंगुर
आतुर देखये साधे ।
केहो केहो बन्धु करे कर धरि
धाय थिर नाहि बान्धे ॥१०
वदन देखिया मदन वेदने
अधीर हइला नारी ।
पशु पक्षी तारा गौराङ्ग देखिया
रहे सबे सारि सारि ॥११
बयस्ये बेष्टित दिव्य अलंकृत
मुकुट निकट ललाटे ।
लोचन बले हेरि भुलल नागरी
घुचल हृदय कपाटे ॥१२

। बराड़ी राग । धूलाखेलाजात ॥

हेनमते विश्वम्भर गेला पण्डितेर घर
द्विजबर आनन्द पाथार ।
पाद्य अर्घ्य लैया करे गेला प्रभु बराबरे
धन्य धन्य शचीर कुमार ॥१
तबे पाद्य अर्घ्य दिया गौरचन्द्र थुइल लैया
दाण्डाइल छोड़ला भितरे ।
सर्वजने हरि बले शत शत दीप ज्वले
ताहे जिने गोरा कलेबरे ॥२
उलसित सर्वजन हुलाहुलि घनेघन
शङ्ख दुन्दुभि वाद्य बाजे ।
होथा आइओगण मेलि सबे पाटशाड़ी परि
प्रभु प्रदक्षिण हेतु साजे ॥३
निर्म्मञ्छन सज्ज करि आइओगण आगुसारि
आगुसरे कन्यार जननी ।
भूमिते ना पड़े पा उलसित सर्व गा
देखि विश्वम्भर गुणमणि ॥४

एके आइओ रूपे ज्वले उज्ज्वल प्रदीप करे
ताहे गोरा अङ्गेर किरण।
सेइ श्रीअङ्ग गन्धे आइओ मरे उनमादे
हिया राखे अनेक यतन ॥५
प्रभुर चौदिके फिरि सात प्रदक्षिण करि
दधि ढाले चरणारविन्दे।
घर चलिबार बेले गोरामुख नेहारे
पालटिते नारे अङ्ग गन्धे ॥६
पण्डित श्रीसनातन करे वर बरण
दिव्य वस्त्र दिव्य अलंकारे।
दिव्य गन्ध चन्दन अङ्गे करे लेपन
गले दिल मालतीर माले ॥७
सुमेरु सुन्दर तनु ताहे सुरधुनी जनु
द्विधा हैया बहे दुइ धारा।
पण्डित देखिया ता पुलकित सर्व गा
गोरा गले मालतीर माला ॥८
तबे सेइ सनातन मिश्र द्विज रतन
कन्या आनिबारे आज्ञा दिल।
रत्न सिंहासने बसि त्रैलोक्येर सुरूपसी
अङ्गछटाय विजुरी पड़िल ॥९
प्रभुर निकटे आनि जग मन मोहिनी
महालक्ष्मी विष्णुप्रिया नामा।
तेरछ नयान वंक हेरि मुख गौराङ्ग
मन्द मन्द हासि अनुपामा ॥१०
प्रभु प्रदक्षिण करि सातबार चौदिके फिरि
करजोड़े करे नमस्कार।
अन्तःपट घुचाइल चारि चक्षे देखा हैल
दोँहे करे कुसुम बिहार ॥११
उठिल आनन्द रोल सबे हरि हरि बोल
छामुनि नाड़िल कन्या वर।
सबे बले धनि धनि येन चान्द रोहिणी
केहो बले पार्वती शंकर ॥१२
तबे विश्वम्भर पहुँ मुचकि हासिया लहु
बसिला उत्तम सिंहासने।
सनातन द्विजवरे कन्या सम्प्रदान करे
पदाम्बुजे कैल समर्पणे ॥१३
यथायोग्य ये आछिल नानाद्रव्य दान दिल
एकत्र बसिला दुइजने।
विवाह अन्तरे दोँहे सनातन द्विज गृहे
एक घरे करिला भोजन ॥१४
उलसित आइओगण युक्ति करे मने मन
करे करि ताम्बूल कर्पूर।
देखिब नयान भरि श्रीगौराङ्ग चाँद हरि
बासर घरे बसिला ठाकुर ॥१५
विश्वम्भर विष्णुप्रिया वासरे मिलिल गिया
आइओगण करे अनुमान।
लक्ष्मी हइ विष्णुप्रिया विष्णु विश्वम्भर हैया
पृथिवीते कैला आगमन ॥१६
नानाविध जाने कला करे करि दिव्य माला
तुलि दिल विश्वम्भर गले।
हिया अभिलाष करे ये आछिल अन्तरे
मनःकथा बिकाइमु तोरे ॥१७
केहो गन्ध चन्दन अङ्गे करे लेपन
परशिते बाड़े उनमाद।
करि नाना परसङ्गे लुटिया पड़ये अङ्गे
पूराइल जनमेर साध ॥१८
परम सुन्दरी यत सबे हैला उनमत
बेकत करये मनःकथा।
रसेर आबेशे हासे ढुलि पड़े गोरापाशे
गरगर कामे उनमता ॥१९

बाटाभरि ताम्बूले देइ प्रभुर पदमूले
करे देइ कुसुम अञ्जलि ।
तार मनःकथा एइ जन्म जन्म प्रभु तुइ
आत्म समर्पये इहा बलि ॥२०
एइमते रजनी गोङाइला गुणमणि
आइओगण भाग्येर प्रकाशे ।
प्रभाते उठिया विधि कैल प्रभु गुणनिधि
कुशण्डिका कर्म से दिबसे ॥२१
तार पर दिने पहुँ मुचकि हासिया लहु
घरेरे चलिब बैल वाणी ।
परिजने पूजा करे यार येइ मने धरे
जय जय भेल शङ्खध्वनि ॥२२
गुबाक चन्दन माला करे करि दोँहे गेला
सनातन ताँहार ब्राह्मणी ।
शिरे दिया दूर्बा धान करे शुभ कल्याण
चिरजीवी आशीर्वाद वाणी ॥२३
तबे देवी विष्णुप्रिया तरल हइल हिया
देखिया से जनक जननी ।
सकरुण कण्ठस्वरे आतम निबेदन करे
अनुनय सविनय वाणी ॥२४
सनातन द्विजवर बले हिया कातर
तोरे आमि कि बलिते जानि ।
आपनार निजगुणे लैले मोर कन्यादाने
तोर योग्य किबा दिब आमि ॥२५
आर निवेदिये कथा तुमि मोर जामाता
धन्य आमि आमार आलय ।
धन्य मोर विष्णुप्रिया तोर पादपद्म पाइया
इहा बलि गदगद हय ॥२६
बाष्प छल छल आँखि अरुण वदन देखि
गदगद आध आध बले ।
विष्णुप्रिया कर लैया विश्वम्भर करे दिया
ढलढल नयनेर जले ॥२७
तबे पहुँ शुभक्षणे चढ़िला मनुष्य याने
सर्वजन हृदय उल्लास ।
नानाविध बाद्य बाजे शङ्ख दुन्दुभि गाजे
हरिध्वनि परशे आकाश ॥२८
सम्मुखे नाटुया नाचे यार येइ गुण आछे
सेइक्षणे करे परकाश ।
प्रभु याय चतुर्दोले लोके जय जय बोले
उत्तरिला आपन आबास ॥२९
शची हरषिता हैया निर्मञ्छन सज्ज लैया
आइओगण संहति करिया ।
जय जय मङ्गल पड़े सर्वलोक हरि बले
नानाद्रव्य फेलाय निछिया ॥३०
सम्मुखे मङ्गल घट रायभाट पड़े भाट
वेद ध्वनि करये ब्राह्मणे ।
विष्णुप्रियार कर धरि विश्वम्भर गौरहरि
गृहे परवेश शुभक्षणे ॥३१
शची प्रेमे गर गर कोले करि विश्वम्भर
चुम्ब देइ से चाँद वदने ।
आनन्दे विभोर हैया आइओगण माझे गिया
बधू कोले शचीर नाचने ॥३२
आपना पासरे सुखे नाना द्रव्य दिया लोके
पुष्ट हैला यत सर्वजन ।
विश्वम्भर विष्णुप्रिया एकमेलि देखिया
गोरा गुण कहये लोचन ॥३३

———

सप्तम अध्याय

प्रभुर गया यात्रा ।

बराड़ी राग । दिशा ॥

मोर प्राण आरे गोराचाँद नारे हय ॥ ध्रु ॥
तबे सेइ महाप्रभु आनन्द कौतुके ।
सुखे निबसये बन्धु बान्धब सहिते ॥१
नवद्वीपपुर बासी यतेक ब्राह्मण ।
धन्य धन्य बलि सब सभाये कथन ॥२
लौकिक सतक्रिया विधि पड़े शिष्यगण ।
आपनि पड़ाय प्रभु पुरुष रतन ॥३
वृहस्पति जिनि कवि काव्यरस जाने ।
आपनि ईश्वर स्तुति कि बलि बचने ॥४
शिष्येर महिमा केबा कहिबारे पारु ।
आपनै पड़ाय यारे जगतेर गुरु ॥५
कोटी सरस्वती कान्त प्रभु विश्वम्भरे ।
विद्यारसे कृपा करे पण्डित सकले ॥६
एइमते लोक शिक्षा करे विश्वम्भर ।
गया करिबारे याब करिला अन्तर ॥७
पितृपिण्डदान दिब गया शिरोपरि ।
गदाधर आदि विष्णुपदे नमस्करि ॥८
एत बलि शुभ यात्रा करिला ठाकुर ।
संहति चलिला विप्रगण महाकुल ॥९
शचीर अन्तर पोड़े गदगद भाष ।
पुत्रेर निकटे गिया छाड़ये निःश्वास ॥१०
प्रबासे याइछ तुमि शुन विश्वम्भर ।
तुमि ना रहिले अन्धकार मोर घर ॥११
अन्धलेर लड़ि तुमि नयानेर तारा ।
ए देहेर आत्मा तोमा बहि नाहि मोरा ॥१२
पितृगण निस्तार करिते याबे तुमि ।
आपना लागिया तोरे कि बलिब आमि ॥१३
गया यदि याबि बाप ! शुनरे निमाइ ।
मोर नामे एक पिण्ड दिस्‌रे तथाइ ॥१४
एतेक बचन यबे बैल शचीमाता ।
मधुर बचने ताँर प्रबोधये व्यथा ॥१५
तोमार निकटे येन आछि निरन्तर ।
एमनि जानिबे माता कहिल उत्तर ॥१६
पुत्र पिण्ड लागि प्रयोजन सर्वलोके ।
मोरे कृपा आज्ञा कर ना करिह शोके ॥१७
चलिला त महाप्रभु गया करिबारे ।
सङ्गे चले प्रियगण हरिष अन्तरे ॥१८
ये पथे चले प्रभु शचीर नन्दन ।
से पथेर लोक देखि जुड़ाय नयन ॥१९
बाल वृद्ध पंगु जड़ धाय देखिबारे ।
पशु पक्षी धाय सब अश्रु नेत्रे झरे ॥२०
कुलबधू धाय सब कुल त्याग करि ।
सबे बले याय देख व्रजेर श्रीहरि ॥२१
इहा बलि धाय लोक ना बान्धये केश ।
उन्मत्त करिला प्रभु भ्रमि सर्व देश ॥२२
सर्वपथे एइमते सर्वलोक धाय ।
सर्वलोके प्रेमरस सागरे भासाय ॥२३
पथे याइते एकठाँइ बेखे गौरहरि ।
कुरङ्ग कुरङ्गी केलि करे एकमेलि ॥२४
मृगेर कौतुक देखि भेल कुतूहल ।
प्राकृत लोकेर हेन हासे खल खल ॥२५
लोभ मोह काम क्रोधे मत्त पशुगण ।
कृष्ण ना भजिले एइमत सर्वजन ॥२६
सङ्गिगणे हासिया बुझान भगवान् ।
ये भाव मानुषे से पशुते विद्यमान ॥२७
कृष्ण ज्ञान नाइ मात्र पशुर शरीरे ।
मनुष्ये ना भजे कृष्ण पशु बलि तारे ॥२८

एत बुझाइया प्रभु जगतेर गुरु ।
चलिला पथेते प्रभु वाञ्छाकल्पतरु ॥२९
तबे सेथा चीर नामे आछे एक नदी ।
स्नान दान कैल प्रभु ये आछिल विधि ॥३०
देवपूजा पितृपूजा करि हरषिते ।
मन्दारे उठिला प्रभु देवता देखिते ॥३१
देवता देखिया प्रभु नामिला सत्वरे ।
पर्वत निकटे बासा ब्राह्मणेर घरे ॥३२
हेनकाले विश्वम्भर सङ्गेर ब्राह्मण ।
से देशेर विप्र देखि दोषे तार मन ॥३३
देश आचरण तारा करे यथाविधि ।
देखिया ब्राह्मणगणे नाहि विप्र बुद्धि ॥३४
ब्राह्मणे अवज्ञा देखि प्रभु विश्वम्भर ।
द्विज भक्ति प्रकाशिब करिला अन्तर ॥३५
आचम्बिते प्रभु देहे आइल महा ज्वर ।
ज्वर देखि त्रास पाय सबार अन्तर ॥३६
वलिला ठाकुर शुन शुन द्विज जन ।
देव पितृ कार्य्ये विघ्न भेल कि कारण ॥३७
ना जानि कि मोर दोषे सङ्गिगण दोषे ।
श्रेयःकार्य्ये विघ्न हय बड़ असन्तोषे ॥३८
सर्व विघ्न निबारण आछये उपाय ।
विप्र पादोदक मोरे देह त जुड़ाय ॥३९
विप्र पादोदक पाने सर्वपाप हरे ।
एखनि पलाबे ज्वर कि करिते पारे ॥४०
सेइखाने सेइदेशी आछिल ब्राह्मण ।
आपने उठिया तार पाखाले चरण ॥४१
विप्र पादोदक पान कैल विश्वम्भर ।
प्रकाशिल द्विजभक्ति पलाइल ज्वर ॥४२
सङ्गेर से द्विजवर बले चाटुवाणी ।
आमार अन्तर दोषे दुःख पाइले तुमि ॥४३
कुत्सित आचार देखि मोर मन दोषे ।
मोर मनदोषे तुमि पाइले असन्तोषे ॥४४
एखाने ब्राह्मण भक्ति प्रकाशिले तुमि ।
अपराध कैलुँ दोष क्षमिबे आपनि ॥४५
तुमि से ब्रह्मण्य द्विजभक्ति अधिकारी ।
भृगुमुनि पदचिह्न निज वक्षे धारी ॥४६
निजभक्त महिमा प्रकाशो निजमुखे ।
जगतेर निस्तार करह एइरूपे ॥४७
जय विश्वम्भर जय जय द्विजराज ।
तोमारे सेविले सिद्ध हय सब काज ॥४८
नमो द्विजवल्लभ दयालु गौरहरि ।
नमो कर्मसंस्थापन सर्व अधिकारी ॥४९
सङ्गीर एतेक वाणी शुनि विश्वम्भर ।
क्षमा कैल सबाकार दोष बहुतर ॥५०
इहारा पूजये मधुसूदन ठाकुर ।
ए सकल त्याज्य नहे ना भाविह दूर ॥५१
कृष्ण ना भजिले द्विज नहे कदाचित ।
पुराणे प्रमाण एइ शिक्षा आछे नीत ॥५२

तथाहि पद्मपुराणे—

चण्डालोऽपि मुनि श्रेष्ठो विष्णुभक्तिपरायणः
विष्णुभक्ति विहीनस्तु द्विजोऽपि श्वपचाधम ५३

विष्णुभक्ति परायण होने से चाण्डाल भी मुनि से श्रेष्ट होता है। किन्तु विष्णुभक्ति विहीन ब्राह्मण चाण्डाल से निकृष्ट है।

इहा बलि सङ्गेर ब्राह्मणे तुष्ट हइया ।
दोष क्षमाइला तार करुणा करिया ॥५४

एइमते प्रभु द्विज भक्ति प्रकाशिया।
पुनःपुना नदी तीर्थे उत्तरिला गिया ॥५५
स्नान देवार्चन तथि करिला तखन।
पितृकार्य्य समाधिया करिला गमन ॥५६
तबे त उत्तम तीर्थ राजगिरि नाम।
ब्रह्मकुण्डे गिया प्रभु कैल स्नान दान ॥५७
देवपूजा पितृ पूजा करिल तथाय।
विष्णुपद देखिबारे चलिला त्वराय ॥५८
याइते देखिल पथे एक न्यासिवर।
महा भागवत नाम 'पुरी' से ईश्वर ॥५९
प्रणाम करिया ताँरे बैल विश्वम्भर।
बड़ भाग्ये देखिल ए चरण युगल ॥६०
चरणे पढ़िया बले बचन कातर।
करुण अरुण आँखि करे चलछल ॥६१
केमने तरिब आमि संसार सागरे।
कृष्ण पादाम्बुजे भक्ति देह त आमारे ॥६२
कृष्ण दीक्षा विनु देह अकारण लेखि।
पुराणे ए सब बाक्य साधु मुखे साक्षी ॥६३
ऐछन शुनिया वाणी पुरी से ईश्वर।
निभृते कहिला तारे महामन्त्रवर ॥६४
गोपीनाथ महामन्त्र पाइला विश्वम्भर।
पुलकित सब अङ्ग हरिष अन्तर ॥६५
नयने गलये नीर पुलकित अङ्ग।
राधा राधा बलि प्रेम बाड़िल तरङ्ग ॥६६
व्रजेर यतेक भाव सब मने हैल।
विशेषे माधुर्य्यरसे मन डुबाइल ॥६७
राधा भावे आबिष्ट हइया कलेबरे।
कृष्ण कृष्ण बलि डाके अति उच्चस्वरे ॥६८
वृन्दावन गोवर्द्धन बलि डाके हासे।
कालिन्दी यमुना बलि गरजे उल्लासे ॥६९
क्षणे डाके बलराम श्रीदाम सुदाम।
क्षणे नन्द यशोदा बलिया डाके नाम ॥७०
धबली शाङली बलि गरजे गभीर।
क्षणे सखी बलि प्रभु पड़ये अथिर ॥७१
क्षणे दास्यभावे तृण दशने धरिया।
क्षणे अहङ्कार करे आमि से बलिया ॥७२
धरिलुँ पर्वत आमि मारिलुँ अघासुर।
मारिलुँ पूतना आदि यतेक असुर ॥७३
क्षणेक त्रिभङ्ग हइया वंशी हाते रहे।
क्षणे चमकित हैया चौदिकेते चाहे ॥७४
नयने गलये नीर गदगद भाष।
मधुर बचने करे गुरुर सम्भाष ॥७५
तोर पद परसादे हइलुँ कृतार्थ।
आजि हैते जन्म देह भै गेल यथार्थ ॥७६
इहा शुनि ईश्वरपुरी निज सुखे।
त्रिभङ्ग मुरली मुख देखये प्रभुके ॥७७
माधबेन्द्र पुरीर कथा हैल स्मरण।
जानिला से कृष्ण चन्द्र प्रकट एखन ॥७८
गुरुभक्ति प्रकाशिया चलिला से पहुँ।
फलगुनामा नदी देखे हासे लहु लहु ॥७९
पूर्व सङरणे हैल हरिषे विषाद।
सीता सङरिया हैल परम प्रमाद ॥८०
देव पूजा पितृ पूजा कैल स्नान दाने।
प्रेतशिलाय पिण्ड दान करिला विधाने ॥८१
ब्राह्मणेरे दिल धन पितार उद्देशे।
उदीचि करिया कैल दक्षिण मानसे ॥८२
उत्तम मानस करि जिह्वालोल तीर्थ।
देव पितृ पूजा करि बिलाइल अर्थ ॥८३
तबे गया उत्तरिला अति हृष्टमने।
देखिते बाढ़िल आर्त्ति विष्णुर चरणे ॥८४

षोड़ष बेदिकाय प्रभु पिण्डदान करे ।
उत्कण्ठा बाढ़िल विष्णुपद देखिबारे ॥८५
सर्व्व कार्य्य समाधिया चलिला त्वरिते ।
विष्णुपद देखिबारे हरषित चिते ॥८६
विष्णुपद चिह्न आमि देखिब नयने ।
हरिषे अन्तर कथा कहे मने मने ॥८७
एत भाबि उत्तरिला विष्णुपदे आसि ।
परम आनन्दे दण्डवत करि बसि ॥८८
बलये गौराङ्ग शुन शुन सर्वजन ।
केमने करये विष्णुपद देखि मन ॥८९
विष्णुपद चिह्न मुइ देखिनु नयाने ।
देखिया त प्रेमोदय ना हइल केने ॥९०
इहा बलि महाप्रभु पाखाले विष्णुपद ।
अभिषेक करि कैल हियार प्रसाद ॥९१
भक्ति प्रकाशिया प्रभु विश्वम्भर हरि ।
प्रकाश करये गोरा प्रेम अधिकारी ॥९२
कम्प पुलक भेल प्रेमार आरम्भ ।
नयने गलये धारा क्षणे हय स्तम्भ ॥९३
विभोल हइला प्रभु पादाब्ज देखिया ।
प्रेम महामहोत्सबे बुलये नाचिया ॥९४
गया शिरे पिण्डदान पादाब्ज उपर ।
पितृकार्य्य कैल प्रभु हरिष अन्तर ॥९५
आरदिने मनःकथा दड़ाइल चिते ।
मधुपुरी यात्रा प्रभु कैल आचम्बिते ॥९६
सङ्गेर ब्राह्मणगणे कहिल बचन ।
वृन्दावन दरशने करह गमन ॥९७
शुनिया सङ्गतिगण कुण्ठित हइला ।
याइते नारिब व्यय अलप हइला ॥९८
प्रभु कहे भक्ष्य सङ्गे मनुष्येर जन्म ।
ना बुझि बिकल हैया करे नाना कर्म ॥९९
सार्थक मनुष्य जन्म कृष्ण यदि भजे ।
ना भजिले कृष्ण दुःख सागरेते मजे ॥१००
एइमत सबे बुझाइया गौरहरि ।
गया हैते वृन्दावन प्रभु यात्रा करि ॥१०१
सङ्गिगण सङ्गे करि चलिला आपनि ।
हेनकाले उठि गेल आकाशेर वाणी ॥१०२
नौतुन मेघेर येन गभीर गर्जन ।
विश्वम्भर सम्बोधिया कहिल बचन ॥१०३
शुन शुन महाप्रभु ! ओहे विश्वम्भर ।
ना याइह मधुपुरी याह निज घर ॥१०४
सन्न्यास करिया तीर्थ करिबे पर्य्यटन ।
समयेर बश हैया याबे वृन्दावन ॥१०५
एइमत दैववाणी शुनि निज काणे ।
गमन निरोध कैल सङ्गेर ब्राह्मणे ॥१०६
लेउटिया महाप्रभु घरेरे चलिला ।
क्रमे क्रमे पदब्रजे नदीया आइला ॥१०७
नमस्कार करि प्रभु मायेर चरणे ।
घरेरे बिदाय दिला यत सङ्गिगणे ॥१०८
पुत्र कोले कैल शची आनन्दित मने ।
हरिषे प्रेमार नीर झरे दुनयने ॥१०९
पुलकित सब अङ्ग कम्प कलेबर ।
आनन्दे धाइल सब नदीया नगर ॥११०
विष्णुप्रिया हिया माझे आनन्द हिल्लोल ।
धरिते ना पारे अङ्ग सुखेर नाहि ओर १११
आनन्दे आइला प्रभु आपन आवास ।
गोरा गुण गाय सुखे ए लोचन दास ११२

———

बराड़ी राग । दिशा ॥

द्विजचाँद ना हारे आरे हय ॥ मूर्च्छा ॥

नवद्वीप चरित्र शुन अपरूप कथा ।
अमिया माखिल विश्वम्भर गुणगाथा ॥१
लोक वेद अगोचर नदीया चरित ।
श्रवण मङ्गल हय सबार पिरीत ॥२
शिव शुक नारद लखिमी अनन्त ।
येइ सुखे आपनाके माने भाग्यवन्त ॥३
आमि छार कि बलिब अति बुद्धिहीन ।
भालमन्द नाहि ज्ञान नाहि निशा दिन ॥४
पशुर चरित मोर आचरण एके ।
ता हैते अधम बलि लिखिये आमाके ॥५
सब अबतार सार गोरा अवतार ।
ताहाते नदीयापुरे प्रेमार प्रचार ॥६
प्रणति करिया बलोँ वैष्णव चरणे ।
कृपा कर गोरा गुण गाङ मो वदने ॥७
अधम बलिया घृणा ना करिह मोरे ।
पतितेर त्राण लोके बले तो सबारे ॥८
निजगुणे दया करि कर परसाद ।
गोरा गुण गाङ मुखे बड़ लागे साध ॥९
गोरा पद कमले मो करोँ परणति ।
तिलेक करुणा दिठे कर अवगति ॥१०
श्रीनरहरि दास ठाकुर आमार ।
एइ भरसाय गुण मो बलोँ तोमार ॥११
नहे बा अधमाधम मुइ पापी छार ।
तोर गुण बर्णिवारे किबा अधिकार ॥१२
अधिकारी नहोँ मुइ करोँ परमाद ।
तोर गुण गाहिबारे बड़ लागे साध ॥१३
ये हउ से हउ कथा कहिव अवश्य ।
साबधाने शुन सबे नदीया रहस्य ॥१४
जानि बा ना जानि कहि बड़ प्रतिआशे ।
आदिखण्ड साय कहे ए लोचन दासे ॥१५

इति श्रीश्रीचैतन्यमङ्गले आदिखण्ड समाप्त ॥

श्रीश्रीकृष्णचैतन्य-चन्द्राय नमः

श्रीचैतन्यमङ्गल

मध्यखण्ड

प्रथम अध्याय

प्रभुर प्रेमदान लीला।

करुणश्री राग।

जय नरहरि गदाधर प्राणनाथ।
कृपा करि कर प्रभु ! शुभ दृष्टिपात ॥१
आदिखण्ड साय मध्यखण्डेर आरम्भ।
या शुनिले प्रेमधन पाबे अबिलम्ब ॥२
मध्यखण्ड कथा भाइ अमृतेर सार।
नदीया विहार याते प्रेमार प्रचार ॥३
जगाइ माधाइ पापी याते उद्धारिला।
ब्रह्मार दुर्ल्लभ प्रेम यारे तारे दिला ॥४
हरिनाम सङ्कीर्त्तन याहाते प्रकाश।
पतित उद्धार हेतु याहाते सन्न्यास ॥५
कहिब ए सब कथा अमृतेर खण्ड।
या शुनिले घुचे जीवेर अन्तर पाषण्ड ॥६
नदीया आसिया प्रभु आनन्दित चिते।
सुखे निबसये बन्धु बान्धव सहिते ॥७
नवद्वीप बासी यत ब्राह्मण कुमार।
सत्कुल सम्भव तारा अति शुद्धाचार ॥८
बड़इ सुकृती तारा धन्य तिनलोके।
आपने ठाकुर विद्या दान कैल याके ॥९
एकदिन सब शिष्यगणे गौरहरि।
बलिल सबारे प्रभु अनुग्रह करि ॥१०
पड़ एक सत्य वस्तु कृष्णेर चरण।
सेइ विद्या याते हरिभक्तिर लक्षण ॥११
ताहा बिनु सब अविद्या शास्त्रे कहे।
राधाकृष्ण भक्ति बिना केहो सङ्गी नहे १२
विद्या कुल धन मदे कृष्ण नाहि पाय।
भक्तिते से अनायासे पाइ यदुराय ॥१३
भक्तिरसे वश कृष्ण देखह विचारि।
एत कहि श्लोक पड़े शास्त्र अनुसारि ॥१४

तथाहि पद्यावल्यां धृतं दाक्षिणात्यकविवाक्यं—

व्याधस्याचरणं ध्रुवस्य च वयो विद्या गजेन्द्रस्य का
वंशः को विदुरस्य यादवपतेरुग्रस्य किं पौरुषं।
कुब्जायाः किमु नामरूपमधिकं किं वा सुदाम्नो धनं
भक्त्या तुष्यति केवलं न च गुणैर्भक्तिप्रियो माधवः १५

व्याध का सदाचार क्या था ? ध्रुव की अवस्था क्या थी ? गजेन्द्र की क्या विद्या थी ? विदुर की वंशमर्य्यादा क्या थी ? यदुपति उग्रसेन का क्या पौरुष था ? कुब्जा का क्या रूप था ? सुधामा क्या धनी था ?

इनसब का कुछ भी नहीं था, अथच श्रीकृष्ण प्राप्ति हुई थी। अतएव माधव भक्ति से सन्तुष्ट होते हैं। गुणों से सन्तुष्ट नहीं होते हैं, कारण माधव भक्तिप्रिय हैं।

एइ मते शिष्यगणे बुझाय ठाकुर।
प्रकाशिब निज प्रेम आनन्द प्रचुर ।।१६
एकदिन निजगृहे आछेन शुइया।
कृष्ण प्रेमानन्दे कान्दे विह्वल हइया ।।१७
राधा भावे व्याकुल हइया प्रभु डाके।
माथुर विरहे हात मारे निज बुके ।।१८
आरे रे अक्रूर ! मोर कृष्ण लैया गेलि।
इहा बलि कान्दे प्रभु करिया विकुलि ।।१९
कुबुजा कुत्सितमति कृष्ण निल मोर।
शठ रति लम्पट युवती मन चोर ।।२०
इहा बलि कान्दे प्रभु गरजे हुङ्कार।
पुलके आकुल अङ्ग भाव चमत्कार ।।२१
विस्मित हइया शची विश्वम्भरे पुछे।
कि लागिया कान्द बाप दुःख तोर किसे ।२२
मायेर बचन शुनि ना दिला उत्तर।
रोदन करये प्रभु आनन्दे विह्वल ।।२३
तबे सेइ शचीदेवी मने मने गणे।
कृष्ण अनुग्रह प्रेम जानिल लक्षणे ।।२४
बड़ भाग्यवती शची सब तत्त्व जाने।
पुत्रेर सम्मुखे कहे मधुर बचने ।।२५
शुन शुन आरे बाप मोर सोणार सुत।
जगत दुर्ल्लभ तोर देखि अदभुत ।।२६
यथा यथा याओ तुमि पाओ यत धन।
आनिया आमार ठाँइ कर समर्पण ।।२७
गयाते पाइले कृष्णप्रेम हेन धन।
देवता दुर्ल्लभ बस्तु अमूल्य रतन ।।२८
मायेर करुणा यदि थाके तोर चिते।
देह कृष्ण प्रेमधन डराङ चाहिते ।।२९
एतेक बचन यदि शचीदेवी बैल।
हृदये दरवे प्रभु हासिते लागिल ।।३०
वैष्णव प्रसादे माता प्रेम पाबे तुमि।
निश्चय जानिह कथा कहिलाम आमि ।।३१
वैष्णव गोँसाइ प्रेम दिते निते पारे।
ताहा बिना प्रेम आर केहो दिते नारे ।।३२
ए बोल शुनिया शची अति हृष्ट चित।
तखने पाइल प्रेमभक्ति आचम्बित ।।३३
पुलकित सब अङ्ग कम्प कलेबर।
नयने गलये अश्रुधारा निरन्तर ।।३४
कृष्ण कृष्ण बलि डाके हृदय उल्लास।
कहये लोचन गोरार प्रथम प्रकाश ।।३५

———

श्रीराग।

तबे विश्वम्भर पहुँ प्रेमे गरगर।
आछये ब्राह्मण ब्रह्मचारी शुक्लाम्बर ।।१
तार घरे कान्दे प्रभु प्रेमाय विह्वल।
नयने गलये अश्रुधारा निरन्तर ।।२
नासिकाय श्लेष्मा अति गले निरन्तर।
निरवधि फेले ताहा विप्र शुक्लाम्बर ।।३
भूमेते लोटाइया कान्दे रजनी दिवस।
सन्ध्या समये प्रश्न करेन विवश ।।४

दिवसे पुछये प्रभु कत रात्रि याय।
सर्वजन बले दिवा राति नाहि हय ॥५
तबे सेइमत प्रभु प्रेमेते विवश।
रोदन करये पुन आनन्दे अवश ॥६
प्रहरेक रात्रि गेले दिन बलि पुछे।
दिवस ना हये कहे यारा आछे काछे ॥७
प्रेमाय विभोर नाहि जाने दिवा राति।
कारो मुखे कृष्णनाम शुनि पड़े क्षिति ॥८
कृष्णनाम गुणगीत केहो यदि गाय।
शुनिया तखनि प्रभु धरणी लोटाय ॥९
क्षणे दण्डवत करि करे परणाम।
क्षणे उच्चस्वर करि गाय हरिनाम ॥१०
सकरुण कण्ठ क्षणे काँपे कलेवर।
पुलकित अङ्ग जिनि कदम्ब केशर ॥११
निरन्तर परवश क्षणेक प्रबोधे।
सेइ क्षणे स्नान दान जन उपरोधे ॥१२
सेइ काले पूजा करे अन्न निवेदन।
भोजन करये प्रभु प्रसाद तखन ॥१३
हेनमते कौतुके सकल दिन याय।
सकल रजनी निज सुखे नाचे गाय ॥१४
हेनरूपे कौतुके से रजनी दिवस।
लोक शिक्षा करे प्रभु भुञ्जे प्रेमरस ॥१५
आपने आपन रस करे आस्वादन।
मुख्य एइ हेतु कथा शुन सर्वजन ॥१६
जीव उद्धारण हेतु गौण करि मानि।
एइहेतु बलि अवतार शिरोमणि ॥१७
सब अवतार लोला देहेते प्रकाश।
सब अवतार सङ्गी सङ्गे सब दास ॥१८
नवद्वीपे उदय करिला गौरचन्द्र।
दूर कैला जगजन हृदयेर अन्ध ॥१९

करुणा किरणे कलियुग हैल आला।
घुचिल सकल लोकेर हृदयेर ज्वाला ॥२०
भकत चकोर सब आसिया मिलिल।
प्रेमामृत पान करि सबाइ भुलिल ॥२१
मिलिलेन गदाधर पण्डित गोसाँइ।
नरहरि मिलिया रहिला तार ठाँइ ॥२२
श्रीनिवास मुरारि मुकुन्द बक्रेश्वर।
श्रीधर पण्डित नवद्वीपे यार घर ॥२३
श्रीमान् सञ्जय आर पण्डित धनञ्जय।
शुक्लाम्बर नीलाम्बर आदि महाशय ॥२४
श्रीराम पण्डित आर महेश पण्डित।
हरिदास नन्दन आचार्य्य सुचरित ॥२५
रुद्र पण्डित आर पण्डित दामोदर।
अनेक मिलिला से गौराङ्ग अनुचर ॥२६
नाम क्रमे लिखन ना हय ता सबार।
सम्बरण नहे ग्रन्थ हये त अपार ॥२७
नानादेशे यतेक आछिला भक्तगण।
सबेइ मिलिला आसि प्रभुर चरण ॥२८
महाप्रेमे मत्त हैया सब भक्तगण।
माताइला सब लोके दिया प्रेमधन ॥२९
समभावे सब जीवे करुणा करिया।
भक्तसङ्गे नाचे प्रभु प्रेम विनोदिया ॥३०
तबे सेइ बिश्वम्भर आर एक दिने।
श्रीवास पण्डित आर तार भ्रातृगणे ॥३१
ए सब सहिते प्रभु पथे चलि याय।
शुनये वंशीर ध्वनि ना जानि के गाय ॥३२
गान्धर्बार भावे वंशीर ध्वनि से शुनिया।
कान्दिया कान्दिया बले डाकिया डाकिया ३३
विह्वल हइया प्रभु दण्डवत करे।
रोदन करये नानाविध प्रेमभरे ॥३४

अवश हइला प्रभु भावेर आवेशे ।
निज जने आशीर्वाद करि अट्ट हासे ॥३५
शिष्यगण सङ्गे क्षणे अलौकिक कहे ।
क्षणे उनमाद क्षणे निःशवदे रहे ॥३६
श्रीवास पण्डित आर राम नारायण ।
मुकुन्द सहित गेला श्रीवास भवन ॥३७
चौदिके बेढ़िया भक्त माझे गौरहरि ।
मदे मातोयाल येन किशोर किशोरी ॥३८
क्षणे उठे क्षणे पड़े भूमिते लोटाय ।
हरि हरि बलिया कान्दये उच्चराय ॥३९
रात्रिदिन प्रेमानन्दे पुलकित तनु ।
आन परसङ्ग नाहि कृष्ण कथा विनु ॥४०
एककाले निज घरे आछे प्रेमे भोरा ।
रोदन करये आँखे सात पाँच धारा ॥४१
कि करिब कोथा याब केमन उपाय ।
श्रीकृष्णे आमार मति कोन् मते हय ॥४२
इहा बलि रोदन करये आर्त्तनादे ।
कातर बचन शुनि सब भक्त काँदे ॥४३
हेनकाले दैववाणी उठिल सादरे ।
आपने ईश्वर तुमि शुन विश्वम्भरे ॥४४
प्रेम प्रकाशिते मही कैले अवतार ।
निज करुणाय प्रेमा करिबे प्रचार ॥४५
धर्म संस्थापन करि करिबे कीर्त्तन ।
खेद ना करिह कार्य्य करह आपन ॥४६
तोमार प्रसादे कलि निस्तारिव लोक ।
निज प्रेम दिया सब घुचाइबा शोक ॥४७
संशय नाहिक इथे शुनह बचन ।
खेद दूर करि कर निज सङ्कीर्त्तन ॥४८
एतेक बचन यबे देव मुखे शुनि ।
अन्तर हरिष किछु ना कहिल वाणी ॥४९

तार परदिने शुन अपरूप कथा ।
अमिया माखिल विश्वम्भर गुणगाथा ॥५०
मुरारि गुप्तेर घर गेला एकदिन ।
पुलकित सब अङ्ग आवेशेर चिन ॥५१
देवतार घर मध्ये प्रवेश करिल ।
आवेशे विह्वल किछु कहिते लागिल ॥५२
प्रेम नोर धारा वहे नयन सागरे ।
सुरनदी धारा येन सुमेरु शिखरे ॥५३
कहे सब लोक हेर देख अपरूप ।
पर्वत आकार एक बराह सम्मुख ॥५४
महावेगे आइसे हेर देखह बराहे ।
दन्त सारि आइसे मोरे मारिबारे चाहे ॥५५
दुइ दन्त सारि मोरे मारिबे शूकर ।
इहा बलि प्रवेशिला देवतार घर ॥५६
बराह मूरति प्रभु हइया तखन ।
कर चरणेते मही करे पर्य्यटन ॥५७
रातुल शरीर राङ्गा चरण लोचन ।
महा पराक्रम महा हुङ्कार गर्जन ॥५८
सेइखाने छिल एक पित्तलेर पात्र ।
ऊर्द्ध्वमुखे दशने धरिल क्षणमात्र ॥५९
पित्तलेर पात्र छाड़ि विकाशे वयान ।
मुरारिके पुछे निज रूपेर आख्यान ॥६०
वेद उद्धारण रूप धरि भगवान् ।
बसिया कहये प्रभु पुरुष प्रधान ॥६१
कह त स्वरूप मोर कि जानह तुमि ।
मुरारि कहये प्रभु किबा जानि आमि ॥६२
दण्डवत करि भूमे कहिला मुरारि ।
शम्भु ना जानये प्रभु चरित्र तोमारि ॥६३
इहा बलि पड़िल गीतार एक श्लोक ।
प्राकृत प्रवन्धे कहि शुन सर्वलोक ॥६४

तथाहि श्रीमद्भगवद्गीतायां (१०।१५)

स्वयमेवात्मानात्मानां वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम ।
भूतभावन भूतेश देवदेव जगत्पते ॥६५

हे पुरुषोत्तम ! हे भूतभावन ! हे भूतेश ! हे देवदेव ! हे जगत्पते ! आप स्वयं ही अपने को जानते हैं, अपर कोई आप को नहीं जानते हैं ।

आपने आपना तुमि जान महाप्रभु ।
तोमा बिने तोमारे ना जाने आर केहु ॥६६
तबे पुनरपि कहे सेइ गोरहरि ।
वेदेर शकति आमा कि जानिते पारि ॥६७
मुरारि कहये पुन कातर बचने ।
तोर तत्व नाहि जाने सहस्र वदने ॥६८
वेदे कि जानिब तोर आचरण तत्व ।
केहो नाहि जाने प्रभु तोमार महत्व ॥६९
इहा शुनि हासि कहे गौर भगवान् ।
तामारे विड़म्बे बेद शुनह आख्यान ॥७०

तथाहि श्वेताश्वतरोपनिषदि—

अपाणिपादो जवनो ग्रहीता
पश्यत्यचक्षुः स शृणोत्यकर्णः
स वेत्ति वेद्यं न हि तस्य वेत्ता
तमाहुरग्र्यं पुरुषं पुराणम् ॥७१

पुराण पुरुष परमेश्वर हस्त पद विहीन होने पर भी द्रुत गमन करते हैं, एवं ग्रहण करते हैं । नेत्रहीन होकर भी देखते हैं, कर्ण रहित होकर भी शुनते हैं, ज्ञातव्य वस्तु का ज्ञाता आप हैं, किन्तु आप को जानने में कोई सक्षम नहीं है ।

वेदे कहे आमि करए चरण शून्य ।
हेन बिड़म्बना मोर नाहि करे अन्य ॥७२
इहा बलि हासे प्रभु प्रसन्न वदन ।
नाहि जाने वेद आमा कहिल वचन ॥७३
तबे त कहिल वैद्य करि परणाम ।
करुणा करह प्रभु ! देह प्रेमदान ॥७४
ठाकुर कहिल पुन शुनह मुरारि ।
आमारे पिरीति कर एइ प्रेमा तोरि ॥७५
भजिवे परम ब्रह्म नराकृति तनु ।
इन्द्रनील वरण त्रिभङ्ग करे वेणु ॥७६
नवगोरोचनागर्भ गर्व भङ्ग द्युति ।
वृषभानुसुता नाम मूल ये प्रकृति ॥७७
नब वराङ्गना कत वल्लवी वल्लभे ।
समर्पिब निज तनु नन्दसुते पाबे ॥७८
चिन्तामणि भूमि रत्न मन्दिर सुन्दर ।
कल्पवृक्ष रत्नवेदी ताहार उपर ॥७९
कामधेनुगण तथा अचिन्त्य प्रभाव ।
अभीष्ट करये पूर्ण ये करे ये भाव ॥८०
तार अङ्गछटा निराकार ब्रह्म बलि ।
जानिबे एसब तत्त्व कृष्णेर माधुरी ॥८१
एइमत सबभक्ते बलिला ठाकुर ।
शुनिया सबार हिया आनन्द प्रचुर ॥८२
तखन मुरारि कहे प्रभुर चरणे ।
रघुनाथ रूप प्रभु देखिब नयने ॥८३
एतेक कहिते मात्र देखे सेइक्षणे ।
दूर्बादल श्याम राम जानकी जीवने ॥८४
लक्ष्मण भरत आर शत्रुघ्नादि यत ।
देखिया मुरारि हैल आनन्दे पूरित ॥८५
वाह्य दूरे गेल भूमे पड़ि गड़ि याय ।
पद्म दस्त दिया प्रभु शान्त कैल ताय ॥८६
वर दिल प्रेमे परिपूर्ण हओ तुमि ।
तुमि हनुमान् सेइ रामचन्द्र आमि ॥८७
एइ बोल बलिया प्रभु चलिला मन्दिरे ।
आर दिने श्रीवास पण्डितेर घरे ॥८८

सब निजजन प्रभु संहति करिया ।
बसिया कहये निज प्रेम प्रकाशिया ॥८९
हरि हरि बोल बले अन्तरे कौतुक ।
निजजने कहे शुन शुन अपरूप ॥९०
सेइ राधा कृष्ण सबे पाइबे येमते ।
सेइ कथा कहि एबे शुन एक चिते ॥९१
इहा बलि नारदीय पड़े एक श्लोक ।
इहार मरम व्याख्या नाहि जाने लोक ॥९२

तथाहि बृहन्नारदीये—
हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैव केवलम् ।
कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा ९३

कलियुग में एकमात्र हरिनाम, हरिनाम, हरिनाय ही है। तद्भिन्न अपर आश्रय नहीं है. अपर आश्रय नहीं है, अपर आश्रय नहीं है।

नाम रूपी नाम एक आदि ये पुरुख ।
कलौ मूर्त्तिमन्त आछे ना जाने मूरख ॥९४
नाम रूपी भगवान् जानिह केवल ।
द्विधा घुचाइते व्यास बले तिनबार ॥९५
तिनबार बहि आर साछे 'एब, कार ।
दुराशय पापीलोक सब बुझाबार ॥९६
हरिनाम मन्त्रे हय कैवल्य ताहार ।
केवल कैवल्य अर्थ जानिह विचार ॥९७
नाममात्र नामाभास स्पष्टार्थ इहार ।
कैवल्य से मुख्य हय शास्त्र परचार ॥९८
नामाभासे मोख्य हय सत्य शास्त्र वाणी ।
नामोदये प्रेमानन्द पुराणे वाखानि ॥९९
इहा बहि आन देव भजे येइ जन ।
तार गति नाहि तिनवार ए बचन ॥१००
गो गोपी गोपाल सङ्गे ध्यान हरिनाम ।
जानिबे ए सब अर्थ वेदेर प्रमाण ॥१०१
एतेक बलिल प्रभु बराह आवेशे ।
नाम सङ्कीर्त्तन करे नाचे प्रेमवशे ॥१०२
ये शुनये गोरागुण नदीया विहार ।
अबिलम्बे कृष्णप्रेम उपजे ताहार ॥१०३
दशने धरिया तृण कहये लोचन ।
गौर पद बिनु मोर नाहि अन्य धन ॥१०४

———

धानशी राग।

नवद्वीपे नितुइ पूर्णिमार चाँद गोरा।
प्रकाशये निजप्रेम अमियार धारा ॥
पिवइ चरणामृत भकत चकोरा ।
अबाध करुणायप्रेम प्रकाशये गौरा ॥

आर एक दिने कथा शुन अपरूप ।
निज घरे बसि तेज कोटी काम रूप ॥१
सिंहग्रीव कम्बुकण्ठ कमल नयन ।
करये प्रकट घन गम्भीर गर्जन ॥२
ए घरे देखि चारि पाँच छय मुख ।
देखिते बाढ़ये मोर अन्तर कौतुक ॥३
श्रीनिवास पण्डित आछिल प्रभु काछे ।
शुनिया उत्तर दिल ये विधान आछे ॥४
तोमा देखिबारे सब देव आगमन ।
ब्रह्मा आदि चारि पाँच छय से वदन ॥५
प्रेमार समुद्र तुमि देह प्रेमधन ।
तोरे प्रेमधन मागे सब देवगण ॥६
तबे सेइ महाप्रभु बसि दिव्यासने ।
एक भक्त अङ्गे अङ्ग पद आर जने ॥७
श्रीवास पण्डित आदि यत भक्तगण ।
चरणे पड़िया तारा करये रोदन ॥८
वर मागों तोर पदाम्बुजमधु प्रेमा ।
देह मो सबारे प्रभु करुणार सीमा ॥९

तबे विश्वम्भर प्रभु बले मेघ नादे ।
लेह तो सबारे दिल प्रेम परसादे ॥१०
तत्काले हइल प्रेम सब देवतार ।
भावमय शरीर हइल चमत्कार ॥११
हा राधा गोविन्द बलि नाचे देवगण ।
देखिया वैष्णवगण हरषित मन ॥१२
देवगण नाचे देवीगण करि सङ्गे ।
अश्रु पुलक स्वेद प्रेमार तरङ्गे ॥१३
क्षणे भूमे गड़ि याय चरणे पड़िया ।
क्षणे ऊर्द्ध् वबाहु नाचे हरिबोल बलिया ॥१४
क्षणे स्तव करे गौर गोविन्द बलिया ।
क्षणे दण्डवत करे चरणे पड़िया ॥१५
क्षणे पद मस्तके धरिया देवगण ।
वर मागे तोर पदे हउ मोर मन ॥१६
'तथास्तु' बलिया प्रभु बले वारबार ।
प्रेमधन परिपूर्ण हउ तो सबार ॥१७
देवगण प्रेम पाइ गेला निज स्थान ।
देखिया सकल भक्त आनन्दित मन ॥१८
एतेक करुणा कैल भकत वत्सल ।
करुणा प्रकाश देखि बले शुक्लाम्बर ॥१९
शुक्लाम्बर ब्रह्मचारी बड़इ पवित्र ।
तीर्थपूत कलेवर-मधुर चरित्र ॥२०
प्रभु आगे कहे कथा नाहि करे भय ।
प्रेम लोभे कहे कथा यत मने लय ॥२१
शुन शुन ओहे प्रभु ! गौर भगवान् ।
एत दिने हैल मोर प्रसन्न नयान ॥२२
नाना तीर्थ पर्य्यटन करियाछि आमि ।
अनेक यन्त्रणा दुःख कतइ ना जानि ॥२३
मधुपुरी द्वारापुरी कैलु पर्य्यटन ।
दुःखित हइयाछि आमि देह प्रेमधन ॥२४
ए बोल शुनिया प्रभु कहिला उत्तर ।
मोर एक बोल तुमि शुन शुक्लाम्बर ॥२५
से बने कतेक आजे शृगाल कुकुर ।
आमार कि हैल ताते कहिल ठाकुर ॥२६
हृदये यावत कृष्ण उदय ना करे ।
तावत तीर्थेर अनुग्रह नाहि तारे ॥२७
कृष्ण प्रेम विनु धर्म कोनो किछु नहे ।
पड़िया देखह इहा शास्त्रे सब कहे ॥२८

तथाहि--

मीनः स्नानपरः फणी पवनभृङ्मेषोऽपि पर्णाशनः
शश्वद्भ्राम्यति चक्रिगौरपि वको ध्याने सदा तिष्ठति
गर्त्ते तिष्ठति मूषिकोऽपि गहने सिंहः सदा वर्त्तते
किं तेषां फलमस्ति हन्त तपसा सद्भावसिद्धिं विना २९

मीन स्नान परायण है, सर्प वायुभुक् है, मेष पत्रभोजी है, तेली का बैल नियत भ्रमणशील है, वक मछली पकड़ने के निमित्त नियत ध्यान परायण है। मूस निरन्तर गड्डा में रहता है, सिह सदा वनवासी है, उक्त समस्त प्राणीयों में तपस्या धर्म विद्यमान होने परभी फल क्या है ?

वस्तुतः तपस्या के द्वारा यदि भावशुद्धि नहीं होती है तो कुछ भी लाभ नहीं होता है।

तथाहि नारदपञ्चरात्रे--

आराधितो यदि हरिस्तपसा ततः किं
नाराधितो यदि हरिस्तपसा ततः किं ।
अन्तर्बहिर्यदि हरिस्तपसा ततः किं
नान्तर्बहिर्यदि हरिस्तपसा ततः किं ॥३०

यदि श्रीहरि की आराधना होती है, तो तपस्या का प्रयोजन ही क्या है ? हरि की आराधना न होने से तपस्या का क्या प्रयोजन है ? अन्तर में एवं बाहर में यदि श्रीहरि की स्थिति होती है, तब तपस्या की आवश्यकता क्या है ? यदि अन्तर एवं बाहर में श्रीहरि का अवस्थान नही होता है, तब तपस्या करके क्या होगा ?

ए बोल शुनिया विप्र भूमिते पड़िल ।
कातर हइया कान्दे आरति बाढ़िल ॥३१
अनुगत आर्त्ति प्रभु सहिआरे नारे ।
करुण अरुण भेल गौर कलेवरे ॥३२
प्रेम दिल प्रेम दिल डाके आर्त्तनादे ।
शुक्लाम्बर विप्र पाइल प्रेम परसादे ॥३३
तत्काल हैल प्रेमे कम्प कलेबर ।
पुलकित भेल अङ्ग नेत्रे बहे जल ॥३४
हरषित हैया तबे कृष्ण नाम लय ।
सकल रजनी भेल कृष्णरसमय ॥३५
हरिषे करये नाम गुण सङ्कीर्त्तन ।
देखिया सकल भक्त अति हृष्टमन ॥३६
पण्डित श्रीगदाधर सर्व गुणधाम ।
प्रभु काछे थाके निरन्तर लय नाम ॥३७
रजनी शुतिया छिला प्रभुर संहति ।
परितोषे वैल प्रभु देखिया आरति ॥३८
पाइबे दुर्ल्लभ प्रेम रजनी प्रभाते ।
मनोरथ सिद्ध हैब वैष्णव प्रसादे ॥३९
इहा बलि अङ्गमाला दिला तार गले ।
प्रभाते आइला सबे प्रभु देखिबारे ॥४०
सआरे कहिल प्रभु रजनी चरित ।
कथाछले प्रेम पाइल गदाधर पण्डित ॥४१
अति हृष्टमने स्नान कैल गङ्गाजले ।
प्रेमार आवेशे तनु टलमल करे ॥४२
जगन्नाथदेव पूजा करिल विधाने ।
पुनः पूजा करे निज प्रभु विद्यमाने ॥४३
सुगन्धि चन्दन अङ्गे करये लेपन ।
दिव्य माला गले दिया करये स्तवन ॥४४
एइमत प्रतिदिन करे परिचर्य्या ।
शयन मन्दिरे करे शयनेर शय्या ॥४५
चरण निकटे निति करये शयन ।
निरन्तर श्रद्धाभक्ति पर तार मन ॥४६
प्रभुर सम्मुखे कहे अमृत बचन ।
शुनि बिश्वम्भर प्रभु आनन्दित मन ॥४७
ताहार अमृत वाणी सिञ्चये अन्तर ।
नाचिबारे याय प्रभु धरि तार कर ॥४८
नरहरि भुजे आर भुज आरोपिया ।
श्रीवासेर घर नाचे रास विनोदिया ॥४९
गौर देहे श्याम तनु देखे भक्तगण ।
गदाधर राधारूप हइला तखन ॥५०
मधुमती नरहरि हैला सेइकाले ।
देखिया वैष्णव सब हरि हरि बले ॥५१
वृन्दावन प्रकाश हइल सेइ स्थाने ।
गो गोपी गोपाल सङ्गे शचीर नन्दने ॥५२
पूर्वे सखा सखीगण ये रूपे आछिला ।
रस आस्वादने प्रभु सङ्गे भक्त हैला ॥५३
अभिनब कामदेव श्रीरघुनन्दन ।
अप्राकृत मदन बलिया ये गणन ॥५४
तारा सब पूर्वेदेह धरि प्रभु काछे ।
आवरण क्रमे तारा प्रभु बेढ़ि नाचे ॥५५
देखि अन्य अवतार सङ्गी सब काँदे ।
नवद्वीपे उदय करिल व्रजचाँदे ॥५६
क्षणे गौरलीला गदाधर करि सङ्गे ।
क्षणे श्याम लीला राधा रासरस रङ्गे ॥५७
चमत्कार लीला देखि सब भक्तगण ।
हरि हरि जय जय बले घनेघन ॥५८
दिन अवसाने सन्ध्या रम्य दिगन्तर ।
आचम्बिते मेघारम्भ गगन उपर ॥५९
घन घन गरजे गम्भीर मेघनाद ।
देखिया वैष्णवगण गणिल प्रमाद ॥६०

विघ्न उपसन्न देखि सबेइ दुःखित ।
केमने घुचये विघ्न चिन्ता पर चित ॥६१
मेघगण प्रेम परसाद निते आइला ।
गौरलीला देखि प्रेमे गर्जिते लागिला ॥६२
तबे से महाप्रभु मन्दिरा करि करे ।
नाम गुण सङ्कीर्त्तन करे उच्चस्वरे ॥६३
देवलोक कृतार्थ करिब हेन मने ।
ऊर्द्ध्वमुखे चाहे प्रभु आकाशेर पाने ॥६४
दूरे गेल मेघगण प्रकाश आकाश ।
हरिषे वैष्णव सबार बाढ़िल उल्लास ॥६५
निरमल भेल शशि रञ्जित रजनी ।
अनुगत गीत गाय नाचये आपनि ॥६६
मेघगण निजरूप धरि प्रभु काछे ।
नाचिया बुलये तारा भक्त पाछेपाछे ॥६७
प्रेमदाने विचार नाहि करे गौरहरि ।
मेघे कि बलिब दिल त्रिजगत भरि ॥६८
आपने ठाकुर नाचे भक्तगण सङ्गे ।
सबारे नाचाय प्रेमे शचीर नन्दने ॥६९
प्रेमार आवेशे नाचे महानटराजे ।
पदाम्बुजे मुखर मञ्जीर घन बाजे ॥७०
विप्र साध्वीगण जय जय देइ सुखे ।
आकाशेते देवगण देखये कौतुके ॥७१
प्रेमाये विह्वल सब नाचे भक्तगण ।
ना जानि कि कैल तप कतेक जनम ॥७२
ताहार कारणे नाचे ठाकुरेर सने ।
आमोद करये तारा पाइया प्रेमधने ॥७३
करुणाय छाइल प्रभु ए भूमि आकाश ।
शुनि आनन्दित कहे ए लोचन दास ॥७४

द्वितीय अध्याय

। मुकुन्देर प्रति कृपा ।

श्यामगड़ा राग ।

सुमेरु शिखर जनु सुन्दर दीघल तनु
प्रेमभरे करे टलमल ।
पुलकित सब गा आपाद मस्तक पा
राङ्गा दुटी आँखि छल छल ॥
आनन्दित नदीया नगर ।
भालरङ्गे नाचे रे शचीर कोङर ॥ ध्रु
श्रीनिवास चारि भाइ आनन्दे मङ्गल गाइ
हरिदास हरि हरि बोले ।
किशोर किशोरी येन गौरगुण गर्जन
हुहुङ्कार प्रेमार हिल्लोले ॥१
मुरारि मुकुन्द दत्त गुण गाय अविरत
उलसित पुलकित गाय ।
प्रेम मकरन्द आशे पद अरविन्द पाशे
येन मत्त भ्रमर बेड़ाय ॥२
चौदिके जय बोल माझे नाचे हेम गौर
आनन्दे विभोर सर्वजना ।
ये दिके से दिके चाइ आनन्दित सब ठाँइ
दशदिके प्रेमार कान्दना ॥३
केह केह दुँहे मेलि प्रेमानन्दे कोलाकुलि
केहो यशोगाने हय भाट ।
पड़िया चरण तले पण्डित गोसाँइ बले
पसारिले अपरूप हाट ॥५
सोणार मुकुता जनु पुलके गाँतिल तनु
अनुरागे अरुण वदन ।
रसेर आवेशे हासे अलसल से आवेशे
प्रकाशये अन्तरेर धन ॥६

क्षणे अलौकिक बले येन मद मातोयाले
क्षणे बले मुइ भगवान् ।
क्षणे परणाम करे क्षणे आशीर्वाद करे
जने जने देइ प्रेमदान ॥७
प्रेम प्रकाशये प्रभु याहा नाहि शुनि कभु
नवद्वीपे लागिल तरास ।
कि नारी पुरुष सब देखि गोरा अनुभव
भुलि गेल कय लोचन दास ॥८

———

धानशी राग । तरजा छन्द ॥

अमिया मथिया केबा नवनी तुलिल गो
ताहाते गड़िल गोरा देह ।
जगत छानिया केबा रस निङ्गाड़िछे गो
एक कैल सुधुइ सुनेहा ॥१
अनुरागेर दधिखानि प्रेमार साँचना दिया
केबा पातियाछे आँखि दुटि ।
ताहाते अधिक मधु लहुलहु कथाखानि
हासिया बोलये गुटि गुटि ॥२
अखण्ड पीयूष धारा के ना आउटिल गो
सोणार वरण हैल चिनि ।
से चिनि मारिया केबा फेणि तुलिल गो
हेन बासों गोरा अङ्गखानि ॥३
विजुरी बाटिया केबा गा खानि माजिल गो
चान्दे माजिल मुखखानि ।
लावण्य बाटिया केबा चित्र निरमाण कैल
अपरूप रूपेर वलनि ॥४
सकल पूर्णिमार चाँदे बिकल हइया काँदे
कर पद पदुमेर गन्धे ।
कुड़िटि नखेर छटाय जगत करेछे आला
आँखि पाइल जनमेर अन्धे ॥५
एमन विरोद राय कोथाओ देखिये नाइ
अपरूप प्रेमार विनोदे ।
पुरुष प्रकृति भावे कान्दिया विकल गो
नारी बा केमने मन बान्धे ॥६
सकल रसेर रसे बिलास हृदयखानि
के ना गड़ाइल रङ्ग दिया ।
मदन बाटिया केबा वदन गड़िल गो
विनि भावे मो मलुँ काँदिया ॥७
इन्द्रेर धनुक आनि गोरार कपाले गो
के ना दिल चन्दनेर रेखा ।
कुरूपा सुरूपा यत कुलेर कामिनी गो
दुइ हाते करिते चाहे पाखा ॥८
रङ्गेर मन्दिरखानि नानारत्न दिया गो
गढ़ाइल बड़ अनुबन्धे ।
लीला विनोद कला भावेर विलास गो
मदन वेदना भावि कान्दे ॥९
ना चाहे आँखिर कोणे सदाइ सबार मने
देखिबारे आँखि पाखी धाय ।
आँखिर पियास देखि मुखेर लालस गो
आलसल जरजर गाय ॥१०
कुलवती कुल छाड़े पंगु धाय उभ रड़े
गुण गाय असुर पाषण्ड ।
भूमिते लोटाया कान्दे केह थिर नाहि बान्धे
गोरा गुण अमिया अखण्ड ॥११
धाओरे धाओरे बलि प्रेमानन्दे कुलाकुलि
केहो नाचे केहो अट्ट हासे ।
सुशीला कुलेर बधू से बले सकल याउ
गोरागुण रूपेर वातासे ॥१२

नदीया नागद बधू हेरि गोरा मुखविधु
झरझर नयन सदाइ ।
अनुरागे बुक भरे पुलकित कलेवरे
मन माझे सदाइ धेयाइ ॥१३
योगीन्द्र मुनीन्द्र किबा मने भाबे रात्रिदिवा
गोरा गुणे लागि गेल धान्धा ।
अखिल भुवन पति भूमिते लोटाइया कान्दे
सदाइ सोङरे राधा राधा ॥१४
लखिमी विलास छाड़ि प्रेम अभिलाषी गो
अनुरागे राङ्गा दुटी आँखि ।
राधार धेयाने हिया बाहिर ना हय गो
एबे गोरा तनु तार साखी ॥१५
देखरे देखरे लोक गोरा किबा अपरूप
त्रिजगत नाथ नाथ हैया ।
अकिञ्चन जन सङ्गे कि जानि कि धन माङ्गे
किबा सुखे बुलये नाचिया ॥१६
जय रे जय रे जय हेन प्रेमरसालय
भाङ्गि विलाइल गोराराय ।
निर्जीव जीवन पाइल पंगु गिरि डिङ्गाइल
आनन्दे लोचन गुण गाय ॥१७

———

बराड़ी राग । दिशा ॥

हरि राम नारायण शचीर दुलाल हेम गोरा । ध्रु
आर दिने आर कथा शुन अदभूत ।
नितुइ नूतन प्रकाशये शचीसुत ॥१
अति अपरूपा कथा लोके अविदित ।
अधम जनेर मने ना लागे प्रतीत ॥२
प्रकाशये केबल निगूढ़ ठाकुराल ।
निज जने कहे देख मिछा ए संसार ॥३
इहा बलि आपन प्रसङ्गे करे आन ।
पासरिल सर्वजने लय हरिनाम ॥४
निज नाम सङ्कीर्त्तने माताल अन्तर ।
भूमिते लोटाइया कान्दे प्रेमाय विह्वल ॥५
आचम्बिते उठि कहे दिया करतालि ।
निज जने प्रकाशये निज ठाकुरालि ॥६
हेर देख आम्रविज आरोपिल आमि ।
आमार अर्जित तरु हइबे आपनि ॥७
तखन कहये सब जने आचम्बित ।
एखनि रुइल वीज भेल अंकुरित ॥८
देखिते देखिते भेल तरु मञ्जरित ।
हइल उत्तम शाखा भेल मुकुलित ॥९
देख देख सर्वलोक ! अपरूप आर ।
मुकुलित हैल देख तरुटि आमार ॥१०
तखनि हइल फल पाकिल सकाले ।
अंगुलि सङ्केते प्रभु देखाय सबारे ॥११
पाड़िया आनिल फल देखे सबलोके ।
निवेदन करि दिल ईश्वरेर मुखे ॥१२
तिलेके सकले आर ना देखये किछु ।
फलमात्र आछे वृक्ष मिथ्या हइल पाछु ॥१३
ऐछे माया ईश्वरेर कहे सर्वलोक ।
एत जानि ना मजिह ए संसार सुखे ॥१४
मोर मायाबले सृष्टि सकल संसार ।
ना बुझि सकल लोक बले आपनार ॥१५
मोर माया दड़ि केबा छिँड़िबारे पारे ।
सबे एक पथ आछे माया जिनिबारे ॥१६
यत यत देह धर्म कर्म करे लोके ।
सर्व कर्म आरोपन करे यदि मोके ॥१७
यदि देह समर्पण कृष्ण पदे हय ।
कर्माकर्म शुभाशुभ बन्ध नाहि रय ॥१८

ए भक्ति परम तत्त्व समर्पण गणि।
कृष्णे सर्मापिले भेद ना रहे आपनि ॥१९
सब सर्मापिले कृष्ण पाइ सर्वथाय।
सकल पुराणे गीता भागवते गाय ॥२०
नहे बा सकल कर्म हय अनर्थक।
कृष्णे सर्मापिले हय सकल सार्थक ॥२१
हेन अदभुत गोराचाँदेर प्रकाश।
शुनि आनन्दित कहे ए लोचन दास ॥२२

———

श्रीराग।

ओकि होरे गौर जय जय ॥ ध्रु ॥

हेनइ समय वैद्य मुकुन्द देखिया।
कहिल से महाप्रभु हासिया हासिया ॥१
तुमि नाकि ब्रह्मविद्या मान इहा शुनि।
भाल त मुकुन्द दत्त तोमारे वाखानि ॥२
इहा बलि एइ श्लोक पड़िला ठाकुर।
शुनिया सकल लोक आनन्द प्रचुर ॥३
तथाहि कविकर्णपुर कृत श्रीचैतन्यचरितामृत–
महाकाव्य धृत पद्मपुराण बचन––
रमन्ते योगिनोऽनन्ते सत्यानन्दे चिदात्मनि।
इति रामपदेनासौ परं ब्रह्माभिधीयते ॥४

योगिवृन्द अनन्त महिमा मण्डित अनन्त सत्यानन्द चिदात्मा रूप परमात्मा में रत होते हैं, अतः परमात्मा परमब्रह्म का ही बोध राम शब्द से होता है।

तबे पुन भगवान् सेइ गौरहरि।
वैद्यरे कहिल किछु अनुग्रह करि ॥५
चतुर्भुज ध्यान तुमि बड़ करि मान।
द्विभुज धेयाने तोर हैल अल्प ज्ञान ॥६
सकल सम्पद चाह आपनार हित।
द्विभुज भजह कृष्णे मजाइया चित ॥७
कृष्णेर प्रकाश नारायण शास्त्रे कहे।
नारायण हैते कृष्ण हेन बाक्य नहे ॥८
ऐछन करुण वाणी कहे विश्वम्भर।
शुनिया सादरे वैद्य प्रणत कन्धर ॥९
सुरनदी जले स्नान करि करों काम।
वैष्णवेर पदधूलि प्रसाद प्रत्रान ॥१०
तोर पादपद्म मोर शिरे रहु छत्र।
दास्य अभिषेक कर एइ चाहि मात्र ॥११
आमि कि जानिये प्रभु निज भालमन्द।
निरन्तर अन्तरे बाहिरे मद गन्ध ॥१२
निज गुणे करुणा करिला प्रभु यबे।
निजदास्य प्रसाद करह मोरे तबे ॥१३
तुमि सर्वेश्वरेश्वर विग्रह आनन्द।
सेइ नन्दसुत तुमि अवतार कन्द ॥१४
ए बोल शुनिया प्रभु अन्तर सन्तोषे।
पद अरविन्द तार मस्तके परशे ॥१५
सर्वाङ्गे पुलक भेल सजल लोचन।
गदगद भावे वैद्य प्रेमार लक्षण ॥१६
गदगद स्वरे स्तव करिल विस्तर।
जय महामहेश्वर कारणेर पर ॥१७
तबे सेइ महाप्रभु विश्वम्भर हरि।
कहिते लागिला किछु देखिया मुरारि ॥१८
शुन शुन ओहे वैद्य आमार बचन।
एड़ गीता अध्यात्म चरचा तोर मन ॥१९
जीवारे बासना यदि थाकये तोमार।
कृष्ण प्रेमानन्दे यदि साध थाके आर ॥२०
अध्यात्म चरचा तबे कर परित्याग।
गुण सङ्कीर्त्तन कर कृष्णे अनुराग ॥२१

नटवर शेखर सुन्दर श्यामतनु ।
इन्द्रनीलमणि कान्ति करे वर वेणु ॥२२
पीताम्बर धर वनमाला यार गले ।
से प्रभुके नाहि भज गोपीगण मेले ॥२३
शुनिया मुरारि गुप्त प्रभु आज्ञा वाणी ।
कातर हइया कान्दे पड़िया धरणी ॥२४
प्रभुर चरणे करे विनय विस्तर ।
लङ्घिबारे नारि प्रभु संसार दुस्तर ॥२५
ब्रह्मा महेश्वर किवा लखिमी अनन्त ।
जिनिते ना पारे माया बड़इ दुरन्त ॥२६
परम प्रबल माया के जिनिते पारे ।
तोमार प्रसाद विना प्रभु विश्वम्भरे ॥२७
आमि महाधम किबा शकति आमार ।
संसार जिनिया पद भजिब तोमार ॥२८
दुःखित देखिया यदि दया कर मोरे ।
करुणा विग्रह प्रभु भजों मो तोमारे ॥२९
एतकाल गुपत आछिल प्रेमधन ।
प्रकट करिला प्रभु करुणा कारण ॥३०
तोर पद अरविन्द मकरन्द प्रेम ।
पिवउ आमार मन मधुकर येन ॥३१
एइ बर देह मोरे करुणा सागर ।
घृणा ना करिह मोरे मो अति पामर ॥३२
ऐछन कातर वाणी शुनिया ठाकुर ।
करुणा बाड़िल हिया आनन्द प्रचुर ॥३३
हासिया कहये प्रभु शुनह मुरारि ।
अचिरे अभीष्ट सिद्ध हइबे तोहारि ॥३४
तबे सेइ श्रीनिवास पण्डित ठाकुर ।
अति महा शुद्धमति भक्त सुचतुर ॥३५
कृष्ण सेवा करे निति लैया भ्रातृगण ।
सर्वभावे भजे विश्वम्भरेर चरण ॥३६
कृष्णनाम गुण सङ्कीर्त्तन करे निति ।
अनुज रामेर सङ्गे बड़इ पिरीति ॥३७
ज्येष्ठसेवा परायण श्रीराम पण्डित ।
दुइ भाइ मिलि गाय कृष्ण गुणगीत ॥३८
श्रीवास श्रीराम प्रभुर प्रिय दुइ जन ।
तार घरे क्रीड़ा करे आनन्दित मन ॥३९
तार घरे नाचे प्रभु ता सबार सने ।
कपिल ठाकुर येन बेढ़ि ऋषिगणे ॥४०
हेनमते कौतुके आनन्दे दिन याय ।
शतशत शिष्यगणे आनन्दे पड़ाय ॥४१
शिष्ये शिष्ये मिलि तारा करे अनुमान ।
ताहाते आछिल एक बड़इ अज्ञान ॥४२
श्रीकृष्ण बलिये यारे सेह माया एक ।
अबोध ब्राह्मण पुत्र इहा बलिलेक ॥४३
सुनिया ठाकुर दुइ कर दिला काणे ।
तखनि चलिला प्रभु सुरनदी स्नाने ॥४४
स बसने शिष्यबर्ग सने गङ्गा स्नान ।
सपुलक घनघन लय हरिनाम ॥४५
पापिष्ठ अधम छार पाषण्ड चरित्र ।
दुर्वचने कर्ण मोर कैल अपवित्र ॥४६
इहा बलि घन घन लय हरिनाम ।
कहये लोचन गोरा सर्वगुणधाम ॥४७

तृतीय अध्याय

अद्वैत तत्त्व कथन ।

भाटियारि राग ।

हरि नारायण शचीर दुलाल गोराचाँद ।
बान्धल जीवेर मन दिया प्रेम-फाँद ॥

आर अपरूप कथा कहिब एखन ।
सावधाने शुन सबे छाड़ि अन्य मन ॥१

गोरागुण कहिते पुलक बान्धे गाय।
अखण्ड पीयूष गोरा गुणेर प्रभाय ॥२
श्रीनिवास आदि शिष्यवर्ग करि सङ्गे।
अद्वैत आचार्य्य देखिबारे हैल रङ्गे ॥३
केहो गीत गाय केहो लय हरिनाम।
हरि हरि बोल बले नाहिक उपाम ॥४
आपने ठाकुर याचे भक्तगण गाय।
आपना ना जाने सब प्रेमेर प्रभाय ॥५
आपाद मस्तक पुलक राङ्गा दुटी आँखि।
टलमल करे तारा गोरा मुख देखि ॥६
मालसाट् मारे केहो हुहुङ्कार नादे।
भूमिते लोटाइया सब पारिषद काँदे ॥७
एइमने आनन्दे सानन्दे याय पथे।
अद्वैत आचार्य्य गोसाँइ देखिबारे चिते ॥८
अद्वैत आचार्य्य गोसाँइ देखिला त गिया।
दण्ड परणाम करे भूमिते पड़िया ॥९
सम्भ्रमे आचार्य्य गोसाँइ पड़िला चरणे।
स्तुति करे अतिशय कातर बचने ॥१०
आमा हेन कोटि अद्वैतेर शिरोमणि।
प्रणति करिया बले लोठाञा धरणी ॥११
अन्योऽन्ये दोँहे दोँहा आलिङ्गन करे।
दोँहारे सिञ्चिल दोँहे नयनेर जले ॥१२
आसने बसिया प्रभु कहे निज कथा।
मनोहर पापहर प्रेमभक्ति दाता ॥१३
आचार्य्य गोसाँइ तबे बलिला बचन।
पाषण्डीके गालि दिते राङ्गा दुलोचन ॥१४
पाषण्डी बलये कलियुगे भक्ति नाइ।
साक्षाते देखुक आसि चैतन्य गोसाँइ ॥१५
ए बोल शुनिया प्रभुर प्रफुल्ल अधर।
कहिते लागिला मेघ गम्भीर उत्तर ॥१६
भक्ति नाहि कलियुगे आर आछे कि।
भक्तिमात्र आछे तेँइ संसार से जी ॥१७
कलियुगे भक्ति नाहि ये बले बचन।
निरर्थक जन्म तार शुन सर्बजन ॥१८
कलियुगे कृष्णभक्ति परसन्न माया।
कलियुग हेन कोन युगे नाहि दया ॥१९
हेनइ समये से पण्डित श्रीनिवास।
कहिते लागिला किछु अन्तरे तरास ॥२०
सम्मुखे देख प्रभु पाषण्डी ब्राह्मण।
कृष्ण महोत्सबे बाधा दिबेक एखन ॥२१
ए महापाषण्ड एइ अति दुराचार।
विद्या अभिमाने करे महा अहङ्कार ॥२२
तबे महाप्रभु कथा कहिल ताहारे।
एथा ना आनिबे ओरे दुष्ट दुराचारे ॥२३
ना आइल ब्राह्मण से माया विमोहित।
क्रीड़ा करे महाप्रभु आनन्दित चित ॥२४
श्रीनिवास भुजे एक भुज आरोपिया।
गदाधर करे धरि वाम कर दिया ॥२५
नरहरि अङ्गे प्रभु श्रीअङ्ग हेलिया।
श्रीरघुनन्दन मुख कान्दये हेरिया ॥२६
श्रीराम पण्डित अङ्गे दिया पदाम्बुज।
क्रीड़ा करे गोराचाँद आचार्य्य सम्मुख ॥२७
चौदिके वैष्णव करे गुण संकीर्त्तन।
मध्ये नाचे महाप्रभु श्रीशचीनन्दन ॥२८
येन रास महोत्सवे बेढ़ि गोपीगण।
कीर्त्तनेर माझे एइमत सुशोभन ॥२९
एइमने कतक्षणे नृत्य अवसाने।
हरषित अद्वैत आचार्य्य सीता सने ॥३०
तबे तार घरे प्रभु भोजन करिल।
लेपिल चन्दन अङ्गे माला पराइल ॥३१

अद्वैत आचार्य्य धन्य आपना मानिल।
आमारे प्रभुर दया एबे से जानिल ॥३२
अद्वैतेर गण कान्दे चरणे पड़िया।
विश्वम्भर कोले करे सबारे धरिया ॥३३
निज नाम गुणे प्रभु नाचिया गाइया।
घरेरे आइला प्रभु निज जन लैया ॥३४
हेनमते दिने दिने वाढ़े परकाश।
शुनिया आनन्द हिया ए लोचन दास ॥३५

बराड़ी राग।

बालाइ लैया मरि गोरार निछनि लैया।
बिलाइल प्रेमधन जगत भरिया॥ ध्रु॥

आर दिन महाप्रभु बसि निज घरे।
अध्यातम तत्त्वेर कथा कहिछे सबारे ॥१
एकमात्र कृष्णस्वामी सृष्टिरूप स्थिति।
आपने से एक आत्मा रूपे आछे क्षिति ॥२
इहा बलि हस्त मेलि पुन करे मुष्टि।
देखाय सबारे एइमत मोर सृष्टि ॥३
पुन कहे तत्त्व सत्तामात्र स्वरूपिण।
भावेर आवेश ताते शुन सर्वजन ॥४
तथापि सद्रूपे सेइ करिये यतन।
एक ज्ञान बिने मुक्त ना हय कखन ॥५
विषम संसार बन्ध जिनिते ना पारे।
मुक्तबन्ध हय यदि एक ज्ञान करे ॥६
मुक्ति बिनु कृष्ण ज्ञान नाहि हय कभु।
एतेके बलिये शुन ज्ञानगम्य प्रभु ॥७
हेर देख मोर करे ए पाँच अंगुलि।
मधुते मिश्रित एक वृणाकर चारि ॥८
दुर्गन्ध लागिया ताहा ना चाहे नयने।
एकांगुलि मधु जिह्वा लिहाय यतने ॥९
एक अव्यय सेइ भगवान् मात्र।
तिँह बहि मुक्त करिबारे नाहि पात्र ॥१०
एइमते ज्ञान योग कहि नाना विधि।
क्षणेक रहिला निःशबदे गुणनिधि ॥११
दया करि पुन कहे सर्व तत्त्व सार।
श्रीकृष्ण भकति विने किछु नाहि आर ॥१२
ज्ञानगम्य कृष्ण इहा बुझाइल सबारे।
कृष्ण पादाम्बुजे प्रेमभक्ति सर्वसारे ॥१३
एइ ज्ञान हइले हय कृष्णे दृढ़ मति।
मति दृढ़ा हैले हय भक्ति अहैतुकी ॥१४
कृष्ण पादाम्बुज घ्यान करये तखन।
हरि हरि बलि करे पादाब्ज स्मरण ॥१५
राधा सङ्गे चिदानन्द श्यामल त्रिभङ्गी।
मदनमोहन नटवर बहुरङ्गी ॥१६
वृन्दावन माझे नव रतन मन्दिर।
वल्लभ सुन्दरी सब बेढ़ि मनोहर ॥१७
कोकिल मयूर सारी शुक अलिकुले।
प्रफुल्लित वृन्दावन शोभे नाना फुले ॥१८
चिन्तामणि भूमि कल्पतरुगण यत।
कामधेनुगण से सुरभिगण यूथ ॥१९
यमुना बेष्टित मनोहर अति शोभा।
से रस लावण्य देखि लक्ष्मी मनोलोभा ॥२०
उठिल प्रेमार धारा बहे दु'नयाने।
पुलकित कलेबर अरुण वयाने ॥२१
क्षणे हासे क्षणे कान्दे क्षणे नाचे गाय।
कहिल सबारे प्रभु गदगद भाषाय ॥२२
ऐछन आमार येइ येइ भक्तगण।
निजगुणे पवित्र करये त्रिभुवन ॥२३

इहा बलि हृष्ट हैया निज भक्तगणे ।
नाचाय सबारे प्रभु नाचये आपने ॥२४
एइमते सुखे निबसये नवद्वीपे ।
निजभक्तगण सने गङ्गार समीपे ॥२५
अद्वैत आचार्य्य गोसाँइ तार परदिने ।
नवद्वीप आइला विश्वम्भर दरशने ॥२६
गिया छिला महाप्रभु श्रीनिवास घरे ।
आगमन चाहि आचार्य्य स्नानपूजा करे २७
श्रीनिवास घरे प्रभु आनन्दित मने ।
दण्ड अग्रे पुष्प दिया कहिल बचने ॥२८
गदा पूजा कैल एइ दुष्ट नाशिबारे ।
आमार भकत हिंसा येइ येइ करे ॥२६
इहाते नाशिब आमि सेइ सेइ जने ।
सबा विद्यमाने एइ कहिल बचने ॥३०
मोर भक्त द्वेषी एक आछे दुष्टजन ।
कुष्ठव्याधि हइबे तार अनेक जनम ॥३१
पैशाच नरके बास कराइब आमि ।
बिड़्भुज शूकर सेइ हइबे आपनि ॥३२
ताहार शिष्येरे आमि कराइब दण्ड ।
आमार गदाय सब नाशिब पाषण्ड ॥३३
बनेरे याइब बलि छिल मोर मन ।
एथाइ आमार हैल सेइ महावन ॥३४
व्याघ्र सदृश केहो केहो बा पाषाण ।
वृक्षेर समान केहो तृणेर समान ॥३५
पशुर सदृश करि गणि कोनो जन ।
एतेके बलिये मोरे एइ महावन ॥३६
अद्वैत आचार्य्य एथा आइला हेन शुनि ।
एथा ना आइला तथा याइब आपनि ॥३७
हेनइ समये आचार्य्य आइला आचम्बित ।
प्रभुर सम्मुखे आसि हैला उपनीत ॥३८
पादाम्बुज सन्निकटे उपायन दिया ।
दण्ड परणाम करे भूमेते पड़िया ॥३६
तार कर धरि प्रभु बोलये वचन ।
एथा आगमन मोर तोहार कारण ॥४०
मोर पादपद्म निज मस्तके धरिया ।
तुलसी मञ्जरी दिया पूजिला कान्दिया ॥४१
भागवत चित्त तुमि हुङ्कारे आनिला ।
तोमार पिरीति लागि सबे मोरे पाइला ४२
इहा बलि महाप्रभु खट्टाय बसिल ।
नाचह बलिया आचार्य्येरे आज्ञा कैल ॥४३
तबे सेइ अद्वैत आचार्य्य द्विजबर ।
दश अवतार गीते नाचिला विस्तर ॥४४
श्रीवास पण्डित आदि यत भक्तगण ।
आनन्दे विभोर करे गुण सङ्कीर्त्तन ॥४५
ता देखिया महाप्रभु गौर भगवान् ।
हृष्ट हैया बैल तारे प्रसन्न बयान ॥४६
ए तोर बालक सब प्रेम मागे मोरे ।
दिल प्रेमभक्ति दान कहिल तोमारे ॥४७
ए बोल शुनिया हृष्ट हइला आचार्य्य ।
अन्तरे जानिल मोर सिद्ध हैल कार्य्य ॥४८
आचार्य्य कहये प्रभु शुनह बचन ।
एइ सब जन तोर पद परायण ॥४६
भकत वत्सल तुमि करुणा सागर ।
प्रेमधन दिया सव भक्त रक्षा कर ॥५०
तबे सेइ सब जन प्रभु काछे गिया ।
बसिला आसन करि प्रभुके बेढ़िया ॥५१
सचन्द्रिका रजनी शोभित दिगन्तर ।
आचार्य्य देखिया पुन कहिल उत्तर ॥५२
कमलाक्ष ! तुमि मोर परम भकत ।
तोमार कारणे आइलुँ हैलुँ बेकत ॥५३

मोर गुणगीत नृत्ये हश्रो तुमि सुखी ।
सब जन भक्तिपर हउ इहा देखि ।।५४
ए बोल शुनिया सेइ श्रीवास पण्डित ।
कहये ठाकुर श्रागे परसन्न चित ।।५५
एक निवेदन प्रभु ! शुन मोर बोल ।
कहिते डराङ पुन चित उतरोल ।।५६
एकटि सन्देह पुछों हृदयेर कार्य्य ।
तोमार कि भक्त एइ श्रद्वैत श्राचार्य्य ।।५७
इहा शुनि क्रोध मुख गौर भगवान् ।
भर्त्सिते लागिला क्रोधे श्ररुण नयान ।।५८
उद्धव श्रक्रुर मोर प्रिय दुइ जन ।
श्राचार्य्य बासह तुमि ता सबार न्यून ।।५९
भारतबरषे एइ श्राचार्य्य समान ।
श्रामार भकत श्राछे हेन कोन् जन ।।६०
एतेके बलिये तुमि श्रज्ञान ब्राह्मण ।
श्राचार्य्य समान मोर भक्त नाहि श्रान ।।६१
वैष्णवेर राजा सेइ मोर श्रात्मा बलि ।
जगतेर कर्त्ता तारिबारे श्राइला कलि ।।६२
शस्त्रे महाविष्णु बलि करे निरूपण ।
से जन श्रद्वैत श्रवतार भक्त जान ।।६३
एतेके कहिये श्रामि सुदृढ़ बचन ।
श्राचार्य्येर स्तुति भक्ति कर सर्वक्षण ।।६४
ए बोल शुनिया विप्र श्रन्तरे तरास ।
निःशबद हइया रहे मुखे नारि भाष ।।६५
तबे सेइ गौरहरि वले पुनर्बार ।
श्रध्यात्म चरचा तोरा ना करिबि श्रार ६६
यदि बा श्रध्यात्म बादे देखि शुनि तोमा ।
तबे पुन तो सबारे नाहि दिब प्रेमा ।।६७
ज्ञान कर्म उपेखिले कृष्ण प्रेम हय ।
इहा जानि ज्ञानकर्म ना कर श्राश्रय ।।६८
ए बोल शुनिया कहे श्रीवास पण्डित ।
एइ वर देह ताहा पासरउ चित ।।६९
मुरारि कहये श्रामि श्रध्यात्म ना जानि ।
प्रभु कहे कमलाक्ष हैते जान तुमि ।।७०
शुद्ध चित्ते कृष्णचन्द्रे कर दृढ़भक्ति ।
भक्तिरस निकटे चेटिका हय मुक्ति ।।७१
ए बोल शुनिया सबे श्रानन्दित मन ।
श्रन्तरे करिल श्राज्ञा करिब पालन ।।७२
श्रीहरिर पादाम्बुज मधुमत्त तारा ।
श्रानन्दे नाचये सबे देवतार पारा ।।७३
हेन श्रदभुत कथा नदीया विहार ।
कहिल लोचन गोरा प्रेमेर प्रचार ।।७४

सिन्धुड़ा राग ।

श्ररुण कमल श्राँखि तारक भ्रमर पाखी
डुबुडुबु करुणा मकरन्द ।
वदन पूर्णिमार चान्दे छटाय पराण कान्दे
ताहे कत प्रेमार श्रारम्भ ।।१
श्रानन्द नदीयापुरे टलमल प्रेमभरे
शचीर दुलाल चान्द नाचे ।
जय जय मङ्गल पड़े देखिया चमक लागे
मदनमोहन नटराजे ।।२
पुलक भरिल गाय धर्म विन्दु विन्दु ताय
लोमचक्रे सोणार कदम्ब ।
प्रेमार श्रारम्भे तनु जिनि प्रभातेर भानु
श्राधवाणी राखे कम्बुकण्ठ ।।३
श्रीपाद पदुम गन्धे बेढ़ि दश नखचान्दे
उपरे कनक वङ्कराज ।

यखन भातिया चले विजुरी झलमल करे
चमकित अमर समाज ॥४
सप्तदीप मही माझे ताने नवद्वीप साजे
ताहे नब प्रेमार प्रकाश ।
ताहे नब गौरहरि हरि सङ्कीर्त्तन करि
आनन्दित ए भूमि आकाश ॥५
सिंहेर शावक येन गभीर गर्जन हेन
हुङ्कार हिल्लोल प्रेमसिन्धु ।
हरि हरि बोल बोले जगत पड़िल भोले
दु'कुल खाइल कुलबधू ॥६
अङ्गेर चटाय येन दिनकर प्रदीप हेन
ताहे लीलारसेर विलास ।
कोटि कुसुम धनु जिनिया विनोद तनु
ताहे करे प्रेमार प्रकाश ॥७
लाख लाख पूर्णिमार चाँद जिनिया वदन छाँद
ताहे चारु चन्दन चन्द्रिमा ।
नयन अञ्चल जले झर झर अमिया झरे
जनम मुगधे पाय प्रेमा ॥८
मातिल कुञ्जरी गति भावे गर गर अति
क्षणे हासे चमकिया चाय ।
कामिनी मोहन बेश हेरिया भुलिल देश
मदन बेदन हेरि पाय ॥९
कि दिब उपमा तार करुणा विग्रह सार
हेनरूपे मोर गोराराय ।
प्रमाय नदीयार लोके दिवानिशि नाहि डाके
आनन्दे लोचन गुण गाय ॥१०

———

चतुर्थ अध्याय

नित्यानन्द मिलन ।

यथाराग ।

मोर प्राण आरे गोराचाँद नारे हय ॥ ध्रु ॥

तबे निज घरे प्रभु बसि दिव्यासने ।
चौदिके बेढ़िया आछे निज भक्तजने ॥१
श्रीवासे देखिया प्रभु कैल एक उक्ति ।
तोमार नामेर तुमि कि जान व्युत्पत्ति ॥२
श्रील भक्तिर तुमि केबल आवास ।
एतेके बलिये तोर नाम से श्रीवास ॥३
तबे त कहिल प्रभु देखि गोपीनाथे ।
आमार भकत तुमि बुल मोर साथे ॥४
मुरारि देखिया प्रभु बले पुनर्वार ।
पड़ह आपन श्लोक शुनिब तोमार ॥५
ए बोल शुनिया सेइ मुरारि चतुर ।
पड़ये कवित्व निज शुनये ठाकुर ॥६

तथाहि श्रीमुरारि गुप्त कृत श्रीचैतन्य-
चरिते द्वितीय प्रक्रमे सप्तम स्वर्गे——

राजत्किरीटमणिदीधितिदीपिताश-
मुद्यद्वृहस्पतिकविप्रतिमेव हन्त ।
द्वे कुण्डलेऽङ्करहितेन्दुसमान वक्त्रं
रामं जगत्त्रयगुरुं सततं भजामि ॥७
उद्यद्विभाकरमरीचिविबोधिताब्ज-
नेत्रं सुविम्बदशनच्छदचारुनासं ।
शुभ्रांशुरश्मिपरिनिर्जितचारुवासं
रामं जगत्त्रयगुरुं सततं भजामि ॥८

जिनके मुकुटस्थितमणि ज्योति से दिक्समूह उद्भासित हैं, जो वृहस्पति एवं शुक्राचार्य्य सदृश दीप्तिमान् कुण्डलद्वय से शोभित है, जिनका वदन मण्डल निष्कलङ्क शशधर सदृश हैं, वह त्रिजगद्गुरु श्रीरामचन्द्र का मैं भजन करता हूँ ।

जिनके नयन युगल उद्यत दिवाकर किरण द्वारा प्रस्फुटित कमल के समान प्रफुल्ल एवं मनोहर हैं, जिनके ओष्ठद्वय सुपक्क विम्बफल सदृश हैं, जिनकी नासिका परम मनोहर है, एवं जिनका हास्य चन्द्र किरण का स्निग्ध माधुर्य्य को पराभूत किया है, उन त्रिजगद्गुरु श्रीरामचन्द्र का मैं सर्वदा भजन करता हूँ।

एइमते रघुवीराष्टक श्लोक शुनि।
मुरारि मस्तके पद दिला त आपनि ॥६
राम दास बलि नाम लिखिला कपाले।
मोर परसादे तुमि राम दास हैले ॥१०
रघुनाथ विने तुमि तिलेक ना जीय।
मुइ तोर रघुनाथ जानिह निश्चय ॥११
इहा बलि राम रूप देखाइल तारे।
जानकी सहिते साङ्गोपाङ्ग सब मेले ॥१२
स्तव करे मुरारि पड़िया पदतले।
जय जय रघुवीर शचीर कोङरे ॥१३
बारबार उठे पड़े लोटाय धरणी।
बहुविध स्तव करे अनुनय वाणी ॥१४
मुरारिके कृपा करि बलिला बचन।
आमार भकति विनु ना जानिह आन १५
यदि तोर इष्ट आमि हइ रघुनाथ।
तथापिह रस आस्वादिह राधानाथ ॥१६
सङ्कीर्त्तन धर्मे राधाकृष्ण गाओ याइया।
करिह आमाते भक्ति शुन मन दिया ॥१७
इहा बलि श्लोक एक पड़िलेक निज।
मोर एक श्लोक शुन श्रीनिवास द्विज ॥१८

तथाहि श्रीमद्भागवते—

न साधयति मां योगो न सांख्यं धर्म्म उद्धव।
न स्वाध्यायस्तपस्त्यागो यथा भक्तिर्ममोर्जिता ॥१६

श्रीकृष्ण उद्धव को कहे थे—हे उद्धव! मेरे प्रति वर्द्धित भक्ति जिस प्रकार मुझको वशीभूत करती है, योग, सांख्य, धर्मकर्म, वेदपाठ, तपस्या वैराग्य प्रभृति मुझको उस प्रकार वशीभूत नहीं कर सकते हैं।

पड़िया कहिल शुन शुन सर्वजन।
तोमरा करिह एइमत आचरण ॥२०
श्रीनिवास पण्डितेर कथा अनुसारि।
करिह आमाते भक्ति सुख पाबे बड़ि ॥२१
श्रीराम पण्डित शुन आमार बचन।
तोमार ज्येष्ठेर सेवा आमार अर्च्चन ॥२२
एतेक जानिया कर श्रीवासेर सेवा।
इहा हैते पाबे तुमि मोर पद प्रभा ॥२३
एतेक कहिल प्रभु भकत वत्सल।
करुण अरुण आँखि करे छलछल ॥२४
तबे सेइ श्रीनिवास पण्डित चतुर।
निवेदन कैल दुग्ध भुञ्जये ठाकुर ॥२५
गन्ध चन्दन माल्य सुवासित धूप।
निवेदन करि दिल नैवेद्य सम्मुख ॥२६
ग्रहण करिल प्रभु आनन्दित मने।
अवशेष दिल यत निजभक्तजने ॥२७
एइमत कौतुके सकल निशा गेल।
प्रभाते उठिया प्रभु घररे चलिल ॥२८
स्नान देवार्चन सबे कैल निज घरे।
पुनरपि गेला पादाम्बुज देखाबारे ॥२६
हासिया कहिल प्रभु शुन अदभुत।
आइला श्रीपाद नित्यानन्द अवधूत ॥३०
ताहार महिमा तत्त्व के कहिते जाने।
बड़ पुण्य भाग्ये आजि देखिब नयाने ॥३१
हेर' राम नारायण मुरारि मुकुन्द।
सत्वरे जानह कोथा आछे नित्यानन्द ॥३२

हेनरूपे महाप्रभु आज्ञा यबे कैल ।
सत्वरे चलिया ग्राम दक्षिणे चाहिल ॥३३
विचार करिया लाग ना पाइल तार ।
पादाम्बुज सन्निकटे आइला पुनर्बार ॥३४
करजोड़ करि कहे ठाकुरेर आगे ।
विचार करिया प्रभु ना पाइल लागे ॥३५
पुनरपि कहे प्रभु शुन सर्वजन ।
विचार करह सबे आपन आश्रम ॥३६
प्रभुर आज्ञाय सबे चलिला सत्वर ।
एके एके गेला सबे आपनार घर ॥३७
सन्ध्याकाले सन्ध्या करि एकत्र हइया ।
प्रभु विद्यमाने सबे मिलिला आसिया ॥३८
पथे याइते मुरारि बलिया डाके पहुँ ।
ना देखिले अवधूत बलि हासे लहु ॥३९
नन्दन आचार्य्य घरे आछे महाशय ।
आमिह याइब तथा कहिल निश्चय ॥४०
ए बोल शुनिया सबे हरषित हैया ।
चलिला ठाकुरेर सङ्गे जय जय दिया ॥४१
पथे याइते घन घन हरि हरि बोल ।
अङ्ग पुलकित कण्ठे गदगद रोल ॥४२
नयने गलये नीर सात पाँच धारा ।
चलिते ना पारे प्रेमे सोणार किशोरा ॥४३
क्षणे सिंह पराक्रमे पद चारि याय ।
मत्त करिबर येन उलटि ना चाय ॥४४
नव जलधरे येन गम्भीर निनाद ।
घनघन हुहुङ्कार आनन्द उन्माद ॥४५
एइमने आनन्दे सानन्दे चलि याय ।
देखिल त अवधूत नित्यानन्द राय ॥४६
आरक्त गौराङ्ग कान्ति परम सुन्दर ।
झलमल अलङ्कारे अङ्ग मनोहर ॥४७
कटितटे पीतवास विराजित शोभा ।
शिरे लटपटि पाग चम्पकेर आभा ॥४८
चलिते नूपुर पदे झनझनि शुनि ।
कुरङ्गनयनी चित्त तरल सन्धानी ॥४९
हासिते बिजुरी येन खसिया पड़िछे ।
कामिनी आपन लाज ताहातेइ दिछे ॥५०
मेघ जिनि गरजे गम्भीर नाद शुनि ।
कलि मत्तहातिर दमन सिंहमणि ॥५१
मातिल कुञ्जर येन गमन सुन्दर ।
प्रसन्न वदने प्रेमधारा निरन्तर ॥५२
पुलके आकुल अङ्ग प्रेमे डगमगि ।
कम्प स्वेद आदि भावे रस अनुरागी ॥५३
कलि दर्प दमन कनक दण्ड करे ।
राता उतपल करतन मनोहरे ॥५४
अङ्गद कङ्कण हार केयूर किंकिणी ।
गण्डयुगे कुण्डल येमन दिनमणि ॥५५
पड़िया पड़िया उठे बोलये साम्भाल ।
सबारे पुछये काँहा कानाइया गोयाल ॥५६
अलौकिक बाल्य भावे क्षणे कान्दे हासे ।
मधु देह बलि क्षणे रेवती प्रशंसे ॥५७
क्षणे युगपद करि लाफे लाफे याय ।
एक बले आर करे बुझन ना याय ॥५८
अङ्गेर सौरभे यत युवतीर गण ।
कुलवती मद तारा छाड़िया तखन ॥५९
भूमिते पड़िया प्रभु परणाम करे ।
करिल विनय स्तुति मधुर अक्षरे ॥६०
पड़िलेन प्रभु पदे नित्यानन्द राय ।
दोँहार चरण दोँहे धरिबारे चाय ॥६१
दोँहे आलिङ्गन करे काँदिया काँदिया ।
कोँते छिला बलि कान्दे श्रीमुख चाहिया ६२

सकल अवनी आमि फिरिया चाहिनु।
कोथाह तोमार मुइ लागि ना पाइनु ॥६३
शुनिलाम गौड़ देशे नवद्वीप पुरे।
लुकाइया रइयाछे तथा नन्देर कुमारे ॥६४
चोर धरिबारे मुइ आइलाङ एथा।
धरियाछि चोर आर पलाइबा कोथा ॥६५
इहा बलि नित्यानन्द हासे कान्दे नाचे।
गौराङ्ग आनन्दे कान्दे नित्यानन्द काछे ।६६
कलिदर्प दमन पाइलुँ नित्यानन्द।
तारिमु पतित पंगु जड़ आदि अन्ध ॥६७
नित्यानन्द प्रतापे पवित्र त्रिभुवन।
ना जाने पाषण्डी मूढ़ दुराचार जन ॥६८
सबाइ पड़िबे पाछे नित्यानन्द फान्दे।
एइ कथा कहिलेन प्रभु गोराचान्दे ॥६९
भूमितु लुटाइया प्रभु परणाम करे।
कहिल विनय कथा मङ्गल अक्षरे ॥७०
हरिगुण संकीर्त्तन करये आनन्दे।
आपनि नाचये सङ्गे करि नित्यानन्दे ॥७१
नृत्य सम्वरिया से बसिला दुइ जने।
आनन्दित सर्वलोक देखये नयने ॥७२
तबे नित्यानन्द पद अरविन्द धूलि।
आपने आनिया दिला भक्त शिरोपरि ॥७३
नित्यानन्द पदधूलि पाइया भक्तगण।
प्रेमे गरगर चित झरये नयन ॥७४
एइमने कौतुके रहिया कतक्षण।
घरेरे चलिला प्रभु शचीर नन्दन ॥७५
पथे याइते कहे नित्यानन्देर महिमा।
त्रिभुवने दिते नाहि ताँहार उपमा ॥७६
शुन शुन सर्वजन आमार वचन।
कृष्ण प्रेम भक्ति एइ नहे साधारण ॥७७
आगे ज्ञान हय तबे उपजे भकति।
तबे से जनने सर्वभोगे बिरकति ॥७८
एइमने दिने दिने बाढ़े अनुदिन।
कृष्ण अनुराग बाढ़े हय परवीन ॥७९
आर दिने महाप्रभु आपनार घरे।
आमन्त्रण दिला नित्यानन्द न्यासिवरे ॥८०
भिक्षा अनन्तरे अङ्ग लेपिल चन्दने।
दिव्यमाला निबेदिल पूजार विधाने ॥८१
ताँहार कौपीन लैया खण्ड खण्ड करि।
चिरिया बान्धिल प्रभु भक्त शिरोपरि ॥८२
ताहार चरणोदक भक्ते पियाइल।
अवधूत देखि सबार आनन्द बाड़िल ॥८३
नाचे गाय सबे करे हुङ्कार गर्जन।
प्रेम परिपूर्ण देखे अनन्त भुवन ॥८४
नित्यानन्द महाप्रभु परम उल्लासे।
गौरचन्द्र मुख हेरि अट्ट अट्ट हासे ॥८५
पदताले धरणी से थिर नाहि हय।
भूमिकम्प हेन सबे मानिल निश्चय ॥८६
नाचे गौरचन्द्र प्रभु सबार ठाकुर।
क्षणे क्षणे बाढ़े प्रेम हिल्लोल प्रचुर ॥८७
देखिया त शचीदेवी आनन्दित चित।
नित्यानन्द देखि विश्वरूप परतीत ॥८८
बधू सङ्गे गृहे करे परम मङ्गल।
हुलाहुलि जयध्वनि करे सुमङ्गल ॥८९
नित्यानन्दे देखि आज विश्वरूप ठान।
एकदिठे चाहे देवी हरिष पराण ॥९०
गौरचन्द्रे कहे कथा शुन बाप मोर।
विश्वरूप सेइ पुत्र सहोदर तोर ॥९१
नित्यानन्द नाम धरि आइला नवद्वीपे।
मोर बाप विश्वम्भर राखह समीपे ॥९२

कहितेइ देवी तबे आनन्द पाथारे।
डुबि नित्यानन्दे चाहे कोले करिबारे ॥९३
आइस बाप विश्वरूप चुम्बि मुख तोर।
हरिषे ना जानि चित कि करिछे मोर ॥९४
कहे गौरचन्द्र मागो ! नह उतरोल।
राखह गोपते कथा शुन मोर बोल ॥९५
नित्यानन्द महाप्रभु आइर चरणे।
दण्डवत परणाम करये यतने ॥९६
चरणेर धूलि लय दु'हाते करिया।
आइर सन्तोषे नाचे हरिष हइया ॥९७
कतक्षणे हइलेन स्थिर सबे मिलि।
नित्यानन्द महाप्रभु महाकुतूहली ॥९८
नित्यानन्द देखि शचीर जुड़ालो नयान।
पिरीति पागल हैया हेरये बयान ॥९९
प्रभु बले निजपुत्र वलिया जानिबे।
आमार अधिक करि इहारे पालिबे ॥१००
पुत्र भावे शची नित्यानन्द मुख चाहे।
मोर पुत्र हइला तुमि शचीदेवी कहे ॥१०१
मोर विश्वम्भरे कृपा करिबे आपने।
आजि तोरा दुइ आमार नन्दने ॥१०२
बलिते बलिते शचीर नेत्रे अश्रु झरे।
पुत्र भावे शची नित्यानन्द कोले करे ॥१०३
नित्यानन्द मातृभावे शचीर चरणे।
दण्डवत करि बले मधुर बचने ॥१०४
माता ! ये कहिले तुमि सेइ सत्य हय।
तोर पुत्र हइ आमि जानिह निश्चय ॥१०५
पुत्र अपराध किछु ना लइबे माता।
तोर पुत्र बटि मुइ जानिबे सर्वथा ॥१०६
नित्यानन्देर मातृभाव पाइ शचीराणी।
नयने गलये नीर गदगद वाणी ॥१०७

एइमने स्नेह रसे हैल गरगर।
दुइ पुत्र देखि शचीर जुड़ालो अन्तर ॥१०८
आर दिन श्रीवास पण्डित भिक्षा दिल।
ताहार आश्रमे अवधूत भिक्षा कैल ॥१०९
अनेक सन्तोष पाइल पण्डितेर ठाँइ।
भिक्षाकरि सेइदिन वञ्चिला तथाइ ॥११०
सेइक्षणे महाप्रभु गौर भगवान्।
श्रीवास आश्रमे गेला प्रसन्न वयान ॥१११
देवालये प्रवेशिया बसि दिव्यासने।
कहिल आमारे एइ देख विद्यमाने ॥११२
ए बोल शुनिया नित्यानन्द न्यासिवर।
सादरे निरीखे विश्वम्भर कलेवर ॥११३
तत्त्व ना बुझिल किछु बिशेष ताहार।
कि कार्य्य कहिल प्रभु इङ्गित आकार ११४
तबे पुनरपि महाप्रभु विश्वम्भर।
निज जन देखि किछु कहिल उत्तर ॥११५
सब जन हओ एइ मन्दिर बाहिरे।
विस्मय हइल सब वैष्णव अन्तरे ॥११६
मन्दिर बाहिर हैला आज्ञा पालिबारे।
इङ्गिते कहिल कार्य्य के बुझिबे तारे ॥११७
तबे नित्यानन्द बैल आमार कारणे।
कैले परिश्रम एबे देखह नयने ॥११८
षड़्भुज शरीर प्रभु देखाइल आगे।
तबे चतुर्भुज रूप दुइ भुज तबे ॥११९
देखिया ऐछन रूप अति अदभुत।
पूर्व सङरिला नित्यानन्द अवधूत ॥१२०
देखिल आमार प्रभु प्रकाश हइला।
एक सङ्गे तिन अवतार देखाइला ॥१२१
राम कृष्ण गौराङ्ग देखिल दिव्य तनु।
पश्चात देखिल नव किशोर राधाकानु १२२

हरिषे नाछये प्रभु आनन्द अपार।
दिग्विदिक नाहि जाने प्रेमेर पाथार ॥१२३
हेन अदभुत कथा शुन सर्वजन।
गोरा गुणगाथा सुखे कहये लोचन ॥१२४

———

यथा राग।

हरि राम नारायण शचीर दुलाल हेम गोरा।
नित्यानन्द सुखोत्सवे नाचे भक्त भोरा ॥
परम अद्भुत कथा लोके तविदित।
शुनह भकत सब हैया एकचित ॥१
षड़्भुज देखये नित्यानन्द सुविलासी।
बाढ़े नित्यानन्द सुख अमियार राशि ॥२
ऊर्द्ध्व दुइ हस्ते देखे धनु आर शर।
मध्य दुइ हस्ते बक्षे मुरली अधर ॥३
अधो हस्तद्वये शोभे कमण्डलु दण्ड।
मालसाट् मारे देखि परम प्रचण्ड ॥४
राम कृष्ण गौराङ्ग माधुरी मनोहर।
किशोर शेखर रसमय कलेवर ॥५
देखि नित्यानन्द प्रभु सन्तोष अन्तर।
लीलावेशे हैला गौर रसे गरगर ॥६
तबे प्रभु गभीर गरजे घन घन।
मत्त बलदेव येन अङ्गेर गठन ॥७
से रूप देखिते कामदेव मुरछाय।
तुलना दिबारे किबा आछये धराय ॥८
जिनिया रातुल पद्म चरण युगल।
भकत भ्रमर लोभे महाकुतूहल ॥९
कनक नूपुर ताहे शोभे मनोहरे।
दशचन्द्र विराजित अंगुली उपरे ॥१०
उलट कदली उरु सुन्दर नितम्ब।
नील धटी परिपाटि रभस तरङ्ग ॥११
त्रिबली बलित चारु नाभि सुगभीर।
रसिक नागरी चित देखिया अधीर ॥१२
परिसर उच्च बक्षे मुकुतार दाम।
गजमति हार हेरी मूरुछाय काम ॥१३
कम्बु कण्ठ गण्ड स्थल कनक दर्पण।
लाज धैर्य्य छाड़े हेरी कुलवतीगण ॥१४
कर्णे सुकुण्डल येन सूर्य्येर मण्डले।
पद्मिनीर गण हेरि प्रफुलित जले ॥१५
शिरोपरि पागड़ी शोभये लटपटि।
मधु भरे टले राङ्गा उतपल दिठि ॥१६
श्रीदाम सुदाम दाम बसुदाम भाइया।
बारुणी बारुणी डाके महामत्त हैया ॥१७
चन्दने चर्चित चारु ललाटे तिलक।
भुरुयुग जिनिलेक कामेर धनुक ॥१८
कोटि चन्द्र निछनिये से चन्द्र वदन।
प्रेमधारा नयने से सुधा बरिषण ॥१९
लोहदण्ड श्रीहस्ते से पाषण्ड दलिते।
श्रीहल मुषल येन शत्रु विनाशिते ॥२०
कोनो क्षणे धवली श्यामली बलि डाके।
भाइ कानाइ मधु आन आमार निकटे ॥२१
हरि हरि बले क्षणे मेघेर शबदे।
भाइया भाइया बले क्षणे परम उन्मादे ॥२२
क्षणे भक्तिरस सुखे लीला अनुसारे।
परस्पर दोँहे मेलि परणाम करे ॥२३
पड़िलेन प्रभुपदे नित्यानन्द राय।
गौरचन्द्र! प्रेमानन्द देह त आमाय ॥२४
नित्यानन्द पदे पड़े श्रीगौराङ्ग राय।
दोँहार चरण दोँहे धरिबारे चाय ॥२५

गदगद बले गोरा दादा रे बलाइ ।
आमारे छाड़िया भाइ छिले कोन् ठाँइ ॥२६
एइ बेशे कोन् देशे कतेक भ्रमिले ।
पाँचनी गुञ्जार माला कोथा बा राखिले ॥२७
किबा छिलाम कि हैलाम कि करिल धाता
कोथा नन्द पिता कोथा यशोमती माता २८
कालिन्दीर तीरे तीरे चराइता गाइ ।
ताहा किछु पड़े मने दादा रे बलाइ ॥२९
हेनमते दुइ प्रभुर हइल मिलन ।
आनन्देते गुण गाय ए दास लोचन ॥३०

पञ्चम अध्याय

श्रीअद्वैत—हरिदास मिलन ।

तुड़ी राग ।

आर अपरूप कथा कहिब एखन ।
ना देखिल ना शुनिल हेन आचरण ॥१
सकल लोकेर नाथ क्षिति अवतार ।
भाग्य करि ना मानह केने आपनार ॥२
चातुरी ना घुचे छार पाषण्डी हियाय ।
जड़ित अन्तर तार ए विष्णु मायाय ॥३
निर्मल हइबे यदि शुने गोरागुण ।
भव व्याध नाशिबारे एइ से कारण ॥४
एकदिन रात्रि याय तृतीय प्रहर ।
आचम्बिते रोदन करये विश्वम्भर ॥५
विस्मित हइया शची पुछेन पुत्रेरे ।
कि लागिया कान्द बाप कह ना आमारे ॥६
तोमार कान्दना शुनि पुड़ये शरीर ।
धरिते ना पारि हिया बुके बाजे तीर ॥७
शुनिया मायेर कथा निःशवदे रहे ।
शय्याय शुतिया ये देखिल स्वप्न कहे ॥८
नवीन नीरद कान्ति देखिलुँ पुरुख ।
मयूर पाखार चूड़ा देखिल सम्मुख ॥९
कङ्कण केयूर हार चरणे नूपुर ।
ललाटे चन्दन चाँद किरण प्रचुर ॥१०
पीतवस्त्र परिधान वंशी वाम करे ।
देखिलुँ बालक एक हरिष अन्तरे ॥११
रोदन करये आँखे गले अश्रुधार ।
ना कहिओ केहो येन नाहि शुने आर ॥१२
ऐछन बचन शुनि शची हरषिता ।
विश्वम्भर मुखोदित अमृतेर कथा ॥१३
विश्वम्भर पुलकित पूरित सब देह ।
झलमल करे अङ्ग छटा सब गेह ॥१४
हेनकाले नित्यानन्द अवधूत राय ।
आचम्बिते प्रभु पाशे मिलिला तथाय ॥१५
आसिया देखिल प्रभुर सुन्दर शरीर ।
तेजोमय महाबाहु ए नाभि गभीर ॥१६
दक्षिण करेते गदा वाम करे वेणु ।
करतले पद्म वाम कर तले धनु ॥१७
तपतकाञ्चन कान्ति हृदये कौस्तुभ ।
मकर कुण्डल कर्णे शोभे गण्डयुग ॥१८
मरकत द्युति हार शोभये गलाय ।
अदभुत बेश देखे अवधूत राय ॥१९
चतुर्भुज बेश देखे मुरलिका नाइ ।
सेइमत रूप सब चरित्र निमाइ ॥२०
क्षणेक अन्तरे देखे द्विभुज आकार ।
लोक अनुग्रह रूप चरित्र ताहार ॥२१
ए रूप देखिया सेइ अवधूत राय ।
निज जने आलिङ्गन दिया नाचे गाय ॥२२

आवेशे नाचये प्रभु विवश हइया ।
प्रेम महा जलनिधि प्रकाश करिया ॥२३
श्रीनिवास नारायण श्रीराम मुरारि ।
इहा सङ्गे तोमरा चलह जना चारि ॥२४
अद्वैत आचार्य्य बाड़ी याब अवधूत ।
ताहारे जानाइह इहों बड़ अदभुत ॥२५
हेनमते महाप्रभु आज्ञा यबे कैल ।
शुनि सबजन हिया आनन्द हइल ॥२६
नित्यानन्द सङ्गे सबे चलिला सत्त्वर ।
आनन्द हृदये गेला आचार्य्येर घर ॥२७
प्रणाम करिया कथा कहिल सकल ।
शुनिया आचार्य्य सुखे नाचये विह्वल ॥२८
दोँहे दोँहा आलिङ्गन करये आनन्दे ।
आचार्य्य नाचये सुखे नाचे नित्यानन्दे ॥२९
आनन्द समुद्रे डुवि रहिला निर्भरे ।
घन घन हुहुङ्कार उठये हिल्लोले ॥३०
दोँहे गुप्त कथा कहे गौराङ्ग चरित ।
कहिते शुनिते दोँहे उनमत चित ॥३१
एइमते आनन्दे आछिला दिन दुइ ।
आनन्दे वैष्णव सब हरि गुण गाइ ॥३२
अद्वैत चरणे पुन निवेदन करि ।
सत्वरे चलिला देखिबारे गौरहरि ॥३३
प्रभुर सम्मुखे आसि परणाम करि ।
करजोड़ करि सब कहये मुरारि ॥३४
आचार्य्येर घरे यत भै गेल रहस्य ।
शुनि आनन्दित प्रभु उपजिल हास्य ॥३५
तार पर दिने पुन आपने आचार्य्य ।
पदाम्बुज देखिबारे आइला द्विजवर्य्य ॥३६
श्रीवास पण्डितेर घरे महाप्रभु ।
देवतार घर मध्ये बसि हासे लहु ॥३७
दिव्यासने पहुँ बसि आछे महासुखे ।
झलमल करे घर अङ्गेर छटाके ॥३८
तपन काञ्चन जिनि श्रीअङ्गेर छवि ।
प्रेमाय अरुण येन प्रभातेर रवि ॥३९
दिव्य अलङ्कार माला सुगन्धि चन्दन ।
पूर्णिमार चन्द्र जिनि सुन्दर वदन ॥४०
गदाधर नरहरि दुइ दिके रहे ।
श्रीरघुनन्दन प्रभुर मुख पाने चाहे ॥४१
चौदिके बेढ़िया भक्तगण तार पाशे ।
नक्षत्र बेढ़िला येन द्विजराज हासे ॥४२
नित्यानन्द बसिया सम्मुखे प्रेमानन्दे ।
वदन हेरिया घन घन हासे कान्दे ॥४३
हेनइ समये आचार्य्य दिजचाँद ।
घनघन हुहुंकार छाड़े सिंहनाद ॥४४
पुलके भरल अङ्ग आपाद मस्तक ।
ब्रह्माण्डे ना धरे तार अन्तर कौतुक ॥४५
निवेदन कैल द्विज नाना उपायन ।
पदाम्बुजे दिल नाना बसन भूषण ॥४६
तुलसी मञ्जरी दिया पूजिल चरण ।
सुगन्धि मालती माला सुगन्धि चन्दन ॥४७
दण्ड परणाम करे भूमिते पड़िया ।
आपने से महाप्रभु तुलिला धरिया ॥४८
पूजा परिग्रह करि गौर भगवान् ।
अवशेष दिल निज भक्तगणे दान ॥४९
सेइ माला वस्त्रालंकार शोभे श्रीअङ्गे ।
हरि हरि बलि नाचे ता सबार सङ्गे ॥५०
अद्वैत आचार्य्य आर नित्यानन्द राय ।
श्रीवास मुरारि मुकुन्द गुण गाय ॥५१
सकल वैष्णव मेलि आनन्द उल्लासे ।
आपना पासरे सबे रसेर आवेशे ॥५२

सबे सबा परशंसे बलि धन्य धन्य ।
तुच्छ करि माने सुख कैवल्य निर्विण्ण ॥५३
दिवा निशि नाहि जाने प्रेमानन्द सुखे ।
नियत विह्वल तारा अन्तर कौतुके ॥५४
सूर्य्योदये नृत्यारम्भ हये त रजनी ।
सन्ध्याय नाचये से अवधि दिनमणि ॥५५
हेनमने रात्रि दिन प्रेमानन्दे भोरा ।
नृत्य अवसाने सबे आज्ञा दिल गोरा ॥५६
स्नान देवार्चन सबे करे निज घरे ।
पुनरपि आइस सब भोजन उत्तरे ॥५७
सेइमत सर्वजन क्रिया समाधिया ।
पादाम्बुज सन्निकटे मिलिला आसिया ॥५८
हेनइ समये महाशय हरिदास ।
कृष्ण नामे निरन्तर अन्तर उल्लास ॥५९
कृष्ण पादाम्बुज मधुमय मत्त भृङ्ग ।
रसेर आवेशे हय तरुणिम सिंह ॥६०
आचम्बिते नवद्वीपे मिलिला आसिया ।
आइस आइस बलि प्रभु सम्भाषे हासिया ६१
निर्भर प्रेमाय कैल गाढ़ आलिङ्गने ।
आदेशिल महाप्रभु बसिते आसने ॥६२
सुचतुर हरिदास परणाम करे ।
आपने ठाकुर तारे कोले धरि करे ॥६३
सुगन्धि चन्दन अङ्गे लेपिल ताहार ।
अङ्गेर प्रसाद माला दिल आपनार ॥६४
भोजन करिते आज्ञा दिलेन ठाकुर ।
भोजन करिल महाप्रसाद प्रचुर ॥६५
एइ मते हरिनाम गुण संकीर्त्तने ।
विलसये महाप्रभु आनन्दित मने ॥६६
हरिदास अद्वैत आचार्य्य नित्यानन्द ।
श्रीनिवास आदि यत भक्तगण सङ्ग ॥६७
प्रेमानन्द कौतुके गोङाय दिनराति ।
आचार्य्ये विदाय दिल घरे याह आजि ॥६८
आज्ञा पाइया अद्वैत आचार्य्य घर गेला ।
ये देखिल ये शुनिल सेइ सुखे भोला ॥६९
तबे सेइ नित्यानन्द अवधूत राय ।
प्रभु विद्यमाने तेँहो हइला विदाय ॥७०
ताँर सङ्गे अनुव्रजि चलिला ठाकुर ।
प्रेमे पालटिते नारे गेला अतिदूर ॥७१
हाटिया याइते नारे अवधूत राय ।
अनेक यतने तेँहो करिला विदाय ॥७२
विदाय समये प्रभु कहे एक वाणी ।
ए सबारे देहत कौपीन एकखानि ॥७३
प्रभुर बचने से ठाकुर अवधूत ।
सबाकारे दिलेन कौपीन अदभुत ॥७४
आपने कौपीन प्रभु निल त हासिया ।
निछभक्तगणे दिल सबारे चिरिया ॥७५
कौपीन प्रसाद तारा पाइया कौतुके ।
आनन्द करिया सबे बान्धिला मस्तके ॥७६
नित्यानन्द पदाम्बुजे लइया बिदाय ।
प्रभुर सङ्गेते तारा निज घरे याय ॥७७
घरेरे आइला सबे दुःखित हृदये ।
बाष्प छलछल आँखि बसिला आलये ॥७८
कतक्षणे सबे स्नान देवार्चन करि ।
सन्ध्याकाले आइला देखिबारे गौरहरि ॥७९
नित्यानन्द आसि आचार्य्य गोसाँइर स्थाने ।
हरिबे गौराङ्ग कथा कहे रात्रि दिने ॥८०
तारपर दिने एक कथा शुन सबे ।
श्रीकृष्ण चरणे प्रेम भक्ति पाबे तबे ॥८१
लोक वेद अविदित अपरूप कथा ।
अमृतेर सार एइ गोरा गुणगाथा ॥८२

देखि निज जने प्रभु आलिङ्गन दिया ।
आपनार गुण शुनि वुलये नाचिया ॥८३
चतुर्द्दिके सब जन सुखे नाचे गाय ।
आनन्दे विभोर माझे नाचे गोरा राय ॥८४
आचम्बिते श्रीनिबास कर धरि करे ।
कति गेला नाहि जानि प्रभु विश्वम्भरे ॥८५
चतुर्द्दिके सबजन नाचिते गाहिते ।
मध्ये महाप्रभु नाइ ना पाइ देखिते ॥८६
सबजने उपजिल अन्तरे तरास ।
कान्दये सकल लोक गणये हुताश ॥८७
भूमिते लोटाइया कान्दे स्थिर नाहि बान्धे
नदीयार लोक सब गणिल प्रमादे ॥८८
धाओयाधाइ सबलोक चाहे घरे घरे ।
आँखि मेलिबारे नारे नयानेर जले ॥८९
बिष खाइ सबजन मरिब आमरा ।
कि लागिया कति गेला मोर प्राण गोरा ९०
एतेक विलाप करे सब निज जन ।
शुनिया धाइल शची हैया अचेतन ॥९१
बसन सम्बरे नाहि नाहि बान्धे चुलि ।
बुके कर हानि धाय उन्मत्त पागली ॥९२
बाप बाप डाके शची आरे विश्वम्भर ।
घरेरे आइस बेला हैल द्विपहर ॥९३
कुलेर प्रदीप मोर नदीयार चान्द ।
नयानेर तारा मोर केबा कैल आन्ध ।९४
सबजन आरति देखिया विपरीत ।
भकत वत्सल प्रभु आइला आचम्बित ॥९५
घोर अन्धकारे येन सूर्य्येर उदय ।
प्रकाश करिल प्रभु वैष्णव हृदय ॥९६
चरणे पड़िया केहो कान्दे आर्त्तनादे ।
श्रीमुख देखिया केहो नाचे उनमादे ॥९७
केहो बले महाप्रभु तोर पद बिने ।
अन्धकार दशदिक् ना देखि नयने ॥९८
उन्मत्त पागली शची पुत्र कोले करे ।
लक्ष लक्ष चुम्ब दिल वदन कमले ॥९९
आन्धलेर लड़ि मोर नयानेर तारा ।
एदेहेर आत्मा तोमा बहि नाहि मोरा १००
शून्य हैयाछिल मोर सकल संसार ।
गोराचान्द उदये घुचिल अन्धकार ॥१०१
मुरारि मुकुन्द दत्त आर हरिदास ।
विनय करिया कहे शुन श्रीनिवास ॥१०२
तोमा बहि नाहिक प्रभुर प्रियदास ।
तोमार प्रसादे एइ चरण प्रकाश ॥१०३
आमि सब तोमारे कि कहिबारे जानि ।
आपन बलिया दया करिबे आपनि ॥१०४
इहा बलि सबे मेलि हरि गुण गाय ।
पिरीति पागल हैया नाचे गोराराय ॥१०५
हेन अपरूप कथा शुन सर्व्वजन ।
नवद्वीपे परचार पिरीत रतन ॥१०६
त्रिजगते दुर्लभ प्रभुर प्रेम भक्ति ।
हेनजन केबा आछे लभिबारे शक्ति ॥१०७
लखिमी अनन्त किबा शिव सनातन ।
ए प्रेमभक्तिर केहो ना जाने मरम ॥१०८
हेन प्रेमभक्ति प्रभु करे परकाश ।
आनन्द हृदये कहे ए लोचन दास ॥१०९

धानशी राग ।

हेनमते नवद्वीपे विहरे ठाकुर ।
आपना पासरि प्रेम प्रकाशे प्रचुर ॥१

स्वतन्त्र हइया हये भकत अधीन ।
सबारे याचये प्रेमा येन अति दीन ॥२
आचम्बिते एकदिन धन्य रम्य बेले ।
निजजन सङ्गे क्रीड़ा करे सन्ध्याकाले ॥३
सबार अङ्गेर बस्त्र निला त काड़िया ।
आनन्दे हासये सबे विनग्न करिया ॥४
सब जन लज्जाय अवश भेल तनु ।
कर आच्छादये अङ्ग चाटु करे पुनु ॥५
बस्त्र देह बस्त्र देह त्रिजगत राय ।
एमन करिते प्रभु तोरे ना जुड़ाय ॥६
ए बोल शुनिया प्रभुर अधिक उल्लास ।
क्षणेक अन्तरे सब जने दिल बास ॥७
एइमते विहरे रसिक शिरोमणि ।
सर्बजने रसदाता सब रस जानि ॥८
बस्त्र दिया तुष्ट कैला सब निज जने ।
आपने नाचये सुखे नाचे भृत्यगणे ॥९
लीलागति चले प्रभु लोके अलक्षित ।
तार निज जन जाने ताहार ईङ्गित ॥१०
श्रीनिवास हरिदास मुरारि मुकुन्द ।
ईङ्गित बुझिया गाय बाड़े प्रेमानन्द ॥११
आनन्दे विह्वल निज गणे नाचे गाय ।
हेनकाले आइला पुन अवधूत राय ॥१२
अवधूत आइला बोल पड़े जय जय ।
आनन्दे सकल लोक सुमधुर गाय ॥१३
मत्त करिबर येन गमन मन्थर ।
हरि हरि ध्वनि शुनि अवश अन्तर ॥१४
पथ आगोलिया चले अङ्ग हेलाइया ।
पथ दुइ गिया रहे चौदिके चाहिया ॥१५
पुलकित सब अङ्ग आपाद मस्तक ।
कदम्ब केशर जिनि एकटि पुलक ॥१६

बक्र ग्रीवाय दिक् नेहारे राङ्गा आँखे ।
क्षणे उनमादे धाय क्षणे उच्च डाके ॥१७
एइमत शतशत लोक पाछे धाय ।
आनन्दे विभोर गेला यथा गोराराय ॥१८
नित्यानन्द देखि प्रभु गौराङ्ग सुन्दर ।
दृढ़ आलिङ्गन करे प्रेमे गरगर ॥१९
दोँहार नयने झरे प्रेमानन्द नीर ।
आनन्दे विभोर दोँहे अथिर शरीर ॥२०
आनन्दे नाचये दोँहे सङ्गे भक्तगण ।
कृष्ण बलराम सङ्गे येन शिशुगण ॥२१
नृत्य अवसाने प्रभु कहिल सबारे ।
नित्यानन्द पाद प्रक्षालन करिबारे ॥२२
नित्यानन्द पादोदक लेह शिरोपरि ।
पाइबे परम प्रेमा आनन्द लहरी ॥२३
हेनमते महाप्रभु आज्ञा यबे कैल ।
शुनिया सबार मने आनन्द बाढ़िल ॥२४
एके चाय आरे पाय प्रभु आज्ञावाणी ।
मस्तके धरिल पाद प्रक्षालन पानी ॥२५
तबे अवधूत प्रभुर आज्ञावाणी शुनि ।
रक्तिम नयाने छलछल करे पानी ॥२६
उठिया आनन्दे सब जने करे कोले ।
उथलिल प्रेमसिन्धु आनन्द हिल्लोले ॥२७
प्रेमाय विह्वल सबे करये क्रन्दन ।
हृदये धरये अवधूतेर चरण ॥२८
प्रेम महा महोत्सव बाढ़िल अपार ।
अन्तरे झलमल करे वाद्येते विकार ॥२९
ऐछन देखिया प्रभु गौर भगवान् ।
अन्तर सन्तोषे चाहे प्रसन्न बयान ॥३०
सब जन स्तव पड़े बेढ़ि चारि पाशे ।
हेनकाले आचम्बिते आइला हरिदासे ॥३१

शुद्ध फटिकेर माला धरिया गलाय ।
हेममणि मुखर मञ्जीर राङ्गा पाय ॥३२
पुलकित अङ्ग सजल नयन ।
प्रेमे टलमल तनु हुङ्कार गर्जन ॥३३
निर्भर प्रेमाय नाचे प्रभुर सम्मुखे ।
ब्रह्माण्डे ना धरे तार प्रेमानन्द सुखे ॥३४
नाचिते नाचिते ब्रह्मा मूर्त्तिमान हैया ।
दण्डवत करे प्रभुर चरणे पड़िया ॥३५
चतुर्मुखे स्तव करे वेद उच्चारिया ।
शान्त हओ बलि प्रभु तोले कोले लैया ॥३६
शान्त हैया हरिदास नाचे कान्दे हासे ।
दिग्विदिग नाहि प्रेमानन्दे भासे ॥३७
हेनकाले अद्वैत आचार्य्य आचम्वित ।
प्रभुर सम्मुखे आसि हैला उपनीत ॥३८
ठाकुर उठिया कैल वन्दन ताँहार ।
सब जन उठिया करिल नमस्कार ॥३९
पाद्य अर्घ्य आचमन दिया व्यवहारे ।
आदेशिल आपने भोजन करिबारे ॥४०
सम्भ्रम पाइला तबे आचार्य्य गोसाँइ ।
आज्ञा शिरे करि अन्न भुञ्जिल तथाइ ॥४१
हेनमते सब निजजन सङ्गे पँहु ।
निभृते बसिया घरे हासे लहु लहु ॥४२
निजजन सङ्गे प्रभु निज कथा कहे ।
ये कारणे कैल प्रभु पृथिवी विजये ॥४३
निजभाव आस्वादन अधर्म विनाश ।
धर्म संस्थापन नामकीर्त्तन प्रकाश ॥४४
देशे देशे प्रकाश करिब घरे घरे ।
व्रजभाव दास्य सख्य वात्सल्य शृङ्गारे ॥४५
भुञ्जाब अधिक राधाकृष्ण प्रेमधन ।
आपनि भुञ्जिब भुञ्जाइब त्रिभुवन ॥४६
सुरासुर गणे दिब एइ प्रेमधन ।
चण्डाल यवन मूर्ख स्त्री बालक जन ॥४७
वृन्दावन सुख आमि आनिया नदीया ।
देशे देशे भुञ्जाइब तो सबारे लैया ॥४८
अति अपरूप कथा नदीया विहार ।
एकत्र से सब कथा करिब प्रचार ॥४९
गदाधर नरहरि वैसे दुइ पाशे ।
श्रीरघु नन्दन पद निकटे विलासे ॥५०
अद्वैत आचार्य्य आर नित्यानन्द राय ।
आपने ठाकुर निज गुणगाथा गाय ॥५१
मुरारि मुकुन्द दत्त आर श्रीनिवास ।
हरिदास आदि यत प्रेमार आवास ॥५२
शुक्लाम्वर वक्रेश्वर श्रीमान् सञ्जय ।
श्रीधर पण्डित आदि यत महाशय ॥५३
एकोजन महिमा कहिते पारे केबा ।
या सबारे लैया अवतरे गौरदेवा ॥५४
उपमा दिबारे नाहि नदीया प्रकाश ।
आनन्द हृदये कहे ए लोचन दास ॥५५

षष्ठ अध्याय

जगाइ माधाइ उद्धार ।

गुर्ज्जरी राग । दिशा ॥

प्राण गोराचाँद मोर हय ।
ना हारे हारे आरे हय ॥ मूर्च्छा ॥
हरि राम नारायण शचीर दुलाल हेम गोरा । ध्रु ।

कहिब अपूर्व कथा शुन सर्वजन ।
शुनिले सकल पाप हबे विमोचन ॥१
नवद्वीपे गौरचन्द्र आपन आबासे ।
शिष्यगण सङ्गे आछे विनोद विलासे ॥२

निज भक्तगण सब करि एक मेलि ।
निजगुण सङ्कीर्त्तन प्रेमानन्दे भुलि ॥३
हासिया कहिल प्रभु भक्त सबाकारे ।
एइ मोर हरिनाम देह घरे घरे ॥४
नवद्वीपे बाल वृद्ध वैसे यत जन ।
चण्डाल दुर्गति आर सज्जन दुर्जन ॥५
सबारे शिखाओ हरिनाम ग्रन्थि करि ।
अनायासे सब लोक याउ भव तरि ॥६
शुनिया सकल भक्त कहिल प्रभुरे ।
ना पारिब हरिनाम दिते घरे घरे ॥७
एइ नवद्वीपे एक आछये दुरन्त ।
अति दुराचार महापापे नाहि अन्त ॥८
महापापी ब्राह्मण से आछे दुइ भाइ ।
नवद्वीपेर ठाकुर से जगाइ माधाइ ॥९
ब्राह्मणो यवनी गुर्वङ्गना नाहि एड़े ।
सुरापान पाइले सकल कर्म छाड़े ॥१०
देव गुरु ब्राह्मण हिंसये निरन्तर ।
बाहिर हैले विनि बधे नाहि याय घर ॥११
ब्रह्म बध गो बध स्त्री बध शत शत ।
लिखिते ना पारि पाप करियाछे कत ॥१२
गङ्गाकूले वैसे गङ्गास्नान नाहि करे ।
देवता पूजये नाहि आजन्म भितरे ॥१३
निरन्तर स्वजन बान्धवे करे दण्ड ।
कृष्णनाम सङ्कीर्त्तने बड़इ पाषण्ड ॥१४
सहस्र कायस्थ यदि शत जन्त लेखे ।
तथापि ताहार पाप अन्त नाहि देखे ॥१५
एकदिन आछे प्रभु निज जन मेले ।
कथार प्रसङ्गे तार कथा हेनकाले ॥१६
कहिल सकल लोक प्रभु विद्यमाने ।
शुनिया रुषिला प्रभु गणे मने मने ॥१७
अरुण वदन भेल राङ्गा दुटि आँखि ।
ये कहिले तोमरा अन्तरे पाइ साक्षी ॥१८
अजामिल नामे पापी आछिल ब्राह्मण ।
मरिवार काले नाम लैल नारायण ॥१९
पुत्र स्नेहे नारायण नाम लैल सेह ।
वैकुण्ठे चलिला द्विज पाइया दिव्य देह ॥२०
ताहार अधिक पापी जगाइ माधाइ ।
उहार निस्तार हबे केमन उपाय ॥२१
ताहार लागिया मोर अन्तर कातर ।
ये किछु कहिये सब शुनह उत्तर ॥२२
हरिनाम सङ्कीर्त्तन कलियुग धर्म ।
नाम गुण सङ्कीर्त्तने साधिब सब कर्म ॥२३
आनह येखाने येबा आछे भक्तगण ।
मिलिया करिब आजि नाम सङ्कीर्त्तन ॥२४
गायन वायन लइ मृदङ्ग करताल ।
उच्चस्वरे हरिनाम कीर्त्तन रसाल ॥२५
नगरे बेड़ाब आजि कीर्त्तन करिया ।
आइल सकल भक्त ए बोल शुनिया ॥२६
अद्वैत आचार्य्य आर तार निज जन ।
अवधूत नित्यानन्द प्रसन्न वदन ॥२७
हरिदास श्रीनिवास लैया चारि भाइ ।
मुरारि मुकुन्द दत्त पण्डित गदाइ ॥२८
श्रीचन्द्रशेखराचार्य्य आर शुक्लाम्बर ।
सर्वजन मिलि आइला ठाकुरेर घर ॥२९
येखाने आछिल भक्तगण यत यत ।
प्रभुर बाड़ीते आसि हइल एकत्र ॥३०
एकत्र लइया सबे सङ्कीर्त्तन करि ।
विजय करिला विश्वम्भर गौरहरि ॥३१
नदीया नगर भेल आनन्द हिल्लोल ।
गगने उठिल ध्वनि हरि हरि बोल ॥३२

करताल मृदङ्ग आर कीर्त्तनेर रोले ।
चतुर्द्दिके शुनिमात्र हरि हरि बोले ॥३३
निजघरे शुतियाछे जगाइ माधाइ ।
निज मदे मत्त निद्रा याय दुइ भाइ ॥३४
सेइ पथे कीर्त्तन करिया प्रभु याय ।
नदीयार लोक सब देखिबारे धाय ॥३५
जागिल दुइ भाइ कीर्त्तनेर रोले ।
मुख तुलि चाहे क्रोधे धर् धर् बोले ॥३६
राङ्गा दु'नयन करि चाहे क्रोध दिठे ।
किना ध्वनि शुनि कर्णे माइल येन जाठे ।३७
हृदयेर शेल येन एकटि शबद ।
जोते साध थाके यदि हउ निशवद ॥३८
ताहार काछेर लोक कहे तार आगे ।
सम्बरण कर गोसांइ ! क्रोध कर काके ३९
आज्ञा पाइले याब एक निषेध्र करिब ।
काहार शकति आर ए पथे आसिब ॥४०
जगन्नाथ सुत द्विज निमाइ पण्डित ।
कीर्त्तन करये सब ब्राह्मण बेष्टित ॥४१
निषेध करह तारा याउ आन पथे ।
निशबदे रहु यदि साध थाके जीते ॥४२
मिछा गोल करि मरे नाहि जाने मूल ।
मोर हाते हाराइबे जाति प्राण कुल ॥४३
इहा बलि पाठाइल आपनार दूत ।
कहये ठाकुर आगे शुन शचीसुत ॥४४
अधिक करये हरि नाम संकीर्त्तन ।
बाहु तुलि हरि हरि बोलये सघन ॥४५
दिगुण करिया प्रेमा बाढ़ाय उल्लास ।
हरि हरि बोल ध्वनि परशे आकाश ॥४६
पापिष्ठ हृदय तारा सहिबारे नारे ।
चलिला से दुइ भाइ बाहिर दुयारे ॥४७
क्रोधे राङ्गा आँखि तार अरुण वदन ।
पड़िते पड़िते याय अङ्गेर बसन ॥४८
टलढल करि याय क्रोधे अचेतन ।
थाक् थाक् बलि करे तर्जन गर्जन ॥४९
राङ्गा दुनयन करि बले क्रोध भरे ।
नाशिब वैष्णव सब नदीया नगरे ॥५०
सम्मुखे दाड़ाइया तारा चारिपाने चाय ।
आपना चिनिया याह बड़ डाके कय ॥५१
आरे रे वामना तोर जीते लागे शनि ।
इहा बलि दुर्वचने पाड़े गालिध्वनि ॥५२
क्रोध देखि नदीयार लोक तरासित ।
चारिपाने चाहि सबे हइला महाभीत ॥५३
तर्जिया गर्जिया तबे दुइ भाइ चले ।
बाहु तुलि भक्तगण हरि हरि बले ॥५४
अद्वैत आचार्य्य गोसाँइ आर नित्यानन्द ।
श्रीनिवास हरिदास मुरारि मुकुन्द ॥५५
आपने ठाकुर सेइ विश्वम्भर राय ।
निजगण सङ्गे करि हरि गुण गाय ॥५६
द्विगुण करिबा गाय बाढ़ाय उल्लास ।
हरि हरि बोल ध्वनि परशे आकाश ॥५७
हरिगुण गाय सुखे नाहि अबसाद ।
जगाइ माधाइ क्रोधे करे परमाद ॥५८
हरिनाम दुइभाइ सहिबारे नारे ।
बेगेते धाइल तारा भक्त मारिबारे ॥५९
दीन दयार्द्र चित्त नित्यानन्द राय ।
अश्रुपूर्ण लोचनेते दोँहा पाने चाय ॥६०
से करुण आँखि देखि पापी ना गलिल ।
तबे त सम्मुखे निताइ गौर दाँड़ाइल ॥६१
देखि जगाइर मन गेल दरविया ।
दाँड़ाये रहिल जगा स्तम्भित हइया ॥६२

माधाइ क्रोधेते धाय हाते लैया दण्ड ।
सम्मुखे पाइल भाङ्गा कुम्भ एकखण्ड ॥६३
कलसीर काणा से फेलिया मारे रोखे ।
निर्भरे लागिल नित्यानन्देर मस्तके ॥६४
बिषम बाजिल काणा रक्त पड़े धारे ।
देखि सर्व निजजन हाहाकार करे ॥६५
फुटिल मुटकी शिरे व्यथा नाहि गणे ।
गौर बलि नाचे निताइ हरषित मने ॥६६
मारिलि कलसीर काणा सहिबारे पारि ।
तोदेर दुर्गति आमि सहिबारे नारि ॥६७
मारिलि मारिल भाल ताहे क्षति नाइ ।
सुमधुर हरिनाम मुखे बल भाइ ॥६८
नित्यानन्द सब अङ्गे रक्त पड़े धारे ।
प्रेमानन्दे नित्यानन्द गौराङ्ग नेहारे ॥६९
प्रेम भरे महाप्रभु निताइ कोले निल ।
आपन बसन दिया रक्त मुछाइल ॥७०
तबे त ठाकुर बड़ चित्ते पाइया दुःख ।
डाकिया कहये सेइ सेइ पापिष्ठ सम्मुख ७१
तोमरा दोँहार अधिक दुराचार नाहि ।
पाप बलि यार नाम सञ्चरे ए मही ॥७२
सकल करिलि मात्र ना करिलि एक ।
एखने करिलि ताहा एइ परतेक ॥७३
इहा बलि गौर रहे नित्यानन्द काछे ।
आपन बसन तार शिरे बान्धियाछे ॥७४
नित्यानन्द श्रीपादेर जानेन महत्व ।
भूमिते पड़ये पाछे ताँहार रकत ॥७५
पृथिवीर अमङ्गल तबे जानि हये ।
मस्तके बान्धिल बस्त्र प्रभु एइ भये ॥७६
तखने से महाप्रभुर क्रोध उपजिल ।
सुदर्शन चक्र बलि स्मरण करिल ॥७७
सुदर्शन बलि प्रभु डाके बार बार ।
शुनिया मुरारि गुप्त छाड़ये हुङ्कार ॥७८
शुनिया कहये शुन प्रभु विश्वम्भर ।
आज्ञा पाङ ए दुइ पाठाङ यम घर ॥७९
शुनि नित्यानन्द धरेन मुरारिर हाते ।
हेनकाले सुदर्शन आइला साक्षाते ॥८०
डाकियाछे सुदर्शने क्रोधे गौर हरि ।
दाण्डाइल सुदर्शन करजोड़ करि ॥८१
कि कारणे आज्ञा मोरे करिला ईश्वर ।
जय जय महाप्रभु शचीर कोङर ॥८२
प्रभु बले जगाइ माधाइरे संहर ।
नित्यानन्द मारि व्यथा दिलेक अन्तर ॥८३
शुनि सुदर्शन अग्नि प्रलय हइया ।
जगाइ माधाइ पाने चलिला धाइया ॥८४
जगाइ माधाइ तेज देखि सुदर्शन ।
काँपिते लागिल अङ्ग तरासित मन ॥८५
सुदर्शन देखि प्रभु नित्यानन्द हासे ।
कि करिला भगवान् ऐश्वर्य्य प्रकाशे ॥८६
दयार सागर मोर नित्यानन्द राय ।
ना मारिह बलि सुदर्शने निवारय ॥८७
करुणाते उद्धार करिल त्रिभुवन ।
दीन हीन पतित पामर दुष्टजन ॥८८
जगाइ माधाइ तारि दीनबन्धु हब ।
पतित पावन नामेर गरिमा राखिब ॥८९
इहा बलि नित्यानन्द विनय करिया ।
कहिलेन प्रभु आगे चरणे धरिया ॥९०
एइ दुइ पतिते प्रभु मोरे देह दान ।
पतित पावन नाम थाकुक व्याख्यान ॥९१
आर आर योगे दैत्य संहारि उद्धार ।
सशरीरे एइ दुइर करह निस्तार ॥९२

करजोड़ि प्रभुरे बोलये नित्यानन्द ।
ना ह'लो निस्तार कलि पाषण्ड दुरन्त ॥९३
संकीर्त्तन आरम्भे से तोमार अवतार ।
केमने करिबे कलि जीवेर निस्तार ॥९४
शुनि नित्यानन्द वाणी प्रभु गौरचन्द्र ।
कान्दिते लागिला कोले करि नित्यानन्द ॥९५
प्रभु बले नित्यानन्द पतित पावन ।
तोमारे भजिले जीव पाय प्रेमधन ॥९६
तोमा हैते हबे कलि जीवेर निस्तार ।
तोमा बहि कृपार समुद्र नाहि आर ॥९७
तोर वश हङ मुइ सर्वशास्त्रे कहे ।
ये तुमि कहिले ताहा करिव निश्चये ॥९८
एकबार नित्यानन्द बले जन्म धरि ।
से जन पवित्र हैल से लोक आमारि ॥९९
धन्य धन्य गौरचन्द्र प्रभु दयामय ।
धन्य धन्य नित्यानन्द रोहिणी तनय ॥१००
तबे घरे गेला प्रभु निजगण लैया ।
जगाइ माधाइ रहे बिस्मित हइया ॥१०१
महाप्रभुर दरशन संकीर्त्तन शब्दे ।
निर्मल हइया तारा रहे एक स्तब्धे ॥१०२
मने मने अनुमान करये अन्तरे ।
विचार करये महाप्रभुर उत्तरे ॥१०३
हेन पाप नाहि याहा मोरा नाहि करि ।
याहा नाहि करि ताहो सन्न्यासीरे मारि१०४
चिन्तिते चिन्तिते हैल अन्तर निर्मल ।
देख देख महाप्रभुर करुणार बल ॥१०५
कातर हइया दोँहे धाय उर्द्ध्वमुखे ।
चमक लागिल देखि नदीयार लोके ॥१०६
महाप्रभुर द्वारे गिया हैल उपनीत ।
ठाकुर ठाकुर बलि डाके विपरीत ॥१०७

निज जन लैया प्रभु बसि आछे घरे ।
के मोरे डाकये देख बाहिर दुयारे ॥१०८
एखनि आमार ठाँइ आनह मुरारि ।
आज्ञा पाइ दोँहारे आनिला कोलेकरि १०९
प्रभुरे देखिया तारा अति आर्त्तनादे ।
चरणे पड़िया तबे दुइ भाइ काँदे ॥११०
पतित पावन प्रभु करुणार सिन्धु ।
सर्व लोक नाथ से बिशेषे दीनवन्धु ॥१११
करुणा सागर प्रभु सदय हृदय ।
आर्त्तजन आर्त्ति देखि तखनि द्रवय ॥११२
तुलिया पुछिल शुन जगाइ माधाइ ।
कि कारणे कान्द केने आइला मोरठाँइ११३
नवद्वीपेर राजा हश्रो तोमरा दुइजन ।
चतुर हइया केने कान्दह एखन ॥११४
ए बोल शुनिया बले जगाइ माधाइ ।
तोमार कृपाय मोरा आइलुँ तोमाठाँइ ११५
गो बध स्त्री बध पाप करियाछि यत ।
लेखा जोखा नाहि नर बध कैलुँ कत ॥११६
धिक् याउ आमार नदीयार ठाकुराल ।
ब्रह्महत्या गुरुहत्याय ए देह आमार ॥११७
ब्राह्मणी यवनी गुर्बाङ्गना नाहि एड़ि ।
चण्डालिनी आदि करि काहुके ना छाड़ि११८
हिंसा बहि नाहि करि जगतेर लोके ।
देवकर्म पितृकर्म नाहि बासे मोके ॥११९
तोर काछे मुइ छार आर किबा बलि ।
यत पाप कैलुँ तत शिरे नाहि चुलि ॥१२०
अजामिल महापापी बले सर्वजन ।
आमाअधिक नहे कहिल वचन ॥१२१
पुत्र स्नेहे नारायण नाम लैल सेह ।
वैकुण्ठे चलिला द्विज पाइया दिव्यदेह १२२

निस्तार करिल तारे नाम नारायणे ।
आमा निस्तारिते नारे आसिया आपने १२३
आमार निस्तार नाहि मो जान आपना ।
आमारे कि गुणे तुमि करिबे करुणा ॥१२४
सहस्र कायस्थ यदि शत जन्मे गणे ।
तबु आमा दोँहा पाप ना हय गणने ॥१२५
एतेक कातर वाणी शुनिया ठाकुर ।
अकैतव देखि दया बाड़िल प्रचुर ॥१२६
आर्त्तजनार आर्त्ति देखि ठाकुरेर आर्त्ति ।
कृपापाराबार प्रभु दयामय मूर्ति ॥१२७
करुणा सागर करि करुणा प्रकाश ।
करे धरि लैया गेला जाह्नवीर पाश ॥१२८
धाइल नदीयार लोक देखिते कौतुक ।
करुणा प्रकाशे प्रभु अति अपरूप ॥१२९
ब्राह्मण सज्जन सब दाण्डाइया चाहे ।
सबा विद्यमाने प्रभु दयावाणी कहे ॥१३०
तोर पाप परिग्रह करिब त आमि ।
आपना सकल पापेर उत्सर्ग तुमि ॥१३१
इहा बलि हात पाते तुलसीर तरे ।
तुलसी ना देइ तारा दुइ भाइ डरे ॥१३२
दया करि कहे पुन गौर भगवान् ।
जगाइ माधाइ तोरा पाप देरे दान ॥१३३
जगाइ माधाइ कहे शुन प्रभु तुमि ।
आमार यतेक पाप लिखिते ना जानि ॥१३४
आमि महाधमाधम पापाशय पाप ।
तोरे पाप दिते मोर डरे हिया काँप ॥१३५
ए बोल शुनिया आँखि करे छलछल ।
मेघेर गम्भीर नादे बले हरि बल ॥१३६
पुनरपि पापदान चाहे कर पाते ।
जगाइ माधाइ से तुलसी दिल हाते ॥१३७
चतुर्द्दिके भेल ध्वनि हरि हरि बोल ।
जगाइ माधाइ धरि प्रभु देइ कोल ॥१३८
निस्तारिला दुइभाइ जगाइ माधाइ ।
एहेन पातकी प्रभु परशिते पाइ ॥१३९
प्रेमे गदगद स्वरे आध आध बले ।
बसन भिजिया गेल नयानेर जले ॥१४०
पुलके भरिल अङ्ग कम्प कलेबरे ।
चरणे पड़िया तारा कहये कातरे ॥१४१
एहेन ठाकुर आर आछे कोन् जन ।
दयार सागर महा पतित पावन ॥१४२
जगाइ माधाइ हेन पातकी निस्तारे ।
श्रीअङ्ग परशे तारा नाचे प्रेमभरे ॥१४३
जगाइ माधाइ पाप परिग्रह करि ।
आपने नाचये प्रभु विश्वम्भर हरि ॥१४४
ऐहेन करुणा निधि के आछे ठाकुर ।
दोष ना देखये दया करे एतदूर ॥१४५
जीवेर उद्धार करि नाचये उल्लासे ।
ए बड़ भरसा बान्धे ए लोचन दासे ॥१४६

वनमाली भिक्षुके कृपा

धानशी राग ।

प्रभु रे द्विज चाँद नारे हय ।
जगत् उद्धार लागि पाते नाना फाँद ॥ आरे हय ॥
गदाधर गौराङ्ग नरहरि जय जय ।
शुनिले गौराङ्ग कथा प्रेम लभ्य हय ॥१
आर दिने आर अपरूप कथा शुन ।
नवद्वीपे प्रकाश परम महाधन ॥२
निजगृहे बान्धव सहिते आछे पहुँ ।
प्रकाशये वदन कमले कथा लहु ॥३

अमिया मधुर धारा बहे अनिबार ।
सिनइल भकत बेकत मातोयार ॥४
एइमने आछे पहुँ आनन्द कौतुके ।
आचम्बिते आइल तथा एक ये भिक्षुके ॥५
बनमाली नाम तार पुत्र एक सङ्गे ।
विप्रकुले जन्म वैसे पूर्वदेश बङ्गे ॥६
दारिद्रय ज्वालाय दग्ध आइल एइ देशे ।
गौरचन्द्र देखि विप्र पाइल सन्तोषे ॥७
देखिल त गौरचन्द्र भकत बेष्टित ।
पुत्रेर सहित विप्र भेल आनन्दित ॥८
पुत्रेर सहित विप्र अनुमान करे ।
कहिते ना पारे कण्ठ गदगद स्वरे ॥९
भालइ हइल आमि भै गेल दरिद्र ।
भिक्षा करिबारे आइलुँ हइलुँ पवित्र ॥१०
निश्चय जानिलुँ 'गौरचन्द्र भगवान्' ।
अनुभबे जानिलुँ ए कभु नहे आन ॥११
जनम सफल आजि हैल हेन बासि ।
देखिलुँ नयने विश्वम्भर गुणराशि ॥१२
देखिते नयन हिया जुड़ालो आमार ।
निबाइल दुरन्त दारिद्रय ज्वाला छार ॥१३
अमिया आहारे येन सन्तोष अन्तर ।
गौरचन्द्र देखिया सिञ्चिल कलेबर ॥१४
तबे गौर भगवान् देखिया ताहारे ।
करुण नयाने चाहे ब्राह्मण दोँहारे ॥१५
सुखे हरिगुण गाय से दोँहार सने ।
प्रभुर प्रसादे तारा पाइल प्रेमधने ॥१६
आनन्दे नाचये विप्र नाचे तार पुत्र ।
तिलेके घुचिल तार ए संसार सूत्र ॥१७
हेन महाप्रभु गोरा करुणार सिन्धु ।
इहार अधिक आर नाहि दीनबन्धु ॥१८

तार परदिन प्रभु सङ्कीर्त्तन माझे ।
नाचये ठाकुर विश्वम्भर नटराजे ॥१९
हेनकाले से दुइ ब्राह्मण आचम्वित ।
देखिल बालक एक चमकित चित ॥२०
गौर शरीरे प्रभु भेल श्यामतनु ।
कटि पीतधटी शोभे करे वर वेणु ॥२१
मयूर पाखार चूड़ा घन उड़े वाय ।
सेइ रूप देखे यत अनुगत गाय ॥२२
राधा सङ्गे वृन्दावन विपिनेर माझे ।
देखिलेन श्याम कलेबर नटराजे ॥२३
यमुना तथाइ देखे गोवर्द्धन गिरि ।
बहुला भाण्डीर मधुवन आदि करि ॥२४
गो गोपी गोपाल देखे आवरण तार ।
नवद्वीपे देखिलेन मदनगोपाल ॥२५
देखिया मूर्च्छित हैया पड़िल ब्राह्मण ।
पुलके पूरिल अङ्ग सजल नयन ॥२६
घन घन हुहुङ्कार मारे मालसाट् ।
एइ कृष्ण कृष्ण बलि पाताइल हाट ॥२७
तबे महाप्रभु कैल नृत्य सम्बरण ।
दरिद्र से धन्य हैल पाइया प्रेमधन ॥२८
शुन सब जन हेन गोरा गुणगाथा ।
करुणा प्रकाशे एइ नवीन विधाता ॥२९
कर्मबन्ध घुचाइया प्रेमधन देइ ।
एमन ठाकुर आर आछे कोन् ठाँइ ॥३०
संसारेर बहि सृजे आपन संसार ।
स्वविषया प्रेमभक्ति विषयेर पार ॥३१
दिव्यमाला चन्दन प्रसाद परे निति ।
ममता नाहिक सब जनेरे पिरीति ॥३२
निःसङ्ग हइया सङ्ग विने नाहि जीये ।
अकर्म हइया कर्म करये विधिये ॥३३

वेदेर विचार विधि ये आछे उचित ।
सकल करये सेइ कार्य्ये विपरीत ॥३४
ऐछन प्रकाशे निज प्रेमभक्ति धन ।
एतेके बलिये नब विधाता रतन ॥३५
एहेन करुणा सिन्धु मोर गोरा राय ।
अनायासे सब जन पर धन पाय ॥३६
एहेन ठाकुर आर नाहि प्रेमदाता ।
कहये लोचन भज नवीन विधाता ॥३७

श्रीनृसिंह आवेश ।

यथा राग ।

ये देखेचे गोरा रूप एकबार पासरिते नारे आर ।
झुरि मरे जनम अवधि रे॥ ध्रु ॥

तबे आर एकदिने शुन अपरूप ।
श्रीवास पण्डित घरे आनन्द कौतुक ॥१
पितृकर्म करे सेइ श्रीवाश पण्डित ।
शुनये सहस्रनाम अति शुद्ध चित ॥२
हेनकाले सेइ ठाँइ गेला गौरहरि ।
शुनये सहस्र नाम मनोरथ पूरी ॥३
शुनिते शुनिते भेल नृसिंह आवेश ।
क्रोधे राङ्गा दु'नयन उर्द्ध्व भेल केश ॥४
पुलकित सब अङ्ग अरुण वरुण ।
घन घन हुहुङ्कार सिंहेर गर्जन ॥५
आम्बिते गदा लैया धाइल सत्वरे ।
देखिया सकल सोक काँपिल अन्तरे ॥६
पलाय सकल लोक ना बान्धये केश ।
सहिते ना पारे से प्रभुर क्रोधावेश ॥७
पलायन पर लोक देखि नरहरि ।
क्षणेके छाड़िल गदा आबेश सम्बरि ॥८
सर्व अवतार वीज शचीर नन्दन ।
यखने ये पड़े मने ह्ये त तेमन ॥९
भाव सम्बरिया प्रभु बसिला आसने ।
बिस्मित हइया किछु बलिला बचने ॥१०
ना जानि कि अपराध भै गेल आमार ।
किबा चिते अनुमान भेल तो सबार ॥११
ए बोल शुनिया सबे बलिला बचन ।
कि तोमार अपराध कि कह कथन ॥१२
श्रीवास कहिल तोमा देखिल ये जन ।
ताहार हइल सर्व बन्ध बिमोचन ॥१३
तार परदिने कथा शुन सर्वजन ।
आचम्बिते आइल एक शिवेर गायन ॥१४
नमस्कार करि गौर हरिर चरणे ।
महेशेर गुण गाय आनन्दित मने ॥१५
शिव शिव बलि डाके परम उल्लासे ।
शिवेर भकति तार देहे परकाशे ॥१६
शुनि आनन्दित मन भै गेल ठाकुर ।
शिव गुण शुनि सुख बाड़िल प्रचुर ॥१७
शिवेर आवेशे नृत्य करये कखन ।
आपना पासरे सबे शिवेर गायन ॥१८
तार सम भाग्यवान् नाहि कोनो जन ।
आपने ठाकुर कैल स्कन्धे आरोहण ॥१९
स्कन्धे करि आनन्दे से नाचये गायन ।
आवेशे हैल प्रभुर रकत लोचन ॥२०
शिवेर आवेशे कहे शिवेर कथन ।
खटक डम्बरु मुखे शिङ्गार गर्जन ॥२१
राम कृष्ण बलिया से डाके काँदे हासे ।
क्षणेक कान्दये गोरा शिबेर आवेशे ॥२२
श्रीवास पण्डित सेइ सर्वतत्त्व जाने ।
शिव स्तव पड़े तेँह सावधान मने ॥२३

पड़ये महेश स्तव श्रीमुकुन्द दत्त ।
आनन्दे नाचये तारा जाने सब तत्त्व ॥२४
गायनेर कान्धे हैते नामिला ठाकुर ।
हरि परायण हरि गायेन प्रचुर ॥२५
आनन्दे नाचये येन मदे मातोयार ।
हरिगुण गाय सुखे आनन्द पाथार ॥२६
करुणा समुद्र करे करुणा प्रकाश ।
शुनिते आनन्दे भोरा ए लोचन दास ॥२७

यथाराग ।

आमार गौराङ्गेर गुणे केबा नाहि कान्दे ।
अखिल जीवेर मन प्रेम दिया बान्धे ॥ ध्रु ॥

आर अपरूप शुन तार परदिने ।
बान्धबे बेष्टित प्रभु नृत्य अबसाने ॥१
भूमिते पड़िया प्रभु दण्डवत करे ।
आनन्दे सकल लोक हरि हरि बले ॥२
हेनइ समये एक ब्राह्मण आसिया ।
प्रभु पदाबुज धूलि लइल हासिया ॥३
देखि गौर भगवान् सत्वरे उठिला ।
ब्राह्मण चरित देखि दुःखित हइला ॥४
महा अनुताप करि बिरस वदन ।
असन्तोषे नासिकाय निश्वास सघन ॥५
सत्वरे उठिया प्रभु धाइल आचम्बिते ।
जाह्नवीर जले झाँप दिलेन त्वरिते ॥६
जले मग्न हैल प्रभु ना पाइ देखिते ।
सब निज जन झाँप दिल पाछे ताते ॥७
नदीयार सब लोक गणिल प्रमाद ।
कान्दये सकल लोक गणिल बिषाद ॥८
पुत्र पुत्र करि धाय शची तार माता ।
झाँप दिते चाहे विश्वम्भर हरि यथा ॥९
उन्मति पागली शची कान्दे उभराय ।
हाकान्द कान्दनाय कान्दे भूमिते लोटाय १०
ऐछन प्रमाद देखि अवधूत राय ।
प्रभुर उद्देशे झाँप दिलेन गङ्गाय ॥११
जले मग्न हैया प्रभुर धरिलेन हाते ।
धरिया तुलिल गङ्गा कूले आचम्बिते ॥१२
देखिया सकल लोक अति आनन्दित ।
सब निज जन कान्दे पाइया पिरीत ॥१६
शचीदेवी कान्दे कोले करि विश्वम्भर ।
श्रीनिवास मुरारि मुकुन्द शुक्लाम्बर ॥१४
गदाधर नरहरि कान्दे पद धरि ।
बासुदेव जगदानन्द कान्दे मुख हेरि ॥१५
हरिदास आदि यत यत निज जन ।
गौर मुख देखि कान्दे तरासित मन ॥१६
आर यत जन दुःख पाइयाछे बिस्तर ।
गौरमुख देखि सबे सुखे गेला घर ॥१७
तबे सब जन मिलि प्रभु विश्वम्भर ।
मुरारि गुप्तेर घर गेला त सत्वर ॥१८
विजय मिश्रेर घर गेला आचम्बिते ।
रजनी बञ्चिया प्रभु उठिला प्रभाते ॥१९
भ्रमण करये तार ना बुझिये मन ।
तराह पाइला सङ्गे छिला यत जन ॥२०
ब्राह्मण सज्जन आर यत निज गणे ।
सबे मिलि निवेदिल विनय बचने ॥२१
परसन्न हओ प्रभु गौर गुणनिधि ।
करुणा करह प्रभु मोरा अपराधी ॥२२
कृपा कर महाप्रभु जाड़ अति रोष ।
एमन कतेक निबे सेवकेर दोष ॥२३

करुणा सागर प्रभु करुणा विग्रह ।
करुणार अवतार लोक अनुग्रह ॥२४
एखन बिमुख केने हओ त आपने ।
आमा कि जानि तोर चित आचरणे ॥२५
घरेरे आइस प्रभु ! घुचाह प्रमाद ।
निज अनुगत जने करह प्रसाद ॥२६
एतेक विनय यबे कैल निज जन ।
सदय हृदय प्रभु द्रविला तखन ॥२७
घरेरे आइला प्रभु आनन्दित मने ।
निज गुण गाय निज अनुगत सने ॥२८
नदीया नगरे भेल आनन्द उल्लास ।
गोरागुण गाय सुखे ए लोचन दास ॥२९

श्रीकृष्णभक्तिशिक्षण ।

बराड़ी राग । दिशा
हय रे हय आरे हय ॥ मूर्च्छा ॥
निछनि याइ रे गोरा रूपेर बालाइ लैया ।
बिलाइल प्रेमधन जगत भरिया ॥

शोक छाड़ि हृष्ट मने तबे गौर हरि ।
निजगण सङ्गे गेला श्रीवासेर बाड़ी ॥१
श्रीनिवास हरिदास आदि यत जन ।
बसिया ठाकुरेर काछे निरीखे वदन ॥२
हेनकाले महाप्रभु सबा सन्निधाने ।
कहये अन्तर कथा शुने सर्वजने ॥३
धन जन यौवन सकल अकारण ।
ना भजिनु सत्य वस्तु कृष्णेर चरण ॥४
निरन्तर दगधे संसारे मोर हिया ।
ना करिलुँ कृष्णकर्म हेन देह पाइया ॥५
संसारे दुर्ल्लभ एइ मानुष शरीर ।
कृष्ण भजिबार तरे पुरुष नारीर ॥६
कृष्ण ना भजिले एइ मिछा सब देह ।
पति सुत पिता माता सब मिछा गेह ॥७
मायेरे छाड़िया आमि याब दिगन्तर ।
कहिल सबारे एइ मरम उत्तर ॥८
सर्वलोक बले केने बिरुद्ध करिये ।
मुरारि कहये इहा शुनिते मरिये ॥९
केहो बा बलये इहा शुन महाप्रभु ।
आमरा त कारो मुखे नाहि शुनि कभु ॥१०
ए बोल शुनिया सेइ गौर भगवान् ।
मुरारिरे धरि दिल आलिङ्गन दान ॥११
मुरारि करिया कोले सम्भाइल घरे ।
प्रभु आलिङ्गने वैद्य आपना पासरे ॥१२
पुलकित सब अङ्ग आपाद मस्तक ।
पड़िला त प्राचीन आछिला एक श्लोक ॥१३

तथाहि श्रीमद्भागवते (१०।८१।१६)—

क्वाहं दरिद्रः पापीयान् क्व कृष्णः श्रीनिकेतनः ।
ब्रह्मबन्धुरिति स्माहं बाहुभ्यां परिरम्भित ॥१४

विप्र सुदामा ने कहा—अहो ! कहाँ मैं दीन, दरिद्र; पापीष्ठ हूँ, और श्रीनिकेतन श्रीकृष्ण कहाँ मैं अति अयोग्य ब्राह्मण होने पर भी श्रीभगवान् ने मुझको निज बाहुद्वय से ग्रहण कर आलिङ्गन किया

ए बोल शुनिया से प्रकाशे ठाकुराल ।
कोटि रबि किरण जिनिया उजियार ॥१५
आसने बसिया कहे बचन मधुर ।
एइ आमि चिदानन्द ना भाबिह दूर ॥१६
ए बोल शुनिया सबे आनन्दे विह्वल ।
पुलके भरिल ता सबार कलेबर ॥१७
श्रीनिवास पण्डित सेइ उत्तम आचार ।
गङ्गाजले अभिषेक करये ताहार ॥१८

अभिषेक करि पूजा करे यथाविधि ।
ताहार पूजाय तुष्ट हैला गुणनिधि ॥१९
आनन्दे सकल लोक हरिगुण गाय ।
भकत वदन हेरि नाचे गोराराय ॥२०
नरहरि पादपद्म धरि शिरोपरि ।
कहये लोचन दास गौराङ्ग माधुरी ॥२१

———

यथाराग ।

तार परदिने कथा अपूर्व कथन ।
सावधाने शुन सबे कहिब एखन ॥१
शिखाय सकल लोके लोकशिक्षा गुरु ।
करुणा सागर प्रेमभक्ति कल्पतरु ॥२
निज जन बुझाबारे करे यत कार्य्य ।
संहति करिया आदि अद्वैत आचार्य्य ॥३
श्रीनिवास हरिदास मुरारि मुकुन्द ।
गदाधर शुक्लाम्बर राम आदि अन्त ॥४
रघुनन्दन नरहरि श्रीमुकुन्द दास ।
बासुघोष जगदानन्द आदि सर्व्वदास ॥५
यतेक भकत सब संहति करिया ।
देवालये याय प्रभु हरषित हैया ॥६
नेत धटी परिधान कान्धेते कोदालि ।
करे सम्मार्जनी लय निजजन मेलि ॥७
सङ्गेर यतेक जन धरे तार बेश ।
हाते झाँटा कान्धे कोदाल उभ बान्धे केश ८
देवालय मार्जना करिते याय प्रभु ।
हेन अदभुत कथा नाहि शुनि कभु ॥९
कृष्णेर हड्डिप हैया बुले द्वारे द्वारे ।
सकल वैष्णव मेलि सम्मार्जना करे ॥१०
एइमते लोक शिक्षा कराये ठाकुर ।
भजह सकल लोक ये हओ चतुर ॥११
प्रेमभक्ति दाता आर नाहि कोन जन ।
जानिया भजह गौरचन्द्रेर चरण ॥१२
युगे युगे कत कत अवतार आछे ।
भजिले से भजे तार अपरूप पाछे ॥१३
आर केहो नाहि करे हेन ठाकुरालि ।
भक्ति बुझाबारे करे कान्धेते कोदालि ॥१४
ना भजिले भजे हेन जन कोन् युगे ।
घरे धरे बुलि केबा प्रेमभक्ति मागे ॥१५
भजिले सेभजे सेइ बड़इ ठाकुर ।
भक्ते से कहये इहा आने कहे दूर ॥१६
विचार ना करे पात्रापात्र कोनो देशे ।
वृन्दावन धन दिया सभारे सन्तोषे ॥१७
धर्माधर्म पर प्रेम याचइ सबारे ।
तारिल सबारे प्रभु शचीर कुमारे ॥१८
ब्रह्मा महेश्वरे किबा लखिमी अनन्त ।
आपने बलिते नारे गौरगुण अन्त ॥१९
ना भजिले भजे एइ बड़इ ठाकुर ।
ते कारणे गोरा गुणे सदा मन झुर ॥२०
गौराङ्ग चरण गुण स्मरण प्रबल ।
संसार तारिते सबे मात्र एइ बल ॥२१
गोरापद भज भाइ ना करिह हेला ।
संसार तरिते सबे एइ मात्र भेला ॥२२
एहेन ठाकुर केहो नाहि हय आर ।
कहये लोचन सबे गोरा अबतार ॥२३

———

कुष्ठव्याधि निस्तार।

धानशी राग।

हरि राम नारायण शचीर दुलाल हेमगोरा। ध्रु।

आर अपरूप शुन गौराङ्ग चरित।
शुनिले पाइबे इथे बड़इ पिरीत ॥१
निजजन सने पहुँ पथे चलि याय।
कृष्णकथा रसे अङ्ग आवेशे दोलाय ॥२
सेइ पथे छिल कुष्ठव्याधि एकजने।
विनय करिया कहे गौराङ्ग चरणे ॥३
भूमिते पड़िया सेइ परणाम करे।
कातर हइया किछु सविनये बले ॥४
सबलोके बले प्रभु तुमि जनार्दन।
तुमि से पुरुषोत्तम तुमि सनातन ॥५
तुमि देवदेवेश्वर त्रिजगत बन्धु।
आमार उद्धार कर करुणार सिन्धु ॥६
पतित पावन शुनि आइलुँ तोर ठाँइ।
तारह आमारे तुमि सबार गोसाँइ ॥७
ओहे अकिञ्चन नाथ शचीर दुलाल।
तारह आमारे प्रभु गौराङ्ग गोपाल ॥८
आमार अधिक पापी नाहि त्रिभुवने।
दुःसह ए कुष्ठव्याधि कर परित्राणे ॥९
ए बोल शुनिया प्रभु रुषिला अन्तरे।
कोपदृष्ट्ये चाहे कुष्ठव्याधि बराबरे ॥१०
ठाकुर कहये शुन पाप दुराचार।
वैष्णवेर निन्दा तुइ कैलि केने छार ॥११
संसारेर यत जीव सबे मोर मित्र।
वैष्णवेर द्वेष करे सेइ मोर शत्रु ॥१२
आपन निन्दाय आमि कभु नाहि दुखी।
श्रीवासेर निन्दाय केमने हब सुखी ॥१३
अकथ्य बचन तुइ कहिलि ताहारे।
शत जन्म भुञ्जिलेओ ना घुचाब तोरे ॥१४
वैष्णवेर अपराध करे येइ जन।
तार परित्राण आमि ना करि कखन ॥१५
बाहिरे पराण देख एइ मोर देह।
वैष्णव अन्तरे प्राण नाहिक सन्देह ॥१६
वैष्णवेर निन्दा करे ये अधम जन।
नरके पड़ये तार नाहिक शरण ॥१७
वैष्णवेर सेवा करे मोर करे द्वेष।
तार परित्राण करि घुचाइया क्लेश ॥१८
तुइ से पातकी महापामर दुरन्त।
कतकाल नरक भुञ्जिबि नाहि अन्त ॥१९
ए बोल शुनिया विप्र कातर हइल।
भूमिते पड़िया काकु करिते लागिल ॥२०
जय जय महाप्रभु कृपा कर मोरे।
पतित पावन बलि वेदे बले तोरे ॥२१
पतित पावन नाम यदि धरिबे।
आमार निस्तार तबे अबस्य करिबे ॥२२
कत कत उद्धारिले महापापिगण।
आमार उद्धार कर कमल लोचन ॥२३
आमार समान पापी नाहि त्रिभुवने।
दुःख पाइ कुष्ठ व्याधी कर परित्राणे ॥२४
तखने करुणा प्रभुर हैल हृदये।
तथापि वैष्णव वश स्वतन्त्र त नहे ॥२५
तबे सेइ प्रभु गेला श्रीवास आलय।
बसिया सकल कथा कहे महाशय ॥२६
पथेते देखिल कुष्ठ व्याधि एक जन।
अपराध भुञ्जिल से अनेक जनम ॥२७
एबे तोर अपराधे गलित दिव्य देह।
ताहारे देखिया मोर ना जागिल स्नेह ॥२८

परित्राण कर डाके सेइ कुष्ठव्याधि ।
के करिबे परित्राण तोर अपराधी ॥२९
कृपादृष्ट्ये यदि तुमि चाह बा ताहारे ।
तोमार कृपाय तबे पाय से निस्तारे ॥३०
ए बोल शुनिया तबे श्रीवास पण्डित ।
कहे हासि प्रभु ! सब कह विपरीत ॥३१
दुइ महाधम छार मोरे हेन बल ।
मोर छले पातकीरे परित्राण कर ॥३२
मोर ठाँइ तार दोष घुचिल सर्वथा ।
प्रसन्न हइलुँ आमि घुचाओ तार व्यथा ।३३
प्रभु बले श्रीनिवास शुन मोर कथा ।
सबा लैया याओ चलि कुष्ठव्याधि यथा ॥३४
तबे सबे मिलि सुखे सेइ ठाँइ गेला ।
श्रीवासेर पादोदक तार गाये दिला ॥३५
पादोदक बिन्दु से लागिल तार गाय ।
स्वर्णकान्ति हैल देह वेयाधि अलाय ॥३६
महानन्दे तबे तार हृदय पूरिल ।
हरि हरि बलि सुखे नाचिते लागिल ॥३७
पाइल श्रीवास कृपा परम औषधि ।
सेइक्षणे निस्तारिल सेइ कुष्ठव्याधि ॥३८
दिव्य देह लभि तार आनन्द अपार ।
गौराङ्ग बलिया धाय आरति बिथार ॥३९
महाप्रेमे मत्त हैया करये हुङ्कार ।
क्षणे मूर्च्छा याय क्षणे प्रलाप अपार ॥४०
कोथा गेला गौरचन्द्र अन्तरेर चान्द ।
एमन के तारे भवव्याधि महा-आन्ध ॥४१
एथा गौरचन्द्र श्रीनिवास घर हैते ।
कुष्ठव्याधि देखिबारे चलिला त्वरिते ॥४२
पथे कुष्ठव्याधि सने हैल दरशन ।
धरिया पड़िला भूमि प्रभुर चरण ॥४३
तुलिया ताहारे प्रभु कैला आलिङ्गने ।
ब्रह्मार दुर्ल्लभ प्रेम दिला सेइक्षणे ॥४४
हासे कान्दे नाचे गाय गड़ागड़ि याय ।
गदाधर बन्धु बलि नाचिया बेड़ाय ॥४५
सब भक्त आनन्दित ताहारे देखिया ।
चमत्कार हैल देखि सकल नदीया ॥४६
शुन सर्वजन विश्वम्भरेर चरित ।
शुनिले से प्रेमभक्ति पाइबे त्वरित ॥४७
तबे सेइ महाप्रभु अन्तर उल्लास ।
नाचे सेइ विप्र देहे प्रेमार प्रकाश ॥४८
देखिया त महाप्रभु करे हरिनाद ।
निस्तारिल कुष्ठव्याधि कैल परसाद ॥४९
अति अपरूप कथा नदीया प्रकाश ।
शुनिते आनन्दे भोरा ए लोचन दास ॥५०

अष्टम अध्याय

सन्न्यास सूत्र

यथाराग ।

तबे आर एकदिन प्रभु नृत्य करे ।
तखने आछिल एक ब्राह्मण दुयारे ॥१
हेनइ समये आर आइल ब्राह्मण ।
गौरचन्द्र नृत्य देखिबारे करि मन ॥२
द्वारेते ये छिल तारे आसिते ना दिल ।
दु:खित हइया विप्र निज घरे गेल ॥३
आनन्दे नाचये प्रभु किछु ना जानिल ।
कीर्त्तन समापि सबे बिश्राम करिल ॥४
तार परदिने प्रभु गङ्गा स्नान करे ।
आचम्बिते सेइ विप्र देखिल प्रभुरे ॥५

देखिल ये गङ्गा स्नान करे विश्वम्भर ।
क्रोधदृष्टचे चाहे विप्र काँपे कलेबर ॥६
प्रभुरे देखिया बले सक्रोध बचन ।
तोर घरे गेलुँ तोरे देखिबारे मन ॥७
तोर नृत्य देखिबारे बड़ छिल साध ।
पापिष्ठ ब्राह्मण एक ताते दिल बाध ॥८
ना दिल याइते मोरे बाहिर दुयारे ।
तेमनि हइबे तुमि संसार बाहिरे ॥६
इहा बलि उपवीत छिण्डिलेक क्रोधे ।
क्रोधे अचेतन विप्र नाहि परबोधे ॥१०
द्वार माना कैल मोरे आमि नाहि सहि ।
शाप दिल हञो तुमि संसारेर बहि ॥११
ए बोल शुनिया प्रभुर हरिष अन्तर ।
ब्राह्मणेर शाप मोरे हैल महावर ॥१२
शाप से स्वीकार यबे कैल भगवाने ।
शुनिया ब्राह्मण भय पाइल बड़ मने ॥१३
आमि कि करिब प्रभु ये बलाइले तुमि ।
तुमि सर्व परिपूर्ण सर्व अन्तर्यामी ॥१४
कुतर्केर गण सब निस्तार करिबे ।
सन्नयास करिया ना सबारे प्रेम दिबे ॥१५
सन्नयासी बलिया गुरु तोमारे बलिवे ।
सेइ नम्रभावे प्रेम ता सबारे दिबे ॥१६
परम चतुर शिरोमणि गौरहरि ।
बिलाइबे पूर्व प्रेमभाण्डार उघाड़ि ॥१७
तोमार प्रतिज्ञा एइ ब्रह्माण्ड डुबाबे ।
दुर्जन सुजन एको जने ना एड़िबे ॥१८
आमि से बञ्चित हैलुँ तोर प्रेम वाने ।
कि हइब मोर गति पतित पावने ॥१६
शुनि प्रभु बले शाप नहे मोर बर ।
मोर बाञ्चा पूर्ण कैले नाहि तोर डर ॥२०
शुनिया पड़िला विप्र प्रभुर चरणे ।
तुलिया त महाप्रभु कैल आलिङ्गने ॥२१
प्रभु आलिङ्गने विप्र प्रेमाय आकुल ।
गरगर कृष्ण प्रेमे हइला तरल ॥२२
विप्रेर मानस पूर्ण कैल भगवान् ।
ब्रह्मार दुर्ल्लभ प्रेम तारे दिबा दान ॥२३
हेन चित्र लीला करे गौराङ्ग सुन्दर ।
बुझिते ना पारे दुष्ट अन्तर पामर ॥२४
तबे सेइ महाप्रभुर अन्तर उल्लास ।
कातर अन्तरे कहे ए लोचन दास ॥२५

यथाराग ।

प्रभुके से ब्रह्मशाप लोक मुखे शुनि ।
आचम्बिते काँपि उठे शचीर पराणि ॥१
धकधक प्राण पोड़े वृत्तान्त ना जाने ।
निबारिते नारे अश्रु झरे दुनयाने ॥२
व्याकुल हइया शची पुछे सर्वजने ।
प्रभुरे से ब्रह्मशाप सबार वदने ॥३
शुनिया मूर्च्छित हैया पड़िला तथाय ।
चेतन पाइया शची कान्दे उभराय ॥४
कान्दिते कान्दिते आइला आपनार घर ।
क्षणे अन्तरे गृहे आइला विश्वम्भर ॥५
गौर मुख देखि मायेर शोक उथलिल ।
कान्दिते कान्दिते शची पुछिते लागिल ॥६
शुन रे निमाइ बाप किबा कथा शुनि ।
तोमारे ब्राह्मण नाकि दिल शापवाणी ॥७
कोन् अपराध तुमि कैले तार स्थान ।
कैमन ब्राह्मण तार कि कठिन प्राण ॥८

तोर मुख देखि तार दया नाहि हैल ।
आमार बधेर भागी कोन् जन हैल ॥९
ए घर करण मोर सब तोमा लैया ।
अभागी शचीर प्राण याय विदरिया ॥१०
सबार दुलाल तुमि मोर आँखि तारा ।
विधिर विपाके पाछे तोमा हइ हारा ॥११
अमिया सिनान करि देखि तोर मुख ।
दारुण बचन शुनि फाटे मोर बुक ॥१२
अभागी शचीर भाग्ये ना जानि कि हब ।
तोर अमङ्गल हैले पराणे मरिब ॥१३
ए बोल शुनिया तबे गौराङ्ग सुन्दर ।
मायेरे कहये किछु प्रबोध उत्तर ॥१४
शुन गो जननी ! तुमि आमार बचन ।
कि लागिया रोदन करह अकारण ॥१५
मोर अपराध नाहि ब्राह्मणेर स्थाने ।
मोरे ये शापिल विप्र सेह अकारणे ॥१६
विनि अपराधे शाप लागिब बा केने ।
निश्चय जानिह माता ए सत्य बचने ॥१७
इहा बलि गेला प्रभु जाह्नवीर तीरे ।
सुरनदी स्नान करि आइला निजघरे ॥१८
घरे आसि महाप्रभु परम सादरे ।
कृष्ण पूजार्चना करे हरिष अन्तरे ॥१९
पूजा करि स्तव पाठ पड़ि कतक्षण ।
तुलसीरे जल दिला प्रेमाबिष्ट मन ॥२०
प्रणाम करिया प्रभु कैला जलपान ।
सादरे निरीखे शची पुत्रेर बयान ॥२१
कोटि चान्द जिनि गोरार वदन प्रकाश ।
गौराङ्ग चरित्र कहे ए लोचन दास ॥२२

हलधर आवेश

विभाष राग । दिशा ॥

जय जय गोराचाँद नदीया उदय कलिकाले । मूर्च्छा

ना हारे आमार प्रभुर कथा शुन ।
ए तिन भुवन आलो कैल यार गुण ।
ना हारे गौराङ्ग चान्देर कथा शुन ।
कि आरे हय हय ॥ ध्रु ॥

आर कथा कहि शुन बड़ अपरूप ।
नदीया नगरे निति नूतन कौतुक ॥१
निज घरे बैसे प्रभु आनन्दित मने ।
चौदिके बेढ़िया बैसे यत निज जने ॥२
आचम्बिते एक ध्वनि उठिल गगने ।
मधु देह बलि डाके मेघेर गर्जने ॥३
सेइक्षणे धरे प्रभु हलायुध रूप ।
सुनील बसन श्वेतपर्वत स्वरूप ॥४
सुन्दर चरण आर कमल लोचन ।
अद्भुत देखिया सबे हृष्ट हैला मन ॥५
सर्वजन प्रेमदाता प्रेम बिलसय ।
आपन आवेश धरि नाचे महाशय ॥६
हरिगुण गाय सब निजजन सने ।
सेइमने गेला अद्वैत आचार्य्येर स्थाने ॥७
तथा गिया कहे प्रभु गदगद भाष ।
मधु देह मधु देह बलि अट्ट हासे ॥८
देहेर वरण येन बाल दीननाथ ।
'मधु देह देह' बलि घन हात पाते ॥९
तोय पूर्ण भाजन धरिला निजकरे ।
मधुपान करि तोले रसेर उद्गारे ॥१०
टलमल करि नाचे येन मातोयाल ।
हेउ हेउ करि तोले रसेर उद्गार ॥११

क्षरणे पड़े क्षरणे उठे क्षरणे कान्दे हासे ।
ग्रधर मिटाइ क्षरणे ग्रट्ट ग्रट्ट हासे ॥१२
देखिया सकल लोक करये स्तवन ।
हलधर बलि केह धरये चरण ॥१३
तबे सेइ महाप्रभु लीला बलराम ।
कहये ग्रमृत कथा ग्रति ग्रनुपाम ॥१४
श्रीकृष्ण नहिये ग्रामि बले हब सुखी ।
ग्रद्भुत सुपेय मधु ग्रानि देह देखि ॥१५
सेइखाने एक द्विज छिल दाँड़ाइया ।
इह मल्ल बलि फेले ग्रंगुले ठेलिया ॥१६
ग्रंगुलि ठेलाय विप्र पड़े बहुदूर ।
लज्जा से पाइल विप्र फेलिल ठाकुर ॥१७
प्रभाते ग्रावेश भेल सायाह्न समय ।
लीलाबलराम क्रीड़ा करे महाशय ॥१८
नरहरि पादपद्म शिरेर भूषण ।
धन्य गोरा गुण गाय ए दास लोचन ॥१९

———

तार पर दिने शुन ग्रपरूप ग्रार ।
नाचये ठाकुर बलदेव ग्रनुकार ॥१
ग्राचम्बिते ग्रार्त्तनाद करि पाइल मोह ।
बलराम स्मरणे नयाने बहे लोह ॥२
भूमिते लोटाय महाप्रभु मुक्तकेशे ।
मुखे जल देइ सर्वजन पाइ क्लेशे ॥३
क्षणेके लभिल संज्ञा गदाधर देखि ।
कहिल कातर वाणी इङ्गिते से लखि ॥४
तुमि से ग्रामार बन्धु प्राण सम जानि ।
तोर प्रेम वश ग्रामि शुन द्विजमणि ॥५
तोर नाथ हङ मुइ तुमि मोर प्राण ।
गदाइर गौराङ्ग ग्रामि कर ग्रवधान ॥६
मोर यत भाव तोते नहे ग्रगोचर ।
ग्रामार ग्रन्तर शक्ति तोर कलेवर ॥७
रात्रिदिन मोर सङ्ग तिलेक ना छाड़ ।
तोमा विने मोर कथा जाने केबा दढ़ ॥८
मोर प्रिय बन्धु यत सब भक्तजन ।
ग्रानह सबारे ग्रामि देखिब एखन ॥९
ग्राज्ञा पाइया गदाधर पण्डित सबारे ।
ग्रानिल ग्राचार्य्यरत्न ग्रादि यत ग्रारे ॥१०
ग्रासिया देखिल यत महोत्तम जन ।
विभोर हइला सबे सजल लोचन ॥११
कहिल ग्राचार्य्यरत्न मधुर बचने ।
केह ना ग्रापने बाप ! इहार कारणे ॥१२
शुनिया ताहार वाणी कहे विश्वम्भर ।
कहिते ना पारे कण्ठ गदगद स्वर ॥१३
ग्रति सुविह्वल कहे ग्राध ग्राध बोले ।
श्वेतगिरि हलायुध देखिल मो कोले ॥१४
सुवर्ण समान शोभे सूर्य्य सम ग्राभा ।
झलमल करे ग्रति ग्रलङ्कार शोभा ॥१५
कहिते कहिते सेइ प्रभु पुनर्बार ।
देखे बलदेव श्वेत पर्वत ग्राकार ॥१६
तबे सेइ महाप्रभु विश्वम्भर राय ।
सेइमत ग्रावेशेते पुन नाचे गाय ॥१७
सकल वैष्णव जन ग्रानन्दे विह्वल ।
बलराम प्रेमे सबे करे टलमल ॥१८
ग्रानन्दे भरल सब दिग ग्रो विदिगे ।
हइल त दिन राति ग्रावेश ना भाङ्गे ॥१९
तार पर दिने हैल ग्रद्भुत नर्त्तन ।
चौदिके बेढ़िल यत भक्त महाजन ॥२०
पदतल भरे मही करे टलमले ।
ढुलाय करुण ग्राँखि ग्राध ग्राध बले ॥२१

मत्त करिबर येन गमन मन्थर।
चलिते ना पारे प्रेमे आनन्द निर्भर ॥२२
येन पहु आवेश—आवेश तेन सङ्गी।
नाचये विह्वल प्रभु बलराम रङ्गी ॥२३
नाचिते गाइते भेल सायाह्न समय।
आचम्बिते वदने बारुणी गन्ध कय ॥२४
बारुणीर दिव्य गन्धे भेल आमोदित।
चौदिके नेहारे सबे हइया चमकित ॥२५
दशदिक आमोदित बारुणीर गन्धे।
माताल भकत अति प्रेमार उन्मादे ॥२६
हेन काले श्रीराम पण्डित द्विजवर्य्य।
ये देखिल शुन तार अनुभव कार्य्य ॥२७
आचम्बिते दिव्य दिव्य पुरुष रतन।
सेइखाने दिव्य वेशे हैल उपसन्न ॥२८
कारो एक कर्णे पद्म कमल लोचन।
एक कर्णे कुण्डल धरे नीलिम बसन ॥२९
पीतबस्त्र पागड़ी बान्धिया लटपटि।
कहिते ना पारि रूप वेश परिपाटि ॥३०
वनमाली नामे एक ब्राह्मण तथाइ।
कहिब ताहार कथा शुन सर्व भाइ ॥३१
देखिलेन काञ्चन निर्मित कलेबर।
रतने विभूषित येन सुमेरु सुन्दर ॥३२
देखि अति हृष्ट चित तनु पुलकित।
देखिया सकल लोक हैल चमकित ॥३३
हलायुध वेशे नाचे तिन लोक नाथ।
सकल भकत जन नाचे तार साथ ॥३४
अन्तरीक्षे देवगण हरषित मने।
सन्तोष हृदये गेला निज स्थाने ॥३५
एइमते आनन्दे गोङाइ दिवा निशि।
सुरनदी स्नाने प्रभु याय हासि हासि ॥३६
सकल वैष्णवगण करि एक मेले।
करये मज्जन केलि जाह्नवीर जले ॥३७
निजजन सने पहुँ हास परिहासे।
कौतुके करये क्रीड़ा ता सबार रसे ॥३८
स्नान समाधिया प्रभु उठिला सत्वर।
प्रभु नमस्करि सबे गेला निज घर ॥३९
निजालये गिया प्रभु आछे महासुखे।
प्रभाते आइला सबे प्रभुर सम्मुखे ॥४०
सबारे कहिल प्रभु शुन एक वाणी।
गदगद कहिते वेकत आधखानि ॥४१
बराह ठाकुर मोरे आलिङ्गन दिल।
हलायुध मोर हिया प्रवेश करिल ॥४२
नयाने अञ्जन भेल मुरली वदन।
कहिल अमृत कथा शुन निज जन ॥४३
कहिल से महाप्रभु श्रीवासे देखिया।
मोर वाँशी देह चाहे श्रीहस्त पातिया ॥४४
तबे सेइ श्रीनिवास पण्डित ठाकुर।
कहिल ताँहारे तेँह भक्त सुचतुर ॥४५
शुन शुन महाप्रभु एइ तोर घरे।
राखिल भीष्मक कन्या मुरली तोमारे ॥४६
कपाट लागिल रात्रे घरेर दुयारे।
एखनि पाइबा वाँशी कहिल तोमारे ॥४७
एइमते क्षणे क्षणे आनन्द कौतुक।
नदीया विहार एइ बड़ अपरूप ॥४८
ये जानये कृष्णरस से जाने मरम।
नदीया विहार प्रेम एइ बड़ धन ॥४९
ये ना जाने तारे मुइ करिये मिनति।
हेला ना करिह गोरा गुणे देह मति ॥५०
मन दिया बुझ भाइ कि आछे इहाते।
त्रिजगत नाथ प्रभुर लाग पावे ताते ॥५१

ना भजिले नाहि नाहि नाहिक निस्तार ।
ए लोचन दास इहा बले बार बार ॥५२

संकीर्त्तन यज्ञ

यथाराग ।

तारपर दिने प्रभु वसि दिव्यासने ।
कहिते लागिला किछु सब भक्तगणे ॥१
मोर एइ संकीर्त्तन यज्ञेर महिमा ।
सब शास्त्रे कहे इहार महिमा गरिमा ॥२
सर्व्व धर्म सार एइ संकीर्त्तन धर्म ।
बिशेष जानिबे कलियुगे एइ कर्म ॥३
पञ्चम से वेद हैते प्रकाश इहार ।
शिव तेँइ पञ्चमुखे गाय अनिबार ॥४
नारद वीणाय गाइ बुलये नाचिया ।
शुक सनकादि भक्त बुलये गाइया ॥५
वृन्दावने राधाकृष्ण एइ वेद लैया ।
गोपी सङ्गे नाचि बुले प्रेमाबिष्ट हैया ॥६
नित्य वृन्दावने स्तिति पञ्चम जानिबे ।
तेँइ शिव गान करे महा प्रेस भावे ॥७
तथापि गाइया शिव ओर ना पाइल ।
हेन वेद कलियुगे प्रकाश हइल ॥८
गाने येइ करे सेइ प्रबोध हइया ।
गानरूपे वेदेर उच्चारे महा दया ॥९
सब लोक कर्ण गर्त्त कुण्ड परिसर ।
जिह्वा स्रुव ध्वनिरस घृत मनोहर ॥१०
अन्तरे प्रविष्ट हैया भाव अग्नि ज्वाले ।
अग्निशिखा पुलकाश्रु कम्प कलेबरे ॥११
सर्वपाप मुक्त हैया सब जन नाचे ।
सालोक्यादि मुक्ति तार फिरे पाछे पाछे ॥१२
कदाच ना देखे तार नयानेर कोणे ।
नाचिया बुलये कृष्ण रस आस्वादने ॥१३
ये यज्ञ बेढ़िया रहे वैष्णव आचार्य्य ।
जानिबे कीर्त्तन यज्ञ सर्व यज्ञ आर्य्य ॥१४
इहाते जन्मिल एइ प्रेम महाधन ।
इहार गृहस्थ नित्यानन्द आवरण ॥१५
गदाधर पण्डित एइ प्रेमेर गृहिणी ।
एइ तत्त्व जानिबे सकल भक्तमणि ॥१६
अद्वैत आचार्य्य गोसाँइ आमारे आनिया ।
संकीर्त्तन यज्ञ स्थापे सुदृष्टि हइया ॥१७
श्रीनिवास नरहरि आदि भक्तगण ।
तो सबारे लैया मोर यज्ञेर स्थापन ॥१८
एइ यज्ञ कलिकाले देह घरे घरे ।
तरुक सकल लोक पतित पामरे ॥१९
ए बोल शुनिया भक्त कान्दिया कान्दिया ।
प्रभुर चरणे पड़े ढलिया ढलिया ॥२०
सबारे करिला कोले गौर भगवान् ।
शुनि आनन्दित कथा ए लोचन गान ॥२१

नाटकाभिनय

बराड़ी राग । धूलाखेलाजात ॥

आर अपरूप कथा शुन गोरा गुण गाथा
लोक वेद अगोचर वाणी ।
रसेर आवेशे करे भक्तियोग परचारे
करुणा विग्रह गुणमणि ॥१

शुन कथा मन दिया आन कथा तेयागिया
अपरूप करिबारे खेला ।
निज जन सङ्ग करि श्रील विश्वम्भर हरि
श्रीचन्द्रशेखर बाड़ी गेला ॥२
कथा परसङ्ग कथा गोपीकार गुणगाथा
कहिते से गदगद भाष ।
अरुण वयान भेल दु'नयने झरे नीर
रसाबेशे रसेर प्रकाश ॥३
कमला याहार पद सेवा करे अविरत
हेन प्रभु गोपिकार तरे ।
परसङ्ग हय भोरा हेन भक्ति कैल तारा
कथा मात्र से आबेश धरे ॥४
तबे विश्वम्भर हरि गोपिकार बेश धरि
श्रीचन्द्रशेखराचार्य्य घरे ।
नाचये आनन्दे भोला श्रीवास हेनइ बेला
नारेद आवेश भेल तारे ॥५
प्रभुरे प्रणाम करे विनय वचने बले
दास करि जानह आमारे ।
एमन कहिया वाणी तबे सेइ महामुनि
गदाधर पण्डितेरे बले ॥६
शुनह गोपिका तुमि ये किछु कहिये आमि
तोर पूर्व कथा किछु जान ।
अपूर्व कहिये आमि जगते दुर्ल्लभ तुमि
तोर कथा शुन सावधान ॥७
शुन तो सबार कथा कहि आमि गुणगाथा
गोकुले जन्मिला जने जने ।
छाड़ि निज पतिव्रत सेवा कैल अविरत
अभिमत पाइ वृन्दावने ॥८
प्रधान प्रकृति तुमि कृष्णशक्ति राधा तुमि
कि जानि ता कहिबारे आमि ।
रमणीर शिरोमणि कृष्ण प्रेमे सोहागिनी
तोर तत्त्व कि बलिते जानि ॥९
ऐछन करिले भक्ति केह ना जानये युक्ति
परम निगूढ़ तिन लोके ।
ब्रह्मा महेश्वर देवा लखिमी अनन्त किवा
तारे दिक परसाद तोके ॥१०
प्रह्लाद नारद शुक सनातन सनक
ना जानये तोर भक्तिवेश ।
त्रैलोक्य लखिमी पति चाहे तोर पिरीति
अङ्गे धरये बर वेश ॥११
लखिमी याहार दासी तोर प्रेम अभिलाषी
हृदये धरये अनुराग ।
सकल भुवन पति भुलाइया से पिरीति
धनि धनि तोहारे सोहाग ॥१२
तोरा ये जानिलि तत्त्व प्रभु गुण महत्त्व
पिरीति बान्धिलि भालमते ।
उद्धव अक्रुर आदि सबे तोर परसादी
अनुग्रह ना छाड़िह चिते ॥१३
एतेक कहिल वाणी श्रीनिवास द्विजमणि
शुनि आनन्दित सब जन ।
सकल वैष्णव मिलि करि सबे कोलाकुलि
देखे विश्वम्भरेर चरण ॥१४
नाचये आनन्दे भोरा प्रेमे गरगर तारा
हेनकाले आइला हरिदास ।
दण्ड एक करि करे सम्मुखे दाँड़ाइयाबले
गुण गाह परम उल्लास ॥१५
हरिगुण संकीर्त्तन कर भाइ अनुक्षण
इहा बलि अट्ट अट्ट हासे ।
हरिगुण गाने भोरा दु'नयाने बहे धारा
आनन्दे फिरये चारिपाशे ॥१६

शुनि हरिदास वाणी सकल वैष्णवमणि
अमृते सिञ्चिल सब गा ।
हरषेते नाचे गाय माझे नाचे गोराराय
कान्दिया धरये राङ्गा पा ॥१७
तबे सर्व गुणधाम अद्वैत आचार्य्य नाम
आइला सब वैष्णवेर राजा ।
रूपे आलोकित मही सम्मुखे दाण्डाय चाहि
प्रभु अंशे जन्म महातेजा ॥१८
हरि हरि बलि डाके चमक लागिल लोके
आनन्दे नाचये प्रेमभरे ।
पुलकित सब गा आपाद मस्तक या
प्रेमबारि दु'नयाने झरे ॥१९
विश्वम्भर श्रीचरण नेहारये घने घन
हुहुङ्कारे मारे मालसाट् ।
सकल वैष्णव मिलि प्रेमानन्दे कोलाकुलि
पसारिल अपरूप हाट ॥२०
सकल वैष्णव जने अति आनन्दित मने
प्रेमार सायरे दिल डुव ।
सकल भकत मेलि आपने गौराङ्ग हरि
प्रकाशये संसारेर शुभ ॥२१
एखने कहिये शुन सावधाने सर्वजन
गोपिका आवेशे वश प्रभु ।
हृदये काँचलि परे शङ्ख कङ्कण करे
दुटि आँखि रसे डुबुडुबु ॥२२
पट्ट बसन परे नूपुर चरणे धरे
मुठे पाइ क्षीण माझाखानि ।
रूपे त्रिजगत मोहे उपमा बा दिब काहे
गोपीवेश ठाकुर आपनि ॥२३
आलोक अङ्गेर तेजे वायु बहे मलयजे
ताहे नब मालतीर माला ।
सुमेरु शिखरे येन सुरनदी धारा हेन
गोरा अङ्गे बहे दुइ धारा ॥२४
सकल वैष्णव माझे नाचे महानटराजे
रसेर आवेशे भाब धरे ।
नाचिते नाचिते पुन लखिमी पड़िल मन
से आवेशे गेला देव घरे ॥२५
घरे सम्भाइया आर्त्ति दिव्य चतुर्भुज मूर्त्ति
देखि दाण्डाइल तार काछे ।
आध नयाने चाय आध पद चलि याय
बसने ढाकिल आँखि पाछे ॥२६
तबे सब निज जने पड़ि तार श्रीचरणे
विनय वचने करे स्तुति ।
श्रीस्तव पड़ये केहो आनन्दे विभोर सेहो
बर मागे देहो प्रेम भक्ति ॥२७
सर्वजन स्तव करे शुनि प्रभु विश्वम्भरे
आद्याशक्ति पड़ि गेल मने ।
सेइ त आवेश धरे सर्वजन चमत्कारे
स्तव पड़े कत सुरगणे ॥२८
तबे स्तव कैल सबे सुरकृत महास्तवे
तुष्ट हैया बले आद्याशक्ति ।
देवता आसने बसि कहे लहु लहु हासि
देखिबारे आइलुँ प्रेमभक्ति ॥२९
तो सबार नृत्यगीते आइलुँ देखिवार चिते
कहिलुँ आपन अभिलाष ।
ए बोल शुनिया पुन कहे सेइ सबजन
निज भक्ति कर परकाश ॥३०
ए वर माङ्गिल यबे आद्याशक्ति बले तबे
शुन शुन शुन सब जने ।
आमि चण्डी परचण्ड सबे हबे परचण्ड
एइ वर दिल सर्वजने ॥३१

ए बोल शुनिया तबे परणाम करे सबे
दण्डवत भूमिते पड़िया ।
तबे सेइ ईश्वरी हरिदास करे धरि
कोले बसाइल से हासिया ॥३२
बसिया ताहार कोले हरिदास हासि दोले
पाँच बरिषेर येन शिशु ।
आश्चर्य्य देखिया मने आनन्दित सब जने
हरिष पाइल पक्षी पशु ॥३३
सेइक्षणे एकजन कहिल एइ बचन
मुरारिके चाह दया दिठे ।
ए तोमार निज दास ए बोल शुनिया हास
अमृत मधुर महा मिठे ॥३४
नयान करुणा जले झर झर अमिया झरे
करुणाये अरुण चन्द्रमुख ।
हेनकाले शचीदेवी आपने श्रीपाद सेवि
प्रेमानन्दे भेल परतन्त्र ॥३५
तबे सेइ कात्यायनी सर्वजने काछे आनि
निज सुत करि हेन माने ।
पुत्र स्नेह करे लोके सवजन देखि ताके
प्रेमजल झरे दु'नयाने ॥३६
हेनकाले सेइक्षणे आसि एक ब्राह्मणे
प्रभु बलि डाके उच्चनादे ।
आर्त्तजन आर्त्तनादे शुनिया फुकरि काँदे
भइ गेल ईश्वर उन्मादे ॥३७
आपनि ईश्वर हैया निज प्रेम प्रकाशिया
निजगुणे करे ठाकुराल ।
सब जन हेरि हेरि दण्ड परनाम करि
ईश्वर आवेशे बारबार ॥३८
एइमते सब निशे गोङाइल रसावेशे
प्रभाते चलिला निज घर ।
यत जन सङ्गे याय देखे येन गोराराय
केबल प्रचण्ड दण्डधर ॥३९
हेनमते गौरहरि करुणा प्रकाश करि
अखिल भुवने एक कर्त्ता ।
करुणा कारण आसि दीनभाव प्रकाश करि
आपे करे पृथिवीर चिन्ता ॥४०
हेन अपरूप कथा शुनिया संसार व्यथा
ना घुचये याहार अन्तरे ।
ना घुचिब कोन काले ये इथे संशय करे
तारोधिक नाहिक पामरे ॥४१
युक्ति अनुभव शास्त्र तिने एइ कहे मात्र
साक्षाते ना देखे परचार ।
विचार ना करे इहा ना छिल ता हैल सिया
केमने तार हैब निस्तार ॥४२
गोरा अवतारे येन करुणा प्रकाश हेन
नाहि हय नाहि हबे आर ।
ये बलु से बलु लोके अनुभव कहि ताके
मने मने करुक विचार ॥४३
एइ मात्र मोर चिन्ता अन्तरे मरम व्यथा
हेन अवतार ना प्रकाशे ।
ता लागि कान्दये हिया काहारे कहिब इहा
गुण गाय ए लोचन दास ॥४४

———

बराड़ी राग ।

मोर प्राण आरे गोराचाँद नारे हय ॥ ध्रु ॥
कहिब अपूर्व कथा लोक अगोचर ।
कभु नाहि देखि याहा जगत भितर ॥१
तिलेक सन्देह नाहि ना करिह चिते ।
प्रकाश करिल प्रभु सब जन हिते ॥२

चन्द्रशेखरेर बाड़ी नाचिया गाइया।
घरेरे आइला प्रभु आनन्दित हैया ॥३
आनन्दित श्रीचन्द्रशेखर भट्टाचार्य्य।
ताहार बाड़ीर कथा कहिब आश्चर्य्य ॥४
नाचिया आइल प्रभु ताहार छटाके।
उदय करिल येन चान्द लाखे लाखे ॥५
अद्भुत शीतल शोभा अमृत अधिक।
चाहिते ना पारि येन चौदिके तड़ित ॥६
हृदय आह्लाद करे देखि येन साध।
आँखि मेलिबारे नारि तेजे करे बाध ॥७
चमक लागिल से नदीयापुर जने।
किबा अपरूप से देखिल एतदिने ॥८
आसिया वैष्णव जने पुछे सर्वजन।
कि जान सन्दर्भ कथा कह ना कथन ॥९
सकल वैष्णव बले आमरा कि जानि।
नाचिया आइला विश्वम्भर गुणमणि ॥१०
एइ मात्र जानि किछु ना जानिये आर।
लोक वेद अगोचर चरित्र ताहार ॥११
सात दिन अविच्छिन्न छिल तेजराशि।
तेजेर छटाय नाहि जानि दिवानिशि ॥१२
नितुइ नूतन अति अपरूप कर्म।
प्रकाशे शचीर सुत सर्वमय धर्म ॥१३
तार पर दिने श्रीनिवास द्विजवर।
पुछये ठाकुर आगे हृदय उत्तर ॥१४
कलियुगे हरिनाम गुण संकीर्त्तन।
पूर्णफल बले केने आर युगे न्यून ॥१५
शुनिया ठाकुर कहे शुन श्रीनिवास।
बड़ कथा शुधाइले कहिब बिशेष ॥१६
सत्ययुगे पूर्ण धर्म ध्यान मात्र साधि।
त्रेताय साधये यज्ञ धर्म उदारधी ॥१७
द्वापरे कृष्णेर पूजा कहिल ए धर्म।
कलियुगे शक्त केहो नहे एइ कर्म ॥१८
आपने ठाकुर नामरूपी भगवान्।
कलियुगे सर्व शक्तिमय हरिनाम ॥१९
सत्य आदि तिन युगे यत सब जन।
ध्यान यज्ञार्च्चना विधि सेवे नारायण ॥२०
पाप कलियुगे जीवेर दुरन्त चरित।
एइ त कारणे दया भेल बिपरीत ॥२१
आपने ठाकुर निज संकीर्त्तन रूपे।
अनायासे सर्वसिद्धि साधि कलियुगे ॥२२
सत्य आदि युगे याहा साधि महादुखे।
प्रभुर कृपाय सुखे साधि कलियुगे ॥२३
नरहरि पादपद्म धरि शिरोपरि।
कहये लोचन दास गौराङ्ग माधुरी ॥२४

———

एकादश अध्याय

सन्न्यास प्रसङ्ग

यथा राग।

एइमते आनन्दे सानन्दे दिन याय।
आचम्बिते खेद उठे प्रभुर हियाय ॥१
नारिल नारिल एथा थाकिबारे आमि।
देखिबारे याब आमि वृन्दावन भूमि ॥२
कति मोर कालिन्दी यमुना वृन्दावन।
कति मोर बहुला भाण्डीर गोवर्द्धन ॥३
कति गेला आरे मोर ललितादि राधा।
कति गेला आरे मोर ए नन्द यशोदा ॥४
श्रीदाम सुदाम मोर रहिल कोथाय।
धवली शाङली बलि अनुरागे धाय ॥५

क्षणे दन्ते तृण धरि करुणा करिया ।
फुकरि फुकरि कान्दे चौदिके हेरिया ॥६
ए भव संसार आमि केमने तारिब ।
से नन्द नन्दन पद कोथा गेले पाब ॥७
इहा बलि छिण्डिल गलार उपवीत ।
कृष्णेर बिरहे दुःख भेल बिपरीत ॥८
हरि हरि बलि डाके छाड़ये निःश्वास ।
अश्रुधारा गले किछु ना कहे बिशेष ॥९
पुलके पूरित तनु अरुण वदन ।
देखिया मुरारि किछु कहये बचन ॥१०
शुन शुन महाप्रभु गौर भगवान् ।
तोमार अशक्य नाहि कहि परिणाम ॥११
थाकिते चलिते तुमि पारह सर्वथा ।
तथापि आमार बोले ना दिबे अन्यथा ॥१२
तुमि यदि एखने चलिबे दिगन्तर ।
स्वतन्त्र हइब सब वैष्णव अन्तर ॥१३
स्वतन्त्रे करिब सबे याहा मने लय ।
पुन प्रवेशिब सबे संसार आश्रय ॥१४
यतेक करिले नाथ किछुइ ना हैल ।
निश्चय करिया प्रभु तोमारे कहिल ॥१५
ए बोल शुनिया प्रभु निशबदे रहे ।
खण्डिते नारिलेन मुरारि याहा कहे ॥१६
तबे आर कतदिन गेल त कौतुके ।
नयन भरिया देखे नदीयार लोके ॥१७
जननीर हृदय नयन स्निग्ध करि ।
विष्णुप्रिया सङ्गे क्रीड़ा करे गौरहरि ॥१८
स्वजन बान्धब सङ्गे आछे महासुखे ।
सबारे सन्तोषे यत आछे नवद्वीपे ॥१९
सकल वैष्णव सने कीर्त्तन बिलास ।
पुरनारीगण देखि करये हुताश ॥२०
त्रैलोक्य मोहन रूप ताहे नागरिमा ।
विनोद बिलास रस लावण्येर सीमा ॥२१
आर ताहे झलमल आभरण शोभा ।
सुन्दर लम्बित केशे मालतीर आभा ॥२२
चन्दन तिलक परिपाटी मनोहर ।
रक्तप्रान्त बास बेश त्रैलोक्य सुन्दर ॥२३
निज परिजन आर पुरजन सब ।
सबे से देखये यार येइ अनुभव ॥२४
हेनमते निजजन सङ्गे आछे पँहु ।
स्वप्न कहे सबाकारे हासि लहु लहु ॥२५
शुन सर्वजन स्वप्न देखिल रजनी ।
आचम्बिते मोर ठाँइ आइला द्विजमणि ॥२६
मोर कर्णे कहिल सन्नयास मन्त्र एक ।
एखनो आमार मने आछे परतेक ॥२७
यावत आमार कर्णे प्रवेशिल मन्त्र ।
से अवधि मोर हिया ना हय स्वतन्त्र ॥२८
केमने छाड़िब आमि प्रिय प्राणनाथ ।
ताहारे छाड़िया बा साधिब कोन् काज ॥२९
इन्द्रनीलमणि जिनि परम सुन्दर ।
मोर बक्षःस्थले बसि हासे निरन्तर ॥३०
शुनिया मुरारि गुप्त कहिल उत्तर ।
से मन्त्रेर षष्ठी समास तुमि कर ॥३१
ए बोल शुनिया प्रभु कहिल बचन ।
तोमार बचने मोर स्थिर नहे मन ॥३२
यत स्थिर करि तत उठये रोदन ।
ना बलिह मोरे किछु शुनह बचन ॥३३
शब्द शक्ति करे हेन कि करिब आमि ।
लङ्घिते ना पारि पुन यत कह तुमि ॥३४
ए बोल शुनिया सबे अन्तर चिन्तित ।
कहये चोचन दास हृदय व्यथित ॥३५

धानशी राग ।

कि दोषे छाड़िया याइछ मायेरे ।
आरे दुखिनीर बाछा निमाइ रे ।।ध्रु ।।

आर कतदिने श्रीकेशव भारती ।
आइला सन्नयासिवर अति शुद्धमति ।।१
महातेज न्यासिवर महाभागवत ।
पूर्वजन्मार्जित कत पुण्येर पर्वत ।।२
आचम्बिते आसिया देखिला विश्वम्भर ।
विश्वम्भर देखि हृष्ट हैला न्यासिवर ।।३
उठिया ठाकुर कैल चरण वन्दन ।
सन्नयासी देखिया प्रेमे झरे दु,नयन ।।४
प्रभु अङ्ग निरीखये सेइ न्यासिराज ।
महाबुद्धि न्यासिवर बुझिलेन काज ।।५
केशव भारती गोसाँइ कहिल बचन ।
तुमि शुक प्रह्लाद कि हेन लय मन ।।६
ए बोल शुनिया सेइ प्रभु विश्वम्भर ।
कान्दये द्विगुण झरे नयनेर जल ।।७
तबे पुन कहे न्यासी विस्मित हइया ।
अनुमान करि मने निश्चय करिया ।।८
तुमि प्रभु भगवान् जानिल निश्चय ।
सर्वलोक प्राण तुमि नाहिक संशय ।।९
ए बोल शुनिया प्रभु करये रोदन ।
कतदिने पाब आमि कृष्णेर चरण ।।१०
कृष्णे तोर अनुराग अति बड़ हय ।
ते कारणे यथा तथा देख कृष्णमय ।।११
कतदिने कृष्ण मुइ देखिबारे पाब ।
तोमार एमन बेश कबे मोर हब ।।१२
कृष्णेर उद्देशे मुइ देशे देशे याब ।
कोथा गेले प्राणनाथ कृष्ण मुइ पाब ।।१३
सन्नयासीरे बेद्य कथा कहि विश्वम्भर ।
दण्डवत हैया प्रभु यान निज घर ।।१४
श्रीवासे देखिया प्रभु कहिल उत्तर ।
सन्नयासीरे लैया तुमि याह निज घर ।।१५
प्रभुर बचन शुनि श्रीवास ठाकुर ।
सन्नयासी लइया भिक्षा दिलेन प्रचुर ।।१६
भिक्षा करि से दिन वञ्चिया न्यासिवर ।
यथास्थाने प्रभाते चलिला यतीश्वर ।।१७
प्रातःकाले श्रीनिवास प्रभुर निकटे ।
सन्नयासि विजय कथा कहे करपुटे ।।१८
ए बोल शुनिया प्रभु कातर अन्तर ।
सन्नयासीरे मने करि गेला निज घर ।।१९
घरे गिया मने मने अनुमान करि ।
सन्नयास करिब दढ़ाइल गौरहरि ।।२०
इङ्गित आकारे ताहा बुझिल मुकुन्द ।
प्रभु राखिबारे करे प्रकार प्रबन्ध ।।२१
आइलेन यथा आछे सब भक्तगणे ।
कान्दिया कहिल सब भक्तेर चरणे ।।२२
शुन शुन सर्वजन आमार उत्तर ।
सन्नयास करिब एइ प्रभु विश्वम्भर ।।२३
यावत थाकेन देख नयन भरिया ।
श्रीमुखेर कथा शुन श्रवण पूरिया ।।२४
छाड़िया याइब प्रभु निज गृह वास ।
जननी छाड़िब आर सब निज दास ।।२५
ए बोल शुनिया सबे व्यथित हियाय ।
युकति करिया मने चिन्तये उपाय ।।२६
स्वतन्त्र ईश्वर ना रहिब कारु वशे ।
इह बलि भक्तगण पड़िला तरासे ।।२७
भूमिते पड़िया कान्दे धूलाय धूसर ।
प्राणनाथ आरे मोर प्रभु विश्वम्भर ।।२८

हा हा महाप्रभु कोथा याइबे एड़िया ।
मो सबारे कलिसर्पे खाइबे धरिया ॥२९
कलि भये प्रभु ! तोर लइल शरण ।
तोर भये कलिसर्पे ना लङ्घे एखन ॥३०
हेनकाले आसि तथा प्रभु विश्वम्भर ।
श्रीवास पण्डित देखि कहिल उत्तर ॥३१
शुन शुन ओहे द्विज प्रिय श्रीनिवास ।
एक कथा कहि यदि ना पाओ तरास ॥३२
प्रेम उपार्जने आमि याब देशान्तर ।
तो सबारे आनि दिब शुन द्विजवर ॥३३
साधु येन नौका चड़ि याय दूरदेश ।
धन उपार्जन लागि करे नाना क्लेश ॥३४
आनिया बान्धबगणे करये पोषण ।
आमिह ऐछन आनि दिब प्रेमधन ॥३५
ए बोल शुनिया कहे श्रीवास पण्डित ।
तोमा ना देखिया प्रभु कि काज जीवित ॥३६
जीवित शरीरे बन्धु करये पोषण ।
देहान्तरे करे तार श्राद्ध तर्पण ॥३७
ये जीये ताहारे तुमि दिओ प्रेमधन ।
तोमा ना देखिले हबे सबार मरण ॥३८
मुकुन्द कहये प्रभु ! पोड़ये शरीर ।
अन्तर पोड़ये प्राण ना हय बाहिर ॥३९
मोरा सब अधम दुरन्त दुराचार ।
तुमि शठ खलमति बुझिल बेभार ॥४०
अचतुरगण मोरा ना बुझिलुँ तोरे ।
शरण लइनु तोर छाड़िया संसारे ॥४१
धर्म कर्म छाड़ि तोर पद कैलुँ सारे ।
पतित करिया केने छाड़ मो सबारे ॥४२
पतित पावन तुमि शास्त्रेते जानिया ।
शरण लइनु सर्व धर्मेरे छाड़िया ॥४३
एखने छाड़िया याह मो सबारे तुमि ।
ए नहे उचित प्रभु निबेदिल आमि ॥४४
खलमति ना बुझिया लइनु शरण ।
बजर अन्तर तोर हृदय कठिन ॥४५
बाहिरे कमल रस सुगन्धि पाइया ।
अन्तरेह एइमत छिल मोर हिया ॥४६
एखने जानिल तोर कठिन अन्तर ।
बिषकुम्भ पय येन ताहार उपर ॥४७
काष्ठेर मोदक येन कर्पूर छाइया ।
गिलितेना पारे येन ताहा ना बुझिया ।४८
कुलबधू येन कामे हैया अचेतने ।
पिरीति करये पर पुरुषेर सने ॥४९
धर्म कर्म लज्जा छाड़ि करये वेभारे ।
कलङ्की करिया शेषे छाड़ये ताहारे ॥५०
से नारी अनाथ शेषे हय दुइ कुले ।
सेइमत मो सबारे भासाबे अकूले ॥५१
तुमि देशान्तरे याबे कि काज जीवने ।
सभारे निष्ठुर प्रभु हैला कि कारणे ॥५२
तिल आध तोर मुख ना देखिले मरि ।
कान्दिते कान्दिते किछु कहये मुरारि ॥५३
शुन शुन ओहे प्रभु गौर भगवान् ।
अधम मुरारि बले कर अवधान ॥५४
रोपिले अपूर्व वृक्ष अंगुले करिया ।
बाढ़ाइले दिवानिशि सिञ्चिया खुँड़िया ।५५
तिले तिले राखिले ढाकिले बहु यत्ने ।
बान्धिले तरुर मूल दिया नाना रत्ने ॥५६
फल फुल काले गाछ फेलाह काटिया ।
मरिब आमरा सब हृदय फाटिया ॥५७
निरन्तर दिवानिशि आन नाहि जानि ।
स्वपनेह देखोँ तोर चाँद मुखखानि ॥५८

संसार बासना मोर नियड़ ना हय ।
जगत दुर्ल्लभ तब चरणेर बाय ॥५९
दया कर निदारुण हैले कि कारणे ।
इहा बलि सबे मेलि पड़िला चरणे ॥६०
तुमि देशान्तरे याबे सबारे एड़िया ।
खाइब संसार व्याघ्रे सबारे बेड़िया ॥६१
ओहे दीनबन्धु प्रभु ! अनाथेर नाथ ।
पतित तारण ओहे प्रभु जगन्नाथ ॥६२
केहो दन्ते तृण धरि कातर बचने ।
केहो ऊर्द्ध्वे बाहु तुलि डाके घने घने ॥६३
प्रभु कहे तोमरा आमार निज दास ।
तो सबारे कहि शुन आपन विश्वास ॥६४
कहिते आरम्भ मात्र गदगद स्वर ।
अरुण कमल आँखि करे छलछल ॥६५
सकरुण कण्ठे आध आध वाणी कहे ।
सम्बरिते नारि क्षणे निशबदे रहे ॥६६
आमार बिच्छेद भये तोमरा कातर ।
मोर कृष्ण एिरहे व्याकुल कलेवर ॥६७
आत्मसुख लागि तोरा मोरे देह दुख ।
केमन पिरीति कर मोरे तोरा लोक ॥६८
कृष्णेर विरहे मोर पोड़ये अन्तर ।
दगध इन्द्रिय देहे भेल महाज्वर ॥६९
अग्नि हेन लागे मोर से हेन जननी ।
बिष मिशाइल येन तो सबार वाणी ॥७०
कृष्ण विनु जीवन जीवने नाहि लेखि ।
कि काज ए छार प्राणे येन पशु पाखी ॥७१
मड़ार येहेन सर्व्व अवयव आछे ।
जीवारे जीवये येन लता पाता गाछे ॥७२
कृष्ण विनु धर्म कर्म द्विज वेद हीन ।
पति विनु सती येन जल विनु दीन ॥७३
धनहीन गृहारम्भे किछु नाहि काज ।
विद्याहीन वैसे येन विद्यार समाज ॥७४
कृष्णेर विरहे मोर धकधक प्राण ।
आर यत बल किछु ना साम्भाये काण ॥७५
धरिया योगीर वेश याब दूर देशे ।
यथा गेले पाङ प्राणनाथेर उद्देशे ॥७६
इहा बलि कान्दे प्रभु धरणी पड़िया ।
निज अङ्ग उपवीत फेलिल चिण्डिया ॥७७
कृष्ण कृष्ण बलि डाके अति आर्त्तनादे ।
सकरुण स्वरे प्राणनाथ बलि कान्दे ॥७८

———

विभास राग । तर्जा छन्द ।
ना हारे आरे हय ॥ दिशा ॥
कमला सेवित पद महेश धेयाय ।
बल देकि कृष्णपद पाब कि उपाय ॥ध्रु॥

शुन सर्वजन संसार दारुण
संशय करिल मोरे ।
बिषम विषय येन बिषमय
गुपते अन्तर पोड़े ॥१
यतेन्द्रियगण बलिये आपन
बासना ना छाड़े केहो ।
नितुइ नूतन कराइ भोजन
तबु ना लेउटे सेहो ॥२
लोभ मोह काम केहो नहे कम
सदा अभिमान क्रोधे ।
चित चुरि करि आछये सम्बरि
तिलेक नाहि प्रबोधे ॥३
बाहिरे बान्धये भ्रमाइ मायेरे
आश्रय ए जाति कुले ।

कृष्ण पासरिया बुलिये भ्रमिया
पाप दुर्बासना मूले ॥४
जगते यतेक देख अपरूप
कृष्ण आवरक सबे ।
तवहिँ सार्थक मानुष जनम
श्रीकृष्ण भजिये यबे ॥५
मानुष जनम दुर्ल्लभ जानिये
कृष्ण भजिबार तरे ।
हेन देह लैया श्रीकृष्ण छाड़िया
मरिये मिछा संसारे ॥६
शुन सब जन कहिलुँ मरम
आशीर्वाद कर मोरे ।
कृष्णे रति हउ ए दुख पालाउ
ए वर मागोँ सबाकारे ॥७
कृष्णेर चरित गाङ अविरत
वदने लागये साधे ।
श्रीमुख कमले नयान युगले
बान्धोँ मो हिया श्रीपादे ॥८
कि कहिब हिया कृष्ण ना देखिया
मरमे विरह ज्वाला ।
संसार सागरे पड़िया पाथारे
चित वेयाकुल भेला ॥९
सेइ पिता माता सेइ से देवता
सेइ गुरु बन्धु जन ।
सेइ आत्म हय कृष्ण कथा कय
भजाये कृष्ण चरण ॥१०
तोमरा बान्धब परम वैष्णव
दया ना छाड़िह चिते ।
सन्न्यास करिब प्रेम विथारिब
तोमा सबाकार हिते ॥११

एतेक उत्तर कहि विश्वम्भर
भूमे गड़ागड़ि बुलि ।
धूलाये धूसर गौर कलेवर
लोटाये मुकुल चुलि ॥१२
हरि हरि बोल डाके उतरोल
सघन निश्वास नासा ।
अङ्गेर पुलक आपाद मस्तक
गदगद आध भाषा ॥१३
क्षणेक रोदन क्षणेक वेदन
क्षणे चमकित चाहे ।
क्षणे हाँप झाँप कलेवर काँप
क्षण उठे कृष्ण विरहे ॥१४
क्षणे उतरोली वृन्दावन बलि
क्षणे 'राधा' बलि डाके ।
मालसाट मारि बले हरि हरि
क्षणे हात मारे बुके ॥१५
देखि सब जन गणे मने मने
अन्तरे कातर हैया ।
कि कहिब आरे दुखेर पाथारे
पड़िल येहेन गिया ॥१६
कहये मुरारि शुन गौरहरि
स्वतन्त्र तुमि सर्वथा ।
लोक बुझावारे करुणा प्रचारे
भावह विरह व्यथा ॥१७
तुमि या करिबे निजमने सुखे
ताहे कि बलिब आने ।
तुमि सब जान ये कर विधान
कि हय जीवेर प्राणे ॥१८
मोरा सब जीव ना जानि कि कब
कीट पिपीलिका हेन ।

तुमि दया सिन्धु सब लोक बन्धु
बुझिया करह येन ॥१९
ए बोल शुनिया पहुँ से हासिया
सबारे करिला कोले ।
प्रेम प्रकाशिया सबा सन्तोषिया
प्रबोध बचने बोले ॥२०
शुन सब जन कहिये बचन
सन्देह ना कर केहो ।
यथा तथा याइ तो सबार ठाँइ
आछिये जानिह एहो ॥२१
तबे विश्वम्भर गेला निज घर
सबारे विदाय दिया ।
सन्न्यास आशये यतेक करये
जननी ना जाने इहा ॥२२
शचीर अन्तरे धक धक करे
सोयाथ ना पाय चिते ।
लोचन बले हेन प्रेमार सागर
केमने चाहे छाड़िते ॥२३

द्वादश अध्याय

श्रीशचीमातार विलाप ।

आहिरी राग । दिशा ।

आरे निमाइ निमाइ आमार ना छाड़िह मोरे ।
तोमा बहि केहो नाहि सकल संसारे ॥

एइमने अनुमाने जानाजानि कथा ।
सन्न्यास करिबे पुत्र शुने शचीमाता ॥१
आकाश भाङ्गिया पड़े मस्तक उपर ।
अचेतन हैला शची मूर्च्छित अन्तर ॥२
उन्मती पागली शची बेड़ाय चौदिके ।
यारे देखे तारे पुछे सब नवद्वीपे ॥३
निश्चय जानिल पुत्र करिब सन्न्यास ।
विश्वम्भरेर काछे गिया छाड़ये निश्वास ॥४
तुमि मात्र पुत्र मोर देहे एक आँखि ।
तोरे ना देखिले सब अन्धकार देखि ॥५
लोक मुखे शुनि बाछा करिबे सन्न्यास ।
मोर मुण्डे भाङ्गि येन पड़िल आकाश ॥६
एकाकिनी अनाथिनी आन केह नाहि ।
सकल पासरि एक तोर मुख चाहि ॥७
नयनेर तारा मोर कुलेर प्रदीप ।
तोमा पुत्रे भाग्यवती बले नवद्वीप ॥८
ना घुचाइह आरे बाप ! मोर अहङ्कार ।
तुमि ना थाकिले सब हब छारकार ॥९
भाग्य करि माने लोके देखि मोर मुख ।
एखन आमारे देखि हइबे विमुख ॥१०
तुमि हेन पुत्र मोर ए संसारे धन्य ।
तोमा देखिले मोर सकलि अरण्य ॥११
दुःख दिया अभागीरे छाड़ि याबे तुमि ।
गङ्गाय प्रवेश करि मरि याब आमि ॥१२
एहेन कोमल पाये केमने हाँटिबे ।
क्षुधाय तृष्णाय अन्न काहारे मागिबे ॥१३
ननीर पुतुली तनु रौद्रेते मिलाय ।
केमने सहिब इहा ए दुखिनी माय ॥१४
हापुतीर पुत मोर सोनार निमाइ ।
आमारे छाड़िया तुमि याबे कोन ठाँइ ॥१५
बिष खाइया मरि याब तोर विद्यमाने ।
तोमार सन्न्यास येन ना शुनिये काणे ॥१६
आमारे मारिया बापु याइबे विदेशे ।
आगुन ज्वालिया ताते करिब प्रवेशे ॥१७

सर्वजीवे दया तोर मोरे अकरुण।
ना जानि कि लागि मोरे विधाता दारुण १८
रूपे गुणे शीले पुत्र त्रिजगते धन्य।
भुवन मोहन वेश केशेर लावण्य ॥१९
कन्ध बिलम्बित केशे मालती बान्धिया।
जुड़ाय पराण मोर से वेश देखिया ॥२०
बयस्य बेष्टित तुमि चलि याह पथे।
देखिया जुड़ाय हिया पुँथि वाम हाते ॥२१
केमने छाड़िबा बापु ! निज सङ्गिगण।
ना करिबे ता सबा सहित संकीर्त्तन ॥२२
सेहेन सुन्दर वेशे ना नाचिबे आर।
याहा देखि मुह पाय सकल संसार ॥२३
केमने बा जीवे तोर निज प्रयोजन।
सबारे मारिया तोर सन्न्यास कारण ॥२४
आगे त मरिब आमि कबे विष्णुप्रिया।
मरिब भक्त सब बुक विदरिया ॥२५
मुरारि मुकुन्द दत्त आर श्रीनिवास।
अद्वैत आचार्य्य गोसाँइ आर हरिदास ॥२६
नरहरि श्रीरघुनन्दन गदाधर।
श्रीराम आदि बासुदेव घोष बक्रेश्वर ॥२७
मरिब भक्त सब ना देखिया तोमा।
ए सब बुझिया बापु चित्ते देह क्षमा ॥२८
पितृहीन पुत्र तुमि दिल दुइ विहा।
अपत्य सन्तति किछु ना देखिल इहा ॥२९
तरुण बयसे नहे सन्न्यासेर धर्म।
गृहस्थ आश्रमे थाकि साध सब कर्म ॥३०
काम क्रोध लोभ मोह यौवने प्रबल।
सन्न्यास केमने तोर हइबे सफल ॥३१
मनेर निवृत्ति कलियुगे नाहि हय।
मनेर चाञ्चल्य सन्न्यासेर धर्म क्षय ॥३२
गृहिजन मनःपापे नाहि हय बद्ध।
सन्नयासीर धर्म याय मनोज अशुद्ध ॥३३
एतेक बचन यदि शचीदेवी बैल।
शुनिया प्रबोध वाणी मायेरे कहिल ॥३४
नरहरि पादपद्म शिरेर भूषण।
गौराङ्ग चरित कहे ए दास लोचन ॥३५

बराड़ी राग।

हेन अदभुत कथा श्रवण मङ्गल नाम रे।
शुन गोरा गुणगाथा शचीर दुलाल चाँद रे ॥

अस्तव्यस्त नह शुन आमार बचन।
मिछामिछि दुःख चिते कर कि कारण ॥१
बारे बारे कहि तोरे नाहि अवधाने।
मिछामात्र लोभ मोह क्रोध अभिमाने ॥२
के तुमि तोमार पुत्र केबा कार बाप।
मिछा तोर मोर करि कर अनुताप ॥३
कि नारि पुरुष किबा केबा कार पति।
श्रीकृष्ण चरण बिनु नाहि आर गति ॥४
सेइ माता सेइ पिता सेइ बन्धु जन।
सेइ हर्त्ता सेइ कर्त्ता सेइ मात्र धन ॥५
सेइ से कहिल गति कहिल ए तत्त्व।
ता बिनु सकल मिछा यतेक जगत ॥६
विष्णुमाया बन्धे सब संसार जड़ित।
निज मद अहङ्कारे केबल पीड़ित ॥७
निज भाल बलि येइ येइ करे कर्म।
परकाले बन्दी करे सेइ सब धर्म ॥८
कर्म सूत्रे बन्दी हैया बुलये भ्रमिया।
आपना ना जाने जीव कृष्ण पासरिया ॥९

चतुर्द्दश लोक मध्ये मानुषेर जन्म ।
दुर्ल्लभ करिया मानि कहिल ए मर्म ॥१०
बिषय विपाक इथि आछये अपार ।
क्षणेक भंगुर एइ अनित्य संसार ॥११
तबहुँ दुर्ल्लभ जानि मनुष्य शरीर ।
श्रीकृष्ण भजये ये मायाय हैया स्थिर ॥१२
श्रीकृष्ण भजन सबे मात्र एइ देहे ।
मुक्तबन्ध हय यदि कृष्णे करे लेहे ॥१३
पुत्र स्नेह कर मोरे यत बड़ भाव ।
श्रीकृष्ण चरणे हैले कत हैत लाभ ॥१४
संसारे आरति करि मरिबार तरे ।
श्रीकृष्ण आरति करि भव तरिबारे ।१५
सेइ से परम बन्धु सेइ माता पिता ।
श्रीकृष्ण चरणे येइ प्रेम भक्ति दाता ॥१६
कृष्णेर विरहे मोर अन्तर कातर ।
चरणे पड़िया कहि विनय उत्तर ॥१७
बिस्तर पिरीति मोरे करियाछ तुमि ।
तोमार कृपाय शुद्ध चित हइल आमि ॥१८
आमार निस्तार हय तोर परित्राण ।
श्रीकृष्ण चरण भज छाड़ पुत्रज्ञान ॥१९
सन्नयास करिब कृष्ण प्रेमार कारण ।
देशे देशे हैते आनि दिब प्रेमधने ॥२०
आनेर तनय आने रजत सुवर्ण ।
खाइले विनाश पाय नहे कोन धर्म ॥२१
बड़ दुखे धन उपार्जन करि आने ।
धनइ याउक किबा मरुक आपने ॥२२
आमि आनि दिब हेन कृष्ण प्रेम धन ।
सकल सम्पद सेइ कृष्णेर चरण ॥२३
इहलोक परलोके अविनाशी प्रेमा ।
आज्ञा देह केँदो ना मा चित्ते देह क्षमा ॥२४
सकल जनमे सबे पिता माता पाय ।
कृष्ण गुरु नाहि मिले बुझह हिहाय ॥२५
मनुष्य जनमे सबे कृष्ण गुरु जानि ।
सेइ गुरु नाहि करे पशु पक्षी मानि ॥२६
एत शुनि शचीदेवी विस्मय हियाय ।
विश्वम्भर मुखपद्म एकदिठे चाय ॥२७
चतुर्द्दश लोकनाथ माया कैल दूर ।
सर्वजीवे देखे शची एक समतुल ॥२८
सेइक्षणे विश्वम्भरे कृष्ण बुद्धि हैल ।
आपन तनय बलि माया दूरे गेल ॥२९
नब मेघ जिनि तनु श्यामल बरण ।
त्रिभङ्ग मुरलीधर सुपीत बसन ॥३०
गोप गोपी गोपालेर सने वृन्दावने ।
देखिल आपन पुत्र चकित तखने ॥३१
देखि शची चमत्कार हइला अन्तरे ।
पुलके आकुल अङ्ग कम्प कलेबरे ॥३२
स्नेहे नाहि छाड़े शची आपन सम्बन्ध ।
कृष्ण हैया पुत्र हैल भाग्येर निर्बन्ध ॥३३
जगत दुर्ल्लभ कृष्ण आमार तनय ।
कारु बश नहे मोर शक्ये किबा हय ॥३४
एत अनुमानि शची कहिल बचन ।
स्वतन्त्र ईश्वर तुमि पुरुष रतन ॥३५
मोर भाग्ये एतदिन छिला मोर बश ।
एखने आपन सुखे करह सन्नयास ॥३६
एक निवेदने मोर आछे तोर ठाँइ ।
एहेन सम्पद मोर कि लागिया याय ॥३७
इहा बलि सकरुण भेल कण्ठस्वर ।
सात पाँच धारा बहे नयनेर जल ॥३८
फुकारि फुकारि कान्दे शची सुचरिता ।
मायेर कान्दने प्रभु हेट कैल माता ॥३९

पुनरपि मुख तुलि कहे विश्वम्भर ।
शुन गो जननी ! तुमि श्रामार उत्तर ॥४०
ये दिन देखिते मोरे चाह श्रनुरागे ।
सेइक्षणे तुमि श्रामा देखिबार पाबे ॥४१
ए बोल शुनिया शची सम्बरे क्रन्दन ।
व्यथित हृदये कहे ए दास लोचन ॥४२

श्रीविष्णुप्रियार विलाप

बराड़ी राग। धूलाखेलाजात ॥
गौराङ्ग हे केने बा नदीया आइला।
ओ गौराङ्ग गौराङ्ग हे॥ ध्रुव ॥

तबे शचीराणी कहे मन काहिनी
हिया दुखे विरस वदन ।
मुखे ना निःसरे वाणी दुनयाने झरे पानी
देखि विष्णुप्रिया श्रचेतन ॥१
सुधाइते नारे कथा श्रन्तरे मरम व्यथा
लोक मुखे शुने घानाघुना ।
इङ्गिते बुझिल काज पड़िल श्रकाले वाज
चेतना हेरिल सेइ दीना ॥२
विष्णुप्रिया मने गणे प्रभु दिबा श्रबसाने
घरेरे श्राइला हरषिते ।
करिया भोजन पान सुखे शय्याय शयान
विष्णुप्रिया श्राइला त्वरिते ॥३
चरण कमल पाशे निश्वास छाड़िया बैसे
नेहारये कातर बयाने ।
हृदय उपरे थुइया बान्धे भुजलता दिया
प्रिय प्राणनाथेर चरणे ॥४
दु'नयने बहे नीर भिजिल हियार चीर
चरण बहिया पड़े धारा ।
चेतन पाइया चिते उठे प्रभु श्राचम्बिते
विष्णुप्रियाय पुछे श्रभिपारा ॥५
मोर प्राणप्रिया तुमि कान्द केने नाहि जानि
कह प्रिये ! इहार उत्तरे ।
थुइया ऊरुर पर चिबुके दक्षिण कर
पुछे किछु मधुर श्रक्षरे ॥६
कान्दे देवी विष्णुप्रिया विदारिया याय हिया
पुछिते ना कहे किछु वाणी ।
श्रन्तरे गुमरे प्राण देहे नाहि सम्बिधान
नयाने झरये मात्र पानी ॥७
पुनःपुन पुछे पँहु सुमति ना देइ तभु
कान्दे मात्र चरणे धरिया ।
प्रभु सर्व कला जाने पुछे नाना विधाने
श्रङ्गवासे वयान मुछिया ॥८
नानारङ्ग परथाब करिया बाढ़ाल भाव
ये कथाय पाषाण मुञ्जरे ।
प्रभुर व्यग्रता देखि विष्णुप्रिया चन्द्रमुखि
कहे किछु गदगद स्वरे ॥९
कह कह प्राणनाथ मोर शिरे दिया हात
सन्नयास करिबे नाकि तुमि ।
लोक मुखे शुनि इहा विदरिते चाहे हिया
श्रागुनिते प्रवेशिब श्रामि ॥१०
तो लागि जीवन धन रूप नब यौवन
वेश विलास भाव कला ।
तुमि यबे छाड़ि याबे कि काज ए छार जीवे
हिया पुड़े येन बिष ज्वाला ॥११
श्रामा हेन भाग्यवती नाहि कोन युवती
तुमि मोर प्रिय प्राणनाथ ।

बड़ प्रति ग्राशा छिल निज देह समर्पिल
ए नव यौवने दिबा हात ॥१२
धिक् रहु मोर देहे एक निवेदिये तोके
केमने हाँटिया याबे पथे ।
शिरीष कुसुम येन सुकोमल श्रीचरण
डर लागे परशिते हात ॥१३
भूमिते दाँड़ाग्रो यबे डरे प्राण हाले तबे
सिञ्चिया पड़ये सर्व गाय ।
ग्ररण्य कण्टक बने कोथा याबे कोन् खाने
केमने हाँटिबे राङ्गा पाय ॥१४
सुधामय मुख इन्दु ताहे घर्म बिन्दु बिन्दु
ग्रलप ग्रायास मात्रे देखि ।
बरिषा बादल बेला क्षणे बा बिषम खरा
सन्नचासे करये महादुखी ॥१५
तोमार चरण विनि ग्रार किछु नाहि जानि
ग्रामारे फेलाह कार ठाँइ ।
धर्मभय नाहि तोरा मातावृद्ध ग्राधमरा
केमने छाड़िबे हेन माय ॥१६
मुरारि मुकुन्द दत्त हेन सब भकत
श्रीनिवास ग्रार हरिदास ।
ग्रद्वैत ग्राचार्य्य ग्रादि छाड़िया कि कार्य साधि
केने तुमि करिबे सन्नचास ॥१७
तुमि प्रभु गुणराशि जगजने हेन बासि
विपरीत चरित ग्राशय ।
तुमि यबे छाड़ि याबे शुनिले मरिबे सबे
हबे सब ग्रपयश मय ॥१८
कि कहिब मुइ छार मुइ तोमार संसार
सन्नचास करिबे मोर डरे ।
तोमार निछनि लैया मरि याङ बिष खाइया
सुखे निबसह निज घरे ॥१९
ना याइग्रो देशान्तरे केहो नाहि ए संसारे
वदन चाहिते पोड़े हिया ।
कहिते ना पारे कथा ग्रन्तरे मरम व्यथा
कान्दे मात्र चरणे धरिया ॥२०
शुनि विष्णुप्रिया वाणी तबे सेइ गौरमणि
हासिया तुलिया निल कोले ।
बसने मुछाय मुख करे नाना कौतुक
मिछा ना भाबिह दुख बोले ॥२१
ग्रामि तोरे छाड़िया सन्नचास करिब गिया
ए कथा बा के कहिल तोके ।
ये करि से करि यबे तोमारे कहिब तबे
एखने ना मर मिछा शोके ॥२२
इहा बलि गौरहरि ग्राश्लेष चुम्बन करि
नानारस कौतुक विथार ।
ग्रनन्त विनोद प्रेमा लीला लावण्येर सीमा
विष्णुप्रिया तुषिला प्रकारे ॥२३
विनोद विलास रसे भै गेल रजनी शेषे
पुन किछु पुछे विष्णुप्रिया ।
हियाय ग्रागुनि ग्राछे ते कारणे पुन पुछे
प्रिय प्राणनाथ मुख चाइया ॥२४
प्रभु कर बुके निया पुछे देवी विष्णुप्रिया
मिछा ना कहिग्रो मोर डरे ।
हेन ग्रनुमान करि यत कह से चातुरी
पलाइबे मोर ग्रगोचरे ॥२५
तुमि निजवश प्रभु परवश नह कभु
ये करिबे ग्रापनार सुखे ।
सन्न्यास करिबे तुमि कि बलिते पारि ग्रामि
निश्चय करियाकह मोके ॥२६
ए बोल शुनिया पँहु मुचकि हासिया लहु
कहे शुन मोर प्राणप्रिया ।

किछु ना करिह चिते ये कहिये तोर हिते
सावधाने शुन मन दिया ॥२७
जगते यतेक देख मिछा करि सब लेख
सत्य एक सबे एक भगवान् ।
सत्य आर वैष्णव ता विने यतेक सब
मिछा करि करह गेयान ॥२८
मिछा सुत पति नारी पिता माता आदि करि
परिणामे केबा बा काहार ।
श्रीकृष्ण चरण बहि आर त कुटुम्ब नाहि
यत देख सब तार माया ॥२९
कि नारी पुरुष देख आत्मा से सबार एक
मिछा मायाबन्धे भावे दुइ ।
श्रीकृष्ण सबार पति आर सब प्रकृति
एइ कथा ना बुझये कोइ ॥३०
रक्त रेतः सम्मिलने जन्म बिष्ठा मूत्र स्थाने
भूमे पड़ि हये आगोयान ।
बाल युबा वृद्ध हैया नाना दुःखकष्ट पाइया
देहे गेहे करे अभिमान ॥३१
बन्धु करि यारे पालि तारा सब देइ गालि
अभिमाने वृद्धकाल बञ्चे ।
श्रवण नयान आन्धे बिषाद भाविया कान्दे
तबु नाहि भजये गोविन्दे ॥३२
कृष्ण भजिबार तरे देह धरि ए संसारे
माया बन्धे पासरि आपना ।
अहङ्कारे मत्त हैया निज प्रभु पासरिया
शेषे पाइ नरक यन्त्रना ॥३३
तोर नाम विष्णुप्रिया सार्थक करह इहा
मिछा शोक ना करिह चिते ।
ए तोरे कहिलुँ कथा दूर कर आन चिन्ता
मन देह कृष्णेर चरिते ॥३४
आपने ईश्वर हैया दूर कर निज माया
विष्णुप्रिया परसन्न चित ।
दूरे गेल दुःख शोक आनन्दे भरल बुख
चतुर्भुज देखे आचम्बित ॥३५
तबे देवी विष्णुप्रिया चतुर्भुज देखिया
पति बुद्धि नाहि छाड़े तबु ।
पड़िया चरण तले काकुति मिनति करे
एक निवेदन शुन प्रभु ॥३६
मो अति अधम छार जनमिल ए संसार
तुमि मोर प्रिय प्राणपति ।
एहेन सम्पद मोर दासी हैयाछिलुँ तोर
कि लागिया भेल अधोगति ॥३७
इहा बलि विष्णुप्रिया कान्दे उत्तरोलि हैया
अधिक बाढ़ल परमाद ।
प्रियजन आर्त्ति देखि छल छल करे आँखि
कोले करि करिला प्रसाद ॥३८
शुन देवी विष्णुप्रिया तोमारे कहिल इहा
यखने ये तुमि मने कर ।
आमि यथा तथा याइ आछिये तोमार ठाँइ
एइ सत्य कहिलाम दढ़ ॥३९
प्रभु आज्ञा वाणी शुनि विष्णुप्रिया मने गुणि
स्बतन्त्र ईश्वर एइ प्रभु ।
निजसुखे करे काज के दिबे ताहाते बाध
प्रत्युत्तर ना दिलेन तभु ॥४०
विष्णुप्रिया हेटमुखी छलछल करे आँखि
देखि प्रभु सरस सम्भाषे ।
प्रभु आचरण कथा शुनिते लागये व्यथा
गुण गाय ए लोचन दासे ॥४१

———

श्रीभक्तवृन्देर विलाप

बराड़ी राग।

मोर प्राण आरे द्विजचाँद नारे हय ।। मूर्च्छा ।।
मदन मोहन गोरा रूपेर माधुरी।
सदाइ जागिछे रूपेर बालाइ लैया मरि ।। ध्रु ।।

एइमनें अनुमाने दिन रात्रि याय।
आगुनि ज्वालिल येन सबार हियाय ।।१
सकल भकतगण एकत्र हइया।
गोरा गुणगाथा कहि मरये कान्दिया ।।२
शची विष्णुप्रिया दोँहे कान्दे दिवानिशि।
दशदिक अन्धकार शून्य हेन बासि ।।३
पुरजन परिजन सोयाथ ना पाय।
छटफट करि सबे नगरे बेड़ाय ।।४
हेनइ समये श्रीनिवास द्विजराज।
कातर हृदये किछु प्रभुरे सुधाय ।।५
एक निवेदन आछे कहिते डराङ।
आज्ञा पाइले प्रभु सङ्गे मो चलि याङ ।।६
आर येबा पारे सेह सङ्गे चलि याउ।
तोमा ना देखिले केहो ना राखिबे जीउ ।।७
आगे त मरिब आमि शुन विश्वम्भर।
आपन अन्तर कथा करिल गोचर ।।८
ए बोल शुनिया पहुँ लहु लहु हास।
ये किछु कहिये ताहा शुन श्रीनिवास ।।९
आमार विच्छेदे लागि ना पाओ तरास।
कभु ना छाड़िब आमि तोमा सबार पाश १०
बिशेषे तोमार घरे कृष्णेर मन्दिरे।
निरन्तर आछि आमि प्राण कर स्थिरे ।।११
प्रबोध बचन बलि तुषिल ताहारे।
मुरारि गुप्तेर घरे गेला सन्ध्याकाले ।।१२
हरिदास सङ्गे करि मुरारि मन्दिरे।
निभृते कहये किछु देवतार घरे ।।१३
शुनह मुरारि तुमि आमार बचन।
मोर प्राणप्रिय तुमि कहि ते कारण ।।१४
कहिब उत्तम कथा शुन सावधाने।
उपदेश कहि तोर हितेर कारणे ।।१५
अद्वैत आचार्य्य गोसाँइ त्रिजगते धन्य।
ताहार अधिक बन्धु नाहि मोर अन्य ।।१६
आपने ईश्वर अंश अखिलेर गुरु।
ये चाहे आपना हित तार सेवा करु ।।१७
जगतेर हित कर्त्ता वैष्णवेर राजा।
परम भकति करि करु तार पूजा ।।१८
तार देह पूजा पाइले कृष्ण पूजा पाय।
निभृते कहिल तोरे राखिबे हियाय ।।१९
आमि आर गदाधर पण्डित गोसाँइ।
नित्यानन्द श्रीअद्वैत श्रीवास रामाइ ।।२०
जानिबे आमार देह ए सब सहिते।
अन्तर कहिल तोरे राखिबे हियाते ।।२१
ए बोल शुनिया से मुरारि वैद्यराज।
अन्तरे जानिल प्रभुर अन्तरेर काज ।।२२
कान्दिते कान्दिते प्रभुर पड़िल चरणे।
निश्चय जानिला प्रभुर सन्नचास करणे ।।२३
हरिदास करये चरणे नमस्कार।
आत्म समर्पण करे विनय अपार ।।२४
मुरारि कान्दना प्रभु शुनिते कातर।
आस्ते व्यस्ते उठिया चलिला निजघर ।।२५
मुरारिके प्रबोध करिला एइ वाणी।
तोमार निकटे निरन्तर आछि आमि ।।२६
सन्नचास करिब तार आछये बिलम्ब।
परिणामे ये कहिल अइ अबलम्ब ।।२७

ए बोल शुनिया प्रभु निजघरे याय ।
कातर अन्तरे कथा ए लोचन गाय ॥२८

भक्तगणे प्रबोध

करुणश्री राग ।

ओकि आरे हय हय ।
ये प्रभुर स्मरणे हय दुःख विमोचन ।
कि आरे आरे हय ॥ मूर्च्छा ॥
छेड़े गेले मरि याब गौराङ्ग रे ।
कार मुख चाइया रब गौराङ्ग रे ॥ ध्रु ॥

रजनी वञ्चये प्रभु आनन्द हियाय ।
आछिल अधिक करि पिरीति बाढ़ाय ॥१
मायेरे सन्तोष करे हृदय जानिया ।
ये कथाय थाकये अन्तर सुस्थ हैया ॥२
पुरजने परिजने यारे ये उचित ।
एइमने सबाकारे करये पिरीत ॥३
वैराग्य आवेश प्रभु परित्याग करि ।
घरे घरे निजप्रेम परकाश करि ॥४
कारु घरे हास्य परिहास कथा कहे ।
यार येन हिया तेनमते सबे मोहे ॥५
आछिला गुपत वेशे यारा सङ्गे याइते ।
मायार प्रभावे तारा आइला घरेते ॥६
नाना आभरण परे श्रीअङ्गे चन्दन ।
हास विलास रसमय अनुक्षण ॥७
सब लोक जानिलेक लहिब सन्न्यास ।
स्वच्छन्द हइल सब लोक निज दास ॥८
शयन मन्दिरे प्रभु शयन करिला ।
ताम्बूल स्तवक करे विष्णुप्रिया आइला ॥९
हासिया सन्तोषे प्रभु आइस आइस बोले ।
परम पिरीति करि बसाइल कोले ॥१०
विष्णुप्रिया प्रभु अङ्गे चन्दन लेपिल ।
अगुरु कस्तुरी गन्धे तिलक रचिल ॥११
दिव्य मालतीर माला दिल गोरा अङ्गे ।
श्रीमुखे ताम्बूल तुलि दिल नाना रङ्गे ॥१२
तबे महाप्रभु से रसिक शिरोमणि ।
विष्णुप्रिया अङ्गे वेश करेन आपनि ॥१३
दीर्घ केश कामेर चामर जिनि आभा ।
करबी बान्धिया दिल मालतीर आभा ॥१४
मेघ बन्ध हैल येन चाँदेर कलाते ।
किबा उगारिया गिले ना पारि बुझिते ॥१५
सुन्दर ललाटे दिल सिन्दूरेर बिन्दु ।
दिवाकर कोले येन रहियाछे इन्दु ॥१६
सिन्दूरेर चौदिके चन्दन बिन्दु आर ।
शशि कोले सूर्य्य येन धाय देखिबार ॥१७
खञ्जन नयाने दिल अञ्जनेर रेख ।
भुरु काम कामानेर गुण करिलेख ॥१८
अगुरु कस्तुरी गन्ध कुचोपरि लेपे ।
दिव्य बस्त्रे रचिल काँचुलि परतेके ॥१९
नाना अलङ्कारे अङ्ग भूषिल ताहार ।
ताम्बूल हासिर सङ्गे विहरे अपार ॥२०
त्रैलोक्य अद्भुत रूप निरीखे वदन ।
अधर बान्धुली साधे करये चुम्बन ॥२१
क्षणे भुज लता बेढ़ि आलिङ्गन करे ।
नव कमलिनी येन करिबर कोरे ॥२२
नाना रस विथारये बिनोद नागर ।
आछुक आनेर काज काम अगोचर ॥२३
सुमेरुर कोले येन बिजुरी प्रकाश ।
मदन मुगधे देखि रतिर बिलास ॥२४

हृदय उपरे थोय ना छोँयाय शय्या ।
पाश पलटिते नारे दोँहे एकमज्जा ॥२५
बुके बुके मुखे मुखे रजनी गोङाय ।
रस अवसादे दोँहे सुखे निद्रा याय ॥२६
रजनीर शेषे प्रभु उठिला सत्वर ।
विष्णुप्रिया निद्रा याय अति घोरतर ॥२७
वैराग्य समये प्रेमा उभारे अधिक ।
सन्नचास करिब बलि उनमत चित ॥२८
ए समये बिथारये रङ्ग रस भाव ।
इहार कारण किछु शुन लाभालाभ ॥२९
ये जन येमने भजे तारे तेन प्रभु ।
भजन अधिक न्यून ना करये कभु ॥३०
ताहाते बिशेष आछे अधिकारि भेद ।
अमाया समाया भक्ति सवेद निर्वेद ॥३१
भक्ति बिनु कृष्ण भजिबारे नारे केहो ।
अमाया निश्चला भक्ति हय सेहो ॥३२
विनि अनुरागे प्रेमभक्ति हय यबे ।
कृष्णे बन्दी करिबारे नारे केहो तबे ॥३३
ऐछन ठाकुर गौर करुणार सिन्धु ।
अनुरागे प्रेमार भिखारी दीनबन्धु ॥३४
करुणाय प्रकाशये निज अनुराग ।
विच्छेद हृदये येन बाढ़े तार भाव ॥३५
भाव सङ्गे ये जन देखये मोर अङ्ग ।
तार सह मोर भाव कभु नहे भङ्ग ॥३६
एहेन करुणानिधि आर आछे के ।
आपना बान्धिते प्रेम अनुराग दे ॥३७
एइ से कारणे विष्णुप्रियाके प्रसाद ।
इहा जानि मने केहो ना कर प्रमाद ॥३८
ए प्रेम भकति प्रभु करिब प्रकाश ।
आनन्द हृदये कहे ए लोचन दास ॥३९

त्रयोदश अध्याय

गृहत्याग ।

करुणश्री राग ।

प्रभु रे गोरा रे आरे हय ।
गोरा चाँद नारे हय ॥ मूर्च्छा ॥
एमन केने ह'ले गौराङ्ग ! एमन केने हले ।
नटवर वेश गोरा कि लागि छाड़िले ॥
सुरधनी तीरे निमाइ तिलेक दाँड़ाओ ।
चाँद मुख निरिखिये तबे छाड़ि याओ ॥
एक बोल बलि निमाइ ! यदि तुमि राख ।
सन्न्यासेर काज नाइ घरे बसि थाक ॥
सन्न्यासी ना हओ निमाइ वैरागी ना हओ ।
अभागी मायेरे निमाइ छाड़िया ना याओ ॥
माये डाके रह गौराङ्ग ओ गौराङ्ग रे ।
माये ना छाड़िया याओ ओ गौराङ्ग रे ॥ ध्रु ॥

प्रातःकाले उठि प्रभु प्रातःक्रिया करि ।
सन्नचास करिब दढ़ाइल गौरहरि ॥१
काञ्चन नगरे आछे भारती गोसाँइ ।
सन्नचास करिब तथा पण्डित निमाइ ॥२
एकान्त करिया मने कैल विश्वम्भर ।
यात्राकाले लैल दक्षिण नासार स्वर ॥३
चलिला से महाप्रभु गङ्गार समीपे ।
गङ्गा सन्तरणे गेला छाड़ि नवद्वीपे ॥४
गङ्गा नमस्करि नवद्वीप छाड़ि याय ।
बजर पड़िल येन सबार माथाय ॥५
किबा दिन माझे रबि येन लुकाइल ।
सरोबर छाड़ि हंसगण कोथा गेल ॥६
किबा देह छाड़ि प्राण गेल आचम्बिते ।
भ्रमरा छाड़िल येन पद्मेर पिरीते ॥७
विच्छेदे वियोगमय हैल नवद्वीपे ।
शोकेर पर्वत येन सबाकारे चापे ॥८

परिजन पुरजन शची विष्णुप्रिया ।
मूर्च्छित हइया कान्दे अङ्ग आछाड़िया ॥९
शचीदेवी कान्दे कोले करि विष्णुप्रिया ।
विष्णुप्रिया मरा येन रहिल पड़िया ॥१०
देहमात्र आछे प्राण गेल त छाड़िया ।
शची विष्णुप्रिया कान्दे भूमि लोटाइया ॥११
शचीदेवी कान्दे डाके निमाइ बलिया ।
आगुनि पोड़ये येन धकधक हिया ॥१२
शून्य हैल दशदिक अन्धकारमय ।
केमने बञ्चिब मुइ घर घोरमय ॥१३
गिलिबारे आइसे मोरे ए घर करण ।
बिष येन लागे इष्टकुटम्ब बचन ॥१४
मा बलिया मोरे आर ना डाकिबे केहो ।
आमारे नाहिक यम पासरिल सेहो ॥१५
किबा दुःख पाइ पुत्र छाड़िल आमारे ।
हापुति करिया मोरे गेला कोथाकारे ॥१६
हाय रे हाय रे निमाइ निदारुण हैया ।
कोन् देशे गेले बाछा के दिबे आनिया ॥१७
बुक फाटे बाप तोर सोङरि माधुरि ।
मा बलिया आर ना डाकिबा गौरहरि ॥१८
अनाथिनी करिया कोथाय गेले बाप ।
मने छिल जननीरे दिबे तुमि ताप ॥१९
पड़िया शुनिया पुत्र इहाइ शिखिला ।
अनाथिनी अभागिनी मायेरे करिला ॥२०
विष्णुप्रिया एड़ि बाप कोथा पलाइला ।
भकत सबार प्रेम किछु ना गणिला ॥२१
विष्णुप्रिया कान्दे हिया नाहिक सम्बित ।
क्षणे उठे क्षणे पड़े उनमत चित ॥२२
बसन ना देय गाये ना बन्धये चुलि ।
हाकान्द कान्दना कान्दे उन्मत्त पागलि ॥२३
प्रभुर अङ्गेर माला हृदये करिया ।
ज्वालह आगुनी ताहे मरिब पुड़िया ॥२४
गुण विनाइते नारे मरये मरमे ।
सबे एक बोल बोले एइ छिल करमे ॥२५
अमिया अधिक प्रभु तोर यत गुण ।
एखने सकल से भै गेल आगुन ॥२६
रहस्य विनोद कथा कहिबारे नारे ।
हियार पोड़ने कान्दे अति आर्त्तस्वरे ॥२७
चौदिके भकत मरे अन्तर यन्त्रणा ।
कि कहिब सम्बरिते ना पारे आपना ॥२८
अनेक शकति सवे बले धीरे धीरे ।
कि दिब प्रबोध तोरे मन कर स्थिरे ॥२९
ये देखिले ये शुनिले एतकाल धरि ।
प्राण स्थिर कर सेइ सब मने करि ॥३०
कि जानह भगवान् कार आपनार ।
शुनियाछ यत यत पूर्व अवतार ॥३१
लोकवेद अगोचर चरित्र ताहार ।
बड़ भाग्ये नाम धरे सम्बन्ध तोमार ॥३२
यारे येइ आज्ञा कैल थाक सेइमते ।
सेइ आज्ञा पालन करह दृढ़ चिते ॥३३
एतेक बचन यबे बैल भक्तगण ।
शुनिया कातर हिया सम्बरे क्रन्दन ॥३४
तबे नित्यानन्द लैया यत भक्तगण ।
युक्ति करे कोथा गेले पाब दरशन ॥३५
केहो बले यत तीर्थ करिब गमन ।
यथागेले गोराचाँदेर पाब दरशन ॥३६
केहो बले वृन्दावन याब बाराणसी ।
नीलाचले याब यथा थाकये सन्नचासी ॥३७
काञ्चन नगरे आछे भारती गोसाँइ ।
सन्नचास करिबे तथा पण्डित निमाइ ॥३८

एइ बाक्य कभु प्रभुर मुखे शुनियाछि ।
सत्य करि एइ बाक्य दृढ़ नाहि बुझि ॥३६
मिथ्या बाक्ये सब लोक याइब तथारे ।
आगे आमि तत्त्व जानि कहिब सबारे ॥४०
धीर भक्त जन कत देह मोर सङ्गे ।
धरिया आनिब मोर प्रभु से गौराङ्गे ॥४१
तबे सब भक्तगण मने अनुमाने ।
मुख्य मुख्य जन कत दिल ताँर सने ॥४२
श्रीचन्द्रशेखराचार्य्य पण्डित दामोदर ।
वक्रेश्वर आदि करि चलिला सत्वर ॥४३
एइ सबा लैया नित्यानन्द चलि याय ।
प्रबोधिया शची विष्णुप्रियार हृदय ॥४४
एथा गौरहरि शीघ्र चलिला सत्वर ।
कोटि कुञ्जर मत्त गमन सुन्दर ॥४५
झर झर नयने झरये प्रेमधारा ।
पुलके आकुल अङ्ग सोणार किशोरा ॥४६
ऊर्द्ध्ववास केश प्रभु करिया बन्धन ।
मथुरार मल्ल येन करिछे गमन ॥४७
राधार विरह भावे हइया आकुल ।
बले कोथा राधा मोर कोथाय गोकुल ॥४८
से गमन क्षणे क्षणे मन्थर हइया ।
मालसाट् मारे क्षणे चौदिके चाहिया ॥४६
एइमत प्रेमावेशे चलि याय पथे ।
अखिलेर गुरु मोर प्रभु जगन्नाथे ॥५०
काञ्चन नगरे आइला प्रभु विश्वम्भर ।
यथा आछे केशव भारती न्यासिवर ॥५१
परम भकति करि परणाम करे ।
सम्भ्रमे उठिया न्यासी नारायण स्मरे ॥५२
बड़ भाग्य मानि दोँहे सरस सम्भाष ।
विश्वम्भर बले मोरे कराह सन्नचास ॥५३
एइमने दुइजने आछे सेइ काले ।
नित्यानन्द आइला चन्द्रशेखरादि मेले ॥५४
सन्नचासीरे नमस्करि प्रभु नमस्करे ।
हासिया कहये प्रभु भाल हैल आइले ॥५५
तोर आगमने मोर सकल मङ्गल ।
सन्नचास करिब हबे जनम सफल ॥५६
ए बोल शुनिया प्रभु भारती सम्भाषे ।
प्रणति मिनति करे सन्नचासेर आशे ॥५७
भारती कहये शुन शुन विश्वम्भर ।
तोमारे सन्नचास दिते काँपये अन्तर ॥५८
एहेन सुन्दर तनु तरुण वयेस ।
जनम अवधि नाहि जान दुःख क्लेश ॥५९
अपत्य सन्तति नाहि हये त तोमार ।
तोमारे सन्नचास दिते ना हय आमार ॥६०
पञ्चाशेर ऊर्द्ध्व हैले रागेर निवृत्ति ।
तबे से सन्नचास दिते हय भाल युक्ति ॥६१
ए बोल शुनिया प्रभु कहें लहु वाणी ।
तोमार साक्षाते आमि कि बलिते जानि ॥६२
माया ना करिह मोरे शुन न्यासिमणि ।
धर्माधर्म तत्त्व केबा जाने तोमा विनि ॥६३
संसारे दुर्ल्लभ एइ मानुषेर जन्म ।
ताहाते दुर्ल्लभ कृष्णभक्ति परधर्म ॥६४
बड़इ दुर्ल्लभ ताहे भक्तजन सङ्ग ।
मानुषेर देह से तिलेके हय भङ्ग ॥६५
बिलम्ब करिते एइ देह यदि याबे ।
तबे आर वैष्णवेर सङ्ग कबे हबे ॥६६
माया ना करिह मोरे कराह सन्न्यास ।
तोर परसादे मुइ हङ कृष्णदास ॥६७
इहा बलि करुण अरुण दु'नयान ।
छल छल करे आँखि कातर बयान ॥६८

हुङ्कार गर्जन सिंह जिनि पराक्रम ।
भावमय सब देह अति सुलक्षण ॥६९
हरि हरि बलि डाके मेघेर गर्जने ।
अविराम प्रेमबारि झरे दु'नयने ॥७०
त्रिभङ्ग हइया वंशी वंशी बलि डाके ।
क्षणे रासमण्डली बलिया अङ्ग झाँके ॥७१
गोवर्द्धन राधाकुण्ड बलि हासे कान्दे ।
चमत्कार हैल न्यासी अन्तरेते चिन्ते ॥७२
बुझिया अन्तरे किछु बले न्यासिराज ।
मरम जानिल मोर भाल नहे काज ॥७३
जगतेर गुरु एइ जगतेर नाथ ।
गुरु बलि आमारे करिबे जोड़ हात ॥७४
एत अनुमानि न्यासी कहिल उत्तर ।
सन्न्यास करिबे यदि याह निज घर ॥७५
साक्षाते जननी ठाँइ लइबे विदाय ।
तोर पत्नी सुचरिता याबे तार ठाँय ॥७६
साक्षाते सबार ठाँइ विदाय हइया ।
आसिबे आमार ठाँइ सबा बुझाइया ॥७७
मने आछे गोराचाँदे करिया विदाय ।
आसन छाड़िया आमि याब अन्य ठाँय ॥७८
अन्तर्य्यामी भगवान् ए मन जानिया ।
पालिब तोमार आज्ञा बलिल हासिया ॥७९
चलिलेन महाप्रभु नवद्वीप पुरे ।
देखिया भाविल न्यासी आपन अन्तरे ॥८०
याँर लोमकूपे ब्रह्माण्डेर गण वैसे ।
ताँरे पलाइया आमि याब कोन् देशे ॥८१
भ्रान्तमति आमि किछु देखिया ना देखि ।
सबार जीवने एइ सर्वजन साखी ॥८२
इहा भावी सन्न्यासी डाकिया गौरहरि ।
बलिते लागिला किछु अनुनय करि ॥८३
आर एक बोल बलि शुन विश्वम्भर ।
तोमारे सन्न्यास दिते बड़ लागे डर ॥८४
तुमि जगतेर गुरु के गुरु तोमार ।
मिछा बिड़म्बना केने करह आमार ॥८५
ए बोल शुनिया कान्दे विश्वम्भर राय ।
आरति करिया धरे सन्न्यासीर पाय ॥८६
प्रणत जनेरे केने बल दुर्वचन ।
मारिलेओ नाहि छाड़ि तोमार चरण ॥८७
मोरे यत बल मोर बुझिबारे मन ।
एक निवेदन आछे शुनह बचन ॥८८
एकदिन रात्रि शेषे देखिलुँ स्वपन ।
सन्न्यासेर मन्त्र मोरे कहिल ब्राह्मण ॥८९
देख देखि एइ बटे किबा नय ।
एहा बलि भारतीर कर्णे मन्त्र कय ॥९०
एइमते सन्न्यासीर कर्णे कहि मन्त्र ।
प्रकारे हइला गुरु आपनि स्वतन्त्र ॥९१
मन्त्र शुनि न्यासिवर हइला प्रेममय ।
कम्प पुलकित अश्रु राधा कृष्ण कय ॥९२
वृन्दावन यमुना फुकारे घनेघन ।
बुझिल एइ से कृष्ण शचीर नन्दन ॥९३
इहारे पिरीति सेइ भाग्य सर्वोत्तम ।
कृष्णे प्रीतिहीन धर्म हये त अधम ॥९४
बुझिल सकल काज भारती गोसाइ ।
सन्न्यास कराब तोरे शुनह निमाइ ॥९५
ए बोल शुनिया प्रभु नाचये आनन्दे ।
हरि हरि बोलये गम्भीर मेघनादे ॥९६
गौर शरीरे भेल पुलक सारि सारि ।
अमिया पसारे येन अङ्गेर माधुरी ॥९७
अरुण नयाने जल झरे अनिबार ।
देखिया सकल लोक करे हाहाकार ॥९८

नवद्वीप हैते गदाधर नरहरि ।
आसिया मिलिला तारा बलि हरि हरि ॥९९
दण्डबत प्रणति करिल बहुतर ।
हासिया करिला कोले शचीर कोङर ॥१००
प्रभु कहे भाल हैल तोमरा आइला ।
कृष्ण अनुग्रह हेतु तोमरा मिलिला ॥१०१
आद्योपान्त तोरा दुइ सङ्गी मोर सङ्गे ।
तोदेर देखिया चित्ते हय बड़ रङ्गे ॥१०२
गौर मुख देखि कान्दे दुइ महाशय ।
डाहिन वामेते दोँहे निश्चल रहय ॥१०३
काञ्चन नगरेर लोक देखिबारे धाय ।
ये देखये तार हिया नयान जुड़ाय ॥१०४
किबा वृद्ध किबा अन्ध कि नारी पुरुख ।
किबा से पण्डित जन कि गण्ड मूरुख ॥१०५
शिशुगण धाय आर कुलेर युवती ।
निजछाया नाहि देखे हेन रूपवती ॥१०६
काँखे कुम्भ करि केहो दाँड़ाइया चाय ।
नड़िते ना पारे केरो लड़ि धरि धाय ॥१०७
कि पंगु आतुर किबा गर्भवती नारी ।
श्रीअङ्ग देखिया सन्न्यासोरे पाड़े गालि १०८
एमन बालके केहो कराये सन्न्यास ।
सन्नयासीर धर्म नहे लोके उपहास ॥१०९
कठिन अन्तर इहार दयाहीन जन ।
नगरे ना राखि इहाय कहिल कथन ॥११०
सन्नयासीरे सबे निन्दा करे बार बार ।
गोरा मुख देखि सबार आनन्द अपार ॥१११
धन्य धन्य करि लोक वाखानये रूप ।
एतकाले देखिल ए अति अपरूप ॥११२
धन्य धन्य जननी धरिल पुत्र गर्भे ।
देवकी समान सेइ शुनियाछि पूर्वे ॥११३

कोन् भाग्यवती हेन पेयेछिल पति ।
त्रैलोक्य ताहार सम नाहि भाग्यवती ॥११४
रूप देखि निज आँखि पालटिते नारि ।
इहार सन्न्यास किबा सहिबारे पारि ॥११५
केमने बा जीवे सेइ इहार जननी ।
ए कथा शुनिले मात्र मरिबे तखनि ॥११६
हेन बुझि माता पिता नाहिक इहार ।
इहो से अच्युतानन्द सर्व वेद सार ॥११७
वृन्दावन माझे किबा राधा हाराइया ।
तार अन्वेषणे बुले कान्दिया कान्दिया ११८
से विरहे भेल इहार सन्न्यास करण ।
निश्चय जानिल एइ नन्देर नन्दन ॥११९
एत अनुमान करि कान्दे सब लोक ।
डाकिया कहये प्रभु ना करिह शोक ॥१२०
आशीर्वाद कर मोरे शुन माता पिता ।
साध लागे कृष्णेर चरणे देङ माथा ॥१२१
यार येइ निज पति सेइ ताहा चाय ।
तार चित्त बान्धिबारे करये उपाय ॥१२२
रूप यौवन यत ए रस लावण्य ।
निज पति भजिले से सब हय धन्य ॥१२३
मने मने कर सबे एइ अनुभव ।
पति विनु युवतीर मिछा हय सब ॥१२४
कृष्ण पद विनु मोर नाहि अन्य गति ।
निज अङ्ग दिया से भजिब प्राणपति ॥१२५
इहा बलि महाप्रभु करये रोदन ।
क्षणेक अन्तरे सब कैल सम्बरण ॥१२६
पुनरपि न्यासीवरे करये प्रणाम ।
आपन अन्तर कथा करे निवेदन ॥१२७
तार परदिने प्रभु गुरु आज्ञा लैया ।
सन्न्यास विधान कर्म करेन हासिया ॥१२८

करिल सकल कर्म ये हय उचित ।
सन्न्यास करिब बलि आनन्दित चित ॥१२९
आपने आचार्य्य रत्न कृष्ण पूजा करे ।
चौदिके वैष्णव सब हरि हरि बले ॥१३०
गुरुर सम्मुखे प्रभु पुटाञ्जलि करि ।
मागये सन्न्यास मन्त्र परणाम करि ॥१३१
मुण्डन करिल प्रभु शुन तार कथा ।
याहा शुनि सबार हृदये लागे व्यथा ॥१३२
सकल वैष्णवजने लागे हिया काँप ।
मुण्डनेर काले बस्त्र देइ मुख झाँप ॥१३३
कमला लालित केश त्रैलोक्य सुन्दर ।
मालार सहित नाम्बे ए गज कन्धर ॥१३४
पूरुवे चूड़ार वेशे मोहित जगत ।
याहार धेयाने जीये सकल भकत ॥१३५
गोपबधू याहा लागि छाड़िलेक लाज ।
जाति कुल शील भये पाड़िलेक बाज ॥१३६
यार गुण गाय शिव बिरिञ्चि नारद ।
आपनारे धन्य माने सकल सम्पद ॥१३७
हेन केश मुण्डन करिते चाहे पँहु ।
कान्दये सकल लोक ना तोलये मुहु ॥१३८
नापित आनिया बैल बचन विनय ।
कृष्ण भजि तुमि मोर हओ त सहाय ॥१३९
आमि त सन्न्यासी हैया कृष्णेर हइब ।
मस्तक मुण्डन कर तोर भाग्य हब ॥१४०
नापित ना देइ हात शिरेर उपर ।
तरासे ताहार अङ्ग काँपे थर थर ॥१४१
मोर भाग्य नाश प्रभु ! याउ सर्वथाय ।
केमने बा हात दिब तोमार माथाय ॥१४२
यदि मोर कुष्ठ हउ गलु सब अङ्ग ।
वंश से नरके याउ शुनह गौराङ्ग ॥१४३
तथापि तोमार शिरे हात दिते नारि ।
बिनय करिया बलि शुन गौर हरि ॥१४४
काञ्चन नगरेर लोक कि नारी पुरुषे ।
फुकारि फुकारि कान्दे गदगद भाषे ॥१४५
नापित कहये प्रभु ! निवेदि चरणे ।
तोर शिरे हात दिब काहार पराणे ॥१४६
आमार शकति नाहि करिते मुण्डन ।
सुन्दर कुञ्चित केश त्रैलोक्य मोहन ॥१४७
देखिते शीतल हय हृदय नयन ।
ये कर से कर प्रभु ना कर मुण्डन ॥१४८
एरूप मानुष नाइ जगत भीतर ।
तुमि सर्व्व लोकनाथ जानिल अन्तर ॥१४९
ए बोल शुनिया प्रभु असन्तोष पाय ।
बुझिया नापित काज अन्तरे डराय ॥१५०
पुन निवेदन करे कातर अन्तरे ।
केमने से हात दिब शिरेर उपरे ॥१५१
अपराध लागि मोर डरे हाले गा ।
तोर शिरे हात दिया छोँब कार पा ॥१५२
कार पाये हात दिया करिब निज कृत्यि ।
अधम नापित मुइ एइ मोर वृत्ति ॥१५३
ए बोल शुनिया प्रभु सदय हृदय ।
ना करिह निज वृत्ति ठाकुर कहय ॥१५४
प्रभु बले शुनरे नापित हरिदास ।
मुण्डन करह आमि करिब सन्न्यास ॥१५५
कृष्णेर प्रसादे जन्म सुखे गोङाइबे ।
अन्तकाले बास तोर मोर लोके हबे ॥१५६
आमार मुण्डन करि यत अस्त्रगण ।
गङ्गाजल माझे लैया कर समर्पण ॥१५७
शुनि हरिदास मने भाबिते लागिल ।
आमार मङ्गल कर्म कभु ना हैल ॥१५८

मुण्डन करिया यदि तबुह विनाश।
मुण्डन ना कैलेश्रो मोर हबे सर्वनाश ॥१५९
इँहारे पिरीति करि ये हय से हो'क।
धर्माधर्म परमात्मा एइ परतेक ॥१६०
मुण्डनेर काले से नापित वर पाय।
कातर हृदये ए लोचन दास गाय ॥१६१

चतुर्दश अध्याय

सन्न्यास ग्रहण

पूरवी सिन्धुड़ा राग।

मुण्डन करिया प्रभु बसे शुभक्षरणे।
सन्नचास करये शुभदिन संक्रमणे ॥१
मकर लेउटे कुम्भ श्राइसे सेइ बेले।
सन्न्यासेर मन्त्र कहे गुरु सेइ काले ॥२
चौदिके वैष्णवगरण करे संकीर्त्तने।
मन्त्र कहे न्यासी विश्वम्भरेर श्रवणे ॥
मन्त्र पाइया विश्वम्भर पुलकित श्रङ्ग।
शतगुरण बाढ़े कृष्ण प्रेमार तरङ्ग ॥४
श्ररुरण नयने जल झरे श्रनिबार।
क्षणे मालसाट् मारे चाड़ि हुहुङ्कार ॥५
सन्न्यास करिल इहा बलिया उल्लास।
पुनःपुन प्रेमानन्दे श्रट्ट श्रट्ट हास ॥६
काञ्चन नगरेर से रूप देखिया।
निश्चय जानिल एइ रास विनोदिया ॥७
भक्तगण मुख हेरि नाचये श्रानन्दे।
श्रापने ठाकुर नाचे नाचे नित्यानन्दे ॥८
गदाधर नरहरि नाचे काछे काछे।
सकल वैष्णव नाचे गौरहरि माझे ॥९

करताल मृदङ्ग श्रार कीर्त्तनेर रोल।
चौदिके सकल लोक बले हरि बोल ॥१०
नटवर शेखर सुघड़ सहचर।
राधाकृष्ण गुणगाने प्रेमाय विह्वल ॥११
हेनइ समये कहे भारती गोसाँइ।
कि नाम हबे तोमार शुनह निमाइ ॥१२
यतेक वैष्णवगण छिल सेइखाने।
सबे मिलि न्यासिवर करे श्रनुमाने ॥१३
बुद्धि श्रनुसारे कहे यार येइ मने।
हेनकाले शुभवाणी उठिल गगने ॥१४
ध्वनि शुनि सर्वलोक हैल चमत्कार।
"**श्रीकृष्णचैतन्य**" नाम करह इँहार ॥१५
निद्रारूपा महामाया देवी भगवती।
श्राच्छादिल सर्वजने छन्न भेल मति ॥१६
यतेक करये सब निँदेर स्वपने।
श्रापने ठाकुर सबार कराये चेतने ॥१७
श्रापनेइ कृष्ण कृष्ण बुझाये सबारे।
"श्रीकृष्णचैतन्य तेँइ वलिये इहारे ॥१८
एतेक बचन यबे दैब मुखे शुनि।
श्रानन्दित सर्वलोक करे हरिध्वनि ॥१९
श्रानन्द हृदये प्रभु बले हरिबोल।
श्रीकृष्णचैतन्य नाम श्राजि हैते मोर ॥२०
गुरुर चरणे करि प्रणति विस्तर।
प्रदक्षिण करिया चलये विश्वम्भर ॥२१
गमन उद्यम देखि सेइ न्यासिराज।
डाके हेर धर दण्ड ना करह व्याज ॥२२
गुरुर बचन शुनि लेउटिया श्रासि।
गुरु ठाँइ दण्ड पाइया लहु लहु हासि ॥२३
सादरे लैल प्रभु गुरुर से दण्ड।
प्रणति करये बहु भकति प्रचण्ड ॥२४

तबे सेइ महाप्रभु बले हरिबोल।
आकाश परशे महा प्रेमार हिल्लोल ॥२५
गुरुर आज्ञाय प्रभु से दिन तथाइ।
गुरुभक्ति करि सुखे बञ्चिला गोसाँइ ॥२६
निशाय वैष्णव मिलि करे संकीर्त्तन।
गुरुर संहति नृत्य करये मोहन ॥२७
केशव भारती नाचे प्रेमानन्द सुखे।
ठाकुर नाचये हरि बले सर्वलोके ॥२८
प्रेमानन्दे पूर्ण दोँहे पासरे आपना।
ब्रह्मसुख अल्प करि मानरे दु'जना ॥२९
एइमते कतक्षणे नृत्य अवसाने।
बसिया कहये न्यासी विश्वम्भर शुने ॥३०
मोर हात हैते दण्ड केनिल आमार।
दण्डाग्र परशि पुन चाहि नाचिबार ॥३१
इहा बलि विह्वल हइया नृत्य करे।
अति अपरूप नाचे प्रेमानन्द भरे ॥३२
आनन्दे वैष्णव सब नाचये कौतुके।
हरि हरि बले सब लोक चतुर्द्दिके ॥३३
एइमते आनन्दे सानन्दे रात्रि याय।
प्रभाते उठिया प्रभु मागेन विदाय ॥३४
गुरु प्रदक्षिण करि करये प्रणाम।
नीलाचल याइ यदि पाइ सम्बिधान ॥३५
गुरुर चरणे आज्ञा मागये ठाकुर।
केशव भारतीर हिया करे दुर्दुर् ॥३६
छलछल करे आँखि करुणार जले।
बिदाय समये गोराचाँद करे कोले ॥३७
स्वतन्त्र ईश्वर तुमि आपनार सुखे।
करुणा कारणे पदव्रजे बुल लोके ॥३८
गुरुभक्ति लओयाबारे कर विधि कर्म।
संस्थापन करिवारे संकीर्त्तन धर्म ॥३९

सर्वलोक निस्तारिते करुणा प्रकाश।
आमा विड़म्बिते कैले एइ त सन्न्यास ॥४०
आमार निस्तार येन हय विश्वम्भर।
एइ मोर वाक्य तुमि पालिह अन्तर ॥४१
आज्ञा दिल चल नीलाचल गिरिराजे।
किछु ना बलिल गौरचन्द्र आर लाजे ॥४२
चरण परश करि चलिला ठाकुर।
पथे याइते प्रेमानन्द बाढ़िल प्रचुर ॥४३
कृष्ण कृष्ण बलि डाके अन्तर उल्लासे।
क्षणेक रोदन क्षणे अट्ट अट्ट हासे ॥४४
बुक वैया पड़े धारा नयनेर जले।
सुरनदी धारा येन सुमेरु शिखरे ॥४५
कदम्ब केशर जिनि एकटि पुलक।
कण्टकित सर्वअङ्ग आपाद मस्तक ॥४६
मत्त करिवर येन रङ्गे चलि याय।
निर्भर प्रेमाय क्षणे कृष्ण गुण गाय ॥४७
क्षणेक पड़ये भूमे रहे स्तब्ध हैया।
क्षणे लम्फ दिया उठे हरिबोल बलिया ॥४८
क्षणे गोपिकार भाव क्षणे दास्यभाव।
क्षणे धीरे धीरे चले क्षणे शीघ्र याव ॥४९
एइमते दिवारात्रि ना जाने आनन्दे।
राढ़देशे नाशुनिल कृष्णनाम गन्धे ॥५०
कृष्णनाम ना शुनिया खेद उठे चिते।
निश्चय करिल प्रभु जले प्रवेशिते ॥५१
देखि सब भक्तगण करे अनुताप।
गौराङ्ग गोलोके याय कि हबे रे बाप ॥५२
तबे नित्यानन्द प्रभु बले बीर दापे।
राखिव चैतन्य आमि आपन प्रतापे ॥५३
सेइखाने शिशुगण गोधन चराय।
नित्यानन्द प्रभु तार प्रवेशे हियाय ॥५४

ये काले गेलेन प्रभु जलेर समीपे ।
हरि बलि डाके एक शिशु ग्राचम्बिते ॥५५
ताहा शुनि लैउटि ग्राइला गौरहरि ।
बोल बोल बोले तार शिरे हस्त धरि ॥५६
तोमारे करुण कृपा प्रभु भगवान् ।
कृथार्थ करिले मोरे शुनाये हरिनाम ॥५७
प्रेमानन्दे भासे प्रभु ग्रानन्दित हिया ।
भिक्षा करिला तबे कतदूर गिया ॥५८
हेनमते दिवानिशि नाहि जाने सुखे ।
तिन दिन बहि ग्रन्न जल दिला मुखे ॥५६
हेनमते प्रेमानन्दे दिन राति याय ।
श्रीचन्द्रशेखराचार्य्ये दिलेन विदाय ॥६०
नवद्वीप वासी यत ग्रामार लागिया ।
कान्दयेव्याकुल हैया डाकिया डाकिया ॥६१
निश्चय ना जाने मोर सन्नचास करण ।
सबारे जानाह मोर एइ विवरण ॥६२
कहिल ठाकुर पुन हैब दरशन ।
ग्रचिरे हइबे देखा ना हग्रो विमन ॥६३
ए बोल बलिया प्रभु चलिला सत्वर ।
कान्दिते कान्दिते याय श्रीचन्द्रशेखर ॥६४
मरिब मरिब प्रभु तोमा ना देखिया ।
मरिब से नवद्वीपेर शोकाग्न्ये पुड़िया ॥६५
हेथा नवद्वीपेर लोक एकदृष्टे रहे ।
श्रीचन्द्रशेखर ग्रासि किबा बार्त्ता कहे ॥६६
कहये लोचन इहा कहने ना याय ।
श्रीचन्द्रशेखराचार्य्य नवद्वीपे याय ॥६७

करुणश्री राग ।

ओकि आरे आरे आरे हय ॥ ध्रु ॥

नवद्वीपे प्रवेशिते ग्राचार्य्य शेखर ।
नयने गलये ग्रश्रुधारा निरन्तर ॥१
नवद्वीप वासी यत ताहारे देखिया ।
ग्रन्तरे पुड़ये प्राण धकधक हिया ॥२
सकल वैष्णव ग्रासि मिलिला सेखाने ।
सम्बरिते नारे ग्रश्रु कातर बयाने ॥३
पुछिते ना पारे केहो मुखे नाहि राय ।
शुनि शची उनमता ग्राउला चुले धाय ॥४
ग्राचार्य्य बलिया डाके उन्मती पागली ।
ना देखिया गौराङ्गे हइला उतरोली ॥५
ग्रामार निमाइ कोथा थुये एले तुमि ।
केमने मुड़ालो माथा कोन् देश भूमि ॥६
कोन् छार सन्नचासी से हृदय दारुण ।
विश्वम्भरे मन्त्र दिते ना हैल करुण ॥७
से हेन सुन्दर केश लावण्य देखिया ।
कोन् छार नापित से निदारुण हिया ॥८
केमने पापिष्ठ तेन केशे दिल खुर ।
केमने वाँचिल सेइ दारुण निठुर ॥९
ग्रामार निमाइ कार घरे भिक्षा कैल ।
मस्तक मुड़ाइया बाछा केमन बा हैल ॥१०
ग्रार ना देखिब पुत्र वदन तोमार ।
ग्रन्धकार हैल मोर सकल संसार ॥११
रन्धन करिया ग्रार ना दिब भात ।
से हेन सोणार गाये ग्रार ना दिब हात ॥१२
सुन्दर वदने चुम्ब ना दिब मो ग्रार ।
क्षुधार समय केबा बुझिबे तोमार ॥१३
एतेक विलाप यबे शचीदेवी कैल ।
विष्णुप्रिया प्रबोधिते जन कत गेल ॥१४

विष्णुप्रियार कान्दनाते पृथिवी विदरे ।
पशु पक्षी तरु लता ए पाषाण झरे ॥१५
हाहा प्राणनाथ छाड़ि गेले हे नदीया ।
अनाथिनी विष्णुप्रियाय निठुर हइया ॥१६
श्रीवासादि भक्त सङ्गे कीर्त्तन विहार ।
नयन भरिया नृत्य ना देखिब आर ॥१७
प्रेमावेशे गदगद बोल श्रीवदने ।
ना शुनिया अभागिनी वाँचिबे केमने ॥१८
कोन् देशे किरूपे बा आछ प्राणेश्वर ।
सोङरि सोङरि प्राण हैल ज्वर ज्वर ॥१९
हाय रे कठिन प्राण ना वेरोओ केने ।
ज्वालह आगुणि आमि मरिब एखने ॥२०
उद्वेगे दिवस मोर हैल कोटि युग ।
ना देखिया प्राणनाथ तोर विधुमुख ॥२१
जीवमात्रे उद्वेग ना देय साधुजन ।
तोर शोके शचीमाता छाड़ये जीवन ॥२२
मुइ अभागिनी तोमार भकति ना जानि ।
सेइ अपराधे बुझि हैलुँ अनाथिनी ॥२३
चरण निकटे प्रभु बसिया तोमार ।
रूप हेरि हेरि आमि ना जुड़ाब आर ॥२४
वदने तुलिया दिते कर्पूर ताम्बूले ।
दशन मुकुता पाँति परशि अंगुले ॥२५
अरुण नयान कोणे करुणाय चाइया ।
मधुर मधुर कथा बलिते हासिया ॥२६
अधर अरुण आर ताम्बूलेर रागे ।
दशन किरण मोर हिया माझे जागे ॥२७
ताहाते अमिय माखा श्रीमुखेर हास ।
श्रवण नयान मोर जीत सेइ आश ॥२८
अमिया अधिक प्रभु तोर यत गुण ।
सोङरिते एबे सेइ भै गेल आगुन ॥२९

विनोद विलास रस सुखमय शेजे ।
से सब सोङरि विष्णुप्रिया प्राण त्यजे ॥३०
हाय हाय किबा दैव हइल आमारे ।
गौर विनु आमार सकल आन्धियारे ॥३१
से हास्य लावण्य देह ना देखिब आर ।
ना शुनिब बचन चातुरी सुधासार ॥३२
अनाथिनी करिया कोथारे गेला तुमि ।
सोङरि तोमार गुण निवेदिये आमि ॥३३
कोन् भाग्यवती सब तोमारे देखिया ।
निन्दिल कतेक मोरे कान्दिया कान्दिया ॥३४
कोन् अभागिनी कोल छाड़िया आइला ।
खण्डव्रती अभागिनी केने ना मरिला ॥३५
पूजिल तोमार मुख अनङ्ग नयने ।
केमने धरिब हिया तोमा अदर्शने ॥३६
विच्छेदे मरिल तोर यत वर नारी ।
आमि अभागिनी प्राण एतकाल धरि ॥३७
मरि मरि गौराङ्ग सुन्दर कति गेला ।
आमि नारी अनाथिनी सहजे अवला ॥३८
कोन् देशे याब लागि पाब कोन् ठाँइ ।
याइते ना दिब केहो मरिब एथाइ ॥३९
माये अनाथिनी करि गेले कोन् देशे ।
केमने वञ्चिब तेँह तोमार हुताशे ॥४०
पापिष्ठ शरीर मोर प्राण नाहि याय ।
भूमिते लोटाइया देवी करे हाय हाय ॥४१
विरह अनल श्वास बहे अनिवार ।
अधर शुखाय कम्प हय कलेवर ॥४२
केश वास ना सम्बरे धूलाय पड़िया ।
क्षणे क्षीण हय क्षणे रहे त फुलिया ॥४३
क्षणे मूर्च्छा पाय राङ्गा चरण धेयाने ।
सम्बित से पाय क्षणे अनेक यतने ॥४४

प्रभु प्रभु बलि डाके क्षणे आर्त्तनादे।
विष्णुप्रियार कान्दनाते सर्वजन काँदे ॥४५
प्रबोध करिते येइ येइ जन गेल।
विष्णुप्रिया देखि हिया पुड़िते लागिल ॥४६
गौराङ्ग गौराङ्ग बलि डाके तार काणे।
कतक्षणे विष्णुप्रिया पाइला चेतने ॥४७
सबजन बले हेर शुन विष्णुप्रिया।
कि दिब प्रबोध तोरे स्थिर कर हिया ॥४८
तोर प्रभु तोर आगे कहियाछे कथा।
यथातथा याइ तोर निकटे सर्वदा ॥४९
तोर अगोचर नहे तोर प्रभुर काज।
बुझिआ प्रबोध देह निज हिया माझ ॥५०
प्रबोधिया सब भक्त एकत्र हइया।
विचार करये गोराचाँदेर लागिया ॥५१
सन्नयास करिल मो सबारे दुःख दिया।
सबारे छाड़िया गेल निदारुण हैया ॥५२
रहिब केमने तारे छाड़ि सबे मोरा।
निदारुण मो सबारे छाड़ि गेल गोरा ॥५३
तारोधिक दयाल बड़ ताहार से नाम।
नाम हैते तारे पाइ एइ मुख्य काम ॥५४
तार वाक्य आछे पूर्व मो सबार तरे।
नाम येइ लय सेइ पाइब आमारे ॥५५
एत चिन्ति नाम लैते बसिला सबाइ।
शची विष्णुप्रिया आर यत यत येइ ॥५६
कि बालक वृद्ध किबा युबक युवती।
नाम लैते बसिला गौराङ्ग करि गति ॥५७
नाम पाशे बान्धिल गौराङ्ग मत्तसिंह।
दाण्डाइला महाप्रभु गति हैल भङ्ग ॥५८
नित्यानन्द अङ्गे अङ्ग हेलाइया रहिल।
अभझर नयने प्रभु कान्दिते लागिला ॥५९
याह नित्यानन्द नवद्वीपे आज तुमि।
शान्तिपुरे सबारे देखिये येन आमि ॥६०
शुनि नित्यानन्द बड़ आनन्द हइल।
देखाइब सबाकारे एइ मने कैल ॥६१
कहये लोचन दास कातर हियाय।
तबे प्रभु गौरचन्द्र करिल विजय ॥६२

पंचदश अध्याय

शान्तिपुर विलास।

यथा राग।

प्रभु सङ्गे नित्यानन्द पथे चलि याय।
हासिया ठाकुर तारे दिलेन विदाय ॥१
नवद्वीपे याह तुमि शुनह बचन।
नदीया नगरे मोर यत बन्धुजन ॥२
सवारे कहिओ "नमो नारायण" वाणी।
अद्वैत आचार्य्य गृहे उत्तरिब आमि ॥३
सबारे लैया तुमि आइस तथाकारे।
एकत्र हइबे सबे आचार्य्येर घरे ॥४
इहा बलि महाप्रभु चलिला सत्वर।
नित्यानन्द यान तबे नदीया नगर ॥५
नदीया नगरेर लोक जीयन्तेते मरा।
काटिले कुटिले रक्त मांस नाहि तारा ॥६
उदरे नाहिक अन्न टलमल तनु।
सर्व अन्धकार तारा गोराचाँद बिनु ॥७
आचम्बिते नित्यानन्द नदीया नगरे।
गाये बल हैल सबे धाइला सत्वरे ॥८
चलिते ना पारे पथे टलमल करे।
देखिते ना पाय पथ नयानेर जले ॥९

सकल वैष्णव आसि पड़िला चरणे ।
पुछिते ना पारे किछु निरीखे वदने ॥१०
शची अति उनमती धाय ऊर्द्ध्वमुखे ।
ए भूमि आकाश शचीर जुड़िलेक शोके ॥११
आर्त्तनादे डाके शची आरे अवधूत ।
कोथा थुये एलि मोर निमाइ सोणार सुत १२
इहा बलि कान्दे शची बुके कर हाने ।
टलमल करे नाहि चाहे पथ पाने ॥१३
शची अभ्युत्थान करिला ठाकुर ।
शची बले मोर पुत्र आइसे कतदूर ॥१४
नित्यानन्द बले खेद ना करिह चिते ।
आमारे पाठाल तोमा सबाकारे निते ॥१५
अद्वैत आचार्य्य घरे रहिबे ठाकुर ।
खेद ना करिह देखा हइबे अदूर ॥१६
चलह सकल लोक प्रभु देखिबारे ।
सेइमने सेइक्षणे सर्वलोक चले ॥१७
बाल वृद्ध युबक युवती धीर जन ।
मूर्ख किबा तपस्वी चलिला सर्वजन ॥१८
शची आगे आगे धाय गाये हैल बल ।
आनन्दे चलिया याय वैष्णव सकल ॥१९
अद्वैत आचार्य्य घरे उत्तरिल गिया ।
भाङ्गिल काँकलि तारा प्रभु ना देखिया ॥२०
अद्वैत आचार्य्ये कथा पुछे नित्यानन्द ।
तोमार आश्रमे प्रभु करिला निर्बन्ध ॥२१
आमारे पाठाया दिल ए सबारे निते ।
आर किछु नाहि जानि कि आछु आर चिते२२
इहा बलि दोँहे मेलि करे कोलाकुलि ।
गौराङ्ग सन्नयास शुनि अद्वैत विकली ॥२३
मुइ अभागिया सङ्ग ना पाइल तार ।
कबे चाँद मुख देखिब से आर ॥२४

शची उनमती पुछे तखनि तखनि ।
सर्वजन बले प्रभु आसिबे एखनि ॥२५
उत्कण्ठा बाढ़िल सर्व्व जनेर हृदये ।
आइला त महाप्रभु हेनइ समये ॥२६
आछिल अधिक कोटि गुण देह छटा ।
आर ताहे चन्दन उज्वल दीर्घ फोटा ॥२७
गौरा गाये अरुण बसन उजियार ।
प्रभातेर सूर्य्य जिनि वरण ताहार ॥२८
दण्ड करे आइसे प्रभु सिंहेर गमने ।
देखिया सकल लोक पड़िला चरणे ॥२९
हिया जुड़ाइल देखि अङ्गेर छठाके ।
पासरिल सर्वलोक दुःख लाखे लाखे ॥३०
आनन्दे भरल हिया नाहि शोक दुख ।
एकदृष्टे चाहे सबे विश्वम्भर मुख ॥३१
प्राण हाराइले येन प्राण पाय जने ।
धन हाराइले येन धनी पाय धने ॥३२
पति हाराइले येन पतिव्रतागण ।
सुखी येन पाइया पुनर्वार दरशन ॥३३
जल छाड़ि मत्स्य येन छटफट करे ।
आचम्बिते जल पाइले येन कुतूहले ॥३४
एइमत सब जन गौराङ्ग देखिया ।
पुलके आकुल अङ्ग हरषित हिया ॥३५
प्रेमाय भरल लोक नाहि शोक दुख ।
एकदिठे चाहे शची गोराचाँद मुख ॥३६
आइस आइस बाप हापुतीर पुत ।
अनाथिनी करि कोथा गियाछिला सुत ॥३७
घरे लैया याब तोरे राखिब सम्बरि ।
सन्नयासेर वेश तोर सब परिहरि ॥३८
मायेर कान्दना देखि जगत ईश्वर ।
दण्डवत हइया पड़िला विश्वम्भर ॥३९

मायेरे कहिय आर ना कान्दह तुमि ।
तोमार कान्दनाय चित्ते दुःख पाइ आमि ४०
इहा बलि शोक दूर कैल भगवान् ।
शचीह आपन शोक कैल निबारण ॥४१
यतेक आछिल शोक किछु नाहि चिते ।
अमिया सिञ्चिल मुख देखिते देखिते ॥४२
अद्वैत आचार्य्य गोसाँइ आनन्द हियाय ।
दिव्यासने बसाइला प्रभु गोराराय ॥४३
पाद प्रक्षालण करि मुछाय बसने ।
पादोदक पान कैल यत निज जने ॥४४
जय जय ध्वनि शुनि हरि हरि बोल ।
सकल वैष्णव हियाय आनन्द हिल्लोल ॥४५
तेज देखि आनन्दित हैला हरिदास ।
मुरारि मुकुन्द दत्त अर श्रीनिवास ॥४६
दण्ड परणाम करे भूमिते पड़िया ।
छल छल करे आँखि वदन देखिया ॥४७
प्रेमे गदगद स्वर अङ्ग पुलकित ।
मैल शरीरे जीउ आइल आचम्बित ॥४८
हेनमने निज जने देखि गोराराय ।
कृपादिठे चाहे दया बाढ़िल हियाय ॥४९
कारो निज करे प्रभु परशन करे ।
हासिया सम्भाषे काहो कोले चापि धरे ५०
यारे येन अभिमत करये ठाकुर ।
सबार हृदये प्रेम बाड़िल प्रचुर ॥५१
हृष्ट हैला सब जन दूरे गेल शोक ।
आनन्दे मङ्गल ध्वनि हरि बले लोक ॥५२
अद्वैत आचार्य्य गोसाँइ भक्त सुचतुर ।
ताहार आश्रमे भिक्षा करिला ठाकुर ॥५३
पाक कैल शचीमाता जगत जननी ।
आनन्दे भासिला सोतादेवी नारायणी ॥५४
भोजन कराय अद्वैत बड़ परिपाटी ।
सकल व्यञ्जन पत्रे दिल मिठिमिठि ॥५५
भोजन करये प्रभु त्रिदशेर राय ।
देखिया सकल भक्त आनन्द हियाय ॥५६
तबे सब जन यार येइ अनुरूप ।
भोजन करिला सबे आनन्द कौतुक ॥५७
सन्नयास करिला प्रभु कारो नाहि मने ।
आनन्दे गोङाय दिन रात्रि संकीर्त्तने ॥५८
संकीर्त्तने भोरा प्रभु निज गुण गाय ।
आनन्द हृदये आपे नाचये नाचाय ॥५९
नाचे नित्यानन्द आर नाचे हरिदास ।
मुरारि मुकुन्द नाचे आर श्रीनिवास ॥६०
गदाधर नरहरि नाचे तार पाश ।
बासुदेव घोष नाचे गदाधर दास ॥६१
सब भक्त नाचे मोर गौराङ्ग बेढ़िया ।
गणिते ना पारि ता सबार नाम लैया ॥६२
अनन्त गौराङ्ग सङ्गी के वर्णिते पारे ।
सबाइ बेढ़िया नाचे प्रभु विश्वम्भरे ॥६३
शची सुखे देखे सीता नारायणी सङ्गे ।
अद्वैत आचार्य्य नाचे पुत्र सने रङ्गे ॥६४
सबार अन्तरे प्रेम बाड़िल अपार ।
अश्रु कम्प पुलकादि सात्त्विक विकार ॥६५
सबार हृदये भेल आनन्द उल्लास ।
ऐछन शुनिया सुखी ए लोचन दास ॥६६

भाटियारि राग ।

भाइया आरे आरे गोरा गोसाँइर
महिमा गुण गाओ ।। मूर्च्छा ।।

एइमते शुभरात्रि सुप्रभात हैल ।।
प्रातःक्रिया करि प्रभु आसने बसिल ।।१
दण्ड करे येन सर्व राज्येर ईश्वर ।
अरुण बसन अङ्गे करे झलमल ।।२
यत निज जन काछे आछये बसिया ।
हासि हासि कहे प्रभु सबा सम्बोधिया ।।३
श्रीनिवास आदि करि यत भक्तगण ।
आपन आश्रमे सबे करह गमन ।।४
नीलाचल याब जगन्नाथ दरशने ।
दया करे यदि प्रभु प्रसन्न वदने ।।५
तोमरा थाकिबे आज्ञा करिबे पालन ।
निरन्तर दिवानिशि करिबे कीर्त्तन ।।६
हरिनाम भक्तसेबा करिबे स्थापन ।
एइ धर्म करि येन तरे सर्व जन ।।७
निर्मत्सर अन्तर हइबे सर्वजन ।
सबे सबाकार मन करो आराधन ।।८
ए बोल बलिया प्रभु उठिला सत्वरे ।
बाहु मेलि सबाकारे आलिङ्गन करे ।।९
प्रेमजले दु'नयान करे छलछल ।
सकरुण कण्ठ भेल गदगद स्वर ।।१०
हेनइ समये से चतुर हरिदास ।
दन्ते तृण धरि पड़े पदाम्बुज पाश ।।११
अति आर्त्तनाते कान्दे सकरण स्वरे ।
शुनिते सकल लोक हृदय विदरे ।।१२
व्यथित हइल प्रभु सजल नयन ।
कातर अन्तरे किछे कहये वचन ।।१३
एइमत भाग्य मोर हबे कतदिने ।
पड़िया कान्दिब जगन्नाथेर चरणे ।।१४
कहिब कातर वाणी पदाम्बुज पाइया ।
सफल करिब आँखि श्रीमुख देखिया ।।१५
ए बोल बलिते चारिपाशे भक्तगण ।
भूमेते पड़िया सबे करये रोदन ।।१६
चेतन हेरिल शची कान्दिते ना पाय ।
धरिबारे चाहे निज पुत्रेर गलाय ।।१७
केहो पाये धरि कान्दे आउदड़ चुलि ।
अनेक यतने प्रभु आपना सम्बरि ।।१८
श्रीनिवास हरिदास मुरारि मुकुन्द ।
प्रभुरे कहिते किछु करिल प्रबन्ध ।।१९
स्वतन्त्र ठाकुर तुमि मो सब अधीन ।
दीन दुराचार पापी ताहे भक्तिहीन ।।२०
कि बलिते पारि प्रभु करिला सन्नचास ।
एखन छाड़िया याह निज सब दास ।।२१
एकेश्वर केमने चलिया याबे पथे ।
क्षुधाय तृष्णाय अन्न चाहिबे काहाते ।।२२
शचीर दुलाल तुमि दुल्लिल चरित ।
दु'खानि चरण विष्णुप्रियार सेवित ।।२३
भक्तजन नयन अमिया दिठिपाते ।
ए देहे प्रेमार तरु बाढ़े हाते हाते ।।२४
अनेके आछिल प्रेमफल प्रतिआशे ।
सन्नचास करिया एबे करिला नैराशे ।।२५
पापिष्ठ शरीरे प्राण ना याय छाड़िया ।
घरे चलि याब तोरे विदाय करिया ।।२६
एखने चलिया याब मो सब अधम ।
तोर धर्म नहे तुमि पतित पावन ।।२७
करुणा कर्दमे तनु गड़ियाछे विधि ।
विनोद विलास लीला दिया नाना निधि २८

केबल परम प्रेमा ताहे जीबन्यास।
त्रैलोक्य अद्भुत रूप करिल प्रकाश ॥२९
उपमा दिबार नाहि त्रैलोक्य भितर।
तोमार निष्ठुर वाणी जगत कातर ॥३०
एमत करिते प्रभु ना जुयाय तोरे।
आपने रोपिया वृक्ष काट केने मूले ॥३१
ये याय ताहारे लह संहति करिया।
नहे बा मरिबे सबे आगुने पुड़िया ॥३२
हेर देख तोर माता शची अनाथिनी।
सहिते ना पारि इहार विनाइया कान्दनी ३३
विष्णुप्रियार कान्दनाते पृथिवी विदरे।
शून्य हैल नवद्वीप नगरे बाजारे ॥३४
शून्य हेन लागे सर्व वैष्णवेर घर।
सबाकार बाड़ी येन योजन अन्तर ॥३५
येखाने बसिया से कहित निज कथा।
देखिले मरिब आर नाहि याब तथा ॥३६
रहस्य विनोद कथा ना शुनिब आर।
ना देखिब नृत्यावेश प्रेमार प्रचार ॥३७
नाचिबार वेले आर ना करिब कोले।
ना देखिब अरुण नयने प्रेमजले ॥३८
हुहुङ्कार शब्दामृत ना शुनिब आर।
के मोर रोधिल कर्ण नयान दुयार ॥३९
केमने ना देखि जीव तोर मुखचान्द।
नयान थाकिते केबा करिलेक आन्ध ॥४०
ना दिह विदाय प्रभु याब तोर सङ्गे।
तोमार निठुर वाणी पोड़ाय सब अङ्गे ॥४१
आहिड़ी घण्टार रब येमन करिया।
काछे मृगी आइसे तारे मारये धरिया ॥४२
तेमति तोमार प्रेम बुझिल एखन।
लोभ देखाइया पाछे मार कि कारण ॥४३
तोमार विच्छेदे भक्त सबाइ मरिबे।
भकत वत्सल नाम केमने धरिबे ॥४४
शचीर विदाय दिबे करि कोन् युक्ति।
ताहार समीपे इहा कहे कोन् व्यक्ति ॥४५
विष्णुप्रिया मरिब शबदमात्र शुनि।
ए कथार सम्बिधान करह आपनि ॥४६
एतेक बचन यदि भक्तगण बैल।
करुण अन्तरे प्रभु कहिते लागिल ॥४७
शुनह सकल भक्त वचन प्रचुर।
कोनो काले तो सबारे नहिब निठुर ॥४८
नीलाचले बास आमि करिब सर्वथा।
सर्वदा आसिबे याबे देखा पाबे तथा ॥४९
आछिल अधिक सुख बाड़िवे अपार।
हरिनाम संकीर्त्तने भासिव संसार ॥५०
काहारो हृदये ना राखिब दुःख शोक।
संकीर्त्तन समुद्रे डुबाब सर्वलोक ॥५१
किबा भक्त विष्णुप्रिया किबा माता शची।
ये भजये कृष्ण तार कोले आमि आछि ५२
ए बोल शुनिया सबे पड़िला चरणे।
सत्य कर प्रभु! येइ कहिला बचने ॥५३
सत्य सत्य बलि प्रभु बले बार बार।
नीलाचल बास सत्य हइबे आमार ॥५४
शचीदेवी दाँड़ाइते नारे स्थिर हैया।
दाँड़ाइल दुजनार दुहात धरिया ॥५५
निदारुण हैया कोथाकारे याबे तुमि।
तोरे ना देखिले बाप मरि याब आमि ॥५६
सबे तोर वदन देखिब कतबार।
आमि अभागिनी मुख ना देखिब आर ॥५७
सबार प्रबोध बाछा करिला आपने।
आमारे प्रबोध तुमि दिबे रे केमने ॥५८

आमार द्वितीय केहो नाहिक संसारे ।
विष्णुप्रिया शेलमात्र बुकेर भितरे ।।५९
हासिया कहेन प्रभु सकरुण हिया ।
मिछा शोके मर पूर्व ज्ञान पासरिया ।।६०
चलि याह शोक किछु ना करिह चिते ।
निर्म्मत्सर हइ रह ए सब सहिते ।।६१
दण्डवत करि प्रभु मायेर चरणे ।
प्रबोध करिला तारे कथार विधाने ।।६२
माये प्रबोधिया प्रभु बले हरिबोल ।
सत्वरे चलिला उठे क्रन्दनेर रोल ।।६३
अद्वैत आचार्य्य प्रभुर सङ्गे चलि याय ।
दण्ड दुइ गिया प्रभु पाछे पाछे चाय ।।६४
दाँड़ाइला महाप्रभु आचार्य्य विलम्बे ।
उत्तरिल आचार्य्य काँकलि अवलम्बे ।।६५
वयान विरस घर्म विन्दु विन्दु ताय ।
कातर अन्तरे किछु प्रभुरे सुधाय ।।६६
तुमि परदेशे याबे एइ बड़ दुख ।
ता हते अधिक एक पोड़े मोर बुक ।।६७
आपन अन्तर कथा करिये गोचर ।
निश्चय कहिबे प्रभु इहार उत्तर ।।६८
तोर निज जन यत तोमार बिच्छेदे ।
कान्दये कातर हैया पद अरविन्दे ।।६९
आमार पापिष्ठ हिया ना दरबे केने ।
ए काठ कठिन अश्रु नाहिक नयाने ।।७०
आमार समान आर नाहि दुराचार ।
तोमार विच्छेदे प्रेम ना उठे आमार ।।७१
ए बोल शुनिया प्रभु हासि कैल कोले ।
कहिब इहार तत्त्व शुन मोर बोले ।।७२
तोमार प्रेमाय आमि स्थिर हैते नारि ।
ते कारणे तोर प्रेमा गाँठिते सम्बरि ।।७३
इहा बलि आउलाइला वसनेर ग्रन्थि ।
प्रेमाय विभोर से आचार्य्य मने चिन्ति ।।७४
नयन सागरे बहे पाँच सात धारा ।
निर्भर प्रेमाय सम्बेदन नाहि तारा ।।७५
पड़िल अद्वैत प्रभु श्रीचैतन्य बलि ।
चैतन्य वियोगे गड़ागड़ि याय धूलि ।।७६
देखिलेन महाप्रभु अद्वैत विलम्ब ।
पुन गाँठि बान्धे प्रभु अद्वैत सम्बन्ध ।।७७
आस्ते व्यस्ते सम्बरण करये ठाकुर ।
सम्बरण कैल तबे आचार्य्य चतुर ।।७८
एइ त कारणे तोर प्रेमा उठे नाइ ।
तोमार प्रेमाय आमि चलिते ना पाइ ।।७९
तोर प्रेमार वश आमि शुनह आचार्य्य ।
पूर्व सोङरिया विथारह निजकार्य्य ।।८०
ए बोल बलिया प्रभु चलिला सत्वर ।
सकल वैष्णव गेला आपनार घर ।।८१
कहये लोचन दास गोरा ठाकुराल ।
सन्न्यास नहे त बुके रहि गेल शेल ।।८२

षोड़श अध्याय

श्रीनीलाचल यात्रा

भाटियारि राग ।

सबारे विदाय दिया चलिला ठाकुर ।
शून्याकार हैल सब नवद्वीप पुर ।।१
पण्डित श्रीगदाधर अवधूत राय ।
नरहरि आदि जन कत सङ्गे याय ।।२
श्रीनिबास मुरारि मुकुन्द दामोदर ।
एइ निज जन सङ्गे चलिला ईश्वर ।।३

जगन्नाथ दोलेते देखिब मने करि ।
सत्वरे चलिला प्रभ बलि हरि हरि ॥४
प्रेमाय विह्वल प्रभु चलि याय पथे ।
टलमल करे तनु ना पारे हाँटिते ॥५
क्षणे शीघ्रगति धाय सिंह पराक्रमे ।
क्षणे हुहुङ्कार देइ बले हरिनामे ॥६
क्षणे नाचे क्षणे गाय सकरुण कान्दे ।
क्षणे मालसाट् मारे प्रेमार उन्मादे ॥७
अरुण नयने जलधारा अविरल ।
विपुल पुलके से ढाकिल कलेवर ॥८
क्षणेक मन्थर गति अलौकिक कहे ।
क्षणे अट्ट अट्ट हासे दाँड़ाइया रहे ॥९
यदि बा कखन भक्ष्य उपसन्न हय ।
निवेदित नहे बलि किछुइ ना खाय ॥१०
अनेक यतने दुइ तिने करे भिक्षा ।
लोक अनुग्रहे से प्रकाशे लोक शिक्षा ॥११
सब निशि जागरणे लय हरिनाम ।
डाकिया पड़ये एइ श्लोक गुणधाम ॥१२

तथाहि—

राम राघव राम राघव राम राघव रक्ष मां ।
कृष्ण केशव कृष्ण केशव कृष्ण केशव पाहि मां ॥१३

हे राम ! हे राघव ! हे राम ! हे राघव ! हे राम ! हे राघव ! मेरी रक्षा आप करें। हे कृष्ण हे केशव ! हे कृष्ण ! हे केशव ! हे कृष्ण ! हे केशव ! मेरा उद्धार आप करें।

एइ श्लोक सुमधुर स्वरे पड़े पहुँ ।
प्रेमानन्दे गदगद हासे लहु लहु ॥१४
दोले जगन्नाथ देखिबारे यात्रिगण ।
प्रभु सङ्गे याय ताहा आनन्दित मन ॥१५
एककाले एकठाँइ यात्रिक समूह ।
पथे राखियाछे दानी पापिष्ठ दुरूह ॥१६
अनेक यन्त्रणा दुःख दिछे ता सबारे ।
आगे गियाछिला प्रभु लेउटे सत्वरे ॥१७
अवधूत गदाधर पण्डित विस्मय ।
कि कारणे प्रभु पुन लेउटिया याय ॥१८
चिन्तिते चिन्तिते तारा याय पाछे पाछे ।
कतदूरे देखे दानी यात्री राखियाछे ॥१९
कारण देखिया तारा भेल चमकित ।
पुलके भरल अङ्ग अति आनन्दित ॥२०
यात्रिक देखिया प्रभु करुण वदन ।
सत्वरे चलिला मत्त सिंहेर गर्जन ॥२१
प्रभुके देखिया यात्री कान्दे उभराय ।
त्रास पाइया शिशु येन मार कोले धाय ॥२२
दीन वन जन्तु येन दग्ध दाबानले ।
सन्तप्त हइया पड़े जाह्नवीर जले ॥२३
प्रभुर चरणे पड़ि कान्दे यात्रिगण ।
देखिया पापिष्ठ दानी गणे मने मन ॥२४
एरूप मानुष नाहि जगत भितर ।
एइ नीलाचल चन्द्र जानिल अन्तर ॥२५
इहा सबाकारे आमि दिलुँ एत दुख ।
कि करये नाहि जानि भये काँपे बुक ॥२६
एतेक चिन्तिया मने सेइ महादाती ।
प्रभुर चरणे पडि बले काकु बाणी ॥२७
छाड़िलुँ यात्रिकगण ना साधिब दान ।
अन्तरे जानिले प्रभु तुमि भगवान् ॥२८
इहा बलि चरणे पड़िया सेइ कान्दे ।
ताहार माथाय दिल चरणारविन्दे ॥२९
कम्प गदगद स्वरे नाना स्तव करे ।
विषयी बलिया घृणा ना करिह मोरे ॥३०
ए बोल शुनिया प्रभु मुचकि हासिया ।
सुखे चलि यान यात्रिगणे छाड़ाइया ॥३१

हेनइ समये कतदूरे एक दानी ।
डाकिते डाकिते आइसे उभ करि पाणि ॥३२
देखिया ठाकुर ताहे उभ कैल बाइ ।
हातसाने सेइ दानी रहे सेइ ठाँइ ॥३३
झरझर नयन पुलक कलेवर ।
हरे कृष्ण नाम सेइ बले निरन्तर ॥३४
देखि नित्यानन्द गदाधरेर उल्लास ।
गौराङ्ग चरित्र कहे ए लोचन दास ॥३५

———

सिन्धुड़ा राग ।

भाइरे ! गाओ गाओ गोरा गोसाँइर गुण शुनि । आहो रे आहो रे ! राङ्गाचरण कमल कर इच्छा जगते यतेक देख, आपना करिया लेख, हो हो हो हो हो हो रे भाइया ! से पुन सकलि शुधु मिछा ॥ ताइ बलि भाइ ! भाइ रे ! गाओ गाओ गोरागुण शुनि ॥ ध्रु ॥

एइमते महाप्रभु चलि याय पथे ।
येखाने ये देवस्थल देखिते देखिते ॥१
रहि रहि याय प्रभु प्रति ग्रामे ग्रामे ।
नर्त्तन करिया सब देवतार स्थाने ॥२
एक अदभुत कथा शुन तार माझे ।
ये करिला नित्यानन्द अवधूत राजे ॥३
नित्यानन्द करे दण्ड दिया गौरहरि ।
किछु आगे गेला नित्यनन्द पाछु करि ॥४
प्रेमाय विह्वल प्रभु याय महावेगे ।
आपना पासरे कृष्ण प्रेम अनुरागे ॥५
गदाधर आदि यत जन सङ्गे याय ।
देखि नित्यानन्द आरो दूरे पाछु हय ॥६
गणिते गणिते निताइ याय धीरे धीरे ।
मोर विद्यमाने प्रभु दण्ड हाते धरे ॥७
सेहेन सुन्दर वेश त्रैलोक्य मोहन ।
छाड़िया धरिल दण्ड सहिब केमन ॥८
सन्नयास करिल प्रभु मुण्डाइल माथा ।
चिरदिन रहिबे दारुण एइ व्यथा ॥९
चिन्तिते चिन्तिते दुःख बाड़िल बिस्तर ।
भाङ्गिलेन थुइया दण्ड ऊरुर उपर ॥१०
भग्न दण्ड तुलिया फेलिल लैया जले ।
प्रभुरे तरासे पाछु धीरे धीरे चले ॥११
कतक्षणे एकत्र हइला दुइ जने ।
सुधाइल प्रभु दण्ड ना देखिये केने ॥१२
प्रभुर सङ्कोचे किछु ना देय उत्तर ।
विस्मय लागिल प्रभु चिन्तये अन्तर ॥१३
पुनरपि पुछे प्रभु दण्ड थुइले कोथा ।
दण्ड ना देखिया हियाय पाङ बड़ व्यथा १४
ए बोल शुनिया कहे नित्यानन्द राय ।
तोर करे दण्ड देखि पोड़े मो हियाय ॥१५
सन्नयास करिले एके मुड़ाइले मुण्ड ।
ताहार अधिक दुख कान्धे कर दण्ड ॥१६
सहिते ना पारि भाङ्गि फेलाइल जले ।
ये कर से कर गदगद भावे बले ॥१७
ए बोल शुनिया प्रभु हैया दुःखित ।
रुषिया कहिल सब कर विपरीत ॥१८
मोर दण्डे बैसे यत मोर देवगण ।
हेन दण्ड भाङ्गि कि साधिले प्रयोजन ॥१९
तुमि सदा उनमत बुद्धि स्थिर नय ।
बातुलेर प्राय रीत बालक आशय ॥२०
पाण्डित्य धर्मेते धर्मी नह कदाचित ।
आश्रम छाड़ा से कार्य्य कर विपरीत ॥२१

देवता आश्रम पीड़ाय नाहि जान दोष ।
किछु यदि बलि तबे कर महारोष ॥२२
ए बोल शुनिया नित्यानन्द पहुँ हासे ।
प्रभुरे कहये किछु गदगद भाषे ॥२३
देवता आश्रम पीड़ा नाहि करि आमि ।
भाल कैल मन्द कैल सब जान तुमि ॥२४
तोर दण्डे बैसे यत तोर देवगणे ।
कान्धे करि लैया याह सहिब केमने ॥२५
तुमि तार भाल कर आमि करि मन्द ।
कि कारण तोर सने करिब आर द्वन्द्व ॥२६
अपराध कैलुँ दोष क्षम एइवार ।
तोर नामे निस्तारये सकल संसार ॥२७
तोर अधिक पतित पावन नाम तोर ।
एइ अपराध क्षमा करिबे से मोर ॥२८
नाममात्र निस्तारये जगतेर लोक ।
सन्न्यास करिले भक्तगणे बड़ शोक ॥२९
सेहेन सुन्दर केशे मुण्डाइले माथा ।
भक्तजन हृदये दारुण एइ व्यथा ॥३०
मोर प्राण पोड़े निरन्तर इहा देखि ।
हय नय पुछ सर्व भक्त इथे साखी ॥३१
भाङ्गिया फेलिल दण्ड भक्तगण दुखे ।
दण्ड नहे शेल से आछिल मोर बुके ॥३२
ए बोल शुनिया प्रभु ना दिल उत्तर ।
विरस वदन किछु हरिष अन्तर ॥३३
नित्यानन्द महाप्रभु सर्व रस जाने ।
भाङ्गिया फेलिल दण्ड ए लोचन गाने ॥३४

———

भाटियारि राग ।

भाइ रे ! गोरा गोसाँइर महिमा गुण गाओ ॥मूर्च्छा आरे भाइया प्राण भाइया रे ! संसार बासना ना करिह जगते यावत जीओ, महाप्रभुर चरण ना छाड़िह ॥ ध्रु ॥

एइमते महाप्रभु पथे चलि याय ।
तबे एक पुण्यक्षेत्र देखिबारे पाय ॥१
ब्रह्मकुण्डे स्नान देखि श्रीमधुसूदन ।
प्रेमार आवेशे प्रभु आनन्दित मन ॥२
एइमते कतदिन पथे चलि याय ।
उत्तरिला महाप्रभु ग्राम रेमुणाय ॥३
महापुरी रेमुणाते आछये गोपाल ।
देखिवारे याय प्रभु आनन्द अपार ॥४
पूर्वे वाराणसी तीर्थे उद्धव स्थापित ।
ब्राह्मणेर कृपा छले एथा उपनीत ॥५
इहा बलि पुनःपुन करे नमस्कार ।
उद्धबेर प्रभु बलि करे हुहुङ्कार ॥६
नयन सफल आजि देखिल ठाकुर ।
उद्धव सम्बन्धे प्रेमा बाड़िल प्रचुर ॥७
उद्धव उद्धव बलि डाके आर्त्तनादे ।
प्रेमाय विह्वल क्षणे भूमे पड़ि काँदे ॥८
अरुण नयाने नीर झरे अनिबार ।
पुलके पूरिल अङ्ग कम्प बारे बार ॥९
उद्धवेर प्रभु बलि प्रदक्षिण करि ।
निजजन सङ्गे नाचे बलि हरि हरि ॥१०
उथलिल प्रेमसिन्धु वाड़िल उल्लास ।
प्रेमाय छाइल सब एइभूमि आकाश ॥११
आनन्दे देवता सव चाहे अन्तरीक्षे ।
अनिमिख आँखे तारा प्रभुके निरिखे ॥१२
सहस्र नयाने इन्द्र चाहे एक दिठे ।
अमृत अधिक गोरा अङ्ग लागे मिठे १३

हेनइ समये सेइ मूरति गोपाल ।
मस्तक उपरे पुष्प मुकुट ताहार ॥१४
आचम्बिते मस्तकेर मुकुट खसिते ।
भूमिते पड़िते प्रभु धरिलेन हाते ॥१५
चतुर्द्दिके लोक सब हरि हरि वोले ।
आकाश परशे येन प्रेमार हिल्लोले ॥१६
देखिलेन देवगण प्रभु विश्वम्भर ।
अद्भुत देखिया तारा प्रणत कन्धर ॥१७
दिनान्त नाचये प्रभु नाहिक विराम ।
सन्ध्यार समये हैल नृत्य अवसान ॥१८
नाना उपहार द्रव्य कृष्णे निवेदित ।
प्रभुर सम्मुखे विप्र कैल उपनीत ॥१९
आनन्दित महाप्रभु लैया निजगण ।
सन्तोषे करिल महाप्रसाद भोजन ॥२०
रजनी गोङाय कृष्ण कथाय आनन्दे ।
प्रभाते चलिला निजगण करि सङ्गे ॥२१
एइमते महाप्रभु पथे याइते याइते ।
नदी वैतरणी तीरे गेला आचम्बिते ॥२२
स्नान पाने सेइ नदी परम पावनी ।
आर ताहे स्नान कैल ठाकुर आपनि ॥२३
तबे चलि याय प्रभु परम चतुर ।
साध बाढ़े देखिवारे वराह ठाकुर ॥२४
याहा देखि सर्बलोक उद्धारे दुकुल ।
तारे नमस्करि गेला ग्राम याजपुर ॥२५
याँहा यज्ञ कैल ब्रह्मा लेया देवगण ।
ब्राह्मणेरे दिल ग्राम करिया शासन ॥२६
महापापी नर यदि सेइ ग्रामे मरे ।
सर्वपापे मुक्त हैया शिवरूप धरे ॥२७
शत शत आछे ताहे महेशेर लिङ्ग ।
तारे नमस्करि याय गौर गोविन्द ॥२८
आनन्द हृदये याय विरजा देखिते ।
विरजा महिमा केबा पारये कहिते ॥२९
कोटि कोटि पातक नाशये दरशने ।
विरजा देखिल प्रभु हरषित मने ॥३०
विरजाके नमस्करि कहिल बचने ।
देह प्रेमभक्ति मोरे कृष्णेर चरणे ॥३१
एइमत महाप्रभु पथे चलि याय ।
पितृपिण्ड दान कैल ए नाभिगयाय ॥३२
ब्रह्मकुण्ड जले स्नान कैल हरषिते ।
देवकार्य्य सारि चले नगर देखिते ॥३३
महा पुण्यस्थान सेइ शिवेर नगर ।
देखिते देखिते प्रभु भै गेल विभोर ॥३४
करिते ना पारि सेइ नगर परिपाटी ।
त्रिलोचन आदि करि आछे लिङ्ग कोटी ३५
हेनइ समये सेइ श्रीमुकुन्द दत्त ।
प्रभुर साक्षाते कहे ये जानये तत्त्व ॥३६
एइ हइते दानीके नाहिक आर भय ।
आमि सर्व जानि दुष्ट ये येखाने रय ॥३७
ए बोल शुनिया प्रभु मुचकि हासय ।
कि बलिब तोरे मुइ तुमि महाशय ॥३८
आमि त सन्न्यास धर्म करियाछि आश्रय ।
दानी कि करिब मोर कह त निश्चय ॥३९
शुनिया मुकुन्द किछु भय ना पाइल ।
तबु दुःख देय प्रभु ! तोमारे कहिल ॥४०
शुनिया ठाकुर कहे शुनह मुकुन्द ।
राखिबे आमार देह यतेक कुटुम्ब ॥४१

तथाहि शान्तिशतके—

धैर्य्यं यस्य पिता क्षमा च जननी शान्तिश्चिरं गेहिनी
सत्यं सूनुरयं दया च भगिनी भ्राता मनः संयमः ।
शय्या भूमितलं दिशोऽपि बसनं ज्ञानामृतः भोजनं
यस्यैते हि कुटुम्बिनो वद सखे कस्माद्भयं योगिनः ४२

जिनके पिता धैर्य्य है, माता जिनकी क्षमा है, एवं शान्ति भार्य्या है, सत्य पुत्र है, दया भगिनी है, मनः संयम, भ्राता है, भूमि शय्या है, दिक् समूह वसन है, ज्ञानामृत जिनका भोजन है, हे सखे ! कहां यह सब आत्मीय रहते हुये योगिजन का भय किस से होगा ?

शुनिया मुकुन्द भय ना पाइल चिते ।
कहिल ताहारे प्रभु हासिते हासिते ॥४३
एतदूर पथ पालि आनिले आमारे ।
इहा बलि गेला प्रभु भिक्षा करिबारे ॥४४
गदाधर आदि करि यत सङ्गिगण ।
ठाँइ ठाँइ गेला सबे करिते भिक्षाटन ॥४५
हेनकाले एक दानी राखे ता सबारे ।
महाक्रोध करि दानी बान्धे मुकुन्देरे ॥४६
सारादिन राखियाछे क्रोध नाहि पड़े ।
अनेक यतने प्रबोधिल सन्ध्याकाले ॥४७
ता सबार आछिल कम्बल एकखण्ड ।
काड़िया लइल सेइ पापिष्ठ पाषण्ड ॥४८
सन्ध्याकाले सबे भिक्षा करि स्थाने स्थाने ।
सङ्केत मण्डपे सबे आइला जने जने ॥४६
सेइ त मण्डपे आगे आछेन ठाकुर ।
देखि सर्वजन हिया आनन्द प्रचुर ॥५०
चरणे पड़िया कान्दे श्रीमुकुन्द दत्त ।
जानिलाम प्रभु तोमार यतेक महत्त्व ॥५१
तोमार सम्मुखे बैल नाहि दानी भय ।
ताहार लागिया मोर एत दुःख हय ॥५२
जानिया ना जानों मुइ तुमि भगवान् ।
तोमार उपरे आर के साधिब दान ॥५३
तोमार नाहिक भय ए तिन भुवने ।
तुमि सर्वेश्वरेश्वर केबा तुमा जाने ॥५४
तोमारे निर्भय करिबारे कहि कथा ।
भाल कैल दानी मोर करिल एइ अबस्था ५५
ए बोल शुनिया प्रभु गदाधरे पुछे ।
प्रत्यक्ष कहिल दानी यत करियाछे ॥५६
शुनिया ठाकुर बैल नह उतरोल ।
भाल हैब बलि मात्र बैल एक बोल ॥५७
सेइ रात्रे सेइ देशे दानीर ईश्वर ।
स्वप्ने देखा दिल तारे शचीर कोङर ॥५८
क्षीरोद समुद्रे देखे अनन्त शयने ।
लक्ष्मी सरस्वती करे चरण सेवने ॥५९
ताहार अन्तरे देखे सनकादि गण ।
ब्रह्मा आदि देव दूरे करये स्तवन ॥६०
दुखिया दानीर राजा काँपिब अन्तरे ।
ऐश्वर्य्य दुखिया तिहों पड़िला फाँपरे ॥६१
विरजा निकटे आसि सन्न्यासीर वेशे ।
मोर भक्ते दुःख दिल तोर सब दासे ॥६२
काँपिल अन्तरे त्रास पाइल अपार ।
सत्वरे चलिला यथा श्रीगौर गोपाल ॥६३
कतक्षणे सेइखने सेइ दानीश्वर ।
प्रभु नमस्करि करे विनय विस्तर ॥६४
तुमि भगवान् क्षीर निधिर निवास ।
जीव निस्तारिते प्रभु करियाछ सन्न्यास ६५
भव घोर अन्धकारेर तुमि से चन्द्रमा ।
तुमि वेद वेदेर परमतत्त्व सीमा ॥६६
शुनि गोराचाँद हासि बलिला ताहारे ।
अचिराते कृष्ण कृपा करुन तोमारे ॥६७
इहा बलि चरण धरिला तार माथे ।
प्रेमाय विभोर हैया नाचे ऊर्द्ध् वहाते ॥६८
तारे अनुग्रह करि से देशे राखिला ।
अधिकार कृष्णभक्ति तारे शिखाइला ॥६९

हेनइ सनये कहे वैष्णव सकल ।
अनेक यन्त्रणा दिल तोमार नफर ॥७०
काड़िया लइल आमा सबार कम्बल ।
ए वोल शुनिया सेइ सङ्कोच अन्तर ॥७१
नौतुन कम्बल दिल दानीर ईश्वर ।
सन्तोष हइल तबे सबार अन्तर ॥७२
तबे सेइ दीनबन्धु प्रभु नमस्करि ।
विदाय हइया गेला आपनार बाड़ी ॥७३
घरे गिया कृष्ण सेबा करिल आश्रय ।
संकीर्त्तने हरिनामे अहर्निशि रय ॥७४
एइमते सकल रजनी गेल सुखे ।
प्रातःकाले प्रातःस्नान करिला कौतुके ॥७५
विरजा देखिते प्रभु याय आरबार ।
याहा देखि सब लोक तरये संसार ॥७६
विरजाके नमस्करि चलि याय रङ्गे ।
उठिल कृष्णेर प्रेमा पुलकित अङ्गे ॥७७
चलिला से महाप्रभु सिंह पराक्रमे ।
क्रमे क्रमे उत्तरिला एकाम्रक ग्रामे ॥७८
सेइ ग्रामे आछे शिव पार्वती सहिते ।
देखिवारे धाय प्रभु उनमत चिते ॥७९
कतदूर हैते प्रभु देखिला देउल ।
उत्कण्ठा बाढ़िल चित्ते प्रेमाय आकुल ॥८०
देउल उपरे शोभे पताका सुन्दर ।
शिवलिङ्गमय सेइ एकाम्र नगर ॥८१
पताका देखिया प्रभु नमस्कार करि ।
क्रमे क्रमे गिया प्रवेशिला शिवपुरी ॥८२
एक कोटि लिङ्ग आछे एकाम्र नगरे ।
हाँटिया चलिते प्राण हाले काँपे डरे ॥८३
विश्वेश्वर आदि करि आछे लिङ्ग कोटि ।
देखिते सन्देश सेइ नगरेर माटि ॥८४
महाविन्दु सरोवर सर्वतीर्थ जले ।
आर नाना पुण्यतीर्थ आछये नगरे ॥८५
पुरी प्रवेशिया देखे पार्वती शङ्कर ।
नमस्कार करि प्रभु प्रेमाय विह्वल ॥८६
सर्वजन देखिल से पार्वती महेश ।
लिङ्ग दरशने सबार खण्डिलेक क्लेश ॥८७
महेश देखिया प्रभुर अवश शरीर ।
टलमल करे तनु नाहि रहे स्थिर ॥८८
अरुण नयने जल झरे अनिवार ।
पुलकित अङ्ग स्तव पड़े वारवार ॥८९

तथाहि स्तवः—

नमोनमस्ते त्रिदशेश्वराय भूताधिनाथाय मृड़ाय नित्यं
गङ्गातरङ्गोक्षित-बालचन्द्र चूड़ाय गौरी नयनोत्सवाय
सन्तप्तचामीकर-चन्द्र-नीलपद्म प्रवालाम्वुद कान्तिवस्त्रैः
सुनृत्य रङ्गेष्टवर प्रदाय कैवल्यनाथाय वृषध्वजाय ९०

गङ्गा तरङ्गाहत अर्द्धचन्द्र जिनका शिरोभूषण हैं, जो भगवती का लोचनानन्द वर्द्धन कारी हैं, जिन्होंने प्रतप्त स्वर्ण, चन्द्र, नीलपद्म, प्रवाल एवं मेघतुल्य वर्णविशिष्ट बसन धारण किया है, भक्तवृन्द को बरप्रदानकरने में समुत्सुक हैं मुक्तिद हैं, उन देवदेव भूतेश्वर वृषभध्वज श्रीमहादेव को मैं प्रणाम करता हूँ

एइमते महाप्रभु पड़े शिव स्तव ।
चतुर्द्दिके स्तव पड़े सकल वैष्णव ॥९१
हेनइ समये सेइ शिवेर सेवके ।
गन्ध चन्दन माला दिलेन प्रभुके ॥९२
शिव नमस्करि प्रभु बाहिरे आसिया ।
विश्राम करिला एक गृहे प्रवेशिया ॥९३
कृष्णे निवेदित अन्न भोजन करिला ।
पथेर आयासे निशि शुतिया रहिला ॥९४
शयन समये कृष्ण पादाम्बुज ध्यान ।
हेनकाले हृदये करये अनुमान ॥९५

शिव महाप्रसाद पाइया भाग्यवशे।
भक्षण करिये हेन आछे प्रति आशे ॥९६
एइमते महाप्रभुर अनुमान काले।
पाना परसाद लह एकजन बले ॥९७
उठिया प्रसाद पाना लइला ठाकुर।
पाना पान करि सुख बाड़िल प्रचुर ॥९८
निज जने दिल ये आछिल अवशेष।
भक्षण करिल सब भकते विशेष ॥९९
एइमते आनन्दे वञ्चिला सेइ राति।
प्रभाते उठिला प्रभु त्रिजगत पति ॥१००
प्रातःक्रिया करि स्नान बिन्दु सरोवरे।
चलिला ठाकुर नमस्करि महेश्वरे ॥१०१
प्रभुर संहति चलि याय भक्तगण।
एइ परसङ्गे कथा कहिब एखन ॥१०२
मुरारिते दामोदरे ये हैल वचन।
शुन सावधाने सबे कहिये एखन ॥१०३
मुरारिरे पुछिला पण्डित दामोदर।
शिवेर निर्माल्य केने लइला ईश्वर ॥१०४
अग्राह्य शिवेर निर्माल्य भृगु शापे।
तबे केने परिग्रह कैल कभु आपे ॥१०५
आपने ब्रह्मण्य देव एइ महाप्रभु।
जानिया शुनिया आज्ञा लङ्घिलेक तभु १०६
मुरारि कहये शुन शुन दामोदर।
आमि कि जानिये प्रभुर मरम उत्तर ॥१०७
निज बुद्धि अनुमाने ये कहि उत्तर।
तोर मने लय यदि राखिह अन्तर ॥१०८
शिवेर सेवक येइ शिव सेवा करे।
उच्छिष्ट ना लय हरि हरे भेद करे ॥१०९
ताहारे ब्राह्मण शाप कहिल ए तत्त्व।
अशुद्ध ताहार मति ना जाने महत्त्व ॥११०
अभिन्न करिया येइ करये सेवन।
शिवेर निर्माल्य सेइ करये भक्षण ॥१११
शिवेर निर्माल्य खाय अभेद चरित।
से जने अधिक हरि हरेर पिरीत ॥११२
महेश्वर प्रभु सब वैष्णवेर राजा।
सेइ भावे येइ जन करे ताँर पूजा ॥११३
ताहार हस्तेते शिव करेन भोजन।
से प्रसाद खाइले हय बन्ध विमोचन ॥११४
वस्तुतः से महेश्वर प्रभुर गमने।
आतिथ्य करिल से परम हर्षमने ॥११५
शाप आदि यत शुन बहिर्मुख प्रति।
सुहृद्भावे कैले हय कृष्ण रति मति ॥११६
लोक शिक्षा हेतु प्रभु कैल अवतार।
दामोदर बले एबे घुचिल जञ्जाल ॥११७
शुनिया सकल लोक आनन्दित चित।
कहये लोचन दास चैतन्य चरित ॥११८

यथा राग।

बल श्रीकृष्णचैतन्य चाँदेर मधुर नामखानि ॥मूर्च्छा
भाइ रे भाइ! आर नाहिं तरिवार तरि॥
जगत दुर्लभ तार कथा।
जगते यावत जीओ श्रवण भरिया पिओ
कभु ना छाड़िह गुणगाथा॥

तवे पुन शुन गोराचान्देर चरित।
वरिखये प्रभु प्रेमा नूतन अमृत ॥१
पथे चलि याय प्रभु निज जन सङ्गे।
देखिल त कपोत ईश्वर महालिङ्गे ॥२
ताँरे नमस्करि प्रभु चलि याय पथे।
पुण्यक्षेत्र महातीर्थ देखिते देखिते ॥३

तबे से भार्गवी नामे नदी भाग्यवती ।
ताते स्नान कैल निज जनेर संहति ॥४
स्नान समाधिया प्रभु चलि याय पथे ।
जगन्नाथ मन्दिर देखिल आचम्बिते ॥५
चन्द्रेर किरण जिनि उज्जल देउल ।
पवन चालित ताते पताका रातुल ॥६
नीलगिरि माझे हरि मन्दिर सुन्दर ।
कैलास जिनिया तेज अद्भुत धवल ॥७
अभिन्न अञ्जन एक बालकेर ठान ।
देउल उपरे प्रभु देखे विद्यमान ॥८
सबसन हस्ते घन करये आह्वान ।
देखिया बिह्वल तारे करे परणाम ॥९
भूमिते पड़िल प्रभु नाहिक सम्बित ।
निःशब्दे रहिल येन छाड़िल जीवित ॥१०
देखिया सकल लोक मूर्च्छित अन्तर ।
प्रभु प्रभु बलि डाके ना देय उत्तर ॥११
कि हैल कि हैल बलि चिन्ते गणे तारा ।
किछु ना निःसरे येन जीयन्तेइ मरा ॥१२
हेनइ समये प्रभु उठिला सत्वर ।
पुलकित सब अङ्ग प्रेमाय विभोर ॥१३
देखिया सकल लोक जील पुनर्वार ।
मइल शरीरे येन जीउर सञ्चार ॥१४
ता सबारे महाप्रभु पुछये वचने ।
देउल उपरे किछु देखह नयाने ॥१५
नीलमणि किरण बरण उजियार ।
त्रैलोक्य मोहन एक सुन्दर छाओयाल ॥१६
किछु ना देखिया तारा कहये देखिल ।
पुन मोह याय पाछे आशङ्का हइल ॥१७
पुन ता सबारे प्रभु कहिल उत्तर ।
देउल ध्वजाय देख बालक सुन्दर ॥१८
प्रसन्न वदने येन पूर्णामृत रूप ।
आलोल अंगुलि करतल अपरूप ॥१९
आमारे डाकये कर कमल लावण्य ।
वामकरे वेणु शोभे त्रिजगत धन्य ॥२०
ए बोल बलिया प्रभु चलिला सत्वर ।
आनन्दे चलिल तबे वैष्णव सकल ॥२१
कोटि इन्दु जिनिया से गौर अङ्ग छटा ।
झलमल करे येन चन्दन दीर्घफोटा ॥२२
गोरा गाय अरुण बसन उजियार ।
प्रभातेर सूर्य्य येन वरण ताहार ॥२३
जगन्नाथ मन्दिर देखिया गोराराय ।
पुनःपुनः परणाम करि चलि याय ॥२४
नयने गलये जल अविरल धारे ।
विपुल पुलके से ढाकिल कलेवरे ॥२५
प्रेमाय विह्वल प्रभु हृदय सत्वर ।
उत्तरिल महातीर्थ मार्कण्डेय सर ॥२६
स्नान दान कैल प्रभु ये विधि आचार ।
चलिला सत्वरे तबे करि नमस्कार ॥२७
यज्ञेश्वर नमस्करि अति हृष्टमने ।
उत्कण्ठा हृदये याय सत्वर गमने ॥२८
पुनरपि जगन्नाथ मन्दिर देखिया ।
पुन परणाम करे भूमिते पड़िया ॥२९
अझोरे झरये दुइ नयानेर नीर ।
विह्वल हइया कान्दे आरति गभीर ॥३०
एइमत गोराचाँदेर आरति देखिया ।
देखा दिल जगन्नाथ पाणि पसारिया ॥३१
आइस आइस बलि डाके त्रिजगत राय ।
देखिया विह्वल प्रभु भूमे गड़ि याय ॥३२
आनन्दे हासिया किछु कहिल वचन ।
कृपा कर जगन्नाथ देखिये चरण ॥३३

पुन ना देखिया पुन करये रोदन ।
पुनरपि देखि अति उलसित मन ॥३४
केवल उद्भट प्रेमा पुलकित अङ्ग ।
हुहुङ्कार नादे प्रेमा अमिया तरङ्ग ॥३५
प्रेमाय विह्वल प्रभु हृदय सत्वर ।
उत्तरिला बासुदेव सार्वभौम घर ॥३६
प्रभुरे देखिया सार्वभौम हरषिते ।
त्वरिते आनिया दिल आसन बसिते ॥३७
नमो नारायण बलि कैल नमस्कार ।
राधाकृष्णे शीघ्र मति हउक तोमार ॥३८
प्रभु आशीर्वाद वाणी शुनि भट्टाचार्य ।
बुझिलेन वैष्णव सन्न्यासी महाचार्य ॥३९
तबे प्रभु सार्वभौमे कहिल वचन ।
जगन्नाध देखिवारे उत्कण्ठित मन ॥४०
केमने देखिब आमि देवदेव राय ।
साक्षात करिते मोर सम्भ्रम हियाय ॥४१
ए बोल शुनिया सार्वभौम महाशय ।
प्रभु अङ्ग निरिखये विस्मित हियाय ॥४२
ए तप्त काञ्चन गौर सुमेरु सुन्दर ।
नयन चन्द्रमाय मुख करे झलमल ॥४३
सिंहग्रीव कम्बुकण्ठ सुदीर्घ लोचन ।
आजानु लम्बित भुज सब सुलक्षण ॥४४
उज्ज्वल कृष्णेर प्रेमाय आरति विह्वल ।
पुलके आकुल अङ्ग करे टलमल ॥४५
देखिया विह्वल सार्वभौम भट्टाचार्य ।
गणिते लागिला देखि सकल आश्चर्य ॥४६
एरूप मानुष नाहि सकल जगते ।
देवता भितरे इहा ना पारि गणिते ॥४७
वैकुण्ठ नायक प्रभु आइला आपने ।
एइ सेइ भगवान् बुझि अनुमाने ॥४८
एतेक चिन्तिया सार्वभौम महाजन ।
आपन तनुज देखि कहिल बचन ॥४९
सत्वरे चलह तुमि चैतन्य संहति ।
सावधाने शुनिबे ये कहे महामति ॥५०
श्रीजगन्नाथ महाप्रभु यथाय आछे ।
सङ्गी सहिते इहाय थोबे तार काछे ॥५१
ए बोल शुनिया तुष्ट हैला गोराराय ।
चलिला त सार्वभौम तनुज सहाय ॥५२
सिंहद्वारे गिया प्रभु प्रेमे टलमल ।
धरिते ना पारे अङ्ग प्रेमाय विह्वल ॥५३
थिर चलिवारे नारे आउलाइल अङ्ग ।
सावधाने काछे काछे याय सब सङ्ग ॥५४
अनेक यतने सिंहद्वारे प्रबेशिला ।
सेखाने त्वरिते नाटमन्दिरे उठिला ॥५५
गरुड़ेर पाछे रहि थिर दिठे चाय ।
देखिल श्रीमुखचन्द्र त्रिजगत राय ॥५६
अति उलसित हिया भरल आनन्द ।
अङ्ग आच्छादिल घन पुलक कदम्ब ॥५७
नयने बहये प्रेमधारा अविरल ।
आपना पासरे प्रेमानन्द परबल ॥५८
भूमिते पड़िला प्रभु अवश श्रीअङ्ग ।
वातासे खसिल येन सुमेरुर शृङ्ग ॥५९
प्रेमार आवेशे मूर्च्छा हैल भगवान् ।
दुइ हस्ते दृढ़ मुष्टि मुद्रित नयान ॥६०
शिथिल बसन भेल विबश शरीरे ।
देखि द्विजगण गेला देउल बाहिरे ॥६१
आसन छाड़िया जगन्नाथ प्रभु तुलि ।
दोँहार परशे दोँहे भेल कुतुहली ॥६२
बाहु बाहु दिया से तखनि कैल कोले ।
जगन्नाथ सम्मुखे नाचये हरिबोले ॥६३

गौराङ्ग परशे जगन्नाथ प्रेमे भोरा ।
आसन उपरे तबे बसाइल गोरा ॥६४
नाचे हरि बलि प्रभु शचीर नन्दन ।
प्रबिष्ट हइला सबे मन्दिरे तखन ॥६५
गदाधर नाचे नरहरि नित्यानन्द ।
श्रीनिवास दामोदर मुरारि मुकुन्द ॥६६
आर सब भक्तगण नाचये हरिबे ।
राधाकानु गुणगान कीर्त्तन प्रकाशे ॥६७
तबे सबे अनुमानि सङ्गि यत जन ।
प्रभु लैया आइला सार्वभौमेर आश्रम ॥६८
सार्वभौम घरे प्रभुर सम्बेदन हैल ।
गुण संकीर्त्तने प्रभु नाचिते लागिल ॥६९
ऐछन देखिया सार्वभौम भट्टाचार्य ।
हृदये आह्लाद महा गणये आश्चर्य ॥७०
तबे पुन महाप्रभुर नृत्य अवसाने ।
भिक्षा आमन्त्रण तारे दिल सार्वभौमे ॥७१
प्रसाद आनिते दिल ब्राह्मणेर गण ।
प्रभु सङ्गे सार्वभौम करये मिलन ॥७२
इष्ट गोष्ठी करे विद्या जानिबार तरे ।
तत्त्व जिज्ञासिते किछु लागिल प्रभुरे ॥७३
तोर जन्म कोथा तत्त्व कहिबे आमाय ।
प्रभु कहे ये कहिले सेइ सत्य हय ॥७४
भट्टाचार्य कहे तुमि कि कह कथन ।
एक कहि आर कह किसेर कारण ॥७५
प्रभु मौनी हैया रहे समुद्र गम्भीर ।
पुनर्बार प्रभुरे जिज्ञासे विप्र धीर ॥७६
तोर माता पिता केबा कह ना आमारे ।
प्रभु कहे सत्य एइ तुमि ये कहिले ॥७७
भट्टाचार्य पुनर्बार तथापि जिज्ञासे ।
कहिबे तोमार कोथा हइल सन्नचासे ॥७८
प्रभु कहे एइ सत्य जानिबे निश्चय ।
शुनि सार्वभौम मने बड़इ विस्मय ॥७९
बुझिते नारिल किछु प्रभुर निर्णय ।
कोटि सरस्वती कान्त अखिलेर जय ॥८०
किबा बा ईश्वर किबा बातुल स्वभाव ।
मने कुण्ठा क्रोध मात्र हैल तार लाभ ॥८१
आनाइल भट्टाचार्य अनेक प्रसाद ।
उठिल प्रसाद देखि प्रेमार उन्माद ॥८२
जगन्नाथ अन्नमहाप्रसाद पाइया ।
मस्तके बान्धिला प्रभु हासिया हासिया ॥८३
हुङ्कार करिल एक गम्भीर शबदे ।
ब्रह्माण्ड भरिल से प्रभुर सिंहनादे ॥८४
देवता गन्धर्व नर शृगाल कुकुर ।
आइला गौराङ्ग काछे यत नागकुल ॥८५
सबार मुखेते सेइ प्रसाद आनन्दे ।
देखे गदाधर आदि प्रभु नित्यानन्दे ॥८६
केहो ना कहिल किछु तत्त्व सब जाने ।
प्रसाद पाइल सब लैया भक्तगणे ॥८७
निजजन सने अन्न करिल भोजन ।
हेनकाले श्रीनिवास कहिल बचन ॥८८
एक निवेदन प्रभु कहिते डराइ ।
निर्भये पुछिये तबे यदि आज्ञा पाइ ॥८९
प्रसाद पाइया तुमि हासिला से काले ।
मोर मने हय किछु आछये अन्तरे ॥९०
ए बोल शुनिया प्रभु अधिक उल्लास ।
कहये अन्तर कथा करिया प्रकाश ॥९१
कात्यायणी प्रतिज्ञाय प्रसाद हेनधन ।
शृगाल कुकुरे खाय शुनह ब्राह्मण ॥९२
इन्द्र चन्द्र गन्धर्व ब्रह्मादि देवगणे ।
सबार दुर्लभ वस्तु ना पाइ यतने ॥९३

नारद प्रह्लाद शुक आदि भक्तगण ।
ताहारो दुर्लभ एइ कहिल मरम ॥९४
हेन महाप्रसाद भुञ्जये सब जने ।
कहिल मरम कथा एइ मोर मने ॥९५
हेन महाप्रसाद पाइया येबा जन ।
अन्न बुद्धि करिया से करये भक्षण ॥९६
पूर्व जन्मार्जित तार आछिल ये धर्म ।
सेहो नष्ट हय से शूकरे हय जन्म ॥९७
कुकुरेर मुख हैते पड़े यदि तभु ।
पाइले खाइबे इथे दोष नाहि कभु ॥९८
तबे महाप्रभु भिक्षा करिला सादरे ।
सन्ध्याकाले गेला जगन्नाथ देखिवारे ॥९९
एकदृष्टि हैया प्रभु देखे श्रीमुख ।
ब्रह्माण्डे ना धरे ताँर अन्तर कौतुक ॥१००
धूप द्वीप सुकुसुम मनोहर गन्ध ।
निवेदन कैल विप्र देखिया आनन्द ॥१०१
झलमल तेज देखि अङ्गेर छटाके ।
एकत्र हइल येन चाँद लाखे लाखे ॥१०२
जिनिया नूतन मेघ अङ्गेर किरण ।
ताहे अपरूप दुइ दुइ कमल लोचन ॥१०३
देखिया आनन्द सिन्धु डुविला ठाकुर ।
भूमिते लोटाय प्रेम बाड़िल प्रचुर ॥१०४
सुमेरु पर्वत जिनि सुन्दर शरीर ।
भूमे गड़ागड़ि याय आनन्दे अधीर ॥१०५
गौराङ्ग किरणे जगन्नाथ हैला गोरा ।
भावमय हैल देह परम विभोरा ॥१०६
गौरमय बलराम आर पाण्डागण ।
भावमय देह सबार हइल तखन ॥१०७
गौराङ्गे तुलिया पाण्डा करिल आरति ।
अचल ब्रह्मेर काछे सचल मूरति ॥१०८

जगन्नाथ प्रकाश हइला न्यासिरूपे ।
हेन अपरूप ना देखिल कारो बापे ॥१०९
तबे चित्ते स्थिर प्रभु हैल कतक्षणे ।
आपन आश्रमे गेला लैया निजगणे ॥११०
एइमने जगन्नाथ देखे तिनबार ।
दिवारात्रि नाहि जाने आनन्द पाथार ॥१११
हेनमते निज जन सने कत दिन ।
कौतुके गोङाय प्रभु प्रेम परवीण ॥११२
हेनइ समये कथा शुन सावधाने ।
पुरुषोत्तमे प्रथम प्रकाश येनमने ॥११३
लोकशिक्षा करे प्रभु हैया अकिञ्चन ।
ना बुझि मानुष ज्ञान करे मूढ़जन ॥११४
समुद्रेर धारे टोटा करि गौरराय ।
निजजन सङ्गे ताँहा निज गुण गाय ॥११५
विद्या विमोहित चित्त श्रीसार्वभौम ।
प्रभुर परोक्ष किछु कहये विभ्रम ॥११६
ब्राह्मण सज्जन यत सम्पूर्ण सभाय ।
तार मध्ये कहे द्विज ये छिल हियाय ॥११७
महावंशे जन्म न्यासी सुपण्डित नन ।
तरुण बयसे केने सन्नचास करण ॥११८
ए समये अनुचित सन्नचासेर धर्म ।
ना बुझिया कैल विप्र एत बड़ कर्म ॥११९
पुनरपि संस्कार करु आपनार ।
वेदान्त पड़िया करु आश्रम आचार ॥१२०
सन्नचासीर धर्म नहे कीर्त्तन नर्त्तन ।
वेदान्त आमार ठाँइ करुक श्रवण ॥१२१
जगन्नाथ यतबार करये भोजन ।
ततवार सन्नचासी से करये भक्षण ॥१२२
युवाकाले एत भक्षण ये जन करय ।
तार काम निवृत्ति केमन मते हय ॥१२३

घर मने पड़े तेँइ राधा बलि कान्दे ।
विपाके पड़िला न्यासी सन्नचासेर फान्दे १२४
एथा गोराचाँद आछे निजजन सङ्गे ।
कृष्ण कथा आलापने प्रेम परसङ्गे ॥१२५
आचम्बिते मुचकि हासिला गोरा पँहु ।
अविरल धारे येन वरिखये महु ॥१२६
जानिया सकल पहुँ चलिला तथाय ।
सार्वभौम बसि यथा वेदान्त पड़ाय ॥१२७
निज जन सने सेइखाने उपनीत ।
देखि भट्टाचार्य उठे चमकित चित ॥१२८
बसिते आसन दिल सगौरबे आनि ।
ठाकुर मागये विधि कि करिब आमि ॥१२९
तुमि सार्वभौम भट्टाचार्य सब जान ।
अन्तरे पुछिये तोरे कह त विधान ॥१३०
सन्नचास आश्रम धर्म ना बुझिये आमि ।
सन्नचास करिल विधि विचारह तुमि ॥१३१
तुमि सर्व तत्त्व वेत्ता वेदान्त वाखान ।
कि विधान आछे किछु पड़ाह एखन ॥१३२
तरुण वयसे नहे सन्न्यासेर धर्म ।
कि विधान पाछे पुन उपवीत कर्म ॥१३३
जगन्नाथ प्रसादे मत्त मोरे कराइल ।
काम शान्ति करिवारे नाहि युबाकाले १३४
घर मने पड़े तेँइ कान्दि राधा बलि ।
कीर्त्तनेर माझे तेँइ हइये विकलि ॥१३५
ए बोल शुनिया सर्वभौम भट्टाचार्य ।
हृदये संकोच महा गणये आश्चर्य ॥१३६
एखनि कहिल कथा निज शिष्य सने ।
ए सकल कथा न्यासी जानिल केमने ॥१३७
मने अनुमान करि लज्जाय पीड़ित ।
किछु ना कहिल हियाय रहिल विस्मित १३८

तार पर दिने प्रभु सार्वभौम घरे ।
निज जन सङ्गे गेला ताँरे देखिवारे ॥१३९
वेदान्त पड़ाय सार्वभौम घरे बसि ।
वेदान्त सिद्धान्त प्रभु पुछे हासि हासि १४०
वेदान्त निगूढ़ कथा पुछिल ठाकुर ।
कृष्ण पादाश्रय कथा अमृत अंकुर ॥१४१
वेदे नराकृति ब्रह्म शास्त्रे जानाइले ।
तुमि ताहा नाहि मान आत्मबुद्धि बले १४२
ब्रह्मार वचन ब्रह्म संहिताते कहे ।
सच्चिदानन्दमय सेइ महैश्वर्य्यमये ॥१४३
रसमय देह तार श्याम कलेवर ।
आर अवतार अंश कृष्ण पूर्णवर ॥१४४
भागवते एइ कथा व्यास जानाइल ।
तुमि ताहा नष्ट करि आर मत बल ॥१४५
राधा पूर्णतत्त्व वस्तु वराह संहिता कहे ।
आर सव प्रकृति तार नखज्योति हये ॥१४६
गौतमीय तन्त्र सनत्कुमार संहिता ।
राधातत्त्व ताहातेइ आछे विरचिता ॥१४७
वेद अर्थ शास्त्रे लेखे व्यास मुनिवर ।
व्यास निन्दा करि तुमि पाओ किबाफल १४८
वृन्दावन धाम कृष्ण स्थान चिन्तामणि ।
विहार करेन कृष्ण सङ्गे त रमणी ॥१४९
रमणीर शिरोमणि राधा महादेबी ।
महातत्त्व देव कृष्ण वेदे अनुभवि ॥१५०
दोँहार कीर्त्तन गाय यत गोपीगण ।
से कीर्त्तन निन्दा कर तुमि से अधम ॥१५१
कीर्त्तन महिमा कथा भागवते कय ।
ब्रह्महत्या आदि पाप सब नष्ट हय ॥१५२
तेनमते नाम विनाशये पापगिरि ।
पाछे कृष्ण पाय चिन्तामणि नाम धरि १५३

प्रसाद पाइले कोटि कोटि पाप नाशे।
तुमि कह लोभ मोह कामेर प्रकाशे ॥१५४
वैष्णव महिमा सब शास्त्रेर प्रमाणे।
तुमि शास्त्र नाहि मान कोन् शास्त्रज्ञाने १५५
शुनि सार्वभौम हैल विस्मित अन्तर।
बुझिल मनुष्य नहे एइ न्यासीवर ॥१५६
लज्जाय पीड़ित भेल हृदये तरास।
एतकाल नाहि शुनि एमत विश्वास ॥१५७
पढ़िल शुनिल यत एत काल धरि।
पड़ाइल शिष्यगणे अहङ्कार करि ॥१५८
एतकाले ना शुनिल ए सब सिद्धान्त।
एइ महाप्रभु सेइ सरस्वती कान्त ॥१५९
एत अनुमानि सार्वभौम द्विजराज।
करजोड़े स्तुति करे बुझिया त काज ॥१६०
हेनइ समये प्रभु षड्‌भुज शरीर।
देखि सार्वभौम हैल आनन्दे अधीर ॥१६१
ऊर्द्ध्‌व दुइ करे धरे धनु आर शर।
मध्य दुइ हाते धरे मुरली अधर ॥१६२
नम्र दुइ करे धरे दण्ड कमुण्डल।
देखि सार्वभौम हैला आनन्दे विह्वल ॥१६३
चरणे पड़िया कान्दे विनय विस्तर।
स्तुति करे सार्वभौम गदगद स्वर ॥१६४
गदगद स्वरे पड़े सहस्रेक स्तव।
चैतन्य सहस्रनाम जाने लोक सब ॥१६५
जय रघुवीर यदुवीर महाशय।
जय द्विजवीर गौरसिंह सर्वाश्रय ॥१६६
विद्यामदे मत्त हैया तोमा निन्दा कैनु।
तोमार अभय पदे मुइ विकाइनु ॥१६७
अपराध क्षमा कर जय गौर हरि।
परम दयालु तुमि सबार उपरे ॥१६८
सार्वभौमे कृपा कैल गौर महासिंह।
आनन्द बाड़िल सब भक्त महाभृङ्ग ॥१६९
विह्वल हइया पड़े पादाम्बुज पाशे।
कहये लोचन सार्वभौमेर प्रकाश ॥१७०

एइमते आछे प्रभु आनन्द कौतुके।
आनन्दे देखये नीलाचलवासी लोके ॥१
अधिक हइल जगन्नाथेर प्रकाश।
सबार हृदये सुख परशे आकाश ॥२
चैतन्य चरित कथा के कहिते जाने।
सम्बरिते नारि किछु कहिये वदने ॥३
श्रीमुरारि गुप्तबेजा धन्य तिन लोके।
पण्डित श्री दामोदर पुछिल ताहाके ॥४
कहिल मुरारि गुप्त श्लोक परबन्धे।
ये किछु शुनिल सेइ दोँहार प्रसादे ॥५
शुनिया माधुरी लोभे चित उतरोल।
निज दोष ना देखिल मन भेल भोर ॥६
ये किछु कहिल निज बुद्धि अनुरूप।
पाँचाली प्रबन्धे कहोँ मो छार मूरुख ॥७
सूत्रखण्ड आदिखण्ड मध्यखण्ड साय।
शेषखण्ड आछे ताहा कहिब कथाय ॥८
चैतन्य चरित कथा चैतन्य प्रकाश।
मध्यखण्ड साय कहे ए लोचन दास ॥९

षोड़श अध्याय समाप्त

इति श्रीलोचनदास ठाकुर विरचित "श्रीश्रीचैतन्य-मङ्गल" ग्रन्थे मध्यखण्ड समाप्त।

श्रीश्रीकृष्णचैतन्य-चन्द्राय नमः

श्रीचैतन्यमङ्गल

शेषखण्ड

प्रथम अध्याय

प्रभुर दाक्षिणात्य भ्रमण

जय नरहरि गदाधर प्राणनाथ।
कृपा करि कर प्रभु शुभ दृष्टिपात ॥१
शेषखण्ड कथा कहि अमृतेर सार।
शुनिले पाइबे सुखसागर पाथार ॥२
सार्वभौम भट्टाचार्य ये करिल स्तुति।
कतदिन वञ्चिला कीर्त्तने दिवाराति ॥३
सेतुबन्ध देखिबारे चलिला ठाकुर।
कूर्म नामे विप्र देखि देखे कूर्मपुर ॥४
बासुदेव नामे विप्र आछे सेइ ग्रामे।
दुइजना सङ्गे देखा हैल एक ठामे ॥५
प्रभुर दर्शने तारा हइल निर्मल।
निरीखये गौरदेह प्रेमाय बिह्वल ॥६
सुमेरु सुन्दर तनु बाहु जानु सम।
सिंहग्रीवा कम्बु कण्ठ सुदीर्घ लोचन ॥७
देखिते देखिते हिया आनन्द बाड़िल।
एइ गौरचन्द्र कृष्ण निश्चय जानिल ॥८
हा हा महाप्रभु बलि पड़िला चरणे।
सर्वलोक कान्दे तार प्रेमार क्रन्दने ॥९
तुलिया दोँहारे प्रभु कैल आलिङ्गने।
उपदेश कैल किछु मधुर बचने ॥१०
शुन शुन ओहे द्विज बचन आमार
कि काजे आइला मही कि कर आचार ॥११
कलियुगे धर्म हरि नाम संकीर्त्तन।
प्रकाश करिल कृष्ण नाम महाधन ॥१२
नाम गुण संकीर्त्तने करह आनन्द।
नाचह नाचाह लोक हउ मुक्तबन्ध ॥१३
ए बोल बलिया प्रभु चलिला सत्वर।
आपनाके आपे तारा हैला अगोचर ॥१४
चलिते ना पारे पथे बाढ़े प्रेमरङ्ग।
कतदूर गिया देखे जीउड़ नृसिंह ॥१५
स्मरण हइल पूर्व रहस्य काहिनी।
प्रेमाय विह्वल कथा कहये आपनि ॥१६
शुन शुन सर्वलोक रहस्य आनन्द।
येनमते अवतार जीउड़ नृसिंह ॥१७

कहिब पूर्वेर कथा अपूर्व काहिनी ।
एकचित्ते शुन सब हैया सावधानी ॥१८
एखाने आछिल एक पुंड़ुया गोयाल ।
कृषि कर्म करे सेइ विहान विकाल ॥१९
शशा नामे खन्द मही कैल उपार्जन ।
हइल मायाम्बु खन्द बड़इ सम्पन्न ॥२०
दिवा राति राखे खन्द नाहि अवसर ।
ना जानि कखन सेइ याय निज घर ॥२१
एकदिन मने मने करिल विचार ।
खन्द राखिबारे मुइ कारे दिब भार ॥२२
भाविया करिल दृढ़ कृष्णे नियोजिब ।
तारे नियोजिले आमि अन्य काज पाब ॥२३
कृष्णनाम डाकि खन्दे नियोजिल तारे ।
तोमार नामेते किछु दिब वैष्णवेरे ॥२४
एइमने आछे पुँड़ा मनेर हरिषे ।
आचम्बिते देखे खन्द खाइया याय किसे २५
देखिया गोयाला दुःख अनेक भाबिला ।
कृष्ण तुमि खन्द मोर सब नष्ट कैला ॥२६
कान्दिये गोयाला बैल शुन नारायण ।
के मोर खाइल खन्द देखिब नयन ॥२७
इहा बलि कुँड़ेते आश्रय करि रहे ।
जागिया रहिल सेइ खन्द महामोहे ॥२८
आरदिन रात्रि जागे तृतीय प्रहर ।
आचम्बिते आइल एक वराह डागर ॥२९
देखिया गोयाला सेइ हैल सावधान ।
खन्द खाय वराह से सारे दुइ कान ॥३०
खन्द खाय लता छिँड़े आपनारसुखे ।
देखिया गोयाला गुण दिलेक धनुके ॥३१
खन्द खाओ लता छिँड़ सार दुइ कान ।
आजि मोर हाते तुमि हाराबे पराण ॥३२
एत बलि सन्धान पूरिया छाड़े वाण ।
निर्भरे बाजिल वरा स्मरे राम राम ॥३३
धाइया सन्धाइल पर्वत गुहार भितर ।
देखिया गोयाला पुँड़ा हइल फाँपर ॥३४
बराह हइया केने स्मरे राम नाम ।
वराह ना हये एइ सेइ भगवान् ॥३५
एतेक चिन्तिया पुँड़ा कातर अन्तर ।
गह्वर निकटे गिया कहिछे उत्तर ॥३६
के तुमि के तुमि बले उत्तर ना पाय ।
तिन उपवास कैल कातर हियाय ॥३७
दया उपजिल प्रभु करुणा निधान ।
आकाश वाणीते बैल आमि भगवान् ॥३८
आमारे मारिलि तोर कैनु अपचय ।
चिन्ता ना करिह याह आपनार आलय ॥३९
ए बोल शुनिया पुँड़ा अधिक कातर ।
उपवासे उपवासे दिमु कलेवर ॥४०
एइमने उपवास करिल अनेक ।
आचम्बिते शुनिल गगने ध्वनि एक ॥४१
केने रे अबोध पुँड़ा मर अकारणे ।
अपराध नाहि याह आपन भवने ॥४२
पुनरपि बले पुँड़ा कातर बचने ।
तोमारे मारिलुँ आर कि काज जीवने ॥४३
मरिलेह नाहि घुछे ए दोष आमार ।
ए दोषे उचित हय यमेर प्रहार ॥४४
शुद्ध हैब आर आमि कोन् प्रतिकारे ।
सबे आमि मात्र वाण मारिल तोमारे ॥४५
ए कोमल गाये तोर व्यथा एत दिल ।
धिक् धिक् प्राण मोर तोमारे मारिल ॥४६
मोर पितृलोक प्रभु गेल नरकेरे ।
आर लोक नरक याबे ये देखिबे मोरे ॥४७

ए बोल शुनिया वाणी हैल आरबार।
नाहि अपराध तुष्ट हइलुँ अपार ॥४८
पूर्व जन्मे यत अपराध कैले तुमि।
एहो काले तोर पाप सब लैलुँ आमि ॥४९
तोर देह मोर देह जानिह सर्वथा।
निश्चय आमारे तुमि नाहि दाओ व्यथा ॥५०
ए बोल शुनिया पुँड़ा कहे कर जुड़ि।
तोमार आज्ञाय मुइ बलोँ भय छाड़ि ॥५१
केमने जानिब मुइ घुछिल ए दोष।
परसाद साक्षी पाइले हङ मो सन्तोष ॥५२
ए कथा कहिब आमि राजार गोचरे।
एइमत आज्ञा तुमि करिह ताहारे ॥५३
तबे त प्रतीत आमि पाइ हिया साक्षी।
सब जन जाने तुमि हैले मोरे सुखी ॥५४
तबे पुनरपि आज्ञा करिला ईश्वर।
ये बलिला सेइ हबे पाइले तुमि वर ॥५५
ए बोल शुनिया पुँड़ा हरषित हैया।
महावेगे राजद्वारे उत्तरिल गिया ॥५६
द्वारीके कहिल आरे शुन द्वारिवर।
ये किछु केहिये कह राजार गोचर ॥५७
कहिब अपूर्व कथा लोके अविदित।
शुनिया आमारे राजा करिब पिरीत ॥५८
ए बोल शुनिया द्वारी राजारे कहिल।
राजार आज्ञाय पुँड़ा गोचर हइल ॥५९
दण्डवत करि कहे सब विवरण।
आद्यपान्त यत कथा कैल निवेदन ॥६०
शुनिया त महाराजे विस्मय लागिल।
निश्चय करिया कह पुँड़ारे कहिल ॥६१
पुनरपि कहे पुँड़ा करिया निश्चय।
सेइखाने चल राजा घुछाह विस्मय ॥६२
आमारे येमत आज्ञा करिला ठाकुर।
सेइमत आज्ञा तुमि पाइबे अदूर ॥६३
काजा बले आज्ञा यदि करये ईश्वर।
आजन्म हइब आमि तोमार नफर ॥६४
ए बोल बलिया राजा चलिला सत्वर।
पदव्रजे गेला यथा पर्वत गभर ॥६५
पर्वत गभर द्वारे एक मन चिते।
विस्तर मिनति करे लोटाइया भूमिते ॥६६
द्राबिला ठाकुर आज्ञा उठिल गगने।
मिथ्या नहे शुन राजा पुँड़ार बचने ॥६७
तुमि साक्षी हैले पुँड़ा हइल आमार।
इहारे से नाहि आर यम अधिकार ॥६८
ए बोल शुनिया राजा नाचये आनन्दे।
गोयालार चरण धरिया पड़ि कान्दे ॥६९
तुमि मोर गुरु हैया कृष्ण मिलाइला।
कृष्णेर श्रीमुख कथा तुमि शुनाइला ॥७०
गोयालार पाये पड़े राणीगण सङ्गे।
देखिया कृष्णेर दया उपजिल अङ्गे ॥७१
मोर भक्ते जाति बुद्धि ना करिले तुमि।
तोरे देखा दिव राजा कहिला त आमि ॥७२
दुग्ध सेचन तुमि कर एइ स्थाने।
दुग्धेर सेचने आमा पाबे विद्यमाने ॥७३
ए बोल शुनिया राजा हरषित चिते।
घोषणा पड़िल राज्ये दुग्ध से आनिते ॥७४
प्रभुर आज्ञाय दुग्ध ढाले सेइखाने।
आचम्बिते माथार चूड़ादेखे विद्यमाने ॥७५
नानाविध बाद्य बाजे आनन्द अपार।
आनन्दे भासये सुख सागर पाथार ॥७६
हरि हरि बोल शुनि चौदिक भरिया।
नाचये सकल लोक दु'बाहु तुलिया ॥७७

यत दुग्ध ढाले तत उठये शरीर ।
उठिल शरीरे देखे ए नाभि गभीर ॥७८
अधिक ढालये दुग्ध मनेर हरिषे ।
प्रभु सब अवयव देखिवारे आशे ॥७९
उठिल शरीरे देखे जानु विद्यमान ।
ना ढालिह दुग्ध आज्ञा भेल परिमाण ॥८०
तबहुँ ढालये दुग्ध पादपद्म आशे ।
पदतल दुइखानि ना उठिल शेजे ॥८१
हेनकाले आज्ञावाणी उठिल गगने ।
ना उठिब पद आर ना कर यतने ॥८२
ए बोल शुनिया राजा हरिष विषाद ।
महामहोत्सब करे पाइया परसाद ॥८३
देउल मन्दिर दिल नाना भोगराग ।
दु'नयान भरि देखे हिया अनुराग ॥८४
पुँड़ारे कहिल राजा विनय करिया ।
तुमि राज्येर राजा हओ मोरे कृष्ण दिया ८५
गोप बले अज्ञान हइया बल कथा ।
राज्य नाहि लब मोरे केन देह व्यथा ॥८६
तोते मोते कृष्ण सेवा करिब आनन्दे ।
कोन् सुख राज्ये राजा छाड़िया गोविन्दे ॥८७
शुनि राजा विनये बलिल करजुड़ि ।
तुमि आमि सेवार हइनु अधिकारी ॥८८
एइमते आछे राजा मनेर हरिषे ।
डिङ्गा लैया साधु एक आइला सन्तोषे ॥८९
तार सङ्गे दुइ स्त्री परमा सुन्दरी ।
सङ्गे याइबारे चाहे देखिते श्रीहरि ॥९०
साधु नाहि लय सङ्गे लज्जार कारणे ।
दुइ स्त्री कान्दे धरि साधुर चरणे ॥९१
तुमि गुरु सङ्गे करि कृष्णरे देखाओ ।
मो दोँहार भाग्य नाथ तुमि ना घुचाओ ९२

साधु बले सङ्गे नाहि लब तो सबारे ।
प्रसाद आनिब आमि तोरा थाक घरे ॥९३
तारा बले तुमि ये कहिले सेइ हय ।
कृष्ण देखिवारे साध हैयाछे निश्चय ॥९४
तबे साधु क्रोध करि से दोँहारे बले ।
तोरा कृष्ण देख गिया आमि थाकि घरे ९५
शुनि दुइ स्त्री हइल दुःखित अन्तरे ।
पति छाड़ि कृष्ण भजि एइ से विचारे ॥९६
चलिला सुन्दरी तारा पतिरे छाड़िया ।
दया हैल गोविन्देर एकान्ति देखिया ॥९७
साधुर हृदये प्रभु सञ्चारिला दया ।
स्त्रीयेरे देखये साधु तबे से आसिया ॥९८
धिक् धिक् आमि छार पापिष्ठ हृदय ।
हेन स्त्रीये असम्मान युक्ति भाल नय ॥९९
साधु बले चल सङ्गे लब तो सबारे ।
परम पवित्र तोरा पुण्य कलेवरे ॥१००
स्वामीर सौभाग्य यार नारी कृष्ण व्रत ।
अखिल पूजित सेइ परम महत्व ॥१०१
ठाकुर देखिते तबे आइला सओदागर ।
दुइ नारी लैया गेला मन्दिर भीतर ॥१०२
प्रभु नमस्करि साधु भै गेल बाहिरे ।
साधु बाहिर हैल द्वार लागिल मन्दिरे १०३
लेउठिया देखे दुइ नारी नाइ पाशे ।
मन्दिर भितरे तारा प्रभुके सम्भाषे ॥१०४
बुझिया ले साधु स्तव करे उच्चनादे ।
द्रविला ठाकुर तारे कैला परसादे ॥१०५
घुचिल मन्दिर द्वार देखे दुइ जन ।
पाषाण हइया प्रभुर पाइयाछे चरण ॥१०६
पति छाड़ि कृष्णपति लभिवारे गेल ।
ते कारणे कृष्णपति सुदृढ़ पाइल ॥१०७

निजभाग्य मानि पाये पड़े सस्रोदागर ।
परसाद करे प्रभु बले माग वर ॥१०८
चरणे पड़िया साधु करे परणाम ।
वर मागोँ मोर नामे हउ तोर नाम ॥१०९
मा बापे थुइल तार नाम से जीयड़ ।
आपनार नामे प्रभु नाम मागे वर ॥११०
जीयड़ नृसिंह नाम तेँइ परकाश ।
आनन्दे कहये गुण ए लोचन दास ॥१११

———

सिन्धुड़ा राग ।

तबे महाप्रभु जीयड़ नृसिंह देखिया ।
चलिला त परदिने से दिन वञ्चिया ॥१
चलि याय पथे प्रेम परवश चित ।
विद्या नगरे प्रभु भेल उपनीत ॥२
रत्नमय पुरी सेइ विद्यानगर ।
नगर देखिया तुष्ट हैल न्यासीवर ॥३
विषयीर मुख प्रभु नाहि देखे कभु ।
आचम्बिते राजद्वारे उत्तरिला प्रभु ॥४
राजा गोदावरी स्नान करि विप्र सङ्गे ।
अन्तपुरे आसि कृष्ण सेवा करे रङ्गे ॥५
प्रभु आसि हेनकाले द्वारे आगमन ।
परम सुन्दर कान्ति मदन मोहन ॥६
राजार दुयारे गिया द्वारीके कहिल ।
राजपुत्र कोथा आछे निभृते पुछिल ॥७
प्रभुके देखिया द्वारी परणाम करे ।
एइ भगवान् हेन मने मने बले ॥८
प्रभु कहे राजपुत्रे जानाह वचन ।
ताहार निमित्ते मोर एथा आगमन ॥९
चलिल त द्वारी राजपुत्र यथा आछे ।
निज अन्तपुरे यथा देवता पूजिछे ॥१०
परणाम करि द्वारी जानाय बचन ।
एक महामति गोसाँइ द्वारे आगमन ॥११
ए बोल शुनिया राजा ना बलिल किछु ।
तरासे द्वारी से पलाइया याय पाछु ॥१२
द्वारेते आसिया द्वारी करे निवेदन ।
जानाइते ना पारिल तोमार बचन ॥१३
देवता पूजये राजा निज अन्तःपुरे ।
काहार शकति तथा याइबारे पारे ॥१४
ए बोल शुनिया प्रभु हासे मने मने ।
यथा पूजा करे तथा चलिला आपने ॥१५
एक अंशे द्वार रहे आर अंशे याय ।
यथा पूजा करे सेइ रामानन्द राय ॥१६
ध्यान करे कृष्णे राजा देखे गौरचन्द्र ।
पुनरपि ध्यान करे जपि महामन्त्र ॥१७
पुनरपि सेइ गौर देखये नयने ।
कि हैल कि हैल बलि गणे मने मने ॥१८
पुनरपि ध्यान करे सुदृढ़ हियाय ।
पुनरपि गोरचन्द्र हियाय सान्ध्याय ॥१९
कि कि बलि आँखि मेलि चाहे चारिभिते ।
गौर चन्द्र न्यासीवर देखिल साक्षाते ॥२०
सन्यासी देखिया राजा उठिला सम्भ्रमे ।
चरण वन्दना करि नेहारये क्रमे ॥२१
आपाद मस्तक प्रभुर नेहारये अङ्ग ।
गौर अङ्ग देखि हियाय उपजिल रङ्ग ॥२२
विस्मय लागिल न्यासी आइला कुमते ।
प्रभुरे पुछिला किछु हासिते हासिते ॥२३
मोर अभ्यन्तरे तुमि आइला केमने ।
बड़ भाग्ये देखिलाम तोमार चरणे ॥२४

प्रभु कहे तुमि केने ना चिन आपना ।
आमारे ना चिन आमि निते आइलुँ तोमा २५
एइरूपे बले प्रभु मधुर बचने ।
आमारे ना चिन आमि नन्देर नन्दने ॥२६
ए बोल शुनिया राजा छलछल आँखि ।
सेइरूप देखाओ तबे हिया पाइ साक्षी ॥२७
ए बोल शुनिया प्रभुर अट्ट अट्ट हास ।
आपना चिनाय प्रभु करे परकाश ॥२८
ये छिल सेखाने कृष्ण श्वेत रक्त द्युति ।
सकल देखाय एक गौर मूरति ॥२९
कषित ए दशवान काञ्चन वरण ।
ताहा छाड़ि हैला प्रभु श्याम सुचिक्कण ॥३०
कानड़ा कुसुमाकृति अङ्गेर किरण ।
मयूर शिखण्ड शिरे मुरली वदन ॥३१
नाना आभरण अङ्गे चिकनीया काला ।
पीतबस्त्र परिधान गले वनमाला ॥३२
ताहा देखि महाराज आनन्दित मन ।
पुनरपि हैला प्रभु गौर वरण ॥३३
पशु पक्षी वृक्ष आर यत लता पाता ।
गौर अङ्ग छटाय झलमल करे तथा ॥३४
देखिया बुझिल काज रामानन्द राय ।
प्रेमाय विह्वल धरे निज प्रभु पाय ॥३५
पुनर्बार हैला प्रभु श्याम कलेवर ।
त्रिभङ्ग मुरली मुख पीताम्वर धर ॥३६
राधा वामे परमा सुन्दरी महाज्योति ।
चौदिके बेढ़िया गोपी बराङ्ग युवती ॥३७
वृन्दावने रतन मन्दिर सिंहासने ।
देखे राजा परम आनन्द राधा सने ॥३८
पुनर्बार हैला प्रभु गौराङ्ग मूरति ।
अरुण अम्बर अङ्गे येन महामति ॥३९
चरणे पड़िला राजा अवश शरीर ।
करे धरि लैया प्रभु भै गेल बाहिर ॥४०
ए प्रकाश देखिल से राजा आचम्बित ।
दशदिन छिल प्रभु राजार सहिते ॥४१
अनेक हइल कृष्ण कथा तार सने ।
विस्तारि कहिते ताहा अनन्त ना जाने ॥४२
अनन्त चैतन्य लीला वेद अगोचर ।
कोनो लीला कोनो भक्ते करेन विस्तार ॥४३
आद्योपान्त कहिते शकति आछे कार ।
लिखिते लिखिते ग्रन्थ हये त विस्तार ॥४४
राय रामानन्दे आर प्रभुते मिलन ।
गौरा गुणगाथा गाय ए दास लोचन ॥४५

श्रीराग ।

पाप ताप हर हर यम भय ।
जय शचीनन्दन जय जय जय ॥ ध्रु ॥

तबे महाप्रभु सेइ आनन्द कौतुके ।
चलिते आनन्द देह भरिल पुलके ॥१
एइमते क्रमे क्रमे पथे चलि याय ।
गोदावरी करि पञ्चवटीते साम्भाय ॥२
एइ महापुण्य तीर्थ पञ्चवटी नाम ।
याहाते आछिला सेइ लक्षण श्रीराम ॥३
पञ्चवटी देखि प्रभु प्रेमे अचेतन ।
श्रीराम लक्ष्मण बलि डाके घने घन ॥४
एइखाने कुँड़ेघर बान्धिला लक्ष्मण ।
मृग मारिवारे राम करिला गमन ॥५
श्रीराम उद्देशे पाछे चलिला लक्ष्मण ।
एइखाने सीता हरि निलेक रावण ॥६

इहा बलि कान्दे प्रभु प्रेमाय विह्वल।
मार् मार् बले प्रभु बले धर् धर् ॥७
लक्ष्मण लक्ष्मण बलि डाके उभराय।
सीता सोङरिया कान्दे अवश हियाय ॥८
सङ्गेर सङ्गतिगण प्रबोधिते नारे।
आपनेइ महाप्रभु आपना सम्बरे ॥९
तबे आरदिने पथे चलिला ठाकुर।
क्रमे क्रमे उत्तरिला कावेरीर कूल ॥१०
कावेरीर तीरे देखि श्रीरङ्गनाथ।
देखिया प्रेमाय नाचे निज जन साथ ॥११
तथाय त्रिमल्ल भट्ट ठाकुरे देखिया।
निरीखये गौरअङ्ग विस्मित हइया ॥१२
देहेर किरण आर प्रेमार आरम्भ।
कदम्ब केशर जिनि पुलक कदम्ब ॥१३
सर्वलोक जिनि तनु येहेन सुमेरु।
प्रेमफल फुले भरियाछे कल्पतरु ॥१४
हरि हरि बलि डाके अति उच्चनादे।
देखिया चौदिक भरि सब लोक काँदे ॥१५
ऐछन देखिया से त्रिमल्ल भट्टाचार्य।
कौतुके सकल कथा जानिल से आर्य ॥१६
एइ सेइ भगवान् कभु नहे आन।
निश्चय जानिल एइ सर्वजन प्राण ॥१७
एतेक जानिया से त्रिमल्ल भट्टराय।
आपन आश्रमे से प्रभुरे लैया याय ॥१८
तार बाड़ी गेला प्रभु प्रथम आषाढ़े।
सर्वजीवे कृष्णभक्ति दिने दिने बाढ़े ॥१९
सेइखाने रथयात्रा कैल दरशन।
रथ अग्रे नृत्य कैल श्रीशची नन्दन ॥२०
श्रावणे थाकिया प्रभु करिल झुलना।
नाम गुण संकीर्त्तने नाचे सर्वजना ॥२१
भाद्रे थाकिया कृष्ण जन्मयात्रा कैल।
गोपवेशे गोराचाँदेर बहु नृत्य हैल ॥२२
आश्विने थाकिया प्रभु शचीर नन्दन।
भक्तगण लैया करे नाम संकीर्त्तन ॥२३
भट्टप्रेमे महाप्रभु तार वश हैया।
चातुर्मास्य वञ्चिल बड़ प्रीति पाइया ॥२४
चातुर्मास्य रहि प्रभु चलिला त्वरिते।
पथे देखा परमा नन्द पुरीर सहिते ॥२५
दोँहे दोँहा देखि तुष्ट हैला दुइजन।
निरखिते दोँहाकार झरये नयन ॥२६
तबे से परमानन्देर हैल स्मरणे।
गुरु माधवेन्द्र पुरी ये बैल बचने ॥२७

तथाहि वायुपुराणे—

कलेः प्रथम सन्ध्यायां लक्ष्मीकान्तो भविष्यति।
दारुब्रह्म-समीपस्थः सन्यासी गौरविग्रहः ॥२८

कलियुग के प्रथम सन्ध्या में अर्थात् द्वापर युग के अन्त एवं कलियुग के प्रारम्भ में लक्ष्मीपति श्रीनारायण गौरमूर्त्ति धारणकर सन्न्यास ग्रहण पूर्वक पुरुषोत्तम क्षेत्रस्थ श्रीजगन्नाथ के समीप में अवस्थान करेंगे।

कलियुगे संकीर्त्तन धर्म राखिवारे।
जनमिव कृष्ण प्रथम सन्ध्यार भितरे ॥२९
गौर दीर्घ कलेवर बाहु जानु सम।
सिंहग्रीव गजस्कन्ध कमल लोचन ॥३०
करुणा सागर प्रभु प्रेमार आवास।
निज करुणाय प्रेम करिब प्रकाश ॥३१
मोर भाग्य नाहि मुइ देखिब नयने।
तोर देखा हैले मोरे करिह स्मरणे ॥३२
सेइ एइ गुरुवाक्य मनेते पड़िल।
एइ सेइ भगवान् निश्चय जानिल ॥३३

'माधवेन्द्र' बलि बलि करिल स्मरण ।
तबे त आनन्द मने करये क्रन्दन ॥३४
'माधवेन्द्र' कीर्त्तन शुनिया प्रभु नाचे ।
हरि हरि बलि भक्त नाचे काछे काछे ॥३५
क्षणे हुहुङ्कार देइ परम आनन्दे ।
माधवेन्द्र बलि प्रभु प्रेमानन्दे कान्दे ॥३६
एतदिने मोर सन्न्यास सफल हइल ।
माधवेन्द्र ध्वनि मोर कर्णे प्रवेशिल ॥३७
तबे परणाम करे परमानन्द पुरी ।
कि कर बलिया प्रभु तोले हाते धरि ॥३८
गाढ़ आलिङ्गन कैल परम सन्तोषे ।
चलिला ठाकुर कहे ए लोचन दासे ॥३९

———

धानशी राग ।

गोराचाँद जीवन आमार ।
गोराचाँद पराण आमार रे ॥ ध्रु ॥

आर अपरूप कथा शुन सावधाने ।
पथे चलि याइते सप्ततान विमोचने ॥१
सप्ततान तरु सेइ आछे सेइ पथे ।
देखि आचेम्बिते प्रभु लागिला हासिते ॥२
धाइया गिया सप्त तरु करिला परशे ।
जय जय ध्वनि तबे उठिल आकाशे ॥३
मुनि शापे छिल से गन्धर्व सातजन ।
प्रभुर परशे तारा पाइल मोचन ॥४
जोड़ हस्त करि तारा दण्डवत कैल ।
दिव्यदेह पाइया सबे वैकुण्ठे चलिल ॥५
देखिया सकल लोक करे नमस्कार ।
सबे बले एइ न्यासी राम अवतार ॥६
तबे सेइ महाप्रभु पथे चलि याय ।
आनन्दे विभोर हैया हरिगुण गाय ॥७
प्रेमार आनन्दे नाहि जाने पथश्रमे ।
सेतुबन्धे उत्तरिला पथ क्रमे क्रमे ॥८
सेतुबन्ध गिया देखे रामेश्वर लिङ्ग ।
आनन्दे नाचये प्रभु येन मत्त सिंह ॥९
लिङ्ग प्रदक्षिण करि करे नमस्कार ।
सेतुबन्ध देखि हरि बले बारबार ॥१०
अनुरागे कान्दे डाके श्रीराम लक्ष्मण ।
कखन आवेशे डाके अङ्गद हनुमान ॥११
क्षणेक आवेशे डाके सुग्रीव मोर मित ।
क्षणे विभीषण बलि डाके विपरीत ॥१२
प्रेमाय विह्वल दिक्‌विदिक् ना जाने ।
सेतुबन्ध देखि नाचे सब भक्त सने ॥१३
एइमते दिवानिशि ना जाने आपना ।
लेउटिते महाप्रभुर बाढ़िल करुणा ॥१४
क्रमे क्रमे तबे प्रभु लेउटिया आसि ।
पुन चतुर्मास्य गोदावरी तीर्थे बसि ॥१५
पुनरपि उड्रदेशे आइला ठाकुर ।
जगन्नाथ भावे प्रेमा बाढ़िल प्रचुर ॥१६
तबे त देखिला प्रभु श्रीआलालनाथ ।
विष्णुदास उड़ियारे कैल आत्मसाथ ॥१७
जगन्नाथ देखि प्रभु हैला कुतूहली ।
सघने तुलिया बाहु बले हरि हरि ॥१८
पुरुषोत्तमे आसि प्रभु आछे महासुखे ।
कहये लोचन बड़ ए आनन्द लोके ॥१९

द्वितीय अध्याय

प्रभुर वृन्दावन दर्शन ।

बराड़ी राग । धूलाखेलाजात ॥

एखन कहिब कथा शुन गोरा गुणगाथा
त्रिजगते अति अनुपाम ।
मने मने बान्धे आलि मुकुता प्रवाल ढालि
सन्नयासी नृसिंहानन्द नाम ॥१
सुवर्ण मणि माणिक्ये दिव्यरत्न चारिरिके
मने मने बान्धये जाङ्गाल ।
मथुरा पर्य्यन्त गिया कृष्णे समर्पिब इहा
हेनकाले प्रत्यासन्न काल ॥२
ना हैल जाङ्गाल साय रहिल दुःख हियाय
मने मने करे अनुताप ।
कानाइर नाट्शाला पर्यन्त हइल जाङ्गाल अन्त
सन्नयासीर वैकुण्ठ हैल लाभ ॥३
ए कथा आछिल चिते चले प्रभु आचम्बिते
ना जानि कोथारे चलि याय ।
क्रमेक्रमे चलि याइते कानाइर नाट्शाला हैते
पुन लेउटिला गोराराय ॥४
ए कथा वेकत नहे परमानन्द पुरी कहे
कह प्रभु ! इहार कारण ।
आद्योपान्त यत कथा ताहारे कहिल तथा
मनःकथा सिद्धिर कारण ॥५
पुरुषोत्तम आदि अन्त मथुरापुरी पर्यन्त
स्वर्ण माणिक्ये दिब आलि ।
सन्नयासीर एइ हिया ए मोर जाङ्गाल दिया
चलि याबे गोरा वनमाली ॥६
शुन शुन सब जन सावधाने दिया मन
श्रीगोराचाँदेर परकाश ।
मनःकथा नृसिंहानन्द सिद्ध कैल गौरचन्द्र
गुण गाय ए लोचन दास ॥७

———

श्रीराग ।

गोराचाँद नारे हय । विहरइ निलाचल माझे ॥ध्रु॥

तबे नीलाचले प्रभु भक्तगण सङ्गे ।
कीर्त्तन विलास करे आछे नाना रङ्गे ॥१
अनेक भकतगण मिलिला तथाय ।
प्रेम विलसये प्रभु नाचये नाचाय ॥२
नानादेशे आछिल यतेक भक्तगणे ।
क्रमे क्रमे मिलिलेन चैतन्य चरणे ॥३
आनन्दे आछये प्रभु नीलाचल वासे ।
कहिब सकल पाछु अनेक प्रकाशे ॥४
मथुरा चलिब मनःकथा आचम्बित ।
उत्कण्ठा बाढ़िल हिया उनमत चित ॥५
चलिला मथुरा पथे चैतन्य ठाकुर ।
पथे याइते प्रेमानन्द बाढ़िल प्रचुर ॥६
अनुरागे धाय प्रभु राङ्गा दुइ आँखि ।
सिंहेर गमने धाय देखिया नादेखि ॥७
सङ्गेर सङ्गतिगण ना पारे हाँटिते ।
कतदूरे याय प्रभु डाकिते डाकिते ॥८
झारिखण्ड पथे प्रभु चलिला सत्वर ।
कान्दाइला पशु पक्षी वृक्षादि प्रस्तर ॥९
गौराङ्ग बेढ़िया मृग व्याघ्रगण नाचे ।
हिंसा नाइ सबे सुखे नाचे प्रभु काछे ॥१०
बनजन्तुगणे सबे कृतार्थ करिया ।
चलिला गौराङ्ग पथे प्रेम विनोदिया ॥११

क्रमे क्रमे उत्तरिला तीर्थ वाराणसी ।
अनेक आछये तथा परम सन्नचासी ॥१२
विश्वेश्वर नमस्करि चलि याय पथे ।
प्रयागे माधव देखि हरषित चिते ॥१३
रूप सनातन गोसाँइ प्रभुरे मिलिला ।
अनुग्रह करि तारे शक्ति सञ्चारिला ॥१४
तथा वेणी स्नान करि देखि अक्षयवठ ।
यमुनाते पार हैला आगरा निकट ॥१५
देखिला अद्भुत से रेणुका नामे ग्राम ।
अवतार कैला येइ स्थाने परशुराम ॥१६
तथा वृन्दावन मुखे यमुना विमुखी ।
देखिया विह्वल प्रभु प्रेम सुखे सुखी ॥१७
राजग्रामे गिया पारे देखये गोकुल ।
सम्बरिते नारे हिया भै गेल आकुल ॥१८
हिया सम्बरिल प्रभु अनेक यतने ।
आनन्द विह्वल पारे देखे महावने ॥१९
चलिते चलिते आर गिया कतदूर ।
सुनिकट हैल येइ देखे मधुपुर ॥२०
मधुपुरी देखि प्रभु उनमत चित ।
प्रेमाय बिह्वल येन नाहिक सम्बित ॥२१
अक्रूर अक्रूर बलि भूमिते पड़िला ।
माथुर विरह भावे मूर्च्छित हइला ॥२२
दिवानिशि नाहि जाने आछे सेइखाने ।
सम्बेदन नाहि प्रभुर भेल तिनदिने ॥२३
गतागति करे लोक देखये आश्चर्य ।
कृष्णदास नामे एक आछे द्विजवर्य्य ॥२४
प्रभुरे देखिया सेइ गणे मने मने ।
कोथा हैते आइला सेइ पुरुष रतने ॥२५
बड़ भाग्ये देखिलाम इहार चरण ।
एइ शुक प्रह्लाद कि हेन हेन लय मन ॥२६
प्रेमाय विह्वल प्रभु पुछिल ताहारे ।
कि नाम तोमार हय शुन द्विजवरे ॥२७
ब्राह्मण कहये शुन शुन न्यासीवर ।
कृष्णदास नाम मोर कहिल उत्तर ॥२८
ए बोल शुनिया प्रभुर अट्ट अट्ट हास ।
कृष्णेर सकलि जान तुमि कृष्णदास ॥२९
जुड़ाइल देह मोर तोमार सम्भाजे ।
तुमि देखाइबे येथा ये आछे विशेषे ॥३०
मथुरा मण्डल ए कृष्णेर अन्तरीण ।
सकल जानह तुमि भकत प्रवीण ॥३१
येखाने ये कैल कृष्ण सब तुमि जान ।
मथुरामण्डल मोरे देखाओ स्थाने स्थान ३२
द्विज कहे सब स्थान ना जानिये आमि ।
द्वादश वनेर कथा सबे आमि जानि ॥३३
ए बोल शुनिया प्रभु प्रेमानन्दे भासे ।
ताहार हृदये शक्ति करिला प्रकाशे ॥३४
महानन्दे बले आमि सब देखाइब ।
कृष्ण जन्म हैते कंस बध शुनाइब ॥३५
द्विज कहे शुन शुन शुन महाशय ।
नन्देर नन्दन तुमि जानिल निश्चय ॥३६
तोमार दर्शने मोर व्रज दरशन ।
आचम्बिते सब मोर हैल सङरण ॥३७
देखाब येखाने येबा स्थानेर मरम ।
येखाने बा भगवान् जनम करम ॥३८
ए बोल शुनिया गौर हरिष हियाय ।
कृष्णदासे कोले करि कृष्ण गुण गाय ॥३९
से दिन बञ्चिला कृष्णदासेर आलये ।
मथुरा मण्डल कथा सर्वरात्र कहे ॥४०
मथुरा मण्डल मध्ये यमुना भाग्यवती ।
याहार दुकूले कृष्ण विहरे पिरीति ॥४१

यमुनार पूर्वकूले आछे पाँच वन।
पश्चिमेते सात वन कहिल कथन ॥४२
कृष्णेर विहार एइ द्वादश वने।
भक्त विना केहो इहार मरम ना जाने ॥४३
कंसेर सदन एइ यमुना पश्चिमे।
ताहार उत्तरे वन वृन्दावन नामे ॥४४
मथुरा हइते सेइ योजनेक पथे।
अनेक रहस्य कथा कहिब ताहाते ॥४५
कुमुद नामे वन आछे ताहार नैर्ऋते।
सओया योजन हय मथुरा हइते ॥४६
खदिर नामे वन आछे ताहार दक्षिणे।
देड़ योजन पथ सेइ मथुरार सने ॥४७
तालवन आछे प्रभु दक्षिणे मथुरार।
अर्द्ध योजन भूमि मथुरा ताहार ॥४८
एक नदी धारा आछे मानस गङ्गा नामे।
वृन्दावन पश्चिमे से मथुरा ईशाने ॥४९
काम्यवन हइते मधुवनेन उद्देश।
कालीदह पश्चिमे यमुना परबेश ॥५०
सरस्वती नामे एक धारा आछे ताते।
मथुरा उत्तर से प्रवेश यमुनाते ॥५१
मथुरार पश्चिमे आछे गोवर्द्धन गिरि।
आट योजन से मथुरा हइते धरि ॥५२
कहिब से काम्यवन गोवर्द्धन पश्चिमे।
मथुरा हइते आट योजन लोके गणे ॥५३
बहुला नामे वन आछे मथुरा ईशाने।
मानस गङ्गार पार से दुइ योजने ॥५४
एइ सातवन से पश्चिमे यमुनार।
कहिब त पूर्वकूले पाँचवन आर ॥५५
महावन नामे वट यमुना निकटे।
मथुरा हइते सेइ योजनेक बाटे ॥५६

विल्व नामे वन आछे पश्चिमे ताहार।
अर्द्ध योजन से मथुरा हइते पार ॥५७
ताहार उत्तरे आछे लोह नामे वन।
भाण्डीर नामे वन आछे ताहार ईशान ॥५८
एकत्रइ दुइ वन यमुनार कूले।
महावन हैते लोके आट योजन बले ॥५९
एत त द्वादश वन मथुरा मण्डल।
कृष्णेर विहार स्थान देखाब सकल ॥६०
एइमते कथालापे प्रभात हैल।
ये विधि आछिल प्रभु प्रातःक्रिया कैल ॥६१
उत्कण्ठा हृदये कृष्णदासे दिल डाक।
देहके जिनिया से अधिक अनुराग ॥६२
देखिते चलिला गौर मथुरा मण्डल।
आपने ईश्वर कृष्णदासे करे छल ॥६३
कृष्णदास कहे प्रभु इथे कर मन।
पुरीर तिनदिके देख गड़ेर पत्तन ॥६४
पूरुवे यमुना नदी बहे दक्षिण मुखे।
उत्तर दक्षिण द्वार गड़ेर दुइ दिके ॥६५
कंसेर आबास देख पुरीर नैर्ऋते।
पुरुबे उत्तरे दुइ दुयार ताहाते ॥६६
बसिवार चौतारा देख वाड़ीर उत्तर।
पुरीर वायुकोणे देख हेर कारागार ॥६७
मूत्रस्थान हेर देख इहार दक्षिणे।
विवरि कहिये किछु शुन सावधाने ॥६८
कंस भये बसुदेव लैया यान पुत्र।
आचम्बिते कृष्ण तार कोले कैल मूत्र ॥६९
सेइखाने बसुदेव बसिला सत्वर।
प्रस्राव करिला कृष्ण द्रविल पाथर ॥७०
मूत्रचिह्न रहिल ए पाषाण उपरे।
मूत्रस्थान तेँइ लोके बोलये इहारे ॥७१

इहार उत्तरे देख उद्धवेर घर।
ए बोल शुनिते प्रभुर गले दुइ धार ॥७२
कण्टकित भेल अङ्ग आपाद मस्तक।
कदम्ब केशर जिनि एकटि पुलक ॥७३
एइ उद्धवेर घर मुइ आलुँ एबे।
एथा ये करिल कृष्ण कहि अनुभवे ॥७४
एइखाने कृष्ण आर उद्धबेते कथा।
शुनियाछि हेन वासोँ मने लागे व्यथा ॥७५
ए वोल बलिते प्रभु चाहे चारिदिके।
तबे कह कृष्णदास कहे अनुरागे ॥७६
उद्धवेर पूर्वे देख रजकेर घर।
मालाकार वास देख पूरुबे इहार ॥७७
इहार दक्षिणे देख कुबुजीर घर।
ताहार दक्षिणे रङ्गस्थान मनोहर ॥७८
बसुदेब आवास देख तार अग्निकोणे।
ए बोल शुनिते प्रभु हासे मने मने ॥७९
गदगद स्वर किछु अरुण वदन।
उग्रसेन वाड़ी देख ताहार ईशान ॥८०
देखह विश्रान्ति घाट दक्षिणे ताहार।
गतश्रम नाम मूर्त्ति एथा परचार ॥८१
कंस मारि टानिया फेलिते हैल खाल।
तेँइ कंसखालि घाट दक्षिण इहार ॥८२
देखह प्रयाग घाट ताहार दक्षिणे।
ताहार दक्षिणे घाट ए तिन्दुक नामे ॥८३
सप्ततीर्थ बलि घाट इहार दक्षिणे।
ताहार दक्षिण देख ऋषितीर्थ नामे ॥८४
इहार दक्षिणे देख मोक्ष तीर्थ आर।
ताहार दक्षिणे कोटितीर्थेर प्रचार ॥८५
ताहार दक्षिणे देख बोधितीर्थ नामे।
दक्षिणे गणेश तीर्थ देख विद्यमाने ॥८६
एइ त द्वादश घाट सर्वतीर्थ सार।
पुरीर दक्षिणे रङ्गभूमि देख आर ॥८७
ताहार दक्षिणे आर देख अपरूप।
दुराशय कंसराजा खुदिलेक कूप ॥८८
कृष्ण मारि इहाते फेलिब एइ काम।
कंस से खुदिल कूप कंसकूप नाम ॥८९
देखह अगस्त्य कुण्ड नैर्ऋते ताहार।
सेतुबन्ध सरोवर उत्तरे इहार ॥९०
ए बोल शुनिते प्रभु कि कि बलि डाके।
अङ्ग आच्छादिल घन अङ्गेर पुलके ॥९१
सेतुबन्ध सरोवरेर शुन विवरण।
सावधाने शुन प्रभु हैया एक मन ॥९२
एकदिन आछे कृष्ण गोपीगण मेले।
रासक्रीड़ा करे एइ सरोवर कुले ॥९३
राधाके कहिल आमि सेइ रघुनाथ।
रावण मारिल आमि बानरेर साथ ॥९४
ए बोल शुनिया राधा मुचकि हासय।
मिछा कथा कहे कृष्ण एइ त आशय ॥९५
देखिया तरस्त हैया पुछये राधारे।
कि लागिया हास राइ बलह आमारे ॥९६
राधा कहे मिछाकथा ना बलिह आर।
तुमि से केमन हैले राम अवतार ॥९७
महा जितेन्द्रिय तेहोँ परम ईश्वर।
तोमाते सम्भवे नाहि ताँर व्यवहार ॥९८
समुद्र बान्धिल तेहोँ ए गाछ पाथरे।
तुमिह बान्धह देखि एइ सरोवरे ॥९९
ए बोल शुनिया कृष्ण लहु लहु हासे।
आमि जले थुइले से इटा पाथर भासे ॥१००
ए बोल शुनिया गोपी बलिल वचन।
आनि ए पाथर देखि बान्धह एखन ॥१०१

मिछा गर्व ना करिह शुन हे कानाइ ।
पाथर भासये जले कभु शुनि नाइ ॥१०२
ठाकुर कहये ग्रान ए गाछ पाथर ।
पाथरे बान्धिब ग्रामि एइ सरोवर ॥१०३
ए बोल शुनिया तारा बहि ग्राने इटा ।
काष्ठ खानखान ग्राने पाथर गोटागोट १०४
एक कूले रहि कृष्ण बान्धे सरोवर ।
एकूले ओकूले सब लागिल पाथर ॥१०५
ए गाछ पाथरे सरोबर गेल बान्धा ।
भालभाल बले गोपी मुचकि हासे राधा १०६
राधार कारणे सरोवरे हैल सेतु ।
सेतुबन्ध सरोवर कहि एइ हेतु ॥१०७
ए बोल शुनिया प्रभु ग्रन्तर उल्लास ।
गोरा गुण गाय सुखे ए लोचन दास ॥१०८

पठमञ्जरी श्रीराग ।

सप्त समुद्र कुण्ड इहार उत्तरे ।
देवकीर सातपुत्र मारिते पाथरे ॥१
इहार उत्तरे देख लिङ्ग भूतेश्वर ।
देख सरस्वती कुण्ड पुरीर उत्तर ॥२
एइखाने देख दश ग्रश्वमेध घाट ।
इहार दक्षिणे सोम तीर्थेर ए बाट ॥३
कण्ठाभरण मज्जन इहार दक्षिणे ।
नागतीर्थ धारा बहे पाताल गमने ॥४
संयमनकुण्ड घाटे ग्राइला से तबे ।
पुरी प्रदक्षिण करे निज ग्रनुभबे ॥५
एइमते भ्रमिते भ्रमिते दिन गेल ।
भिक्षा करिया प्रभु रजनी वञ्चिल ॥६
उत्कण्ठाय ग्राकुल दीघल भेल राति ।
पोहालो पोहालो पुछे हियार ग्रारति ॥७
रजनी प्रभात हैल हियार उल्लास ।
प्रातःक्रिया करि बले ग्राइस कृष्णदास ॥८
कृष्णदास बले गोसाँइ शुनह बचन ।
मथुरा मण्ल भूमि एकुइश योजन ॥९
द्वादश वन हय छय योजन भितर ।
येखाने ये कैल कृष्ण देखाब सकल ॥१०
नारद बचन कंस शुने एइखाने ।
बसुदेव देवकीर राखे एइ स्थाने ॥११
एइखाने हैल कृष्ण चतुर्भुज देखि ।
परिहार मागे से बसुदेव देवकी ॥१२
तबे गेला बसुदेव कृष्ण लैया कोले ।
निद्राय प्रहरिगण पड़ि गेल भोले ॥१३
फणा छत्र धरिया वासुकि पाछे धाय ।
यमुनाय पार हैते शृगाली ग्रागे याय ॥१४
एइ महावन नन्द घोषेर बसति ।
निँदे प्रसविला कन्या यशोदा भाग्यवती ॥१५
नन्द घरे पुत्र थुइया कन्यारे ग्रानिल ।
देवकीर कन्या बलि कंसेरे भाण्डिल ॥१६
पापिष्ठ से कंसराज मारिते कन्यारे ।
विद्युत हइया तेँह गेल ग्राकाशेरे ॥१७
ग्रपराद्ध कंस स्तुति करये ताँहारे ।
गगने ग्राकाशवाणी शुने हेन काले ॥१८
शुनिया से वाणीधर्म हिंसिते लागिल ।
निश्चय करिया निज मरण ग्रानिल ॥१९
मथुरा ग्राइला नन्द पुत्रोत्सव करि ।
बसुदेव बैल राख शिशुरे ग्राबरि ॥२०
सात दिवसेर कृष्ण पूतना बधिल ।
मासेकेर काले शकट भाङ्गिया फेलिल ॥२१

तृणावर्त्त मारे कृष्ण हैया विश्वम्भरे।
जृम्भाये मायेरे विश्व देखालो उदरे ॥२२
छय मासेर काले नामकरण हइल।
मृत्तिका भक्षणे विश्वरूप देखाइल ॥२३
मन्थनेर दण्ड धरि नाचिल एइखाने।
दुग्ध उथलिते एथा यशोदा गमने ॥२४
उदूखले चड़ि शिकार भाण्ड छेद करि।
ऊर्द्ध्वमुखे नवनी भक्षण कैल हरि ॥२५
एइखाते चुरि करि कृष्ण खाइल ननी।
उदूखले बान्धे लैया यशोदा जननी ॥२६
यमल अर्जुन भङ्ग कैल एइखाने।
धान्य दिया फल खाइल देवनारायण ॥२७
महावन दक्षिणे देख गोकुल नगर।
शिशु सङ्गे वत्स एथा राखे दामोदर ॥२८
हेर देख गोपेश्वर मूर्त्ति मनोहर।
सप्त समुद्रक कुण्ड देखह सुन्दर ॥२९
आयानेर घर देख ग्रामेर पश्चिमे।
नन्दगोपेर ग्राम आयानेर दक्षिणे ॥३०
उपनन्देर घर एइ ग्रामेर मध्यस्थाने।
पश्चिमे देखह रावणेर तपोवने ॥३१
देखह दुर्वासाश्रम इहार उत्तर।
निकटे देखह लोहवन मनोहर ॥३२
अपरूप कहि एइ हेर विल्ववने।
कृष्ण कोले करि नन्द आछिला एखाने ॥३३
राधाके देखिया नन्द कहिल उत्तर।
कोले करि लेह कृष्ण थोओ लैया घर ॥३४
नन्देर आदेशे राधा कृष्ण करि कोले।
चुम्बन करये बाल्य आचरण छले ॥३५
काज नाहि बुजे राधा लैया याय पथे।
गाढ़ आलिङ्गने कुच चिरे नखाघाते ॥३६

देखिया चरित्र राधार विस्मय लागिल।
हिया उपजिल भाव बेकत ना कैल ॥३७
हेर आर देख पुन कृष्णेर चरित।
मरये सकल शिशु तृष्णाय पीड़ित ॥३८
पाँचनी खनिल कुण्ड देख विद्यमान।
शुनिमात्र गौरचन्द्र नाहि वाह्यज्ञान ॥३९
कतक्षणे गौरचन्द्रेर हैल त वाह्य।
प्रभु कहे कृष्णदास कि हैल कार्य ॥४०
एइखाने देख उपनन्द आदि यत।
युकति करिल सब गोयला सम्मत ॥४१
असह्य ए राजपीड़ा नितुइ संकट।
रजनी प्रभाते सबे साजालो शकट ॥४२
गोपीगणे शकटे करिया गोपगण।
निकट बसति करिबारे वृन्दावन ॥४३
है है रबे याय गोधन चालाइया।
पाये बाधा हाते नड़ि माथाय पाग दिया ४४
शकटे चड़िया याय कृष्ण बलराम।
तार मुख देखि गोप सुखे चलि यान ॥४५
भद्र भाण्डीरवने छिल दुइ मास।
आनन्दे कहये गुण ए लोचन दास ॥४६

———

तार पार हैल से निकट वृन्दावने।
अर्द्धचन्द्राकृत शकट राखिल एइखाने ॥१
कपित्थ गाछेर मूले वत्सक बधिल।
पुच्छ पद धरि तारे तुलि आछाड़िल ॥२
गिलि उगारिल कृष्ण एथा बकासुर।
दुइ ठोँट चिरि तार प्राण कैल दूर ॥३
एइ जोठे बिहरे बालक सब सङ्गे।
शिङ्गा वेणु वेत्र हाते नानाविध रङ्गे ॥४

केहो कोनो जन्तु छले सेइ शब्द करे ।
उड़िते पक्षेर छाया चाहे धरिवारे ॥५
ए बोल शुनिया गौर विह्वल हियाय ।
बालकेर मत प्रभु इति उति धाय ॥६
मयूरेर शब्द करे धरये पेखम ।
पुलके पूरल अङ्ग अरुण नयन ॥७
भाइ भाइ बलि डाके है है बोले ।
श्रीदाम सुदाम बलि गाछ कैल कोले ॥८
सख्यभावे व्याकुल हैला गौरराय ।
प्रेमाय आकुल हैया चारिदिके धाय ॥९
धवली शाङली बड़ि डाके घने घन ।
कति गेल धेनुकासुर मारिब एखन ॥१०
इहा बलि कान्दे बाह्य नाहिक शरीरे ।
कृष्णदास बले एइ सेइ यदुवीरे ॥११
सङ्गेर सङ्गतिगण ताराओ तेमन ।
गौर मुख नेहारये नाहि सम्बेदन ॥१२
कतक्षणे गौरचन्द्रेर हैल त बाह्य ।
पुनरपि कृष्णदासे कहे कह कार्य ॥१३
बकेर कनिष्ठ सर्प नाम अघासुर ।
एइखाने कृष्ण तार प्राण कैल दूर ॥१४
एइखाने यमुना छिल नाहिक एखन ।
एइखाने हरिल ब्रह्मा बत्स शिशुगण ॥१५
बत्सरेक राखे गोवर्द्धनेर भितरे ।
सेइ बत्स शिशु देखि ब्रह्मा स्तव करे ॥१६
धेनुक मारिया ताल खाइल बलरामे ।
यमुनाते कालिदह देख एइखाने ॥१७
कदम्ब तरु आरोहण कैल एइखाने ।
झाँप दिया कैल कालिनागेर दमने ॥१८
शीते आर्त्त हैया कृष्ण ए घाटे उठिल ।
द्वादश आदित्य तबे गगने उदिल ॥१९
द्वादश आदित्य घाट तेँइ बले लोके ।
कालिय दमन मूर्त्ति देख परतेके ॥२०
एइखाने शिशुबत्स पोड़े दाबानले ।
दावानल पान करि राखिल सबारे ॥२१
श्रीमानेरे कान्धे कृष्ण करिल एखाने ।
प्रलम्ब हारिया कान्धे करे बलरामे ॥२२
असुरेर माया व्यक्त हैल बलरामे ।
मस्तके मारिल मुष्टि छाड़िल पराणे ॥२३
भाण्डीर वनेते अघासुरेर मरण ।
निकटेते हेर गोसाँइ देख वृन्दावन ॥२४
ईषीका मुञ्जाटबी देख परम मोहन ।
एइखाने आचम्बिते ना देखे गोधन ॥२५
धेनु ना देखिया से वाँशीते दिल फुँक ।
ऊर्द्ध्वपुच्छ करि धेनु आइसे ऊर्द्ध्वमुख २६
तृणमुखे धेनु धाय बत्स स्तन मुखी ।
मुरलीर गानेते मोहित मृग पाखी ॥२७
पुन दावानले व्यग्र भेल शिशुगण ।
दावानल खाय शिशु मुदिल नयन ॥२८
एइमते कृष्णेर विहार स्थाने स्थाने ।
आनन्दे देखये गौर कहये लोचने ॥२९

———

श्रीराग ।

आरे मोर अपरूप गोरा ।
येन काँचा सोणार किशोरा ॥ ध्रु ॥

गोप कुमारिका व्रत कैल एइखाने ।
काम्य कैल दासी हब कृष्णेर चरणे ॥१
बस्त्र आभरण तारा थुइया एइघाटे ।
जले नामि स्नान तारा करये लाङ्गटे ॥२

आचम्बिते बस्त्र आभरण लइया हरे ।
नीपतरु परे उठि हासे धीरे धीरे ॥३
गोप कुमारिका स्तुति अनेक यतने ।
तुष्ट हैया दिल तारे बस्त्र आभरणे ॥४
वृन्दावन प्रशंसये शिशु सम्बोधिया ।
यज्ञपत्नी स्थाने अन्न खाइल मागिया ॥५
कंसेर उत्पाते सब गोप भय पाइया ।
नन्दीश्वर गिरिते आश्रय कैल गिया ॥६
बसति करिल मानस गङ्गार दु'कूले ।
विलास करिल गोवर्द्धनेर शिखरे ॥७
इन्द्र सने बाद करि ए पर्वत धरे ।
तुलिलेक महागिरि सप्तम बत्सरे ॥८
मानस गङ्गार धार पर्वत ईशाने ।
स्थल नाहि पार हैते नारे गोपीगणे ॥९
नौका पारापार करि बाढ़ाय कौतुक ।
जले भासि देह गोपी दिलेक यौतुक ॥१०
पर्वतेर मध्य दिया आछे राजपथ ।
गोकुल मथुरार लोक करे गतागत ॥११
पर्वत उपरे आछे एक रम्य स्थान ।
एइखाने गोपीकारे साधे महादान ॥१२
बसिया साधित दान एइ त पाषाणे ।
एइ दान चबुतारा देख विद्यमाने ॥१३
पाषाण देखिया प्रभु गदगद स्वर ।
अरुण वरण भेल सब कलेवर ॥१४
निज कर मिया प्रभु माजये पाषाण ।
एकदृष्टे चाहे निज बसिवार स्थान ॥१५
क्षणे बुके देइ क्षणे करे नमस्कार ।
क्षणे बले राधा दान देह ना आमार ॥१६
अवश शरीर प्रभु पड़े भूमितले ।
क्षणेक उठिया से पाथार कोले करे ॥१७
कृष्णदास बले गोसाँइ शुन मोर बोल ।
देखिबे त सब स्थान नह उतरोल ॥१८
पर्वतेर पूर्वे देख ए कुसुम वन ।
ताहार दक्षिणे रास मण्डलीर स्थान ॥१९
ए बोल शुनिया गोरा बले रह रह ।
श्रीरासमण्डल कथा भालमते कह ॥२०
राधाकृष्ण रास कैल सेइ एइ स्थान ।
ए बोल बलिते गोरार झरे दुनयान ॥२१
हा हा कृष्ण हा हा राधे बले वारबार ।
अरुण नयाने झरे सात पाँच धार ॥२२
श्रीरास मण्डल बलि पाड़े गड़ागड़ि ।
क्षणे उभ बाहु करि हुहुङ्कार छाड़ि ॥२३
जानुर उपरे जानु त्रिभङ्गिम रहे ।
शुन शुन बलि राधा कृष्ण कथा कहे ॥२४
पुन कि कहिब बलि अट्ट अट्ट हास ।
एइखाने राधा कृष्ण मिलि कैल रास ॥२५
विह्वल देखिया गौर बले कृष्णदास ।
पर्वत उपरे राधा कदम्ब विलास ॥२६
देख इन्द्र आराधन अन्नकूट स्थाने ।
इन्द्रपूजा बाध कैल कृष्ण एइखने ॥२७
अभिमाने आपना पासरे इन्द्रराजे ।
झड़ बरिषण कैल गोयाला समाजे ॥२८
सेइरूप मूर्त्ति देख पर्वत शिखरे ।
हरिराय नाम मूर्त्ति पर्वत उपरे ॥२९
गोवर्द्धन उपरे दक्षिण भागे बास ।
गोपालराय नामे हेथा कृष्णेर विलास ॥३०
इन्द्र दर्प हरि चड़े पर्वत उपरे ।
इन्द्र अभिषेक करे राजराजेश्वरे ॥३१
सर्वपाप हर कुण्ड पर्वत दक्षिणे ।
ताहार दक्षिणे देख शिला उवटने ॥३२

आर पाँच कुण्ड देख पर्वत उपर ।
ब्रह्मकुण्ड रुद्रकुण्ड सर्वतीर्थ सार ॥३३
इन्द्रकुण्ड सूर्य्यकुण्ड मोक्षकुण्ड नामे ।
पृथिबीते यत तीर्थ इहाते विश्रामे ॥३४
एइखाने द्वादशी पारणा स्नान काले ।
वरुण हरिल नन्दे कृष्ण देखिबारे ॥३५
ब्रह्मकुण्ड जन्म एइ देख वृन्दावने ।
कृष्णेर विभब शिशु देखह नयने ॥३६
अशोकवन देख एइ कुण्डेर उत्तर ।
एक ये आश्चर्य कथा शुनह इहार ॥३७
कार्त्तिक पूर्णिमा तिथि दिवसेर माझे ।
कुसुमित हय तरु देखे सर्वराज्ये ॥३८
ए बोल शुनिया प्रभु नेहारये वन ।
अकाले पुष्पित तरु भै गेल तखन ॥३९
मुञ्जरित तरु लता भरे फुल फले ।
अद्भुत देखिया किछु कृष्णदास बले ॥४०
अदभुत गन्ध गोरा अङ्गेर वातास ।
कृष्णदास बले तोमार कपट सन्नयास ॥४१
दण्डवत करे भूमे स्तब्द हैया रहे ।
कह कह कह गौर कृष्णदासे कहे ॥४२
कृष्णदास बले गोसाँइ शुनह वचने ।
रासक्रीड़ा कैल कृष्ण एइ वृन्दावने ॥४३
एइ कल्पतरुमूले पूरे वंशीनाद ।
षोलक्रोश पथे गोपी भेल उनमाद ॥४४
विगत चेतन गोपी कृष्ण आकर्षणे ।
उपेखिल कुलशील लाज भय माने ॥४५
व्यस्त बस्त्र आभरण हैल सबाकार ।
कृष्णगत चित्तवृत्ति मदन झङ्कार ॥४६
अप्राकृत कामेते मुगध व्रजवाला ।
कृष्णेर निकटे सबे आसिया मिलिला ॥४७

एइखाने देख नाम ए गोविन्द राय ।
शुनिमात्र गौरचन्द्र विभोर हियाय ॥४८
हइल आवेशे प्रभु परवश अङ्ग ।
ए भूमि आकाश जोड़े प्रेमेर तरङ्ग ॥४९
हुहुङ्कार नादे प्रेम अमिया वरिषे ।
पशु पक्षी उनमाद मदन हरिषे ॥५०
अकाले पुष्पित भेल सब तरुवर ।
कोकिल मयूर नादे मातल भ्रमर ॥५१
वंशी बलि डाके प्रभु रास प्रशंसिया ।
भालि रे भालि रे बले मुचकि हासिया ॥५२
क्षणे बले गोपी तोरा रह एइखाने ।
क्षणे कथा कहे येन निंदेर स्वपने ॥५३
क्षणेके चमकि निज अङ्ग कोले करे ।
द्रवमय भेल देह सब अङ्ग झरे ॥५४
क्षणे बाल्यावेशे नाचे अट्ट अट्ट हास ।
विह्वल चरणे पड़ि कान्दे कृष्णदास ॥५५
मोर भाग्ये तिनलोके नाहि कोनोजन ।
बड़ भाग्ये पाइलुँ मुइ हाराइलुँ धन ॥५६
ए बोल बलिते प्रभुर वाह्य हैल यबे ।
बले कह कृष्णदास कि हइल तबे ॥५७
एइखाने गोपीरे बुझाय कुलाचारे ।
गोपीर निगूढ़ भक्तिभाव बुझिवारे ॥५८
किम्वा अनुराग वृद्धि करिवार तरे ।
रस परिपाटी भाब बाढ़ाय अन्तरे ॥५९
सुमध्यमागण ! केने रात्रे कुञ्ज माझे ।
भय ना करिले एथा आइले कोन् काजे ॥६०
परपति परश लालस हेतु तोरा ।
परनारी दरश परश नाहि मोरा ॥६१
आपनार घरे गिया पति सेवा कर ।
नारी निज पति भजे एइ धर्म सार ॥६२

किबा रुग्न किबा वृद्ध दरिद्र कुरूप ।
निज पति सेवा पर धर्मेर स्वरूप ।।६३
चल चल निजगृहे याह व्रजवाला ।
सतीनारी करे निज धर्मे अवहेला ।।६४
आमि महाधर्मी कभु ना करि अधर्म ।
ना बुझि आमार मन कैले कोन् कर्म ।।६५
शुनिया रमणीगण हैला मूरछिते ।
स्तब्ध हैया रहे येन चित्र रहे भिते ।।६६
अल्प अल्प श्वास हैल बाक्य नाहि सरे ।
जारिलेक मदन ज्वरेते कलेवरे ।।६७
कभु घन श्वास बहे विरहेर तापे ।
कभु नेत्र झरे कभु सर्वअङ्ग काँपे ।।६८
कभु कभु कृष्ण पाने थिर दिठे चाहे ।
कभु कभु मदन भरेते थिर नहे ।।६९
भाव भरे कि बोल बलिते किबा कहे ।
सबार मनेर कथा बेकत कहये ।।७०
जगत मोहन करे यार रूपे गुणे ।
अवला धैरय तबे धरिबे केमने ।।७१
मोरा कुलवती कुलव्रत मात्र जानि ।
कुलव्रत भङ्ग कैल मुरलीर ध्वनी ।।७२
तुमि किछु नाहि जान मोरा नाहि जानि ।
जगत मोहन गुणे आनिला रमणी ।।७३
पतिर परम पति तुमि आत्माराम ।
तोमारे छाड़िले पति अगति प्रमाण ।।७४
मोर आत्माराम तुमि रमह आमाते ।
तबे कोथा परपति देखिले भजिते ।।७५
अहे पति गति पति सबार आश्रय ।
आनन्द परमानन्द सर्वसुखमय ।।७६
भाव भरे भाविनीर गण सत्य कय ।
भाव कथा शुनि कृष्ण हैला भावमय ।।७७
चाहिला सरस हास्ये सब गोपीपाने ।
यत सुख गोपी पाइल केहो नाहि जाने ।।७८
बेढ़िलेक सब गोपी प्रभु यदुमणि ।
मेघेते झलके येन थिर सौदामिनी ।।७९
एइखाने अपरूप ए रास विहार ।
एक गोपी एक कृष्ण मण्डली ताहार ।।८०
कनक चम्पक आर मरकत मणि ।
गाँथिल येमन माला मण्डली तेमनि ।।८१
आर अपरूप हेर देख एइखाने ।
राइ राजा कैल कृष्ण एइ वृन्दावने ।।८२
दिव्य चन्दन माला दिया राइ अङ्गे ।
आपने करये स्तुति गोपीगण सङ्गे ।।८३
अभिषेक करि कहे शुन गोपीगणे ।
आजि हैते राधा राजा हैल वृन्दावने ।।८४
हेनमते रासे विहरये यदुराय ।
आचम्बिते सब गोपी देखिते ना पाय ।।८५
एक गोपी लैया गेला सबारे एड़िया ।
कान्दये सकल गोपी अङ्ग आछाड़िया ।।८६
तुलसी मालती यूथी तोमारे सुधाइ ।
ए पथे देखेछ येते हलधरेर भाइ ।।८७
कृष्णेर चरण प्रिया तुलसी कल्याणि ।
तुमि देखियाछ कृष्ण प्राण यदुमणि ।।८८
के मोर हरिया निल नीलमणि काला ।
गहन कानने फिरे आहीरीर बाला ।।८९
रामानुज आमा सबार गर्व से जानिया ।
मन हरि कोथा गेला सबारे छाड़िया ।।९०
शुन शुन आरे तुमि यूथिका मल्लिका ।
कदम्ब देखेछ कृष्ण पुछेन गोपीका ।।९१
ना पाइया लागि तार यत गोपीगण ।
कृष्णेर यतेक लीला करये रचन ।।९२

केहो त पूतना हैला केहो हैला कान ।
स्तन पान करि केहो बधिल पराण ॥९३
कोनो सखी आइला शकट रूप धरि ।
कृष्ण रूप धरि केहो ताहारे संहारि ॥९४
अघ बक हैया तबे कोनो सखी आइला ।
कृष्णरूप हैया केहो ताहारे मारिला ॥९५
एइखाने गोपी कृष्ण चरिते तन्मय ।
येखाने ये कैल कृष्ण तेन से करय ॥९६
सेइ अभिनय करे सेइ सब रीत ।
उनमत गोपी सब कृष्णमय चित ॥९७
सङ्गेर गोपिका सेइ आदरेइ भर ।
हासिया कहये मुइ चलिते कातर ॥९८
येनमते पार तेनमते लह तुमि ।
कानु कहे आइस कान्धे करि निब आमि ९९
मातिल पाथर बुकी शीतल बचने ।
टानिया काँकालि बान्धे नेतेर बसने ॥१००
कान्धे चड़िबारे गोपी मानस करिल ।
आचम्बिते ताहारेओ निठुर भै गेल ॥१०१
ये काले चापिबे कृष्णेर चूड़ाय दिया हात ।
सेइकाले अन्तर्द्धान कैला गोपीनाथ ॥१०२
एइखाने अन्तर्द्धान करिला ताहारे ।
व्याकुलिता सेइ गोपी कान्दे एकेश्वरे ॥१०३
कृष्ण हाराइया आर गोपी सब यत ।
एइखाने बुले तारा हइया उन्मत ॥१०४
विरहे व्याकुल गोपी कान्दे उभराय ।
ए कथा शुनिते दुःख बाड़ये हियाय ॥१०५
भ्रमिते भ्रमिते तबे आर गोपीगण ।
देखे राधा प्रियसखी करिछे रोदन ॥१०६
राधा दरशने सबार शोक उथलिल ।
सबे मिलि आछाड़िया कान्दिते लागिल १०७
उमती हइला सबे काँदिते काँदिते ।
मूर्च्छित हइया तारा पड़िला भूमिते ॥१०८
हेनमते मूर्च्छा यबे पाइला गोपीगण ।
एइखाने कृष्ण तबे दिल दरशन ॥१०९
पुनरपि कैल तबे ए रास विलास ।
पुन रासोत्सवे गोपीर आनन्द उल्लास ॥११०
यत गोपी तत कृष्ण ए रास मण्डले ।
पड़िल रासेर हाट वृन्दवन स्थले ॥१११
कल्पवृक्ष मूले राधा कृष्ण दुइ जन ।
राधार अंशिनी गोपी रसेर कारण ॥११२
कृष्ण हैते कृष्ण तथा हइल अपार ।
यत गोपी तत कृष्ण हैल ए विचार ॥११३
रास हाट उपरे पताका शशधरे ।
कोकिल कोटाल हैया जागाय कामेरे ॥११४
भ्रमरा हाठेर वाद्य पसार यौवन ।
गराक रसिक वर मदनमोहन ॥११५
गोपीकार शुद्ध प्रेम जानिया श्रीहरि ।
भकत वश्यता गुण प्रकाश से करि ॥११६
यूथे यूथे पाटोयार नटिनी गोपिनी ।
नाटुया ताहार माझे प्रभु यदुमणि ॥११७
बलया नूपुर मणि किंकिणीर रोल ।
मुरली मधुर ध्वनी ताहाते उजोर ॥११८
रवाव उपाङ्ग स्वर मण्डलेर गान ।
मृदङ्ग मन्दिराडम्फ पाखोयाज सुतान ॥११९
एइमते आनन्द कोतुके रात्रि शेषे ।
अलसे अवश अङ्ग श्लथ भेल वेशे ॥१२०
यमुना पुलिन गेला सब गोपी लैया ।
गोपी कोले निद्रा याय श्रमयुक्त हैया ॥१२१
एखाने यमुना जल सुशीतल वाय ।
कृष्ण कोले करि गोपी सुखे निद्रा याय १२२

एइमते शुभरात्रि सुप्रभात हैल ।
प्रणति करिया गोपी निजघरे गेल ॥१२३
एइमते स्थाने स्थाने देख गौरराय ।
आनन्दे लोचन दास गोरा गुण गाय ॥१२४

विभास राग ।

एकबार दया कर गौर ! दया कर हे ॥ ध्रु ॥

इहार भितरे एइ देख खदिर वन ।
दधि दुग्ध वेचिवारे राधार गमन ॥१
एइखाने शिशु लैया कृष्णेर मन्त्रणा ।
डर दरशाह् राधा पाउक यन्त्रणा ॥२
वने लुकाइया शिशु महा शब्द करे ।
डरे डराइया राधा कृष्ण चापि धरे ॥३
राधा कोले करि कृष्ण बले हाय हाय ।
चुम्बन करये प्रिय वाणीते बुझाय ॥४
कृष्णेर पिरीति पाइया राधिका विभोर ।
मदन विलास रसे पासरिला घर ॥५
एइखाने निकुञ्जेते विनोद विलास ।
प्रेमाय मुगध दोँहे भेल महारास ॥६
एइखाने नाम हैल मदन गोपाल ।
शुनिया आनन्दे गोरा बले भाल भाल ॥७
देखह कुमुद वने कृष्णेर चरित ।
एइखने खेला खेले बालक सहित ॥८
श्रीदाम सुबल गोठे मुख्य दुइ जन ।
बालके बालके खेला कोन्दली तखन ॥९
कोन्दलिया नाम स्थान तेँइ त इहार ।
कहिल कुमुद नाम वनेर विहार ॥१०

अम्बिकार वन देख सरस्वती तीरे ।
एथा गोप गोपी हरगौरी पूजा करे ॥११
अङ्गिरा पुत्रेरे उपहासेर कारण ।
सर्पदेह छिल विद्याधर सुदर्शन ॥१२
शापान्त कारणे सेइ नन्दके गिलिल ।
उगारिल नन्दे कृष्ण चरणे छुँइल ॥१३
कुबेरेर चर शङ्खचूड़ेर मरण ।
माथाय मुष्टिकाघाते मणिर ग्रहण ॥१४
अरिष्ट वृषभे शृङ्ग चरणे धरिया ।
मुखे रक्त तोले गोठे माइल आछाड़िया ॥१५
नारद बचने कंस चिन्ताये विमन ।
बसुदेव देवकीर निगड़ बन्धन ॥१६
अश्व रूप धरे केशी कंस सहचर ।
महातेज कृष्ण बर्ण देखि लागे डर ॥१७
वायु बन्ध तरि तार मुखे भरि हात ।
एइखाने केशि बध कैल गोपीनाथ ॥१८
मेष रूपे शिशु चुरि करये असुरे ।
पाथर आच्छादि राखे पर्वत गह्वरे ॥१९
आनिलेन शिशु व्योम आछाड़ि मारिया ।
आनन्दे खेलाय खेला दुष्ट निबारिया ॥२०
तबे देख नन्दीश्वर एथा नन्द वर ।
इहार पश्चिमे काम्यवन मनोहर ॥२१
पिछलि पाथर देख ए गोप छाओयाले ।
पिछलि खेलाय एथा बिहान विकाले ॥२२
पावन सरोवर नन्दीश्वरेर उत्तरे ।
चौदिके देखह खुँटा बान्धित बाछुरे ॥२६
मथुराय अक्रूरके कंसेर आदेश ।
एइखाने सन्ध्याकाले नगर प्रवेश ॥२४
पथेते आसिते यत मनःकथा छिल ।
पदारविन्देर चिह्न देखि सिद्ध हैल ॥२५

एइ गोठे राम कृष्ण दोँहाके देखिया ।
दण्डवत करे भूमे चरणे पड़िया ॥२५
घरे लैया गेला तारे करिया आदर ।
रजनीते कंस म कहिल सकल ॥२६
प्रभाते घोषणा नन्द दिलेन सबारे ।
घोषणा पड़िल याब कंसे भेटिबारे ॥२७
एइखाने राम कृष्ण चड़िला त रथे ।
राज दरशने चले अक्रूर सहिते ॥२८
एइखाने गोपीगण मरये कान्दिया ।
कृष्णेर विरहे कान्दे अङ्ग आछाड़िया ॥२६
भूमिते पड़िया कान्दे आउलाइल केश ।
बसन भूषण सब व्यस्त भेल वेश ॥३०
ताहार कान्दना मुखे कहने ना याय ।
प्राणहीन देह येन रहे हात पाय ॥३१
दूत द्वारे कृष्ण से आपने शान्त करे ।
आसितेछि आमि कत दिवस भितरे ॥३२
तोमरा सकले मोर प्राणेर समान ।
प्राण छाड़ा दुह रहे नहे त प्रमाण ॥३३
दुष्टगण नाश करि शीघ्र से आसिब ।
दुःख ना भाविह जान स्वरूपे ए सब ॥३४
एखाने गोयाला सब शकटे चढ़िल ।
मानस गङ्गार घाटे सबाइ जिराइल ॥३५
यमुनार घाटे गेला आड़ाइ प्रहर ।
स्नान फलाहार कैल गोयाला सकल ॥३६
अक्रूरेर स्नान काले विभूति देखाय ।
विकाले नन्दादि आगे पाछे कृष्ण याय ॥३७
अक्रूर यतन कैल निज घरे निते ।
बलिल तथारे याब लेउटि आसिते ॥३८
कृष्णेर बिलम्बे गोप मथुरा निकटे ।
सरस्वती तीरे तथा राखिल शकटे ॥३६
नन्द आदि गोप यत राखि एइखाने ।
आगेते जानाय कंसे अक्रूर आपने ॥४०
बुझि एइखाने स्थिति हबे कतक्षण ।
मथुरा देखिते दुइ भाइर गमन ॥४१
देखिल रजक एक दुर्मुख तार नाम ।
देखिया कापड़ मागे कृष्ण बलराम ॥४२
दुर्मुख पापिष्ठ सेइ बले दुरक्षर ।
कराग्रे काटिया फेलिल ताहार कन्धर ॥४३
सेइ दिव्य बस्त्र परि अति हरषिते ।
सुदामा मालीर घरे भेल उपनीते ॥४४
सुदामा उठिया कैल चरण वन्दन ।
दिव्यमाल्य अङ्गे दिया करिल स्तवन ॥४५
तार पूजा लइया चलिला दुइ भाइ ।
त्रिबक्रा कुबुजी एक देखिला तथाइ ॥४६
त्रिबक्रा देखिया मने हास्य उपजिल ।
उपहास करि तारे आइस आइस बैल ॥४७
आदरे दोँहारे कुजी निज घरे निल ।
अगोर चन्दन गन्ध श्रीअङ्गे लेपिल ॥४८
बड़ तुष्ट हैया कुजी सोसर करिल ।
श्रीहस्त परशे कुजी दिव्य मूर्त्ति पाइल ॥४६
कामे अचेतन कुजी चाहे कानु पाने ।
लज्जा परिहरि कहे वेकत बदने ॥५०
आश्वास बचने तारे तुष्ट कैल हरि ।
चलिला त दुइ भाइ नटवेश धरि ॥५१
तबे धनुर्यज्ञस्थाने धनुक भाङ्गिल ।
कंस अनुचर यत मारिते धाइल ॥५२
भग्न धनु हाते करि कंस चर मारि ।
सन्ध्याय चलिला यथा नन्द आदि करि ५३
सेइ रजनीते कंस कुस्वप्न देखिल ।
अति उच्चतर करि ए मञ्च बाँधिल ॥५४

इहार दक्षिणे हेर दुइ मञ्च आर।
बसुदेव देवकीर तरे बसिबार ॥५५
कालि हेथा राम कृष्ण मरिबे आसिया।
पुत्र मृत्यु देखे येन इहाते बसिया ॥५६
चौदिकेते पात्र मित्र सबे कैल मञ्च।
अबिकले मल्लयुद्ध देखिते सुसञ्च ॥५७
पश्चिमे खुदिल कूप सेइ त पामरे।
दुइ भाइ मारि ताते फेलिबार तरे ॥५८
प्रभाते उठिया मञ्चे बसे कंसराज।
आनह गोयाला सब देङ राजकाज ॥५९
तार दुइ पुत्र आन कृष्ण बलराम।
भाल शुनियाछि तार देखिब संग्राम ॥६०
धाइल धावक सेइ राजार आज्ञाय।
संग्रामेर शब्द शुनि रामकृष्ण धाय ॥६१
सत्वरे चलिया गेला गड़ेर दुयार।
गड़द्वारे आछे गज पर्वत आकार ॥६२
रामकृष्ण देखि रुषि आइसे मारिबार।
रुषिया रहिल कृष्ण सम्मुखे ताहार ॥६३
शुँड़े धरि तरातरि चड़े तार कान्दे।
माहुत मारिया टान दिल गज दन्ते ॥६४
दन्त उपाड़िया पुच्छ धरिया घुराय।
आकाशे तुलिया चारि योजने फेलाय ॥६५
पड़िल से महागज शुनि कंस राय।
काँपिते लागिल अङ्ग तरास हियाय ॥६६
तबे रामकृष्ण गेला राजार सम्मुखे।
तरासे गोयाला सब काँपे हाले बुके ॥६७
चाणुर मुष्टिके राजा बलिल बचन।
मल्लयुद्ध देखिबारे भेल मोर मन ॥६८
एइखाने मल्लयुद्ध भेल महारण।
चाणुर सहित कृष्ण मुष्टिक बलरामे ॥६९

एइखाने हाहाकार कैल सब लोक।
ए मल्लेर योग्य नहे ए अति बालक ॥७०
अयोग्य करये कंस करये विरूप।
यार येन हिया कृष्ण देखे तेन रूप ॥७१
चाणुर मुष्टिक दुइ भाइ करे रण।
देखिया चमके राजा तखने तखन ॥७२
चाणुरे मारिला कृष्ण घुछिल उत्पात।
मुष्टिके मारिला राम शबद निर्घात ॥७३
पुन आर मुटकिते कोटि मल्ल मारे।
शाल्व नामे मल्ले कृष्ण मारिल आछाड़े ७४
भाङ्गिल यतेक मञ्च चरणेर घाय।
कृष्णेर बिक्रमे मल्ल चौदिके पलाय ॥७५
शीघ्र आज्ञा करे कंस एइसब देखिया।
राम कृष्ण बाड़ीर बाहिर कर निया ॥७६
नन्द आदि यतेक गोयाला बन्दी कर।
उग्रसेन बसुदेव देवकीरे मार ॥७७
हेनकाले कृष्णचन्द्र समय बुझिया।
महादर्पे उठिला मञ्चेते लाफ दिया ॥७८
आस्ते व्यस्ते कंस खड्ग धरिबार काले।
हुहुङ्कार दिया कृष्ण धरे तार चुले ॥७९
चुले धरि मञ्च हैते फेलिलेन भूमे।
विश्वरूप बुके चड़े मञ्चेर पश्चिमे ॥८०
छाड़िलेक प्राण कंस विश्वरूपेर भरे।
धन्य कंसराज कृष्ण बुकेर उपरे ॥८१
कंस बध हैल लोके देइ जय जय।
आनन्दे देवता सब पुष्प बरिषय ॥८२
छेंचुड़या निल कृष्ण चुलेते धरिया।
कतदूरे फेलाइल तुलि आछाड़िया ॥८३
कङ्क आदि करि कंसेर अष्ट सहोदर।
भ्रातृशोके उनमत सबे धरे बल ॥८४

राम कृष्ण मारिबारे आइसे सातजन ।
भ्रूक्षेपे मारिला सब एकला बलराम ॥८५
कंसेरे छेँचुड़ि निल ग्राम मध्य दिया ।
तेँइ कंसखालि नाम शुन मन दिया ॥८६
श्रमशान्ति कैल से विश्रान्ति घाट नाम ।
कंसनारी प्रलापे प्रबोधे बलराम ॥८७
तबे निज पिता माता करिल मोक्षण ।
आनन्दे विह्वल तारा करये चुम्बन ॥८८
उग्रसेन राजा कैल नन्दके बिदाय ।
ए कथा आमाय शक्त्ये कहने ना याय ॥८९
कृष्णेर निठुरपना शुनिते तरास ।
कहिते मरिये कहे ए लोचन दास ॥९०

तबे बसुदेव पिता देवकी जननी ।
ए दोँहार प्रमसुखे भरिल धरणी ॥१
पुत्रे उपवीत दिया गायत्री शिखाय ।
कतदिन मथुराते विलासे गोङाय ॥२
कहिते कृष्णेर कथा आछये अपार ।
सम्बरण नहे पुँथि हये त विस्तार ॥३
सेइ वृन्दावन पुरन्दर कलियुगे ।
तखने ये कैल गाथा कहि शुन एबे ॥४
प्रदक्षिण कैल गोरा मथुरा मण्डल ।
महाजन कृष्णदास जानये सकल ॥५
प्रभुरे विनय करे चरणे पड़िया ।
मो अति कातर मोरे ना याह भाण्डिया ॥६
तुमि सेइ कृष्ण एइ जानिलुँ निश्चय ।
परसाद कर मोरे शुन गोराराय ॥७
ए बोल शुनिया प्रभु बोलये बचन ।
तोर परसादे मोर शुद्ध हैल मन ॥८
मथुरा देखिब बलि बड़ छिल साधे ।
देखिलुँ रहस्य स्थान तोर परसादे ॥९
आमार येहेन हिया हइल उल्लास ।
कृष्ण परसन्न तोरे हउ कृष्णदास ॥१०
मथुरा मण्डलवासी यत सर्वलोक ।
गौरचन्द्र देखिबारे भेल एकमुख ॥११
बारेक देखये येइ नारे पासरिते ।
प्रेमाय विह्वल सेइ नारे सम्बरिते ॥१२
बाल वृद्ध किबा युबा ए नारी पुरुख ।
कृष्ण एइ कृष्ण एइ बोलये मूरुख ॥१३
एतदिने कृष्ण पुन आइला मथुरारे ।
पुरुब रहस्य स्थान देखिबार तरे ॥१४
रात्रिदिवा थाके लोक ना छाड़ये काछ ।
एके एके देखे प्रभु वृन्दावनेर गाछ ॥१५
एके एके सब स्थान निरीखे ठाकुर ।
येखाने सेखाने प्रेम भरये प्रचुर ॥१६
मथुरा मण्डले घरे घरे परकाश ।
केहो शिशु देखे केहो युबक विलास ॥१७
केहो आचम्बिते घरे शुने वंशीनाद ।
कारु स्वामी कोले कृष्णरसेर उन्माद ॥१८
कारु परबुद्धि नाहि सबे बले निज ।
सबार हृदये उपजिल प्रेमवीज ॥१९
वन बेड़ाइते वने प्रभु याय यबे ।
से वनेर तरुलता भासे प्रेम द्रवे ॥२०
कोकिल भ्रमर मयूर बुले माठे गोठे ।
धाओयाधाइ आइसे रहे प्रभुर निकटे ॥२१
ऊर्द्ध्वमुखे सर्व जन प्रभु मुख देखे ।
सबारे समान स्नेहे चाहे प्रेम आँखे ॥२२
सब जन जानिल ए कपट सन्नचास ।
चलिला त महाप्रभु नीलाचल वास ॥२३

मथुरा मण्डल कथा हैल एबे साय ।
आनन्दे लोचन दास गोरा गुण गाय ॥२४

———

तृतीय अध्याय

सुहइ राग ।

प्रभुर नीलाचले प्रत्यावर्त्तन

नीलाचले चले प्रभु हरिष हियाय ।
हा हा जगन्नाथ बलि अनुरागे धाय ॥१
प्रेमारम्भे चले प्रभु सिंहेर गमने ।
संहति चलिते नारे सङ्गेर यत जने ॥२
सङ्गे याइते नारे सङ्गी दूरे पिछाइल ।
अरण्य भितते प्रभु एकला चलिल ॥३
अरण्य भितरे एक आछये नगर ।
घोल बेचिबारे याय गोयाला कोङर ॥४
ठाकुर देखिया तारे आवेशे तियास ।
घोल देह गोप मोर लागिल पियास ॥५
ए बोल शुनिया गोप पड़िल चरणे ।
लेह घोल खाओ गोसाँइ यत लय मने ॥६
घोल पान कैल शून्य हइल कलसी ।
घोल खाइया चलि याय कपट सन्नचासी ७
गोयालाके बैल तुमि थाक एइखाने ।
पाछु ये आइसे कड़ि निह तार स्थाने ॥८
ए बोल बलिया प्रभु चलिला सत्वर ।
सेइखाने रहि गोप चिन्तये अन्तर ॥९
गोप भावे मिथ्याकथा कहिल सन्नचासी ।
एइ मने करि गोप मने कत बासि ॥१०
घरे गिया कि बलिब निज परिजने ।
मिथ्याकथा कहि न्यासी करिल गमने ॥११
कतक्षणे सन्नचासीर सङ्गी यत जन ।
सेइखाने आइल तारा प्रभुगत मन ॥१२
पुछिल गोयाले पथे देखिल सन्नचासी ।
गोप कहे घोल खाइल एकटि कलसी ॥१३
कड़ि निते बैल मोरे तोमा सबार ठाँइ ।
जुयाय त कड़ि देह आमि घरे याइ ॥१४
ए बोल शुनिया सबे सबा पाने चाय ।
सबे कहे कड़ि कोथा आमा सबार ठाँय १५
जल पात्र नाहि सङ्गे नाहि बहिर्बास ।
अञ्जलिते खाइ जल लागिले पियास ॥१६
गोयाला कहिल चल तबे नाहि दाय ।
मोर सेवा जानाइबा सन्नचासीर पाय ॥१७
ए बोल बलिया से कलसी करे हाते ।
भारि बड़ कलसी तुलिते नारि माथे ॥१८
ढाकना घुछाइया रत्न एक ये कलसी ।
धाइया चलिल हाहा करिया सन्नचासी १९
सङ्गीर बिलम्बे कतदूरे आछे पँहु ।
गोयाला देखिया से मुचकि हासे लहु ॥२०
सङ्गेर यतेक जन आइल तखने ।
देखिल गोयाला रहे प्रभुर चरणे ॥२१
प्रभु बले गोप तुमि चलि याह घर ।
तोरे अनुग्रह कृष्ण कैल पाइले वर ॥२२
लेउटि आसिते गोप पाइल परसाद ।
नाचिया बुलये गोप प्रेमार उन्माद ॥२३
गोयाला देखिया सबार बाढ़िल उल्लास ।
गोरा गुण गाय सुखे ए लोचन दास ॥२४

———

श्यामगड़ा राग।

आरे मोर आरे मोर गौराङ्ग सुन्दर।
नवीन प्रेमार भरे चलिते ना पार॥ ध्रु ।:

एइमते क्रमे क्रमे पथे चलि आइसे।
सङ्गति सहित उत्तरिला गौड़देशे ॥१
गङ्गा स्नान करि प्रभु राढ़देश दिया।
क्रमे क्रमे उत्तरिला नगर कुलिया ॥२
पूर्वाश्रम देखिब ए सन्नचासीर धर्म।
नवद्वीप निकटे गेला एइ तार मर्म ॥३
प्रभु आगमन शुनि नदीयार लोक।
पुन लेउटिल सबे पासरिल शोक ॥४
हा हा गोराचाँद बलि अनुरागे धाय।
कुलबधू धाय ताना पाछु नाहि चाय ॥५
विह्वल हइया शची धाय ऊर्द्ध्वमुखे।
आउलाइल केश बस्त्र नाहि देय बुके ॥६
कोथा मोर विश्वम्भर देख मो नयाने।
पुन चुम्ब दिब मुइ से चान्द वयाने ॥७
नदीया नगरे आइल आमार निमाइ।
धरिया राखह लोक किछु दोष नाइ ॥८
सबाकार प्राण सेइ सेइ मात्र जीउ।
प्राण विना धर्म रक्षा ए केमने हउ ॥९
एइमते कहिते कहिते गेला तथा।
देखिल त गौरचन्द्र बसियाछे यथा ॥१०
प्रभुरे देखिया बले शुन रे निमाइ।
धरे आय बाप मोर सन्नचासे काज नाइ ११
सन्नचास करिया धर्म राखिबि तो पाछु।
मोर बध आगे लागे आर सब पाछु ॥१२
विह्वल चेतन शची कान्दे उभराय।
सकल शरीरखानि एकदृष्टे चाय ॥१३
बाप बाप बलि अङ्ग परशिते चाय।
आर सब थाकु बाप हात देङ गाय ॥१४
अङ्गे तोर लेगेछे धूला फेलाइ झाड़िया।
ए बोल बलिया पड़े अङ्ग आछाड़िया ॥१५
पुन उठि बले बाप शुन मोर बोले।
मिटाब हियार साध तुलि लेइ कोले ॥१६
शचीर कान्दना शुनि पृथिवी विदरे।
आछुक मानुषेर काम ए पाषाण झुरे ॥१७
चौदिके सकल लोक कान्दिया विकल।
काछ ना छाड़ये केहो पासरिल घर ॥१८
लोकेर कान्दना देखि मायेर व्यग्रता।
मने अनुमाने प्रभु कि कहिब कथा ॥१९
मायेर प्रबोध दिते प्रभु मने गणे।
ना कान्द ना कान्द बले मधुर बचने ॥२०
सन्नचास करिते आज्ञा करिला आपने।
एखन बिह्वल हैया कान्द अकारणे ॥२१
पुत्र बलि मिछा माया ना घुचिल तोर।
ऐछन दुरन्त माया ए संसार घोर ॥२२
घुचिले ना घुचे माया बड़इ दारुण।
शची बले मोर बोल शुन निकरुण ॥२३
मोर पुत्र हैया जन्म लैले पृथिवीते।
जगतेर काछे मोरे पूजित करिते ॥२४
तुमि सब लोक बन्धु त्रिजगते पूजि।
तोमार से स्नेहमाया शास्त्रे भालो बुझि २५
ये हउ से हउ मोर तुमि हैओ पुत्र।
जन्मे जन्मे रहु मोर एइ कर्म सूत्र ॥२६
मायेर बचने प्रभु अस्तव्यस्त हैया।
मायाय जिनिते नारे उभारये दया ॥२७
ये तोर आछये इच्छा कर निज सुते।
एकमात्र शेष आमि निवेदिनु तोके ॥२८

शची बले नवद्वीप छाड़ि याह तुमि ।
नवद्वीपे दुष्ट विष्णुप्रिया आर आमि ।।२९
मायेर बचने पुन गेला नवद्वीप ।
बारकोणा घाट निज बाड़ीर समीप ।।३०
शुक्लाम्बर ब्रह्मचारि घरे भिक्षा कैल ।
माये नमस्करि प्रभु प्रभाते चलिल ।।३१
मायेरे कहिल मुइ बन्दी तोर गुणे ।
पूरब रहस्य कथा पासरिला केने ।।३२
राम कृष्ण बामन कपिल आदि आमि ।
सर्वजन्म देख सब विचारिया तुमि ।।३३
सर्वकाल आमार से एइमत कर्म ।
तोमार निकटे आछि जान एइ मर्म ।।३४
एवे त भकति रसे मोर अवतार ।
कृष्णचन्द्र बहि किछु ना भजिब आर ।।३५
किबा भक्त किबा विष्णुप्रिया किबा तुमि ।
ये भजिवे कृष्ण तार कोले आछि आमि ३६
माये नमस्करि प्रभु बले बारबार ।
ना छाड़िह कृष्ण ना भजिह ए संसार ।।३७
शचीर अन्तरे हिया करे दुर् दुर् ।
पाछे याय भक्त सब चलिला ठाकुर ।।३८
शान्तिपुरे गेला प्रभु आचार्य्येर घर ।
कीर्त्तन विलासे गेल से अष्टप्रहर ।।३९
पुन परभाते प्रभु चलिला सत्वरे ।
उत्कण्ठा बाढ़िल जगन्नाथ देखिवारे ।।४०
सबारे कहिला प्रभु सबे याह घर ।
नीलाचले आछि आमि कहिल उत्तर ।।४१
ये याय तथाय जगन्नाथ देखिवारे ।
तथाय आमार देखा हइब सबार ।।४२
ए बोल बलिया प्रभु बले हरिबोल ।
चलिला ठाकुर उठे कान्दनार रोल ।।४३
क्रमे क्रमे तमोलुके उत्तरिला गिया ।
ये पथे गियाछे पूर्वे सेइ पथ दिया ।।४४
पथे चलि याय प्रभु प्रेमानन्द सुखे ।
प्रेम वरिषणे भासे से देशेर लोके ।।४५
हासिते खेलिते याय नाहि पथश्रम ।
क्रमे क्रमे उत्तरिला श्रीपुरुषोत्तम ।।४६
देखिब त जगन्नाथ नीलाचल राय ।
हा हा जगन्नाथ बलि अनुरागे धाय ।।४७
सिंहद्वारे गिया प्रभु छाड़े हुहुङ्कार ।
धाइल सकल लोक आनन्द अपार ।।४८
जगन्नाथ देखि तुष्ट हैला गोराराय ।
ताँहारे देखिया लोक बड़ सुख पाय ।।४९
हरि हरि बले लोके उच्च उच्चराय ।
आनन्दित दिवानिशि हरिगुण गाय ।।५०
रात्रिदिन करे प्रभु कीर्त्तन विलास ।
गोरागुण गाय सुखे ए लोचन दास ।।५१

ललित राग । दिशा ।

गोरा गुण गाओ गाओ भुवन मङ्गल रे ।।

आनन्दे महाप्रभु आछे नीलाचले ।
हरिगुण संकीर्त्तन करे भक्त मेले ।।१
अनेक भकतगण मिलिला तथाय ।
नितुइ नूतन प्रकाशये गोराराय ।।२
हेनइ समये कथा कहिब एखने ।
प्रतापरुद्रेरे कृपा कैल येनमने ।।३
लोक मुखे शुनि राजा महाप्रभुर गुण ।
आश्चर्य मानये से ना कहे किछु पुन ।।४

एकदिन गेला जगन्नाथ देखिवारे ।
जगन्नाथ ना देखये देखे न्यासीवरे ॥४
कि कि बलि मने गणि बिस्मित हियाय ।
पड़िछाके पुछे राजा कि देखह राय ॥५
पड़िछा कहये देव जगन्नाथ देखि ।
राछा कहे तो सबाके व्यर्थ आमि राखि ॥६
जगन्नाथ स्थाने न्यासी बसियाछे हेर ।
मोर दण्ड भये किछु ना देखिये बल ॥७
आँखि ताड़िमु येन हेन नहे कभु ।
नहे बा कि देख सत्य करि कह तभु ॥८
ए बोल शुनिया पड़िछा बले पुनर्वार ।
जगन्नाथ वहि मोरा नाहि देखि आर ॥९
तबे त प्रतापरुद्र गणे मने मने ।
सन्नयासीरे केन देखि आमार नयने ॥१०
शुनियाछि सन्नयासीर महिमा अपार ।
इहार कारण तबे करिब बिचार ॥११
एतेक भाविया राजा चलिल सत्वर ।
आपने चलिला यथा आछे न्यासीवर ॥१२
देखिल टोटाय न्यासी आछे निज मेले ।
वृन्दावन कथा कहे हरि हरि बोले ॥१३
पुनरपि जगन्नाथ देखे आरवार ।
देखिल सन्न्यासी सेइ सुमेरु आकार ॥१४
देखिया राजार हिया भेल चमत्कार ।
सेइ जगन्नाथ एइ न्यासी अवतार ॥१५
प्रतापरुद्रेर मने बाढ़े अनुराग ।
सत्वरे याइला यथा आछे महाभाग ॥१६
टोटाय नाहिक केहो भाङ्गल ओयान ।
विह्वल हइल राजा हरिल गेयान ॥१७
गोविन्देरे कहे राजा कातर वचन ।
कोन् मते देखोँ मुइ गोसाँइर चरण ॥१८
इहार उपाय मोरे कह महाजन ।
एइमत बारबार कहये बचन ॥१९
गोविन्द कहये राजा ना हओ कातर ।
एखने ना पाबे देखा हैल अनवसर ॥२०
कखन आसिब मुइ कह महाभाग ।
कातर वयान राजा बाढ़े अनुराग ॥२१
सेदिन रहिल राजा सेइ त नगरे ।
सङ्गिगण देखि काकु करये सबारे ॥२२
पुरी गोसाँइ आदि करि यत भक्तगण ।
ठाकुरेर गोचर करिवारे हैल मन ॥२३
एइमते दिन दुइ चारि गेल यबे ।
काशीमिश्र घरेते एकत्र हइला सबे ॥२४
सकल भकत मेलि युकति करिल ।
सबे मेलि गोचरिव एइ स्थिर कैल ॥२५
आरदिन महाप्रभु काशीमिश्र घरे ।
आचम्बिते बसियाछे निज भक्त मेले ॥२६
राजार व्यग्रताय सबार कातर अन्तर ।
पुरी गोसाँइ कहिल से प्रभुर गोचर ॥२७
एत निवेदन गोसाँइ कहिते डराङ ।
निर्भये कहिये तबे यदि आज्ञा पाङ ॥२८
ठाकुर कहये शुन हे पुरी गोसाँइ ।
मोर ठाँइ तोर डर कोनो काले नाइ ॥२९
कि कहिबे कह शुनि हृदय तोमार ।
पुरीगोसाँइ बले कथा राखिबे आमार ॥३०
काशीमिश्र आदि करि यत भक्तगण ।
सबार वचने मुइ बलि ए वचन ॥३१
श्रीजगन्नाथदेव नीलाचले बास ।
प्रतापरुद्र राजा हय ताँर निज दास ॥३२
तोर पद देखिवारे साधे मो सबारे ।
आज्ञा पाइले हय ऐ चरण गोचरे ॥३३

प्रभु बले सब जन शुनह बचन ।
सन्नचासीर धर्म नहे राज दरशन ॥३४
आमि त सन्नचासी सेइ हय महाराज ।
दोँहार दर्शन दोँहार भाल नहे काज ॥३५
पुरी गोसाँइ बले प्रभु कर अवधान ।
ए बोल शुनिया राजा हरिवे गेयान ॥३६
ये देखिनु आमरा ताहार अनुराग ।
ए कथा शुनिले जीउ छाड़िबे महाभाग ॥३७
आजि त हइल राजार दश उपवास ।
सब छाड़ि पड़ियाछे चरण प्रत्याश ॥३८
कातर हइया पुन बले सबजन ।
राजार व्यग्रता देखि करिये यतन ॥३९
ए बोल शुनिया प्रभु कहिला बचन ।
आनह राजारे मुइ हइलुँ परसन्न ॥४०
करुणा देखिया सबार हइल उल्लास ।
आनिल राजारे प्रभु करे परकाश ॥४१
प्रभुरे देखिया राजा परणाम करे ।
प्रेमाय विह्वल राजा आपना पासरे ॥४२
पुलके भरिल अङ्ग छलछल आँखि ।
प्रेमे गरगर भेल गोरा अङ्ग देखि ॥४३
राजारे देखिया प्रभु लहु लहु हास ।
षड़्भुज शरीर राजा देखे परकाश ॥४४
षड़्भुज देखिया दण्ड परणाम करे ।
टलमल करे अङ्ग अनुराग भरे ॥४५
अवश शरीर नीर झरे दुनयने ।
चौदिकेते हरिध्वनि परशे गगने ॥४६
षड़्भुज शरीर देखि श्रीप्रतापरुद्र ।
आनन्दे विह्वल भासे प्रेमार समुद्र ॥४७
कण्टकित सब अङ्ग आपाद मस्तके ।
गदगद भावे प्रभु प्रभु बलि डाके ॥४८
उभबाहु करि नाचे हरि हरि बोले ।
जनम सफल प्रभु परसन्न मोरे ॥४९
आनन्दे भासये चतुर्द्दिके भक्तगण ।
प्रभु बले राजा हेर शुनह बचन ॥५०
प्रजार पालन तोर एइ बड़ धर्म ।
प्रजा पुत्र राजा पिता कहिल ए मर्म ॥५१
कृष्णेर केवल दया सम सर्वजीबे ।
देहेर स्वभाव निज जानि अनुभवे ॥५२
किबा राजा किबा प्रजा सम सुखदुःख ।
कर्म अनुसारे जीव हय गौण मुख्य ॥५३
निज अनुमान करि ये जाने सबारे ।
सेइ से कृष्णेर दास कहिल तोमारे ॥५४
एतेक उत्तर प्रभु कैल उपदेशे ।
परणाम करे राजा आनन्द आवेशे ॥५५
शुन सर्वजन गोराचाँदेर प्रकाश ।
गोरागुण गाय सुखे ए लोचन दास ॥५६

बराड़ी राग ।

आर अपरूप कथा कहिब एखन ।
गौरचन्द्र गुणगाथा नितुइ नूतन ॥१
कहिब निगूढ़ कथा शुन एक चिते ।
अधम जनेर मने ना हय प्रतीते ॥२
वैष्णव जनेर इते परम उल्लास ।
परम निगूढ़ गौरचन्द्रेर प्रकाश ॥३
द्राविड़े ब्राह्मण एक आछे राम नाम ।
परम दुःखित अङ्ग अस्थि आर चाम ॥४
अन्नकष्टे दग्ध सेइ जठर अनले ।
रक्त मांस नाहि तार शुष्क कलेवरे ५

दुरन्त रारिद्र्य दुःख कत सहा याय ।
मने मने चिन्ते विप्र कि करि उपाय ॥६
पूर्वजन्मे कैलुँ मुइ अनेक अधर्मे ।
दरिद्र हइलुँ मुइ सेइ सब कर्मे ॥७
ना भुञ्जिले नाहि घुचे अदृष्ट लिखने ।
दुरन्त यन्त्रणा दुःख घुचये केमने ॥८
चिन्तिते चिन्तिते विप्र पाइल प्रतिकार ।
प्रभु विना नारे केहो दुःख घुचावार ॥९
जगन्नाथ नीलाचले आछये साक्षाते ।
तार ठाँइ याङ मुइ याचिञा करिते ॥१०
अन्नकष्टे मरोँ मुइ ब्राह्मण शरीर ।
विप्र प्रिय बलि तारे बले सब धीर ॥११
मोर दोषे मोरे यदि ना करे अवधान ।
ताहार समीपे मुइ त्यजिब पराण ॥१२
एइ मने अनुमानि चलिला ब्राह्मण ।
क्रमे क्रमे गेला यथा कमल लोचन ॥१३
जगन्नाथ देखि करे आत्म निवेदन ।
अन्न कष्टे मरोँ मुइ ररिद्र ब्राह्मण ॥१४
तो विनु नाहि केहो राखह जीवन ।
घुचाह दारिद्र ज्वाला देह मोरे धन ॥१५
इहा बलि सेइदिन रहिला सेइखाने ।
भिक्षाय पाइल येइ करिल भोजने ॥१६
तार परदिन पुन करे निवेदन ।
घुचाह दारिद्र प्रभु ! मरये ब्राह्मण ॥१७
प्रचुर करिया धन देह त आमारे ।
दुःख येन नाहि पाङ जन्मेर भितरे ॥१८
धन वर मागोँ प्रभु ना हओ विमुख ।
नहिले जीवन दिब तोमार सम्मुख ॥१९
इहा बलि उपवास कैल अनुबन्ध ।
एथा निज मेले आछे प्रभु गौरचन्द्र ॥२०
निजजन सङ्गे वृन्दावन गुण गाय ।
आचम्बिते खेद उठे प्रभुर हियाय ॥२१
विस्मित हइया रहे हिया भेल आन ।
ये रसे आछिब ताहा कैल समाधान ॥२२
सबार हृदये दुःख विस्मय लागिल ।
आचम्बिते प्रभु केने आगमन हैल ॥२३
एथा तिन उपवास करिल ब्राह्मण ।
जगन्नाथ स्थाने किछु ना पाय बचन ॥२४
तबे त ब्राह्मण कैल सात उपवास ।
जगन्नाथ देव किछु ना करे आश्वास ॥२५
दुर्बल हइल विप्र क्षीण उपवासे ।
समुद्रे मरिब बलि दढ़ाइल शेषे ॥२६
समुद्रेर कूले बिप्र गेला धीरि धीरि ।
स्थान देह समुद्रेरे बले नमस्करि ॥२७
हेनकाले देखे एक पुरुष विशाल ।
समुद्रेर मध्ये आइसे पर्वत आकार ॥२८
देखिया ब्राह्मण मने चिन्तिते लागिल ।
समुद्रेर माझ दिया ए केबा आइल ॥२९
समुद्रेर माझे तार एक हाँटु पानी ।
एइ सब देखि विप्र मने मने गणि ॥३०
देखिते देखिते कूले आइल सेइजन ।
सामान्य मानुष येन हइल तखन ॥३१
विप्रभावे एइ जगन्नाथ विद्यमान ।
समुद्रेर माझे आर काहार पयान ॥३२
इहा बलि तार पाछु गोड़ाइया याय ।
कतदूरे गिया पाछु चाहे महाशय ॥३३
देखिल ब्राह्मण सेइ आइसे पाछे पाछे ।
कोथा याबे बलिया विप्रेरे किछु पुछे ॥३४
ब्राह्मण कहये शुन शुन महाशय ।
के तुमि कोथारे यावा कहना निश्चय ॥३५

सात उपवासी आमि ब्राह्मण दुर्बल ।
तोमारे देखिनु आजि जनम सफल ।।३६
निश्चय करिया कह ना भाण्डिह मोरे ।
नहे बा ब्राह्मण बध लागिबे तोमारे ।।३७
ए बोल शुनिया तबे बले महाजने ।
आमा जानिवारे तोर कि काज यतने ।।३८
ये हइ से हइ आमि तोर किबा दाय ।
केने उपवासे मर दुरन्त हियाय ।।३९
ब्राह्मण कहये दुःख दारिद्र्येर ज्वरे ।
जर्ज्जर करिल मोर सब कलेवरे ।।४०
ब्राह्मणेर धरम नाहिक आमा छारे ।
ए दिवा रजनी याय अन्न हाहाकारे ।।४१
निज कुले आदर नाहिक कोन खाने ।
ना जानिये कोन् ठाँइ नहे अपमाने ।।४२
जीवन अधिक से मरण भालवासि ।
कहिल तोमारे तेइ मरोँ उपवासी ।।४३
ए बोल शुनिया चित्त द्रवे महाजन ।
विभीषण नाम मोर शुनह ब्राह्मण ।।४४
देखिवारे याइ जगन्नाथेर चरण ।
कर्मदोषे दुःख पाप शुनह ब्राह्मण ।।४५
कर्मसूत्रे बन्दी लोक सुख दुःख लाभ ।
भुञ्जिले से घुचे सेइ कर्म पुण्य पाप ।।४६
जगन्नाथ मुख देख करिया पिरीत ।
जन्मान्तरे नहे येन दुःख उपनीत ।।४७
इहा बलि चलिला से राजा विभीषण ।
पाछे पाछे याय तबु दरिद्र ब्राह्मण ।।४८
बसि आछे गोराचाँद निजजन मेले ।
दुयारे के आछे देख गोविन्देरे बले ।।४९
दुयारे दाँड़ाइया आछे विभीषण राय ।
ब्राह्मण देखिया अंगुलि दिल नासिकाय ५०
हेनकाले गोविन्द गेला टोटार दुयारे ।
देखिल दुयारे दुइ ब्राह्मण कुमारे ।।५१
देखिया गोविन्द गेला प्रभु विद्यमाने ।
किछु ना कहिते डाके ब्राह्मण दुजने ।।५२
आइस आइस बलि हासि सम्भाषे ठाकुर ।
एके बसाइल काछे आर रहे दूर ।।५३
सब छाड़ि प्रभु तारे सम्भाषे आदरे ।
काछे यत छिल विस्मय लागिल सवारे ५४
ठाकुर कहये चिरदिने दरशन ।
अनुरागे दोँहाकार झरये नयन ।।५५
श्रीहस्त दिया अङ्ग परशे ताहार ।
कुशल कुशल पुछे ईङ्गित आकार ।।५६
से दोँहार कथा आर ना बुझये केहो ।
गौरचन्द्र बले विप्र दुखित बड़ एहो ।।५७
दारिद्र्य ज्वालाय ज्ञान हरिल इहार ।
जगन्नाथ उपरे ए करये प्रहार ।।५८
आपनार दोष जीव ना देखये किछु ।
आपनि करिया दोष प्रभुरे दोषे पाछु ५९
आपनि करये निज भाल मन्द बलि ।
भुञ्जिवार बेले दोष प्रभुर उपरि ।।६०
सुख से भुञ्जिते गुण कहे आपनार ।
प्रभुरे दोषये दोष दुःख भुञ्जिवार ।।६१
सात उपवासे विप्र मृत्यु कैल सार ।
विप्र प्रिय जगन्नाथ कि करिव आर ।।६२
तोमार दर्शने इहार घुछिल दारिद्र ।
धन देह येन हय धनेर समुद्र ।।६३
भाल भाल बलि तिँहो उठिला सत्वर ।
ये छिल सेखाने सबे पड़िला फाँपर ।।६४
दण्डवत करि तारा चलिला दुइजन ।
पथे याइते विभीषणे पुछये ब्राह्मण ।।६५

तुमि बल आमि सेइ राजा विभीषण।
सन्न्यासीरे नमस्करि चलिला एखन ॥६६
जगन्नाथ देव तुमि ना देखिले केने।
स्वरूप करिया कह दुःखित ब्राह्मणे ॥६७
सन्न्यासीर आज्ञा तुमि कैले शिर परि।
सन्न्यासीवा केबा कह ना कर चातुरी ॥६८
राजा कहे शुन आरे अबोध ब्राह्मण।
जगन्नाथ देख एइ साक्षात नयन ॥६९
तोमार अभीष्ट सिद्ध धन आइले तुमि।
द्राविड़े तोमार धन लैया दिब आमि ॥७०
ए बोल शुनिया विप्र शिरे हाने घा।
आरति करिया धरे विभीषणेर पा ॥७१
पुन चल याइ सेइ प्रभु बरावरे।
अज्ञान ब्राह्मण मुइ कह मो तोमारे ॥७२
अनेक यतन कैल एड़ाइते नारि।
लेउटिया याय पुन प्रभु बरावरि ॥७३
प्रभुर सम्मुखे गेला अन्तरे तरास।
पुन दोँहा देखि प्रभुर उपजिल हास ॥७४
प्रभु बले लेउटिया आइला कि कारणे।
राजा कहे ये कारण पुछह ब्राह्मणे ॥७५
ब्राह्मण कहये गोसाँइ आमि त अबुध।
कत कत जीव आछे अर्वुद अर्वुद ॥७६
सबाकार प्राण तुमि सबाकार नाथ।
तो बहि नाहिक केहो तुमि जगन्नाथ ॥७७
आमि महाधम छार महा अपराधी।
निजकर्मदोषे मोर दारिद्रयज्वाला व्याधि ७८
व्याधिर पीड़ाये मो कुपथ्य करोँ आशा।
औषध ना रुचे मुखे कुपथ्ये प्रत्याशा ॥७९
बुझिया औषध देह तुमि धन्वन्तरि।
कर्मदोषे भवव्याधि आमि छार मरि ॥८०
ए बोल शुनिया प्रभु हासिते लागिला।
जगन्नाथ देव तोमार सब भाल कैला ॥८१
आगे त ईप्सित तुमि भुञ्जिबे एखन।
शेषकाले पाबे जगन्नाथेर चरण ॥८२
ए बोल बलिते विप्र दण्डवत करे।
चौदिके सकल लोक हरि हरि बले ॥८३
शुन शुन सर्वजन अपूर्व कथन।
वर पाइया चलि गेला दरिद्र ब्राह्मण ॥८४
हरिषे हइला दोँहे बाड़ीर बाहिरे।
भक्तजन प्रभुरे पुछये धीरे धीरे ॥८५
पुरी गोसाँइ बले प्रभु दया कर यदि।
इहार कारण कहि सबे कर शुद्धि ॥८६
सुधाइते नारे केहो मने बड़ इच्छे।
साहस करिया मुइ सुधाइल पिछे ॥८७
ठाकुर कहये शुन शुनह गोसाँइ।
ए कथा तोमरा सब किछु बुझ नाइ ॥८८
द्राविड़े आछिल एइ दरिद्र ब्राह्मण।
अनेक यन्त्रणा दुःख पाइयाछे तखन ॥८९
दारिद्र्य ज्वालाय दग्ध आइल एइदेशे।
जगन्नाथ उपरे प्रहार करे शेषे ॥९०
दुःखित देखिया तुष्ट हैला जगन्नाथ।
आचम्बिते विभीषण सङ्गे हैल साथ ॥९१
विभीषण एइ ये बसिल मोर पाशे।
धन दान कैल तेँहो ब्राह्मण सन्तोषे ॥९२
ए बोल शुनिया सर्व जनेर उल्लास।
प्रेमाय भरिल सब ए भूमि आकाश ॥९३
सर्वजन नाचे सबे बले हरिबोल।
आनन्दे सबाइ सबे धरि देइ कोल ॥९४
शुन सर्वजन गोराचान्देर प्रकाश।
आनन्द हृदये कहे ए लोचन दास ॥९५

चतुर्थ अध्याय

धानशी राग ।

प्रभु आरे जय जय गौराङ्गचान्द ।
बान्धिल जीवेर मन दिया प्रेमफान्द ॥ ध्रु ॥

अवनि मण्डले गोरा रूपेर अवधि ।
विलाइला प्रेमधन आचण्डाल आदि ॥१
बाचाल करये गोरा गुणे मूक जने ।
पंगु गिरि लङ्घे अन्धे देखे तारागणे ॥२
कहिते कहिते नाहि जानि निज पर ।
ये उठये ताहा बलि ना करिये डर ॥३
सर्व अवतार सार चैतन्य गोसाँइ ।
एहेन करुणानिधि आर हैते नाइ ॥४
कृष्ण बहि आर केहो नाहिक ईश्वर ।
सत्य किबा त्रेता आर ए कलि द्वापर ॥५
एकमात्र प्रभु सेइ नाम कर भेद ।
लोके बुझावारे करे नानामत भेद ॥६
यत यत अवतार सेइ सब युगे ।
करुणा कारण छोट बड़ बले लोके ॥७
चैतन्य गोसाँइ एइ करुणाते बड़ ।
तेँइ वलि अवतार शिरोमणि दढ़ ॥८
हेन अवतार केहो ना बुझये लोके ।
अमृत ढाकिया येन राखे क्षुद्र पोके ॥९
हेन अवतार कथा कहिल अलोक ।
हेन गोराचान्द पहुँ भज छाड़ि शोक ॥१०
करुणा सागर प्रभु प्रेमे उनमत ।
भक्त सङ्गे वृन्दावन लीला अविरत ॥११
एइमते महाप्रभुर उत्कल विहार ।
उत्कल विहार कथा अनेक विस्तार ॥१२
विस्तारिते पुस्तक से हय त अनेक ।
संक्षेपे कहिल कथा शुन सर्वलोक ॥१३
हेनकाले महाप्रभु काशीमिश्र घरे ।
वृन्दावन कथा कहे व्यथित अन्तरे ॥१४
निश्वास छाड़िया से बलिला महाप्रभु ।
एमत भकत सङ्ग नाहि देखि कभु ॥१५
सम्भ्रमे उठिला जगन्नाथ देखिवारे ।
क्रमे क्रमे उत्तरिला गिया सिंहद्वारे ॥१६
सङ्गे निज जन यत तेमति चलिल ।
सत्वरे चलिया गेल मन्दिर भितर ॥१७
निरखे वदन प्रभु देखिते ना पाय ।
सेइखाने मने प्रभु चिन्तिल उपाय ॥१८
तखने दुयारे निज लागिल कपाट ।
सत्वरे चलिया गेल अन्तर उचाट ॥१९
आषाढ़ मासेर तिथि सप्तमी दिवसे ।
निवेदन करे प्रभु छाड़िया निश्वासे ॥२०
सत्य त्रेता द्वापर से कलियुग आर ।
विशेषतः कलियुगे संकीर्त्तन सार ॥२१
कृपा कर जगन्नाथ पतित पावन ।
कलियुग आइल एइ देह त शरण ॥२२
ए बोल बलिया सेइ त्रिजगत राय ।
बाहु भिड़ि आलिङ्गन तुलिल हियाय ॥२३
तृतीय प्रहर वेला रविवार दिने ।
जगन्नाथे लीन प्रभु हइला आपने ॥२४
गुञ्जाबाड़ीते छिल पाण्डा ये ब्राह्मण ।
कि कि बलि सत्वरे से आइल तखन ॥२५
विप्रे देखि भक्त कहे शुनह पड़िछा ।
घुचाओ कपाट प्रभु देखि बड़ इच्छा ॥२६
भक्त आर्त्ति देखि पड़िछा कहये कथन ।
गुञ्जाबाड़ीर मध्ये प्रभुर हैल अदर्शन ॥२७
साक्षाते देखिल गौर प्रभुर मिलन ।
निश्चय करिया कहि शुन सर्वजन ॥२८

ए बोल शुनिया भक्त करे हाहाकर ।
श्रीमुख चन्द्रिमा प्रभुर ना देखिब ग्रार ॥२९
श्रीवास पण्डित ग्रार दत्त ये मुकुन्द ।
गौरीदास वासुदत्त ग्रार श्रीगोविन्द ॥३०
काशीमिश्र सनातन ग्रार हरिदास ।
उत्कलेर सबे कान्दे छाड़िया निश्वास ३१
श्रीप्रतापरुद्र राजा शुनिल श्रवणे ।
परिबार सह राजा हरिल चेतने ॥३२
सार्वभौम भट्टाचार्य तनुज सहाय ।
प्रभु प्रभु डाके बले शुन गौरराय ॥३३
ग्रनेक रोदन कैल सब भक्तगण ।
इहा बा लिखिब कत मो ग्रधम जन ॥३४
ग्रशेष प्रभुर गुण ना हय विस्तार ।
एबे ना देखिया मोर हैल ग्रन्धकार ॥३५
मिनति करिया बलि शुन सब जन ।
दिवानिशि भज भाइ गौराङ्ग चरण ॥३६
निर्मल हइया सबे शुन गोरागुण ।
भव व्याधि नाशिवारे एइ से कारण ॥३७
एत शोके विलपन करये लोचन ।
शेषखण्ड साय हैल प्रभुर कीर्त्तन ॥३८

———

गृह व्यवहार कथा शुन सर्वजन ।
हेनइ समये करों श्रीहरि स्मरण ॥१
सबाकारे करों मुइ एइ निवेदन ।
सत्य करि जानिह श्रीवैष्णव चरण ॥२
गौरपद कमले मो करिये प्रणति ।
तिलेक करुणा दिठे कर ग्रवगति ॥३
वैष्णव प्रसादे किछु ये जानि प्रकाश ।
प्राणेर ठाकुर मोर नरहरि दास ॥४
ताँर पद प्रसादे ए पथेर प्रति ग्राश ।
गोरगुण कहिवारे कैलुँ ग्रभिलाष ॥५
श्रीमुरारि गुप्तवेजा प्रभुर ग्रन्तरीण ।
सकल जानये सेइ भकत प्रवीण ॥६
लोक निस्तारिते कैल चैतन्य चरित्र ।
ताँहार प्रसादे हैल संसार पवित्र ॥७
श्लोकबन्धे कैल गौर गुणेर कवित्व ।
ताहाइ हइल एबे सकलेर सूत्र ॥८
शुनिया माधुरी लोभे चित उतरोल ।
निज दोष ना देखिलुँ मन हैल भोल ॥९
पाँचाली प्रबन्धे ग्रामि रचिल एखन ।
दोष ना लइबे केहो मो ग्रति ग्रधम ॥१०
ग्रधिकारी नाहि तबु करिलुँ साहसा ।
वैष्णव करुणा देखि मनेर भरसा ॥११
चारिखण्ड पुँथि हैल वैष्णव कृपाय ।
समाधा करिते व्यथा लागये हियाय ॥१२
सूत्रखण्डे ग्राद्य कथा ग्रमृतेर खण्ड ।
जन्मादि रहस्य कथा कहिल ग्राद्यखण्ड ॥१३
मध्यखण्ड कथा ताइ करुणार घर ।
शेषखण्ड कथा से तिन खण्डेर पर ॥१४
चारिखण्ड कथा हैल वैष्णव कृपाय ।
समाधा करिते व्यथा लागये हियाय ॥१५
गौरगुण कथा एइ ग्रमिया समुद्र ।
कहिते ना पारे प्रभु प्रजापति रुद्र ॥१६
ग्रामि कि कहिब गुण कि जानि कतेक ।
वैष्णव कृपार बले बलिल यतेक ॥१७
करजोड़ करि बलों कातर वयाने ।
ग्रात्म निवेदउँ मुइ वैष्णव चरणे ॥१८

मो अधिक अधम नाहिक मही माझ ।
वैष्णव कृपार बले सिद्ध हैल काज ॥१९
चैतन्य चरित कथा के कहिते जाने ।
सम्बरिते नारि किछु कहिनु वदने ॥२०
चारिखण्ड कथा साय करिल प्रकाश ।
वैद्यकुले जन्म मोर को-ग्राम निवास ॥२१
माता मोर पुण्यवती सदानन्दी नाम ।
याँहार उदरे जन्मि करि कृष्ण काम ॥२२
कमलाकर दास मोर पिता जन्मदाता ।
याँहार प्रसादे कहि गोरा गुण गाथा ॥२३
मातृकुल पितृकुल बैसे एक ग्रामे ।
धन्य मातामही से अभया दासी नामे ॥२४
मातामहेर नाम श्रीपुरुषोत्तम गुप्त ।
नानातीर्थ पूत तेँह तपस्याय तृप्त ॥२५
मातृकुले पितृकुले आमि मात्र पुत्र ।
सहोदर नाहि नाहि मातामहेर सूत्र ॥२६
यथा तथा याइ से दुल्लिल कहे मोरे ।
दुल्लिल लागिया केहो पड़ावारे नारे ॥२७
मारिया धरिया मोरे शिखाइल आखर ।
धन्य पुरुषोत्तम गुप्त चरित्र ताँहार ॥२८
ताँहार चरणे मुइ करों नमस्कार ।
चैतन्य चरित लिखि प्रसादे याँहार ॥२९
मातृकुल पितृकुल कहिल मो कथा ।
नरहरि दास मोर प्रेमभक्ति दाता ॥३०
ताँहार प्रसादे येबा करिल प्रकाश ।
पुस्तक करिल साय ए लोचन दास ॥३१

इति "श्रीचैतन्य-मङ्गल" ग्रन्थे शेषखण्ड समाप्त ।

समाप्तोऽयं ग्रन्थः

परिशिष्ट

श्रील लोचनदास ठाकुरकी पदावली

श्रीगौराङ्गावतार

श्रीराग ।

अवतार सार गोरा अवतार
केन ना भजिलि ताने ।
करि नीरे बास गेल ना पियास
आपन करम फेरे ॥१
कण्टकेर तरु सेविलि सदाइ
अमृत फलेर आशे ।
प्रेमकल्प तरु गौराङ्ग आमार
ताहारे भाविलि बिषे ॥२
सौरभेर आशे पलाश शुंकिलि
नाशाय पशिल कीट ।
इक्षुदण्ड बलि काठ चुषिलि
केमने लागिबे मिठ ॥३
हार बलिया गलाय परिलि
शमन किङ्कर साप ।
शीतल बलिया आगुनि पोहालि
पाइलि बजर ताप ॥४
संसार भजिलि गोरा ना भजिया
ना शुनिलि मोर कथा ।
इह परकाल उभय खोयालि
खाइलि लोचन माथा ॥५

श्रीराग ।

के याबे के याबे भाइ भवसिन्धु पार ।
धन्य कलियुगेर चैतन्य अवतार ॥१
आमार गौराङ्गेर घाटे अदान खेयाय ।
जड़ अन्ध बधिर अवधि पार हय ॥२
हरिनामेर नौकाखानि श्रीगुरुकाण्डारी ।
संकीर्त्तन केरोयाल दुबाहु पासरि ॥३
सब जीव हैल पार प्रेमेर वातासे ।
पड़िया रहिल लोचन आपनार दोषे ॥४

बाल्यलीला

विभाव बा तुड़ी

हेर देखसिया नयान भरिया
कि आर पुछसि आने ।
नदीया नगरे शचीर मन्दिरे
चाँदेर उदय दिने ॥१
किये लाखवाए कषिल काञ्चन
रूपेर निछनि गोरा ।
शचीर उदर मेघे निकसिल
स्थिर विजुरीर पारा ॥२
कत विधुवर वदन उजोर
निशि दिशि सम शोभे ।

नयान भ्रमर श्रुति सरोरुहे
धाय मकरन्द लोभे ॥३
अजानुलम्बित भुज सुबलित
नाभि हेम सरोवर।
कटि करि अरि उरु हेम गिरि
ए लोचन मनोहर ॥४

———

विभास दशकुसि।

देख देख आसि यत नैंदावासी
आमार गौराङ्ग चाँदे।
बिहाने उठिया अञ्चले धरिया
ननी दे मा बलि काँदे ॥१
नहि गोयालिनी कोथा पाब ननी
एकि बिषम हैल मोरे।
शुनेछि पुराणे नन्देर भवने
सेइ ये आमार घरे ॥२
एकि अदभुत अति विपरीत
आमार गौराङ्ग राय।
अङ्गिनाय दाँड़ाइञा त्रिभङ्ग हइया
मधुर मुरली वाय ॥३
आर एकदिने खेले शिशु सने
नयने गलये लोर।
कहये लोचने शचीर भवने
बासना पूरल मोर ॥४

———

रूप (कामोद)

मनमत कोटि कोटि जिनिया गौराङ्ग तनु
सर्व अङ्गे लावण्य अपार।
अविरत वदने कि जपतहु निरवधि
निरुपम नटन सञ्चार ॥१
मधुर गौराङ्ग रूप झुरिया प्राण कान्दे।
नवगोरोचना कान्ति धूलाय लोटाय गो
क्षितितले पूर्णिमार चान्दे ॥ ध्रु ॥२
अजानुलम्बित गोरार सुबाहु युगल गो
उभ करि रहे क्षणे क्षणे।
डगमग अरुण कमल जिनि आँखि गो
केन सदा राधा राधा भने ॥३
सोणार वरण खानि शोन कुसुम जिनि
केन बा काजर सम भेल।
कहये लोचन दास ना बुझि गौराङ्ग रति
रहि गेल हृदि माझे शेल ॥४

———

यथा राग।

ए हेन सुन्दर गोरा कोथा बा आछिल गो
के आनिल नदीया नगरे।
निरखिते गोरारूप हृदये पशिल गो
तनु काँपे पुलकेर भरे ॥१
भाबेर आवेशे ओआ एलाये पड़ेछे गो
प्रेमे छल छल दुटि आँखि।
देखिते देखिते आमार हेन मने हय गो
पराण पुतलि करि राखि ॥२
विधि कि आनन्द निधि मथि निरमिल गो
किबा से गड़िल कारिकरे।

पीरिति कुँदेर कुँदे उहारे कुँदिल गो
नयान कुँदिल कामशरे ॥३
गोकुल नटेर काण वङ्किम आछिल गो
कालिये कुटिल यार हिया ।
राधार पीरिति उहाय समान करेछे गो
सेइ एइ बिहरे नदीया ॥४
मनेर मरम कथा काहारे कहिब गो
चित येन चुरि कैल चोरे ।
लोचन पियासे मरे ओरूप देखिया गो
विधाता बञ्चित भेल मोरे ॥५

--*

यथा राग ।

शारद चन्द्रिका रत्न धिक् चम्पकेर वर्ण
शोन कुसुम गोरोचना ।
हरिताल से कोन छार विकार से मृत्तिकार
से कि गोरारूपेर तुलना ॥१
धिक् चन्द्रकान्त मणि तार वर्ण किसे गणि
फणि मणि सौदामिनी आर ।
ओ हब प्रपञ्चरूप अप्रपञ्च रसभूप
तुलना कि दिब आमि तार ॥२
यत देख वर्णन अनुसारे उद्दीपन
गौररूप वर्णन के करे ।
जान ना ये सेइ गोरा धरारूपे अङ्गभरा
दरशे धैरज दूर करे ॥३
शुन ओगो प्राण सइ जगते तुलना कइ
तबे से तुलना दिब किसे ।
जगते तुलना नाइ याँर तुयना ताँर ठाइ
अमिया मिशाब केन बिषे ॥४

केबा तार गुण गाय गुणेर के ओर पाय
केबा करे रूप निरूपण ।
रूप निरूपिते नारे गुण के कहिते पारे
भाविया बातुल हैल मन ॥५
पक्षी येन आकाशेर किछुइ ना पाय टेर
यतदूर शक्तिउड़ि याय ।
सेइरूप गौराङ्गेर रूपेर ना पाय टेर
अनुसारे ए लोचन गाय ॥६

--*

भावावेश (कामोद)

नाचे शचीनन्दन भकत जीवन धन
सङ्गे सङ्गे प्रिय नित्यानन्द ।
अद्वैत श्रीनिवास आर नाचे हरिदास
बासुघोष राय रामानन्द ॥१
नित्यानन्द मुख हेरि बोले पहुँ हरि हरि
प्रेमाय धरणी गड़ि याय ।
प्रिय गदाधर आसि प्रभुर बाम पाशे बसि
घन नरहरि मुख चाय ॥२
प्रभु नाहि मेले आँखि कहे मोर काँहा सखी
काँहा पाब राय दरशन ।
कह कह नरहरि आर सम्बरिते नारि
इहा बलि भेल अचेतन ॥३
एखनि आछिनु सेथा के मोरे आनिल एथा
रसे रसे निकुञ्ज भवन ।
गेल सुख सम्पद एबे भेल विपद
बिषादये ए दास लोचन ॥४

--*

सुहइ।

रजनी जागिया गोरा थाके।
हा नाथ हा नाथ बलि डाके ॥१
प्रभाते उठिया गोराराय।
चञ्चल नयाने सदा चाय ॥२
नमित वदने मही लेखे।
आँखिजले किछुइ ना देखे ॥३
लोचन कहे एइ रस गूढ़।
बुझये रसिकजन ना बुझये मूढ़ ॥४

*०*०*

श्रीश्रीगौर नित्यानन्द

तुड़ी।

एइबार करुणा कर चैतन्य निताइ।
मो सम पातकी आर त्रिजगते नाइ ॥१
मुञि अति मूढ़मति मायार नफर।
एइ सब पापे मोर तनु जरजर ॥२
म्लेच्छ अधम छिल यत अनाचारी।
ता सबा हइते यदि मोर पाप भारी ॥३
अशेष पापेर पापी जगाइ माधाइ।
ता सबारे उद्धारिला तोमरा दुभाइ ॥४
लोचन बले मुइ अधम दया नैल केने।
तुमि ना तरिले दया के करिबे आने ॥५

*०*०*

धानशी राग।

जीवेर भाग्ये अवनी विहरे दोन भाइ।
भुवन मोहन गोराचाँद निताइ ॥१
कलियुगे जीव यत छिल अचेतन।
हरिनामामृत दिया करिला चेतन ॥२
हेन अवतार भाइ कभु शुनि नाइ।
पातकी उद्धार कैला घरे घरे याइ ॥३
हेन अवतार भाइ नाइ कोन युगे।
कोन् अवतारे से पापीर पाप मागे ॥४
रुधिर पड़िल अङ्गे खाइया प्रहार।
याचि प्रेम दिया तारे करिला उद्धार ॥५
नाम प्रेमम सुधाते भरिल त्रिभुवन।
एकला बञ्चित भेल ए दास लोचन ॥६

*०*०*

श्रीराग।

परम करुण पहुँ दुइजन
निताइ गौरचन्द्र।
सब अवतार सार शिरोमणि
केबल आनन्द कन्द ॥१
भज भज भाइ चैतन्य निताइ
सुदृढ़ विश्वास करि।
बिषय छाड़िया से रसे मजिया
मुखे बल हरि हरि ॥२
देख आरे भाइ त्रिभुवने नाइ
एमन दयाल दाता।
पशु पाखी झुरे पाषाण विदरे
शुनि याँर गुण गाथा ॥३
संसारे मजिया रहिलि पड़िया
से पदे नहिल आश।
आपन करम भुञ्जाय शमन
कहये लोचन दास ॥४

*०*०*

श्रीनित्यानन्द

श्रीराग (लोभा)

अक्रोध परमानन्द नित्यानन्द राय ।
अभिमान शून्य निताइ नगरे बेड़ाय ॥१
अधम पतित जीवेर घरे घरे गिया ।
हरिनाम महामन्त्र दिछे विलाइया ॥२
यारे देखे तारे कहे दन्ते तृण धरि ।
आमारे किनिया लह बल गौर हरि ॥३
एत वलि नित्यानन्द भूमे गड़ि याय ।
सोणार पर्वत येन धूलाय लोटाय ॥४
हेन अवतारे यार रति ना जन्मिल ।
लोचन बले सेइ भवे एल आर गेल ॥५

*०*०*

श्रीराग ।

निताइ गुणमणि आमार निताइ गुणमणि ।
आनिया प्रेमेर वन्या भासाल अवनी ॥१
प्रेमेर वन्या लइया निताइ आइला गौड़देशे ।
डुबिल भकतगण दीनहीन भासे ॥२
दीन हीन पतित पामर नाहि बाछे!
ब्रह्मार दुर्लभ प्रेम सबाकारे याचे ॥३
आवब्ध करुणासिन्धु काटिया मोहन ।
घरे घरे बुले प्रेम अमियार बाण ॥४
अबान्धबे सकरुण निताइ सुजन ।
घरे घरे करे प्रेमामृत वितरण ॥५
लोचन बले आमार निताइ येबा नाहि माने ।
अनल भेजाइ तार माझ मुख खाने ॥६

———

श्रीराग ।

निताइ मोर जीवनधन निताइ मोर जाति ।
निताइ बिहने मोर नाहि आर गति ॥१
असार संसार सुखे दिया मेने छाइ ।
नगरे मागिया खाब गाइब निताइ ॥२
ये देशे निनाइ नाइ से देशे ना याब ।
निताइ बिमुख जनार मुख ना हेरिब ॥३
गङ्गा यार पदजल हर शिरे धरे ।
हेन निताइ ना भजिया दुःख पाञा मरे ॥४
लोचन बले आमार निताइ प्रेमकल्पतरु ।
काङ्गालेर ठाकुर निताइ जगतेर गुरु ॥५

*०*०*

सिन्धुड़ा ।

देख निताइचाँदेर माधुरी ।

पुलके पूरल तनु कदम्ब केशर जनु
बाहु तुलि बले हरि हरि ॥ ध्रु ॥१
श्रीमुख-मण्डल धाम जिनि कत कोटि काम
से ना विहि किसे निरमिल ।
मथिया लावण्य सिन्धु ताहे निङ्गाड़िया इन्दु
सुधा दिया मुखानि गड़िल ॥२
नव कञ्जदल आँखि तारक भ्रमर पाखी
डुबि रहु प्रेम मकरन्दे ।
सेरूप देखिल येह से जानिल रमेह
अवनी भासल प्रेमानन्दे ॥३
पुरुबे ये व्रजपुरे विहरे नन्देर घरे
रोहिनी नन्दन बलराम ।
एबे पद्मावती सुत नित्यानन्द अवधूत
भुवन पावन हैल नाम ॥४

से पँहु पतित हेरि करुणामय अवतरि
जीवेरे बोलाय गौरहरि ।
पड़िया से भवबन्धे काँदये लोचन अन्धे
ना देखिया सेरूप माधुरी ।।५

*०*०*

श्रीअद्वैताचार्य्य

तुड़ी ।

जय जय अद्वैत आचार्य्य दयामय ।
याँर हुहुङ्कारे गौर अवतार हय ।।१
प्रेमदाता सीतानाथ करुणा सागर ।
याँर प्रेमरसे आइला गौराङ्गनागर ।।२
याहारे करुणा करि कृपा दिठे चाय ।
प्रेमरसे से जन चैतन्यगुण गाय ।।३
ताँहार पदेते येबा लैल शरण ।
से जन पाइला गौरप्रेम महाधन ।।४
एमन दयार निधि केने ना भजिलुँ ।
लोचन बले निज माथे बजर पाड़िलुँ ।।५

*०*०*

तुड़ी ।

नास्तिकता अपधर्म जुड़िल संसार ।
कृष्णपूजा कृष्णभक्ति नाहि कोथा आर ।।१
देखिया अद्वैत प्रभु बिषादित हैला ।
केमने तरिबे लोक भाविते लागिला ।।२
नेत्र बुजि तुलसी देयेन विष्णुपदे ।
हुङ्कारि दिलेन लम्फ आचार्य आह्लादे ।।३
जितिलु जितिलु मुखे बले बार वार ।
जीव निस्तारिते हबे गौर अरतार ।।४
एकथा शुनिया नाचे साधु हरिदास ।
लोचन बले खसिल जीवेर मोहपाश ।।५

*०*०*